

### Shri Surendra Nath Dubey.

... He kept his character crystal clear and further built a heart that melts at seeing sufferings, and this concern took Shri Dubey to the point that now he concentrates on creating conscientious citizens for free India.

He thinks if the Government introduces Mahatma Gandhi into our education system, much of India's problems will be solved. Will the Government listen to *Shri Surendra Nath Dubey's saintly voice*

- S.N. Subba Rao

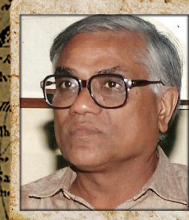
S.N. Subbarao

A living spirit of Mahatma Gandhi

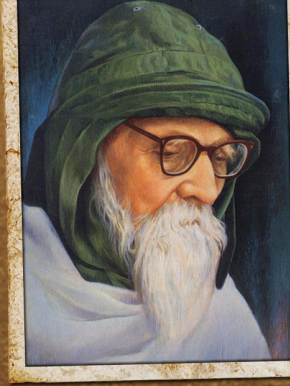
### मानव भूषण दुबेजी

श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे के आचार, व्यवहार और विचार में, कहीं भी अपने को महत्वपूर्ण समझने या अपनी महत्ता स्थापित, प्रचारित या प्रसारित करने की कितनी भी चेष्टा परिलक्षित नहीं होती है। उनकी विनम्रता, सहजता और गुणग्राहकता अद्भुत है। दूसरों, विशेषकर अपने आसपास के लोगों की प्रतिष्ठा और उत्थान देखने से ज्यादातर लोगों को अंदर से कुछ न कुछ जलन होती है वह दुबे जी के आसपास भी नहीं फटकती। दूसरे की प्रगति, प्रतिष्ठा एवं गुणों से जितनी सहजता से आह्लादित, उल्लासित हो जाते हैं, वह विश्वसनीय है। उनकी यह सरलता, उनकी विनम्रता की तरह रोम-रोम से टपकती है। उनमें विवेकपूर्ण परिपक्वता है। विवेकपूर्ण परिपक्वता की बात कह देने के बाद मैं थोड़ा असहज महसूस कर रहा हूँ, क्योंकि इससे ठीक विरोधाभासी गुण भी उनमें कूट-कूट कर भरे हैं-बालसुलभ, भोलापन एवं निश्छलता...। ...त्याग करना, बड़ी सहजता से करना जिन गुणों को प्रगट करता है वह हम सब के लिए अनुकरणीय है। मेरी इच्छा है कि दुबे जी जैसे व्यक्ति के लिए समाज में भव्य आयोजन करना चाहिए ताकि यह जगजाहिर हो सके कि **मनुष्य के गुणों की इज्जत होती है, पद और सत्ता की नहीं।** दुबे जी श्री सुखाराव के भक्त हैं। यह भी उनके व्यक्तित्व के एक पहलू को रेखांकित करता है। अपने को कम आंकना और दूसरे के गुण को बढ़ा-चढ़ा कर समझना उनकी गुण-ग्राहकता का परिचायक है। ...यह प्रसन्नता व्यक्त करना भी जरूरी है कि कम से कम ऐसे मानवभूषण का साथ मुझे एक-चौथाई शताब्दी तक तो मिला है और ईश्वर से प्रार्थना है कि और एक-चौथाई शताब्दी तक यह साथ बना रहे।

शरदचंद्र बेहार  
आई.एस. (से.नि.)  
पूर्व मुख्य सचिव, म.प्र.



एक दिलचस्प गाथा



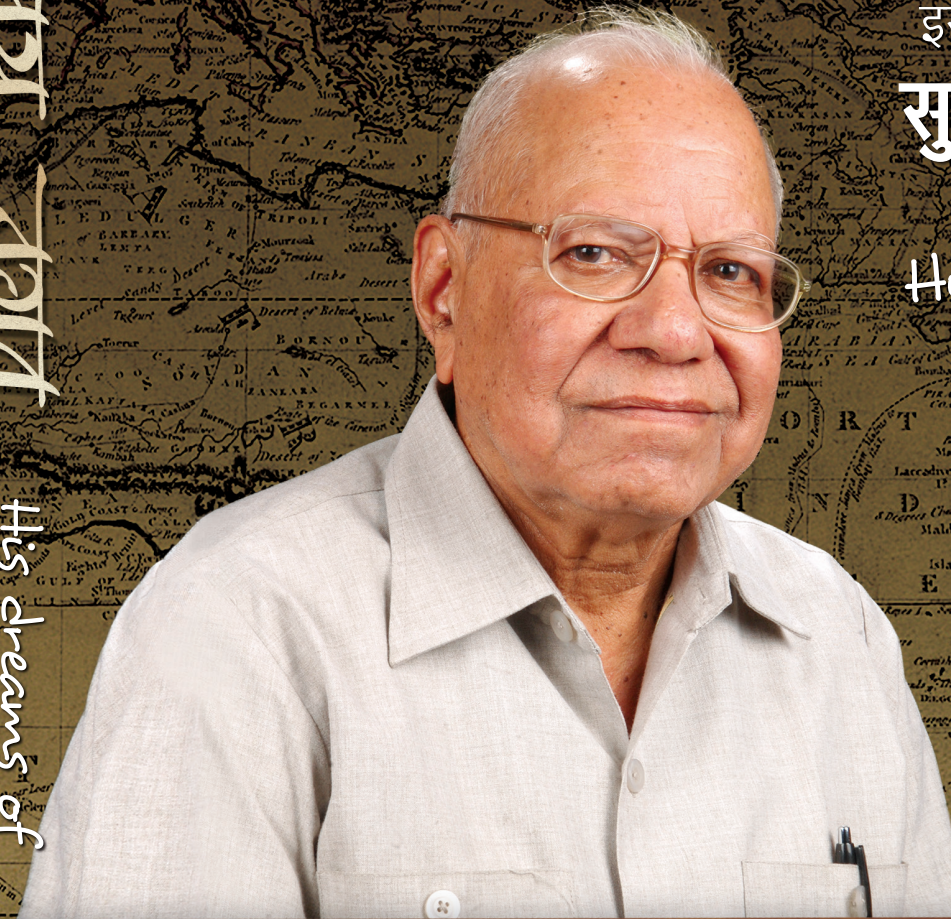
Vinoba Bhave

बाबा राष्ट्र कहता ही नहीं "जयजगत" कहता है, राष्ट्र राष्ट्र जपते रहेंगे तो लड़ाइयाँ तो चलती ही रहेंगी।

# जयजगत

इस मार्ग का पथिक  
**सुरेन्द्र नाथ दुबे**

His dreams  
of 22nd  
Century



**अमृत  
महोत्सव**  
2014

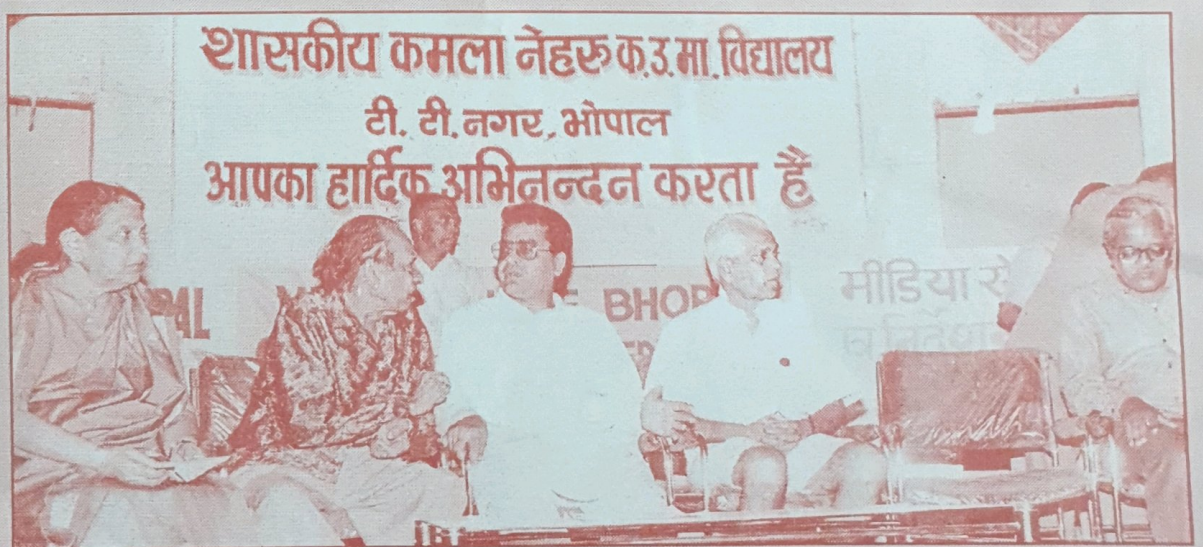
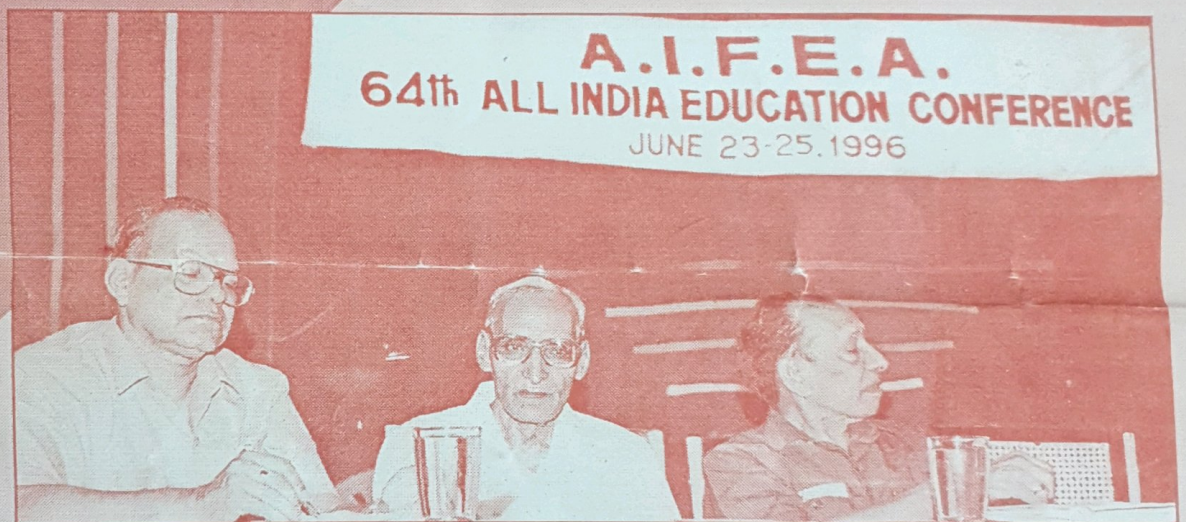
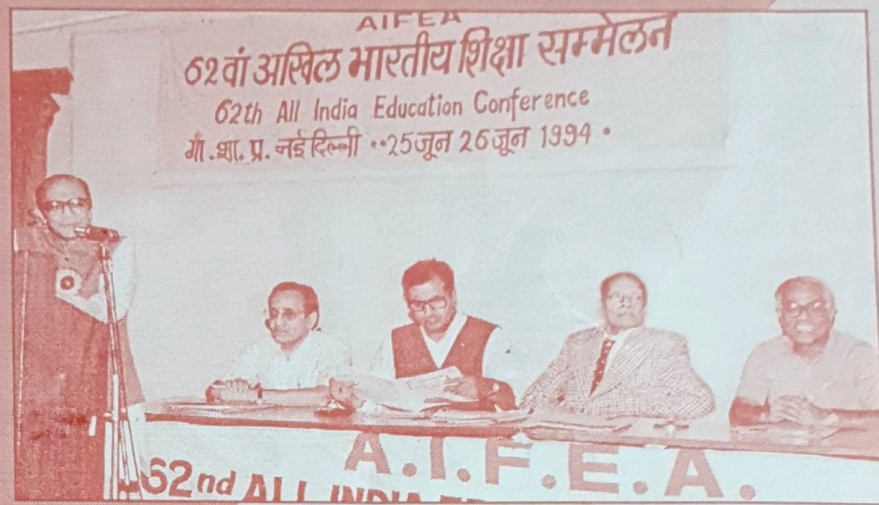
“ एजरा पाउण्ड ने एक बार इलियट को सलाह दी थी ऐसा करने से कोई फायदा नहीं जो तुम्हारे पहिले किया जा चुका है, करना वह चाहिए जो अपना हो और पहिले से अलग हो ”

“ वर्तमान में जीना सीखा, पर भविष्य है गढ़ते, निज हितार्थ न स्वार्थ किंचित, जन हितार्थ ही लड़ते जय जगत उदघोष जिन्होंने व्यावहारिक समझया एक सदी और आगे का पथदर्शन कर बढ़ते ॥ ”

— गुण सागर सत्यार्थी

एक दिलचस्प गाथा





बैजनाथ प्रकाशन  
एच-238, बागमुगलिया एक्सटेंशन, भोपाल-43 द्वारा प्रकाशित

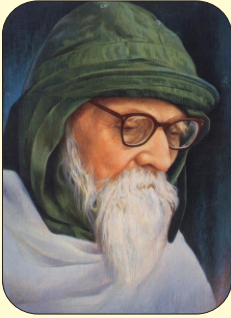
मुद्रक : जैन ऑफसेट, 78, बी.एम. आर्कड, जेन-2, एम.पी. नगर, भोपाल. मो. : 9303117753



# जय जगत एवं एक विश्व सरकार

## Victory of the world & One world government

### DREAMS OF SURENDRANATH DUBEY FOR 22ND CENTURY



विनोबा भावे

बाबा राष्ट्र कहता ही नहीं जयजगत कहता है,  
राष्ट्र राष्ट्र जपते रहेंगे तो लड़ाइयाँ तो चलती ही रहेंगी।

Vinoba was fond of the greeting  
**JAI JAGAT**

#### Victory of the world

The slogan was born in karnataka on 1st November 1957. Vinoba was then marching on his Bhudan Pad Yatra from village to village. United Karnataka was formed on 1st November 1956. After one year on 1<sup>st</sup> November 1957 Vinoba entered the town of kabada in Tumkur district of Karnataka. Local leaders used slogan jai karnataka

Then Vinoba ji used slogan JAI JAGAT.

#### Who We Are

"We Are Not Proud of Any Particular Country  
Neither Do We Insist on A Particular Religion  
Nor Are We Bound By Any Particular Sect or Caste  
And That Is Our Commitment of Self Study  
Our Dharma Is To Make All Good Thoughts Our Own  
Goal Is To Harmonise Thoughts

The Goal of Our Thinking And Meditation Is To  
Develop Consciousness For The Whole World

**-Acharya Vinoba Bhave**

#### Non-Violence

Vinoba composed a poem in Marathi while talking of Ahimsa (non-violence).

The meaning of verse is-

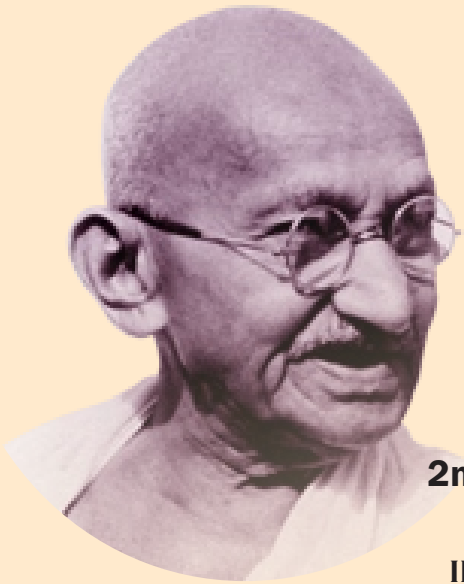
The stone told the flower, "I shall crush you."  
The flower replied, "Very well, you will spread my fragrance all over the world.

Thank you for your service."

The arrogance of the stone was shattered. The flower won, with its humility and courage.  
What a simple, fine and deep analysis of the power of ahimsa! (non-violence).

In a faithless, cheerless and cold world of the day the idea's of "jai jagat" and one world govt. are pointing the way to life, hope and courage



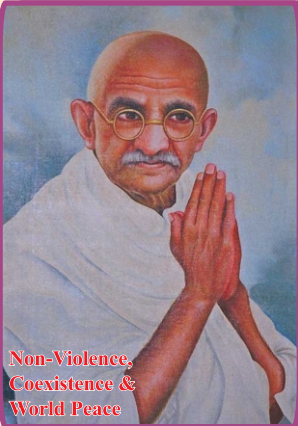


## **MANY PEOPLE - ONE HOPE**

**2nd October- Birthday of Mahatma Gandhi**  
**Adopted by U.N.O. as**  
**INTERNATIONAL NON-VIOLENCE DAY**







**My mission is not merely brotherhood of Indian humanity.**

**My mission is not merely freedom of India, but through realisation of freedom of India.**

**I hope to realise and carry on mission of the brotherhood of Man.**

**Mahatma Gandhi**

## **Bharat that is INDIA believes in the ideology of Vasudhev Kutumbakam (Universal Brotherhood).**

Vinoba spoke to a group of children. He told them to say the slogan, "**JAI JAGAT**"- victory to the world. Let every one win. Let our neighbours also prosper."

Once Babu (Mahatma Gandhi) had Written to Baba ( Vinoba ) referring to some incident,

**"I have never come across a great soul like you."**

सात दीप नव खंडलों, तीन लोक जग माहि।

तुलसी शांति समान सुख, अपर दूसरों नाहि॥

तुलसीदास जी कहते हैं-

सार्तो द्वीप, नवों खंड, तीनों लोक और जगत भर में  
शान्ति के समान दूसरा कोई सुख नहीं है।



गांधी समाधि, राजघाट, नई दिल्ली में  
विनोबा जयंती 11 सितंबर, 2011 के  
अवसर पर विश्व विख्यात गांधीवादी श्री  
एस.एन. सुब्बाराव एवं सुरेन्द्रनाथ दुबे।

Vinoba was walking in Kashmir. The group went near the line of Control between Indian side of Kashmir and Pakistan-occupied Kashmir.

The guide explained to Vinoba the situation on the border and showed him the position of the Indian Army on the one side and the 'enemy pickets' on the other side of the border. **Vinoba told him, "Do not call them enemies. Nobody is our enemy. They are our neighbours. Call them neighbours."**

**Even to this day Jai Jagat is a popular greeting among Sarvodaya workers.**



## Other Champions of World PEACE



Swami Vivekanand



Maharshi Aurobindo



Martin Luther King-Sr.



Nelson Mandela



Martin Luther King-Jr.



Barack Obama

**Charter of the UNESCO says, “War begins in the minds of man, and hence the defence of peace must be constructed in the minds of man”.**

**“For a happy world there must be one world community at the top and small communities at the base.”**

Arnold Toynabe

**World Government must be inspired by love, altruism and selflessness and not by exploitations and selfishness.**

S.N. Subbarao



- ❁ **Today's enemies will be close friends of tomorrow.**
- ❁ **'Freedom of my nose ends, where the freedom of others nose begin'**
- ❁ **Social Media was going to be a game changer.**
- ❁ **Ability of new media is for being a remarkable source of news and conversations.**
- ❁ **News papers may not be there 30 years from now but journalism will remain.**
- ❁ **Twitter was trying to make the service a safe place, and had tools to blocking abuse. Abuse existed in the physical world as well.**
- ❁ **In future we think we will have complete control over what our food looks like. Future of food may not look as delectable as one would think, but one inventor Promiscues it would be healthy, balancing all nutrients the human body needs.**



## जय जगत के पुरोधा श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे

अपनी किशोरावस्था से लेकर आज तक शिक्षा और सर्वोदय के लिये श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे का समर्पण किसी से छिपा नहीं रहा। एक ओर वे मध्यप्रदेश राज्य शैक्षिक अनुसंधान परिषद् से जुड़े रहे, वहीं दूसरी ओर उन्हें तत्कालीन संचालक श्री शरदचंद बेहार ने शालेय शिक्षा मंत्री के परामर्शदाता के रूप में कार्य करने का अवसर दिया। वे मानव संसाधन मंत्रालय, नई दिल्ली में शिक्षक कल्याण के परामर्श हेतु प्रतिनियुक्ति पर रहे और इस बीच शैक्षिक संस्थाओं के राष्ट्रीय महासंघ (एआईएफईए) से भी जुड़े रहे।

श्री दुबे की सर्वोदय विचारक श्री सुब्बाराव से प्रथम भेंट उनके तत्कालीन भेलसा (विदिशा) नगर प्रवास के दौरान वर्ष 1955 के आरंभ में हुई और वे श्री सुब्बाराव के कर्मठ व्यक्तित्व से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने शिक्षा व शिक्षक कल्याण के साथ सर्वोदय विचार को ही संपूर्ण निष्ठा व तन्मयता से अपना लिया। जब मैं श्री सुब्बाराव से लगभग एक दशक बाद संपर्क में आया तो मुझे सैकड़ों बार श्री दुबे की “जय जगत” के प्रति निष्ठा से साक्षात् होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मैं अपने सुदीर्घ अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि श्री दुबे जी ने अपने जीवन का स्वर्णिम काल शिक्षा व सर्वोदय आंदोलन में लगाकर जो कीर्तिमान स्थापित किया है वह अद्भुत व विलक्षण है। उनके कृतित्व व व्यक्तित्व को चंद शब्दों में पिरोना अथवा अभिनंदन ग्रंथ के कुछेक पन्नों में बांधना अथवा समेटना कठिन है। वे एक आदर्श शिक्षक तो रहे ही हैं, सर्वोदय विचार के भी वे महारथी हैं। जहां तक उनके व्यक्तिगत जीवन का प्रश्न है, उनका चरित्र ऐसा आदर्श है जिससे वर्तमान पीढ़ी ही नहीं, भावी पीढ़ियां भी युगों-युगों तक प्रेरणा लेती रहेंगी। अपने विचारों के प्रचार-प्रसार हेतु उन्होंने कई पुस्तकों का लेखन व संपादन किया है। उन्होंने पांच वर्ष पूर्व द्विभाषी मासिक पत्रिका “स्कूल शिक्षा” की शुरुआत की, जिसे देश के बुद्धिजीवियों ने हाथोंहाथ लिया है ताकि शिक्षा की ज्योति निरंतर प्रज्ज्वलित रहे।

आज शालेय छात्रों की पीठ व कंधों पर बस्ते तथा शिक्षकों पर गैर शैक्षणिक कार्यों का जो बोझ बढ़ता जा रहा है, उससे श्री दुबे का क्षुब्ध होना स्वाभाविक है, क्योंकि इससे शिक्षा के गिरते स्तर का पता चलता है। इसके बावजूद श्री दुबे का यह प्रयास बदस्तूर जारी है कि निःशुल्क शिक्षा के साथ बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले, ताकि अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्हें रोजगार के लिये दर-दर की ठोकरें न खानी पड़ें।

शिक्षाविद् श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे 26 जनवरी को अपने जीवन के छिहत्तर यशस्वी वर्ष पूर्ण कर रहे हैं। इस अवसर पर उनके ‘जय जगत’ के विचारों, व्यक्तित्व व कृतित्व पर केंद्रित अभिनंदन ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है। अभिनंदन समिति की अध्यक्षता के साथ ही मुझे इस ग्रंथ के सम्पादन का जो अवसर श्री दुबे के परिजन, मित्रों एवं शुभचिंतकों ने दिया, उसके लिये मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। इस हेतु सामग्री जुटाने में सहभागी व सहयोगी रहे श्री दामोदर जैन और श्री रामगोपाल रैकवार के साथ विशेषकर भूमिका लेखक डॉ. गार्गीशरण मिश्रा का मैं आभारी हूँ।

15 नवम्बर, 2014

विनोबा पुण्यतिथि

— कैलाश श्रीवास्तव ‘आदमी’

संपादक



# Jai Jagat - One World Government

## 22nd Century of My Dreams

My version of the twenty second century may seem utopian, but it just might be nurtured into my version with love and kindness and optimism. I hope and when you hope, you tend to be partially optimistic. I hope the twenty second century will witness a world free of violence, hatred and hunger,

I know what I see for tomorrow may be difficult. But I also know that it can. I know that man will find a way to live the life he deserves because I know he can. I know that man has the potential to outdo himself and that's what makes me optimistic. That's what gives me hope.

The world of the future generation will revolve around the principles of science, logic and truth. Baseless superstitious customs and practices will be dispatched and will be substituted by logical and practical practices. Life of each and every individual will be regarded with the utmost regard and with equal consideration. The wide gap of incomes of the different sections of the society will hopefully be bridged.

Today, the world is in turmoil, revolutionizing the way of system. In the future, democracy will be the only form of justified rule in the world, The whole world will be a single organism, with a vibrant mixture of amazingly diversified cultures. Unity among human beings will be accepted and the cognizance of the humanity being the greatest religion will be actualized.

**The world, in its unity, will be governed by one world government**, a single, primary institution preserving the rights of every human being. This institution will be the most powerful agency of the world which will work towards realizing the goal of a democratic environment. Every citizen of the world will be provided a world citizenship and then a secondary national citizenship of his/her respective nation. This government will work towards enforcing the human rights and providing every possible opportunity to the citizens exploring their talents and realizing their complete potential.

Talking of a united government, every human will be given a biometric number which will serve as his/her identity proof. A small biometric chip will be inserted into the body of every human being at birth, allowing all the data to be entered into the biometric chip. It will serve as an all-round identity proof, supplying with relevant information like date of birth, age, country, residence etc. at a click away. This will ensure the safety of the person as well as an easy way to regulate the masses for the authorities.

The crime rate of the world is an alarming actuality and a horrifying truth. The roots of these crimes are in the reality of illogical behavior of the human kind. The twenty second century will accomplish the goal of a scientific and logical living, providing ample opportunities and possibilities for every individual. With this task accomplished, the criminal tendency of the human beings will also witness a steep decline.



For the protection of the rights of the citizens, an apex body will be established, which will exist as a herculean, independent institution. Also, for the convenience of the citizens, mobile courts will be established accelerating the empowerment of justice.

In the twentieth century, the social backdrop will remarkably modify, into a salubrious, peaceful accommodation. Men and women will be treated as compeers, providing women with all the possible opportunities for excelling in every field. Crimes and violence against women will curb to a nonexistent value and women will be rewarded the respect and honor they deserve.

The society will transform into a civilization of harmony, basking in the glory of nonviolent existence. Tolerance and acceptance will be the new world policy, taking our society light years ahead of the present condition of razing and devastating wars. Every action of the people will be to protect their community from the negative shadows of violence and war. Every step taken by the future generation will be to ensure the peaceful collaboration and existence of the diversified cultures of the world, every action ensuring the betterment of the society.

I know that twenty second century may as well turn out to be the exact opposite of what I see. The world may turn into a razed, devastated and war struck zone. It may be destroyed by the hatred and violence. The world is a dynamic reaction. constantly changing and evolving. Even a flick of a finger can result in the alteration of the universe. The world is like a chemical reaction, and time, its catalyst. With time, man has made progress which today, knows no bounds. From the discovery of fire to the invention of heat engines, from the invention of the wheel to the creation of specialized combat tanks, man has travelled millions of light years. Man has the ability, the potential and the resources to create a perfect living world. A utopian, altruistic vision of today's scenario can be played out, but at man's will. Necessity is the Mother of invention. Today, as we stand on the threshold of possibilities, our social dynamic equilibrium is shifting, the necessity for a better world order becoming more prominent. We believe the necessity has started to take form, and it won't be long before the invention is made.

Watching a science fiction is one of the most thrilling experiences; the inevitability of the unknown, the exhilaration of the countless possibilities and the adrenaline rush of the expectations inexplicably exciting. We believe that the future of mankind will be nothing short of the most specialized science fiction in motion. Epicurean and life-saving inventions will dominate the boards, presenting solutions for all the seemingly insurmountable problems of the present. The potential of all the present resources will be sufficiently exploited to realize the goal of a sustainable development and to bring to life the dream of equitable distribution of opportunities.

**Miss Pallavi Mishra**

**Grand Daughter of Mr. Dubey**

(Views expressed by Surendra Nath Dubey)



## मेरे सपनों की बाइसवीं सदी....

एक विश्व सरकार एवं जय जगत

—सुरेन्द्रनाथ दुबे

### एक दिलचस्प घटनाक्रम

बीसवीं सदी के बिल्कुल अंत में जब हम इक्कीसवीं सदी के द्वार पर खड़े थे, मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल के महाराणा प्रताप नगर के विद्या भवन के छोटे से हॉल में विश्व विख्यात शिक्षाविद् और मेरे गुरु डॉ. गुलाब चौरसिया ने एक संगोष्ठी का आयोजन किया था, जिसका विषय था— ‘मेरे सपनों की इक्कीसवीं सदी’।

अधिकांश श्रोता अपनी-अपनी भावनाएँ व्यक्त कर चुके थे, तब गुरुजी ने मुझसे भी अपने विचार व्यक्त करने को कहा। मैंने पूछा, आदरणीय! सभी तो अपने विचार व्यक्त कर चुके हैं किंतु दो विचार जो पाँच दशक पूर्व सामने आये, उनका हल इक्कीसवीं सदी में तो संभव ही नहीं है। क्या मैं अपने विचार “मेरे सपनों की बाइसवीं सदी” पर व्यक्त कर सकता हूँ? मेरे गुरुजी जिनका मैं प्रियतम शिष्य रहा हूँ, ने झल्लाकर कहा— ‘तुम विषय से भटक रहे हो। तब मैंने अतिविनम्रतापूर्वक कहा— आदरणीय, मैं श्रोता सहभागियों से दो प्रश्नों का समाधान चाहता हूँ। मेरा पहला प्रश्न था— बीसवीं सदी के तीसरे-चौथे दशक में ‘एक विश्व सरकार’ के बारे में चर्चा हुई थी। क्या इक्कीसवीं सदी में भी एक विश्व सरकार बन सकती है? अधिकांश सहभागियों का उत्तर था ‘बिल्कुल नहीं’। मेरा दूसरा प्रश्न था — महात्मा गाँधी के परम शिष्य विनोबा भावे ने 1 नवम्बर, 1957 को अपनी भूदान पदयात्रा में कबाडा जिला तुमकर, कर्नाटक में एक नया जयघोष किया था “बाबा तो राष्ट्र—राष्ट्र कहता ही नहीं— जय जगत कहता है। राष्ट्र—राष्ट्र जपते रहेंगे तो लड़ाइयाँ तो चलती रहेंगी।” मैंने सहभागियों से जानना चाहा कि आदरणीय क्या इक्कीसवीं सदी में एक विश्व सरकार ‘जय जगत’ जैसे नारे दिये तो जा सकते हैं, लेकिन क्या ये जरा भी व्यवहारिक हैं? अधिकांश श्रोताओं ने तो कहा कि ये तो केवल नारे हैं, ये कभी भी व्यवहारिक नहीं होंगे। तब मैंने जोर देकर कहा था कि “नहीं, मेरे सपनों की विश्व सरकार बाइसवीं सदी में संभव हो जायेगी।” अधिकांश का मानना था कि ‘एक विश्व सरकार’ और ‘जय जगत’ सुनने में तो अच्छे लगते हैं किंतु व्यवहारिक नहीं हैं। तब मेरे गुरु डॉ. गुलाब चौरसिया ने अत्यंत प्रेम से मेरी पीठ थपथपाते हुये कहा था कि प्यारे सुरेंद्र, तुम्हारी बातों में बहुत दम है। चलो, तुम अपने सपनों की बाइसवीं सदी के बारे में ही बोलो।

26 जनवरी, 2014 को जब मुझसे पुनः कहा गया कि मैं ‘जय जगत’ और ‘मेरे सपनों की बाइसवीं सदी’ जैसे विषयों पर पुनः विस्तार से अपने विचार प्रस्तुत करूँ। तब मैं उल्लेख करना चाहूँगा कि 11 सितम्बर, 1958 को भोपाल के चौक बाजार (जामा मस्जिद) में विनोबा जयंती का कार्यक्रम था। मैं विनोबा भावे के ‘भूदान आंदोलन’ के लिए ‘जीवन दान’ के बारे में सोच रहा था, तब वहाँ उपस्थित स्व. श्री बाबू भैया ने विनोबाजी के अन्य कार्यक्रमों के बारे में कुछ कहने को कहा। तब भी मैंने दो वचन दिए थे। पहला, मैं अपने भावी जीवन में ‘बच्चों की शिक्षा’ एवं विनोबा भावे के ‘जय जगत’ के लिए कार्य करूँगा। दूसरा, पूर्व में मैंने जो बातें रखी थीं, उन पर ही विस्तार से भावी पीढ़ी से कुछ कहना चाहता हूँ। मुझसे यह भी कहा गया कि मैं अपना थोड़ा-सा परिचय भी दूँ, ताकि इन अजीबोगरीब चौंकाने वाले विषयों के बारे में ठीक प्रकार से सोचा-समझा जा सके।

मेरा नाम सुरेंद्रनाथ दुबे है। मेरी आयु 75 वर्ष है। मैंने जीवन का अधिकांश समय भोपाल (मध्यप्रदेश) में गुजारा है। मैंने अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान एवं शिक्षा में पोस्ट ग्रेजुएशन के साथ एल.एल.बी. किया है। लंबा समय तो पहले वचन के अनुसार बच्चों की शिक्षा के व्यवहारिक ज्ञान के साथ ही साथ शिक्षा नीति और शिक्षा



प्रणाली पर चिंतन करते हुए व्यतीत हुआ है, इसीलिए मैं अभी भी द्विभाषी मासिक पत्रिका 'स्कूल शिक्षा' का प्रकाशक एवं संपादक हूँ। भावी पीढ़ियों के बारे में सोचना मेरा कर्तव्य है।

सन् 1956 से 1958 तक जब मैं बी.ए. (राजनीति विज्ञान) का विद्यार्थी था, तब अध्ययन और चिंतन में कुछ ऐसे विचार मेरे सामने थे, जिनका सीधा-सीधा संबंध आज के विषय 'मेरे सपनों की बाइसवीं सदी' से भी है। विद्यार्थी रहते हुए मुझे **Our growing human family** पुस्तक पढ़ने को मिली, जिससे मुझे **shrinking world** (सिकुड़ती दुनिया) पर विचार करने का अवसर मिला। **Our growing human family** पुस्तक में बार-बार कहा गया कि संचार साधनों एवं यातायात साधनों की तीव्र तकनीकी एवं वैज्ञानिक प्रगति के कारण दुनिया सिकुड़ रही है।

अब तो लगभग पचपन वर्षों के बाद की कम्प्यूटर क्रांति, मोबाइल क्रांति और टेलिकॉन्फ्रेंसिंग, हवाई यातायात एवं सैकड़ों नई सुविधाओं के विकास के साथ दुनिया और भी ज्यादा पास-पास हो गई है अर्थात् सिकुड़ गई है। 1957-58 बी.ए. (प्रीवियस और फाइनल) में राजनीति विज्ञान के अध्ययन के दौरान मुझे अनेक मनीषियों की 'एक विश्व सरकार' **One World Government** की थ्योरी के बारे में जानने का अवसर मिला था, जो उन्होंने बीसवीं सदी के तीसरे एवं चौथे दशक में दुनिया के सामने रखी थी। यहाँ उल्लेखनीय है कि राजा महेंद्रप्रतापसिंह ने भी (स्वयं को परतंत्र भारत की निर्वासित सरकार का राष्ट्रपति तथा बरकतउल्लाह भोपाली को प्रधानमंत्री घोषित किया था) तब इसी प्रकार के विचार भी रखे थे।

'एक विश्व सरकार' का विचार तो आज भी पूरी तरह से अव्यवहारिक दिखाई देता है। जब सभी राष्ट्र अपने को एक-दूसरे से ऊँचा बनाने और उठाने में लगे हैं, तब यह कल्पना करना कितना कठिन है कि वे अपनी तथा अपने राष्ट्र की सार्वभौम सत्ता को किसी विश्व सरकार में समाहित कर देंगे।

बीसवीं सदी ने ही तो प्रथम विश्व महायुद्ध तथा द्वितीय विश्व महायुद्ध देखा था। इसी सदी के महापुरुष महात्मा गाँधी के प्रिय शिष्य आचार्य विनोबा भावे ने तो अंदरूनी चल रहा तीसरा विश्व शीतयुद्ध जो रूस, सोवियत संघ और अमेरिका के नेतृत्व में चला था, को देखकर और घोर राष्ट्रवादी ताकतों के आपसी संघर्ष को पहचानकर गांधीवादी विचारों के आधार पर ही 1 नवंबर, 1957 को घोषित किया कि 'बाबा तो राष्ट्र-राष्ट्र कहता ही नहीं, जय जगत कहता है। राष्ट्र-राष्ट्र जपते रहोगे तो लड़ाइयाँ चलती रहेंगी।' विनोबाजी का विचार था कि एक दिन सारी दुनिया को विश्व शांति के लिए 'जय जगत' कहना होगा।

विनोबा भावे के इस सन्तावन वर्ष पूर्व किए गए उद्घोष के बाद आज 26 जनवरी, 2014 को हम क्या स्थिति देख रहे हैं! आज सभी राष्ट्र अपनी राष्ट्रीयता को आगे बढ़ाते हुए अपनी-अपनी सामरिक ताकत को बढ़ाने में लगे हुए हैं। आज भी चीन, अमेरिका, रूस, यूरोप, अफ्रीका एवं भारत समेत दुनिया के लगभग सभी राष्ट्र अपनी सीमाओं की रक्षा करने के लिए सैन्य शक्ति संपन्न बन रहे हैं। आज भी राष्ट्रीयता की भावना के सामने 'एक विश्व सरकार', 'जय जगत', 'वसुधैव कुटुंबकम्' इत्यादि केवल आदर्श के रूप में ही हमारे सामने हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ एवं अन्य राष्ट्रीय संस्थाएँ महत्वपूर्ण होते हुए भी राष्ट्रीय भावनाओं के सामने बहुत कमजोर दिखाई देती हैं। इन संस्थाओं पर भी विभिन्न राष्ट्र अपना वर्चस्व बनाए रखना चाहते हैं। **ऐसी स्थिति में भी 'एक विश्व सरकार' का विचार और 'जय जगत' का उद्घोष केवल उच्च आदर्श बनकर रह गए हैं।**

हालांकि, पिछले दो-तीन दशकों में मैंने मोबाइल क्रांति, कम्प्यूटर क्रांति, टेलिकॉन्फ्रेंसिंग, यातायात एवं परिवहन की जो तीव्र व तकनीकी क्रांति देखी है, उससे यह लगता है कि अभी तो नहीं किंतु अगले आठ-दस दशकों में दुनिया सचमुच सिकुड़कर इतने पास आ जाएगी कि कोई भी राष्ट्र कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो,



## जय जगत

अपनी आवश्यकताओं के लिए दूसरों पर निर्भर बनेगा। तकनीकी क्रांति ने जहाँ मानव के सुख और कल्याण के साधन जुटाए हैं, वहीं राष्ट्रीयता की भावना के साथ सैन्य शक्ति बढ़ाने के लिए विनाश के साधन भी जुटाए जा रहे हैं। हाँ, इतना जरूर है कि विनाश के साधनों का लगभग समान बंटवारा हो जाने के कारण

बाइसवीं सदी में पहुंचते पहुंचते—अस्त्र शस्त्र एवं विध्वंश के साधन भी इतने अधिक विकशित होंगे कि व्यक्ति, व्यक्ति एवं सामाजिक द्वेष के कारण बदला लेने का विभत्स रूप होगा सभी राष्ट्र यह भी तो जान रहे हैं कि वे भी तो युद्ध की विभाषिका का शिकार बनेंगे ही। 'यही तो आशा की एक किरण है', जिसके कारण मैं यह विचार दुनिया के सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ कि आने वाली पीढ़ियों को आपसी प्रेम एवं प्राणीमात्र के प्रति दया एवं करुणा को अपनाना जरूरी हो जाएगा। बाइसवीं सदी में अहिंसा का मार्ग अपनाकर 'मानव कल्याण', 'विश्व कल्याण', 'एक विश्व सरकार' की सदी बनाएँगी और बाबा विनोबा का 1 नवंबर 1957 को 'जय जगत' का दिया गया उद्घोष सफलीभूत करने का काम भी आने वाली पीढ़ियों को ही करना होगा।

### आने वाली पीढ़ी

बाइसवीं सदी की मेरे सपनों की दुनिया कैसी होगी?— तब मेरे सामने हास्य—व्यंग्य के रूप में एक प्रश्न रखा गया था कि 'आप तो क्या आपके पोते—पोतियाँ भी' इसे देख पाने के लिए दुनिया में नहीं होंगे— तब जनाब आप कौन सी पीढ़ी की बात कर रहे हैं? मैं बिलकुल ही हास—परिहास एवं व्यंग्य के रूप में इसका उत्तर देना चाहता हूँ। मेरे इस उत्तर में न तो कोई वैज्ञानिक प्रमाण या तर्क है और न ही मैं इसे मानता भी हूँ। एक बार जब होली का त्योहार था— भारतीयों की अनेक परंपराओं के अनुसार छोटे बच्चे भी बड़ों के माथे पर गुलाल का टीका लगाकर उनका आशीर्वाद लेते हैं। मेरे पौत्र—पौत्रियों ने भी मेरे माथे पर गुलाल का टीका लगाया, मैंने उन्हें आशीर्वाद तो दिया किंतु हास—परिहास में मैंने उनसे कहा कि परंपरानुसार मैं आज तुम्हें वापिस टीका नहीं लगाऊँगा। शास्त्रों—धर्मग्रंथों की अतार्किक व्याख्याओं के अनुसार हाँ, मैं तुम्हारी पोती के रूप में पुनर्जन्म लेकर तुम्हें गुलाल का टीका लगाऊँगा। मेरा आशय केवल इतना है कि मेरे वर्तमान के **grand children** के **grand children** ही बाइसवीं सदी का सुखोपभोग कर रहे होंगे, जिसके बारे में, मैं अपने विचार व्यक्त कर रहा हूँ।

यहाँ मैं केवल बाइसवीं सदी की उस अच्छी दुनिया के बारे में चर्चा करूँगा, जो मानव कल्याण में सहायक हो सकेगी तथा यही दुनिया तो शास्त्रों में उल्लेखित तथा कथित सतयुग की दुनिया होगी।

आज से सत्तर साल पहले संचार साधन, यातायात के साधन, बीमारियों से लड़ने के साधन, शौच के स्थान, ईंधन इत्यादि की जो स्थिति थी, वो आज नहीं है। उसमें मैंने एक क्रांतिकारी परिवर्तन देखा है। आज मोबाइल फोन की सुविधा, कम्प्यूटर की सुविधा, बिजली की परिवर्तित सुविधा, टेलीविजन—टेलिकॉन्फ्रेंसिंग ने तो रहन—सहन को बदलकर ही रख दिया है। सारी दुनिया में सत्तर वर्ष के पूर्व की औसत आयु से आज की औसत आयु में बड़ा परिवर्तन आ गया है। सैकड़ों चमत्कारिक परिवर्तनों को देखने, भोगने के बाद नौ या दस दशक बाद की दुनिया की तो केवल कल्पना ही की जा सकती है। प्रतिदिन नये—नये आविष्कारों के बारे में सुनता हूँ, जिससे मनुष्य की भौतिक जिंदगी बदल रही है इसलिए मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि हजारों साल पहले हमने जो 'वसुधैव कुटुंबकम्' कहा तो था, लेकिन कार्य उसके विपरीत किया तो अब आने वाली पीढ़ी को 'वसुधैव कुटुंबकम्' को व्यवहारिक रूप देना होगा। मानव सभ्यता के प्रारंभिक ग्रंथ में भी कहा गया था —

'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे संतु निरामयः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःख भाव भवेत्।'

मेरा दृढ़ विचार है कि आज नहीं तो बाइसवीं सदी की पीढ़ी को तो उपरोक्त कथन को व्यवहारिक रूप देना ही होगा। हमारे सम्पूर्ण जीवन जीने का स्वरूप विज्ञान सम्मत और तर्क सम्मत होगा।



### अहिंसा आधारित समाज

समाज अहिंसक बनने के लिए बाध्य होगा

आज की दुनिया हिंसा से इतनी अधिक पीड़ित हो गई है कि इसका विकल्प तुरंत ही खोजा जाना जरूरी है। आने वाली पीढ़ी इसके लिए बहुत चिंतित होगी और तब हजारों वर्ष पूर्व बुद्ध, ईसा, महावीर एवं पैगम्बरों के प्रेम और अहिंसा के सिद्धांतों को स्वीकार करना ही होगा। बीसवीं सदी के सबसे महान, अहिंसा क्रांति करने वाले और 'अहिंसा परमोधर्म' के स्वरूप को सही ढंग से संसार के सामने रखने वाले भारत के महात्मा गाँधी के सिद्धांतों और कार्यक्रमों को व्यापक समर्थन प्राप्त होकर आने वाली दुनिया अहिंसक क्रांति की ओर अग्रसर होने के लिए मजबूर होगी। मार्टिन लूथर किंग 1 एवं 2, नेल्सन मंडेला एवं अनेक मनीषियों के विचारों को भी भावी पीढ़ी स्वीकार करेगी। वास्तव में आज दुनिया अहिंसा की ओर ही तेजी से बढ़ रही है। विज्ञान की प्रगति ने मनुष्य के सामने एक ऐसी स्थिति पैदा कर दी है, जो पहले कभी नहीं थी। हिंसा के साधन तो हजारों वर्ष से मौजूद थे, किंतु अब तो ऐसे अस्त्र-शस्त्र आ गये हैं और भविष्य में आ जायेंगे कि सारी मानव जाति कुछ घंटों में ही समाप्त हो जायेगी। यदि हम विश्व मानवता का संहार नहीं चाहते तो अब अहिंसक समाज की रचना करनी जरूरी है। बाइसवीं सदी में हिंसा बीते जमाने की बात हो जायेगी, तब गाँधीजी की अहिंसा दुनिया के लिए और अधिक अनुकूल होगी। हम भारतीय जो उनके अनुयायी कहलाते हैं, उन्हें गाँधीजी की वीरों की शक्ति-सहन शक्ति की अहिंसा को समझना होगा। सभी सामाजिक सवाल केवल अहिंसा से ही हल हो सकते हैं, आने वाली पीढ़ी इसे समझने के लिए बाध्य होगी। राजनीति की जगह भी विज्ञान ले लें, इसीलिए सारी दुनिया एक होगी। हमें अब यह कहना-सीखना होगा कि 'सारी दुनिया के हित में ही मेरा हित है'। मानव-मानव में प्राणी मात्र के लिये करुणा का भाव जाग्रत करना होगा।

### एक विश्व सरकार

बहुत से मनीषियों ने बीसवीं सदी के प्रारंभ में और मध्य में ही एक विश्व सरकार के बारे में विचार व्यक्त कर दिये थे किंतु यह केवल एक स्थूल विचार ही बना रहा। इक्कीसवीं सदी में भी एक विश्व सरकार की स्थापना की संभावना कम ही है। हाँ, मैं इतना जानता हूँ कि तेजी से बदलती हुई परिस्थितियाँ बाइसवीं सदी के पूर्व ही एक विश्व सरकार की ओर सोचने और कार्य करने के लिए मजबूर करेंगी और मुझे पूरा विश्वास भी है कि भावी पीढ़ियाँ बाइसवीं सदी में एक विश्व सरकार की स्थापना कर पाएंगी।

एक विश्व सरकार कैसे बनेगी, कैसे काम करेगी इत्यादि के बारे में अभी से विचार करना होगा। बाइसवीं सदी में तो राष्ट्रीयता का स्वरूप बिल्कुल ही बदल जायेगा। इसीलिए हमारे भावी बच्चे राष्ट्र-राष्ट्र जपने की बजाय विनोबा भावे के 'जय जगत' का उद्घोष करने के लिए बाध्य होंगे। एक दिन विनोबा भावे ने 'जय जगत' का नारा देते हुए कहा था कि "15 साल पहले जो जयहिंद का नारा निकला था, वह अब जय जगत तक आ निकला है। दुनिया में वेग से विचार आगे बढ़ रहे हैं, धीरे-धीरे सभी देशों की सरहदें टूटने वाली हैं और अब विश्व को एक परिवार बनाने की संभावनाएं बढ़ रही हैं। भावना विशाल हो रही हैं, इसलिए भविष्य में हमारा मंत्र 'जय जगत' ही होगा।" मेरा तो मत है कि विनोबा भावे का उपरोक्त उद्घोष बाइसवीं सदी में साकार रूप धारण करेगा। विश्व सरकार का स्वरूप लोकतांत्रिक होगा, वैसे ही जैसे गणतंत्र राष्ट्रों में जनता की राय से सरकारें चलती हैं। उसी प्रकार से एक विश्व सरकार के लिए



प्रतिनिधियों के चयन का एक अलग ही प्रजातांत्रिक स्वरूप भी होगा। हमारा अनुमान है कि इसके लिए एक चुनी हुई प्रतिनिधि सभा होगी, जिसका कार्यकाल 5 वर्ष हो सकता है तथा शनैः—शनैः इसका स्वरूप एक विश्व सरकार की तरह बनेगा। मैं केवल यह सब सोचकर कि 'विश्व सरकार प्रजातांत्रिक सरकार होगी' शेष निर्णय भावी पीढ़ी पर छोड़ता हूँ, जो वो स्वयं कर लेगी। एक विश्व सरकार की ज्वलंत समस्याएँ निम्नानुसार हो सकती हैं —

**1. एक विश्व नागरिकता:-** बाइसवीं सदी के प्रारंभ में नई पीढ़ी एक नई विश्व व्यवस्था के लिए तैयार हो चुकी होगी और तब यातायात एवं संचार साधनों के कारण इस सिकुड़ती दुनिया में सभी राष्ट्रों के नागरिक अन्य राष्ट्रों के नागरिकों से बहुत अधिक घुल-मिल जायेंगे और करोड़ों लोग प्रतिदिन अपनी आवश्यकताओं के लिए एक देश से दूसरे देश में आते-जाते रहेंगे। तभी राष्ट्रीय नागरिकता के साथ विश्व नागरिकता की आवश्यकता होगी ही और इस तरह संसार के सभी राष्ट्रों के नागरिक दोहरी नागरिकता प्राप्त करेंगे। एक, विश्व नागरिकता और दूसरी, राष्ट्रीय नागरिकता। यह विश्व नागरिकता, विश्व सरकार की देन होगी, जिसके बारे में आगे वर्णन किया जायेगा।

**2. मानव अधिकारों का संरक्षण विश्व सरकार द्वारा भी:-** 10 दिसम्बर, 1948 को संयुक्त राष्ट्रसंघ ने जिन मानव अधिकारों की घोषणा की थी तथा 1993 में उन्हें पुनः स्वीकृत किया था, उनका वही स्वरूप आज भी उचित ही है। किंतु अभी तो इन्हें लागू करने के लिए राष्ट्रों की सरकारों को ही दायित्व सौंपा गया है। संयुक्त राष्ट्रसंघ और अंतरराष्ट्रीय न्यायालय को बहुत ही कम अधिकार प्राप्त हैं, लेकिन बाइसवीं सदी में वर्तमान मानव अधिकार मौलिक अधिकार का स्वरूप ग्रहण कर लेंगे और 'विश्व सरकार' (जो संयुक्त राष्ट्रसंघ का स्थान ग्रहण करेगी) उसे मानव अधिकारों को लागू कराने के लिए व्यापक अधिकार प्राप्त होंगे, जो आज राष्ट्रीय सरकारों के पास होते हैं।

**3. अंतरराष्ट्रीय न्यायालय एक विश्व न्यायालय:-** अंतरराष्ट्रीय न्यायालय का स्वरूप बिल्कुल बदल जायेगा और इसे राष्ट्रों के उच्चतम न्यायालयों के समान अधिकार प्राप्त होंगे और संसार के सभी देशों के नागरिक सीढ़ी-दर-सीढ़ी इस न्यायालय में भी अपने अधिकारों की रक्षा के लिए पहुँच सकेंगे। राष्ट्रों के उच्चतम न्यायालय कुछ मामलों में इस विश्व न्यायालय के अधीनस्थ कार्य करेंगे।

**4. रक्षा व्यवस्था:-** राष्ट्रों की सीमाएँ अत्यंत लचीली होंगी, इसलिए राष्ट्रीय सुरक्षा की व्यवस्था बहुत कम होगी या बदल जायेगी। लेकिन रक्षा सेनाएँ तो रहेंगी। थल सेना, वायु सेना एवं जल सेना सीधी विश्व सरकार के अधीनस्थ होंगी। चूँकि प्रत्येक नागरिक के प्राण की रक्षा का दायित्व विश्व सरकार का होगा, जिसकी गारंटी भी वही देगी इसीलिए रक्षा व्यवस्था का नियंत्रण मुख्य रूप से विश्व सरकार के पास होगा। वर्तमान में जो अत्यंत घातक हथियार राष्ट्रों के पास हैं, उनको शून्य करने का प्रयास किया जायेगा। एक देश से दूसरे देश की लड़ाई के काम आने वाली युद्ध सामग्री का निर्माण अपने आप बंद हो जायेगा। जो रक्षा संसाधन के केंद्र हैं, उनमें 80 प्रतिशत से अधिक उत्पादन मानव कल्याण के लिये होगा। इस तरह वर्तमान रक्षा व्यवस्था राष्ट्रों की बजाय 'विश्व सरकार' द्वारा की जायेगी।

**5. मूलभूत आवश्यकताएँ:-** भोजन, पानी, वस्त्र एवं स्वच्छ आवास की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति की गारंटी विश्व सरकार देगी और इस तरह विश्व के किसी भी कोने में भूख से मौत नहीं होगी। प्रत्येक नागरिक के लिए पीने के स्वच्छ पानी की व्यवस्था होगी। शरीर ढंकने के लिए आवश्यक वस्त्र और रहने के लिए उचित आवास है या नहीं यह भी विश्व सरकार ही देखेगी।



करेगी तथा कुछ मामलों में इनका नियंत्रण भी विश्व सरकार के पास होगा। जीरो से सोलह वर्ष तक के बालक—बालिकाओं की अनिवार्य शिक्षा व्यवस्था करने के लिए विश्व सरकार निर्देश देगी और आवश्यकता अनुसार नियंत्रण भी करेगी। विश्व सरकार देखेगी कि बच्चों में 'विश्व बंधुत्व' और 'विश्व कल्याण' की भावना विकसित हो। 14 वर्ष तक के बालक—बालिकाओं की शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय भाषाएँ होंगी। इस प्रकार बच्चों की शिक्षा व्यवस्था बाल मनोविज्ञान के सिद्धांतों पर आधारित होगी। 11+ के बाद ही बालक—बालिकाओं को अंतरराष्ट्रीय संबंधों के लिए एक विश्व भाषा के लिए तैयार किया जायेगा। प्रारंभिक शिक्षा के स्तर पर भाषा, गणित, पर्यावरण अध्ययन, खेल और शारीरिक व्यायाम एवं कौशलों का ज्ञान भी सारे संसार में सभी बच्चों के लिए अनिवार्य होगा। बच्चों को पर्यावरण की रक्षा के लिए तैयार किया जायेगा। अर्जित कौशलों और शारीरिक श्रम को शिक्षा में मान्यता मिलेगी।

**7. मानक अंकः—** सारे संसार में एक सी दशमिक प्रणाली को स्वीकार कर शून्य तथा 1 से 9 तक के अंकों का स्वरूप एक सा होगा और इस तरह अंक अंतरराष्ट्रीय होंगे और सारे संसार के लिए एक से होंगे। सभी नागरिक इसे सुविधाजनक मानकर लाभान्वित ही होंगे। सभी मनुष्यों के हाथों में दस अंगुलियां होती हैं और प्रकृति का ये वरदान ही हमें गणित की दशमिक प्रणाली स्वीकार करने का संदेश देता है मानक कैलेण्डर। आज भी लगभग सारी दुनिया के अधिकांश कार्य ग्रेगोरियन कैलेण्डर के अनुसार ही होते हैं—यही व्यवहारिक कैलेण्डर विश्व का मानक कैलेण्डर बना रहेगा।

**8. यातायात की सुविधाएँः—** अंतरराष्ट्रीय स्वरूप के यातायात पर विश्व सरकार का नियंत्रण होगा तथा विश्व सरकार यह देखेगी कि दुनिया के प्रत्येक कोने—कोने में हवाई जहाज सुलभतापूर्वक पहुँच सकें। संसार के सभी भागों में आज से सौ गुना अधिक वायुयान एवं हेलिकॉप्टर तथा अन्य प्रकार के यातायात की नई सुविधाओं का विकास होगा। आकाशीय मार्ग और यात्राओं में चमत्कारिक परिवर्तन होंगे, इसलिए आकाशीय यातायात के अधिकांश अधिकार विश्व सरकार के अधीन होंगे। सैटेलाइट्स इत्यादि में आश्चर्यजनक परिवर्तन होगा।

**9. संचार के साधनः—** संचार के साधनों में क्रांतिकारी परिवर्तन हो जायेंगे और इसीलिए अंतरराष्ट्रीय स्वरूप की संचार व्यवस्थाओं पर स्वाभाविक रूप से विश्व सरकार का भी नियंत्रण होगा। कम्प्यूटर विज्ञान में आश्चर्यजनक विकास होगा। जीवन इलेक्ट्रॉनिक आधारित बनेगा।

**10. समुद्र जलः—** आज दुनिया के राष्ट्र समुद्रों के अधिकार के लिए आपस में लड़ते हैं चूंकि सभी समुद्र एक देश से दूसरे देश को जोड़ते हैं, इसलिए समुद्र जल पर और समुद्री यातायात पर विश्व सरकार का सीधा नियंत्रण होगा।

**11. कार्बन उत्सर्जन पर व्यापक रोकः—** आज सारी दुनिया कार्बन उत्सर्जन और औद्योगिक प्रदूषण से पूरी तरह त्रसित है। इसको रोकने के लिए विश्व सरकार व्यापक उपाय करेगी। आने वाली दुनिया में विद्युत उत्पादन का स्वरूप बदल जायेगा। इसीलिए विश्व सरकार प्रदूषण रोकने में अपने आप सक्षम हो जायेगी। तेल और कार्बन का उपयोग स्वतः ही कम होगा।

**12. प्रदूषण को रोकनाः—** अन्य प्रकार के प्रदूषणों को रोकने के लिए भी विश्व सरकार को व्यापक अधिकार दिये जायेंगे और विश्व सरकार सभी राष्ट्रों को प्रदूषण रोकने के लिए निर्देश तथा सलाह देगी।



**13. एक विश्व मुद्रा अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष:-** वर्तमान में स्थापित आईएमएफ को अधिक शक्तियाँ देकर डॉलर जैसी एक 'विश्व मुद्रा' को मान्यता मिलेगी। ये सभी प्रकार के कार्यों में समन्वय का कार्य करेगी। वैसे तो इतनी अधिक तकनीकी प्रगति के बाद कागजी मुद्रा का लगभग लोप ही हो जायेगा और वर्तमान में प्रचलित क्रेडिट कार्ड एवं इंटरनेट बैंकिंग का स्वरूप और विकसित होकर एक अलग प्रकार की मुद्रा दुनिया में बन जायेगी। ई अकाउंटिंग का आश्चर्यजनक विस्तार होगा।

**14. विश्व बैंक:-** वर्तमान विश्व बैंक को और व्यापक अधिकार प्राप्त होंगे तथा इसका स्वरूप बिल्कुल बदल जायेगा। राष्ट्रों के सभी केंद्रीय बैंक, विश्व बैंक के निर्देशानुसार भी बहुत से कार्य करेंगे। मैंने श्री संजय से विस्तृत चर्चा के बाद एक लेख प्रस्तुत करने को कहा था, जो इस लेख के साथ संलग्न है।

**15. अंतरराष्ट्रीय भाषा:-** बाइसवीं सदी में अंग्रेजी का व्यापक विस्तार होने के कारण यह विश्व सरकार की भाषा बनेगी तथा उससे एक अत्यंत उल्लेखनीय कार्य यह होगा कि स्थानीय और क्षेत्रीय स्तर पर क्षेत्रीय भाषाओं को और अधिक महत्व मिलेगा और वर्तमान भाषाई गुलामी के स्थान पर राष्ट्रों और विभिन्न क्षेत्रों में क्षेत्रीय भाषा और मातृभाषा को आज के मुकाबले ज्यादा महत्व मिलेगा, क्योंकि सभी मनोवैज्ञानिक तर्कों के अनुसार व्यक्ति को सबसे पहले मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में ही शिक्षा दी जा सकती है, और दैनिक कार्यों के लिए उसकी भाषा में ही उससे बात की जा सकती है, जो लोग यदि यह सोच रहे हैं कि अंग्रेजी भाषा की गुलामी और बढ़ जायेगी, वे शायद सही नहीं सोच पा रहे हैं। विकास और प्रगति के लिये क्षेत्रीय भाषा को भी व्यापक महत्व मिलेगा।

**16. ऊर्जा स्रोत:-** बाइसवीं सदी में ऊर्जा के नये वैकल्पिक स्रोत खोज लिये जायेंगे। अधिकांशतः सौर ऊर्जा पर ही निर्भरता बढ़ेगी, जिससे कार्बन उत्सर्जन कम होगा। खनिज तेल और कोयले के भंडार बहुत कम हो जाने के कारण इनका उपयोग बंद करने की बाध्यता होगी और इसलिए स्वाभाविक रूप से कार्बन उत्सर्जन और प्रदूषण कम होगा। वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों का चमत्कारिक विकास होगा। भारतवर्ष में अधिकांश उत्सवधर्मी कार्य सूर्योदय से शुरू और सूर्यास्त के पूर्व संपन्न कर लिये जाते थे, हालाँकि उस समय विद्युत का चलन नहीं था। लेकिन इसके बाद भी कार्बन उत्सर्जन कम करने के लिए हमें आज भी उन पुरानी परंपराओं को अपनाना होगा। सारी दुनिया में दुकानें एवं बाजार खुलने और बंद करने का निश्चित समय होगा और इस पर कड़ाई से पालन किया जायेगा। सभी दुकानें एवं बाजार इत्यादि सूर्योदय के बाद शुरू करके सूर्यास्त के पूर्व बंद किये जाने से पेट्रोल की खपत में कमी आयेगी और इस तरह कार्बन उत्सर्जन कम होगा। हाल ही में तो पेरिस में एक दिन छोड़कर पेट्रोल और डीजल वाहन चलाने का निर्णय हुआ है। हम तो चाहते हैं कि इक्कीसवीं सदी से ही हम पेट्रोल, डीजल और कोयले पर निर्भरता कम करने के लिए जीवन पद्धति में परिवर्तन करें और बाइसवीं सदी में तो यह करना ही पड़ेगा। विश्व सरकार इस पर ध्यान देगी।

### बाइसवीं सदी में मानव धर्म एक विश्व धर्म

बाइसवीं सदी में आने वाली पीढ़ी का दृष्टिकोण अत्यंत व्यापक होगा। हमारा जीवन विज्ञान सम्मत एवं तर्क सम्मत होगा, इसलिए वर्तमान धर्म का स्वरूप भी बदलना होगा और भावी पीढ़ी इसे कर भी पायेगी। आज तो सारी दुनिया में अधिकांश झगड़े धर्म के नाम पर ही हो रहे हैं। अधिकांश स्थानों पर धर्म के सच्चे स्वरूप को न समझकर संकुचित और पुराणपंथी परंपराओं में लोग जकड़े हुए हैं। भावी पीढ़ी इसे सहन नहीं करेगी और इस तरह महात्मा गाँधी के बताये हुए मार्ग के अनुसार 'एक मानव धर्म स्वीकार

करने की आवश्यकता होगी।' भावी पीढ़ी स्वयं सर्वधर्मसंभाव एवं सर्वधर्मममभाव को स्वीकार कर एक नये प्रकार के वैश्विक धर्म को स्वीकार करने के लिए बाध्य होगी। छात्र-छात्राओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित हो जायेगा। अंधविश्वास, धार्मिक पाखंड, धार्मिक कुरीतियाँ, धर्मान्धता, गलत रीति-रिवाज, आडंबर, दिखावे एवं धार्मिक विद्वेष के खिलाफ नई पीढ़ी में स्वाभाविक रूप से एक नई चेतना जाग्रत होगी। केवल दिखावे के लिए या अपने वैभव प्रदर्शन के लिए जो लोग धर्म की आड़ लेते हैं, उनके खिलाफ नई पीढ़ी जागृत होगी। हम जान लें कि धर्म की आड़ लेकर झूठी नैतिकता को भावी पीढ़ी स्वीकार नहीं कर पाएगी।

### **ऑडियो विजुअल एवं प्रिंट मीडिया का विकास (इ-आधारित)**

बाइसवीं सदी में प्रत्येक व्यक्ति को टेलीफोन, फ़ैक्स, इंटरनेट, मोबाइल फोन इत्यादि की सुविधा स्वाभाविक रूप से प्राप्त हो जायेगी। अधिकांश संदेश, आदेश इत्यादि इलेक्ट्रॉनिक मेल द्वारा ही भेजे जायेंगे। दूरस्थ ग्राम एवं क्षेत्र भी क्लोस्ड सर्किट टीवी से जुड़कर सूचना तंत्र अत्यंत विकसित हो जायेगा। क्लोस्ड सर्किट टीवी का आश्चर्यजनक विकास होगा। वर्तमान टेलीविजन का स्वरूप ही बदल जायेगा। प्रिंट मीडिया में तो आश्चर्यजनक परिवर्तन हो जायेंगे। वर्तमान पुस्तकों और छपाई का स्वरूप बदलकर माइक्रो एवं मेक्रो चिप्स (काड्स) उपलब्ध हो सकेंगे। आज के मुकाबले अत्यंत परिष्कृत कंप्यूटर, लैपटॉप इत्यादि सभी को आसानी से उपलब्ध होंगे और इस प्रकार सूचना संसार में क्रांतिकारी परिवर्तन होंगे। कुछ ऐसा भी होगा, जिसकी शायद हम अभी कल्पना भी नहीं कर पा रहे।

### **खुला व्यापार**

आज अंतरराष्ट्रीय व्यापार का जो स्वरूप है, वह बाइसवीं सदी में बिल्कुल बदला हुआ होगा। प्रत्येक व्यक्ति अपनी साधारण से साधारण आवश्यकताओं के लिए दूरस्थ क्षेत्रों के लोगों पर निर्भर करेगा। उपभोग और उपलब्धता का स्वरूप भी बदल जायेगा। विनिमय का स्वरूप बदल जायेगा, अंतरराष्ट्रीय व्यापार का स्वरूप बिल्कुल ही भिन्न हो जायेगा। व्यापार में राष्ट्रीय सीमाएं पूरी तरह शिथिल हो जायेंगी। आज के आयात और निर्यात का स्वरूप पूरी तरह बदला हुआ होगा।

### **कागज रहित व्यवस्था**

आज की पीढ़ी कागज रहित व्यवस्था के अनुसार कार्य करने लगी है। नौ दशक के बाद तो आज के कागज की आवश्यकता का स्वरूप बिल्कुल ही बदल जावेगा। यह ई-आधारित व्यवस्था होगी।

### **नशा निषेध**

आज जो नशे की स्थिति है, हो सकता है कि आधी सदी बाद वह और भी बुरा रूप धारण कर ले, लेकिन यह निश्चय है कि बाइसवीं सदी में विश्व सरकार नशा निषेध के लिए व्यापक कार्य करने को बाध्य होगी। तम्बाकू का प्रयोग नियंत्रित होगा। सभी प्रकार के नशों के बारे में तथा उनके दुष्प्रभावों से परेशान होकर इसके खिलाफ जन जागृति आयेगी।

### **अब अपमान सहन नहीं करेंगे गरीब**

उन्नीसवीं सदी से लगातार गरीब, अमीर की खाई को पाटने के लिए बहुत सारे सिद्धांत सामने आये, बहुत प्रयास हुये, लेकिन उल्टा ही हुआ। आज की दुनिया में गरीब, अमीर की खाई बढ़ गई है। हो सकता है कि इक्कीसवीं सदी में और बढ़ जाये किंतु यह तो तय है कि गरीब भविष्य में अपमान सहन नहीं करेगा। वैभव प्रदर्शन अपमानित होगा। शताब्दियों से व्यक्ति के 'त्याग' का महत्व रहा है



और यह निश्चित है कि भावी पीढ़ी त्याग को सम्मानित करने के लिए बाध्य होगी। ऐश्वर्य, वैभव, शानो-शोकत, हिंसा, मार-पीट, अपराध, अपमानित होंगे और सादगी, त्याग और रचनात्मकता ही सम्मानित होगी। गरीब का मजाक उड़ाने वाले प्रदर्शनों के खिलाफ कठोर कार्रवाही होगी।

### शिक्षा, विश्व कल्याण के लिए

प्रारंभिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक का स्वरूप पूरी तरह बदल जायेगा। सभी को शिक्षा प्राप्त होगी। कम से कम प्रारंभिक स्तर की शिक्षा तो प्रत्येक व्यक्ति को उपलब्ध होगी। शिक्षा में कौशल को महत्व मिलेगा। ज्ञान और विज्ञान सम्मानित होंगे। जो लोग शोध करेंगे, विशेष रूप से विश्व शांति के लिए शिक्षित होंगे तथा विश्व कल्याण के लिए कार्य करेंगे, वे ही सच्चे शिक्षित कहलायेंगे और सम्मानित भी होंगे। शिक्षा में कौशलों का स्वरूप बदलेगा तथा कुशल लोग सम्मानित होंगे। शिक्षा विज्ञान सम्मत और तर्क सम्मत होगी।

### स्वास्थ्य का स्वरूप

बाइसवीं सदी में स्वास्थ्य सेवा का स्वरूप ही बदल जायेगा। शरीर की रक्षा और व्यक्ति के अच्छे स्वास्थ्य के लिए अत्यंत नये साधन उपलब्ध होंगे। आज के अस्पताल और विकसित होंगे। प्रत्येक व्यक्ति को प्रारंभिक स्वास्थ्य की सुविधाएं उपलब्ध होंगी। प्रारंभिक स्वास्थ्य सुविधाओं से व्यक्ति को वंचित रखना अपराध की श्रेणी में आयेगा। औसत आयु में वृद्धि होगी, परिवार कल्याण एवं परिवार नियोजन की विशेष समझ बढ़ेगी। इसका स्वरूप बिल्कुल बदला हुआ होगा।

### आवास एवं रहन-सहन

अभी तक आवास और रहन-सहन के मामले में एक बड़ी आबादी नारकीय जीवन बिताती रही है। आज कुछ लोगों को तो शौच सुविधाओं के लिए नारकीय जीवन बिताना पड़ रहा है। मेरा मत है कि जिसे हम नर्क कहते हैं, इक्कीसवीं शताब्दी तक भोग रहे हैं और भोगेंगे, वह बाइसवीं सदी में पूरी तरह बदल जायेगा। प्रत्येक व्यक्ति को शौच की, पहनने इत्यादि की तथा सुख से आवास में रहने की सुविधाएँ प्राप्त होंगी। इस लेखक का मत है कि जो आज अस्वच्छता का नरक है, वही तो स्वच्छता के स्वर्ग में तब्दील हो जायेगा और इसीलिए मैं कहना चाहता हूँ कि बाइसवीं सदी, इक्कीसवीं सदी तक के नरक भोगने के बाद सचमुच स्वर्ग की सदी होगी। हम व्यर्थ की बहस में न पड़ें और हम स्वीकार करें कि रहन-सहन की मूलभूत तब्दीलियों के कारण हम तथाकथित नरक की जगह तथाकथित स्वर्ग जैसी सुविधाएँ प्राप्त कर रहे होंगे। नारी जाति को समाज में सम्मान प्राप्त होगा। नवनिर्माण में वे पुरुषों से भी अधिक अच्छा कार्य कर पायेंगी। उनकी ताकत बढ़ेगी। कुप्रथाओं का अन्त होगा।

### बायोमैट्रिक अंक

जन्म के साथ ही प्रत्येक नागरिक को एक अन्तरराष्ट्रीय बायोमैट्रिक नंबर मिलेगा, जो पहचान तथा पासपोर्ट, वीजा एवं अन्य प्रकार के कागजों का स्थान लेगा। किन्तु इस चिप को सुरक्षित बनाया जाएगा। व्यक्ति की प्रायवेसी रहेगी। हर जगह आइडेन्टीफिकेशन इत्यादि शरीर को देखकर हो जाएगा।

—स्वप्नदर्शी  
सुरेंद्रनाथ दुबे

# One World Government

## Dream or coming reality of twenty second century

- Surendra Nath Dubey

### An Interesting Episode

I do not know whether you agree the dream of twenty second century what I have seen, it is dream to all but I am sure of converting this dream into reality. I have seen it at the time when the world was talking about 21st century. I had shared my dream in a meeting of the scholars organised by my Guru, noted educationist Gulab Chaurasia, at a small hall in Vidhya Bhawan, Maharana Pratap Nagar, Bhopal in December 1999. Most of the participants had expressed their views on education, social-economic conditions and other issues, I was also one of the participants. In the end Dr. Chaurasia asked me to speak on education of 21st century. I humbly accepted his order but sought permission to speak on 22nd century of my dream.

I was one of the loving disciples of my Guru Dr. Chaurasia. He first asked me about drifting from the given topic. I humbly told him that I want answer for my two questions from the audience, I was permitted to do so. I raised the idea of "One World Government" in third decade of 21st century. Most of the participants and audiences out rightly rejected idea of one world government, saying "Never". My second question, Saint Vinobha Bhawe, follower of Mahatma Gandhi, who had raised a slogan of 'JAI JAGAT' in a conclave during his "Bhoodan Padyatra" at Tumkar, district Kabada, Karnataka, on November 1, 1957, He said, if you always talk nation, nobody can deny of Wars among the nations.

Definitely my dream of 22nd century may not be practical, but I think it may. Some said Victory of World dream is good to hear but a remote possibility. My Guru Dr. Gulab Chaurasia affectionately said "Continue your speech as it is something new and interesting. I was asked to introduce my self.

I am Surendra Nath Dubey, 75, most of my life has been in Bhopal, Madhya Pradesh. I am post graduate in Economics, Political Science and Education. I did LL.B. I am editing a magazine "School Shiksha". Thinking of coming generation that is my duty.

On 26th January 2014, I was again asked to share my views of my dream of "One World Government". Here it will be relevant to talk of the period 1956 to 1958 when I was student of BA, political science. There were some ideas that must have been related to my dream of 22nd century. I had a chance to read a book "Our Growing Human family", I read about "**shrinking world**". The book repeatedly focused on traffic, transport system and communication means, due to fast technological developments, the world is shrinking. The distance of the countries and nations has nearly ended with revolution of communication. When I was a student of political science, I could know about 'One World Government'.

The 20th century has seen first and second World War. Saint and social worker Vinobha



Bhawe, sensing the International Third World Cold War declared Victory of the World (Jai Jagat). He used to say that if we repeatedly say “Our Nation, Our Nation”, there would be wars and then one day the whole world will have to say “Victory of the World for the peace of the World.”

Vinobha Bhawe had formed this slogan just 57 years ago on 1st November 1957, we will have to see it today in reference to of present circumstances. All nations, super powers as China, America, Russia, Europe, Africa and India and others are in race of strengthening their defence budget to have their army strong, facing it with the arms and ammunition of latest technology.

In the last three decades, I have seen revolutions in many fields as Mobile, Computer, Teleconferencing, Video-conferencing, Traffic arrangements and transport system with fast progress in all most all the fields. It seems that in coming 8 to 10 decades, the world will shrink. Any country however strong, will be depending upon other in some fields for its necessities. The arms like nuclear weapons, threat of destruction in the world will equally be horrible, so every nation will be victim of destruction. It is for the reason that I am placing before all the ideas of One World Government and Jai Jagat.

### The Future Generations

It is important to underline, what type of world of my dreams somebody asked me a question who will be there to see 22nd century, definitely neither we nor our grand children. But we cannot deny of the generations to come to see the world of 22nd century. What I am saying might have not any scientific proof, nor I feel its need to corroborate what I am saying.

It is the talk of only those things in 22nd century to be fruitful for human welfare and it will be only the world as defined in our religious books. As satyug everything will fully be changed - our habits in last 70 years have drastically changed in living standard, health, transport, industry etc. We can imagine of unbelievable technological revolution in 22 nd century. What the dream of "one world family" 'VASUDEV KUTUMBKAM' was seen two thousand years ago, we worked against it, but now there is a need to work for it again.

### ONE WORLD GOVERNMENT

I firmly believe on the future of 'One World Government'- The form of world government will be democratic and as the government is formed today with public opinion, the same will happen for the one world government. The following may be the burning problems or issues of one world government-

**1. One world citizenship** -The new generation will be ready for a new world management in the beginning of 22nd century. Due to unbelievable communication and transport system, the citizens of all nations will be mixed up with each other. In such a time people will need world citizenship to freely move from one to another nation. All people will have **dual citizenship**, one of their own nation, second of the world citizenship.

**2. Patron of Human Rights** - Human rights declared by United Nations Organisations (UNO) on December 10, 1948, and endorsed again in 1993, as appropriate. But its

implementation was assigned to the national governments. In the 22nd century, the human rights will be in the form of fundamental rights. World Government will have unlimited powers to get human rights implemented.

**3. International Court** - The International court of justice will be changed. It will have wide powers like nations Supreme Courts. The people of any nation may approach international court against their violation of human rights. All National Supreme Courts will work under the International Court.

**4. Defence system** - The borders of the nations will be flexible. There will be different wings in defence as are today but all will be under control of world government. The world government will guarantee life of every citizen. All dangerous and human threat weapons possessed by the nations will be destroyed. The manufacturing units of arms and ammunition used by one nation to fight against other will automatically be closed. The defence units (production centres) will produce more than 80 percent for human welfare.

**5. Basic Necessities** - The One World Government will give guarantee of food, water, clothes and residence, so that there will be no death in any part of the world due to hunger. Pure drinking water will be available for each citizen.

**6. Education & language** - The World Government will do its all possible efforts to fulfill the basic, primary necessities of education. In some extent the world government will control it. It will issue directives to make education as compulsory from 5 to 16 years for both girls and boys. This Government will see the education for global humanity and brotherhood spirit in development of the people. The medium of children's education up to 14 years will be their regional language. so the child education will be on the doctrines of psychological aspects. The children will be taught and promoted to protect environment. At the stage of initial education, language, environment study, sports and physical exercise and basic knowledge in the world will be same.

**7. Mathematical figures** - There will be one type of mathematical figures 0 and 1 to 9. It will be international and will be same for the whole World.

**8. Transport facilities** - The world government will have control on international transport system. The world government will see the air crafts are reaching safely in all parts of the world, the number of aircrafts will be 100 times more than the present time, new transport system will be developed.

**9. Means of Communications** - There will be revolutionary changes in communication means and the world government will control it.

**10. Shipping** - The world government will control it.

**11. Carbon posing problems** - The whole world is badly effected of carbon problems posing a new threat to the clean environment, industrial pollution, so the world government will be able to control it.



**12. To Control Pollution** - The unlimited powers will be delegated to the world government to prevent many type of pollution. The world Government will issue strict instructions to all national governments to control the pollution.

**13. One global currency also** - In the 22nd century when there is one world government, there will be one global currency also.

**14. Language** - At that time the English language will be seen extensively in all nations in the world. The regional language and mother tongue will get the importance more than today. The children may be given education in first their mother tongue and then regional languages and then international languages. For daily routine work, one may talk in his regional language. If the people think that they will be in slavery of English, it is wrong.

**15. Power Resources** - The alternative sources of power will be seen in future. Usually, people will largely be depending upon the solar energy, due to which the carbon causing pollution will be less. There will be compulsion of closing coal mines, oil wells because of drying. It will reduce the carbon born pollution.

### **SOCIETY TO BE BASED UPON NON- VIOLENCE**

We have to seek solution to control violence prevailing world over. Most people in the world are victims of violence. It will be a big concern to the coming generation. Then we will have to accept the preaches and doctrines by Buddha, Christ, Mahavir and Mohammad Pagamber, who always used to show the path of love, peace and non violence. The world will definitely follow the sayings of Mahatma Gandhi who made the world aware of it in 20th century.

The world will further a new revolution of non- violence. Not only Mahatma Gandhi, there are other saintly persons in politics, the people will think over their social and political messages as Martine Luther King 1 and 2, Nelson Mandela and others. All social issues can be solved through the non-violence.

### **HUMAN RELIGION AS A WORLD RELIGION**

The standpoint of the 22nd century generation will be wide. Most of the ideas and thoughts will be **logical and scientific**. The present form of religion will need the changes coming generation will do it. The new generation will be well aware of it and certainly bring the radical changes in it.

### **PROGRESS IN MEDIA**

In the 22nd century, there will be more development and progress in print and electronic media. Everybody will have the facility of Telephone, Fax, Internet, Mobile etc. Most messages will be delivered through electronic mails. Not only in Urban, the rural areas will also have access to such facilities. The form of books will be fully changed, the books will be available in Macro and Micro cards. As half of this is we are already seen in the present technological developments. **There are possibilities that world will be paper less.**

### **OPEN TRADE**

The present form of the international trade will be completely be changed in 22nd century.

(Each person will depend on his or her petty necessities on the people of remote areas.) The form of consuming and availability will be changed. The national boundaries in the trade will be very flexible. Besides, the form of import and export will also change.

### **PROHIBITION**

What will be the issue of concern in drugs addiction, is to have complete prohibition. It may be possible that the present form of drugs, mostly country made and foreign made liquor might be the worst. up to 21st century. The world government will be forced to take up several steps to seriously control it and be have complete prohibition in the world.

### **WORK IN INTEREST OF POOR PEOPLE MUST**

Many theories were applied by the present governments by all the nations to bridge the gap of the poor and rich, many efforts were made but the gap between the poor and rich is being widened in the world. Rich is becoming richer and poor is becoming poorer. The poor people will not bear their insult. Display of wealth, violence, will be considered the serious crimes. So the world government will act against it strictly.

### **EDUCATION FOR WORLD WELFARE**

The form of education from primary to higher level will completely be changed. All will get at least primary education and the skilled persons will be given importance in the society. Those who will be involved in research work in science for the world peace will always be felicitate, such as teachers, they will really be called as teachers. Besides, the skilled persons will have an important role in spreading education.

### **HEALTH SERVICE SYSTEM**

The form of health service system in 22nd century will be changed. People will seek new means of better health. The hospitals will be advanced and everybody will get initial health facilities. Depriving anybody of health facilities will be treated as a crime. Family welfare and family planning will be based on logic.

### **HOUSING AND LIVING STANDARD**

Till the date a major portion our population does not have good living standard or required housing facilities, it will continue till the end of 21st century. It will be changed in 22nd century. standard of living will be far better.

### **BIOMETRIC CARD NUMBER**

Every world citizens will have international biometric numbers so that they will be easily identified in any nation in the world, their complete personal data will be found by just clicking mouse.

Translated by Arun Gawande



## Increasing Role of International Institutions in a Globalized World

*Disclaimer: This is not a research paper or an analysis of current state of global affairs and, especially, how International institutions are being operated and governed.*

**Background:** Humans over the history have been a migrating species just like its animal counterparts in search of food, shelter and pleasure. The desire to search for food and mate always

competed with limited resources and the need to establish boundaries to protect the means of sustaining life and propagation of its genes to the next generation. Territorial control has always been the nature of all animals. However, what differentiated humans from most animals was the ability to co-operate. Especially after the development of language which allowed a group of people, with common and shared goals, to support themselves and act in teams assuming different roles in the production and sustenance. (Note: Other animals such as Dolphins, Wolves, Lions etc. also display the same traits). But as humans spread across the globe, the limited resources caused them to fight between themselves resulting to rise of larger groups such as towns and kingdoms. The rise of Kingdom was the first stage where people were grouped regionally and forced to follow a certain common custom of the ruler who decreed through fiat his wishes. With advancement of human politics and trade resulted in complex societies which could not be governed by a single individual anymore, but required a multiple people of different skills to advise the leader (King or Queen) in ruling and protecting the land for themselves and their future.

The modern era has sped up in complexity due to rise in technological developments which made existing complex human interactions and societies even more complex, but for the better for all. However, these technological advancements also resulted in wars between kingdoms which were in most times disruptive to the common people living in those societies.

**Rise of Nationalism and Statehood:** It is important to understand the genesis of nationalism to lay the reason for rise and need of International institutions. The most important was the Westphalia Agreement. This was an agreement made by most of the European nations who were constantly at war to creation of national borders; concept of sovereign nation; and individual rights for the people living within those national borders. In essence the Westphalia agreement between the major European powers resulted in a permanent creation of groups of people who were free only within their boundaries to establish rules and governance to manage their own destiny. As a sovereign nation it was therefore protected from claim from groups of people outside its borders and also could not impose its wishes onto other sovereign nations. However, this did not guarantee that the nations thus created would not have disputes just as any neighbours have bordering their own property. It was expected that once the borders were settled each nation would self-regulate and not interfere into the matters of other nation no matter how important or was of interest to its own people (for example, mineral rights,

trade, prosecution of common ethnic/religious groups etc...). As a result any dispute arising between the two sovereign nations would be settled through wars fought not across borders but for competing requirement of capturing new land and resources (Colonial conquest of European nations). The Westphalia treaty applied only to European nations and excluded all other territories and kingdoms. This regionalization still carries on today in formation of regional trade agreements. This competing drive for more trade and riches of the undiscovered worlds resulted in greater interconnectedness across the globe and also drew more wars. With technological advancement, transportation and communication became even faster and cheaper. The stakes were raised so high that humanity had to endure two global wars (World War I & II) before any sense of common purpose and shared goals could be established. Even in development of common purpose threw up competing ideas such as communism and capitalism which clashed at ideological level and at state level too.

**Formation of International Institutions:** The horrors and scale of destruction of human life and property awakened the human spirit of common cause and sharing of resources which made the human species great and survive. It created the United Nations after the Second World War and the other sister organizations such as the World Bank and International Monetary Fund to manage the political and economic affairs of the global free nations to prevent any further self-annihilation. The clash of ideologies and influence between the competing powers of Soviet Union and Western Allies limited the role of such International Organizations initially. However, as the pace of trade between nations rose, so was the need for co-operation between nations for common standards, practices and rule of law to allow greater trade and human development. Globalization had started during the European expansion to colonial areas, but rapid technological developments in transportation and communication pushed globalization in hyper drive. The only limiting factor was the cold war which created artificial barriers for free exchange and trade. With the end of the Cold War, Globalization took further hold and nations, such as China, India, Brazil, etc. started seeing more benefits with increased trade across borders resulting in improvement of livelihoods of their own people. This rapid development is now pushing against the limits of nationalism. With the advent of internet and its products: knowledge exchange, communication, social media, ideas and aspirations are no more limited to within national boundaries. You Tube videos of cats doing funny tricks to the horrors of wars and natural disasters are no more limited within the nation but instantly shared across the hyper connected globe. Relationships between humans and cultural traditions are questioned and challenged at every stage. As a result of this globalization there is an increasing sense of developing a global village with common goals and objectives and to live with common rules to build trust between all participating peoples. To govern or guide such international effort requires a formal setup to manage these expectations which only International Institutions can provide. These shared goals are to establish and maintain peace through common security (UN); common standards of finance and trade between nations and industries (International Trade Organizations, World Bank, IMF etc.); social support mechanism and maintain health of the



people across the world (WHO, NGOs etc..).

**Vision of International Organizations:** As human relations and trade have increased significantly across the world, the stakes are getting higher to maintain stable environment across the globe. No single nation can survive in isolation or allow its global supply chains of food and material be disrupted due to wars and quarrels. This hyper connectedness has increased the need for governance on an international level. Though institutions such as UN, World Bank were created to facilitate discussions and herd resources between nations, they are now ever more important as the concept of Nationalism and Sovereignty decreases. It is a hard battle, but if history is any guide, nothing can stop the winds of change brought about by technological advancements in telecommunications and transportation. International Organizations will exert more pressure and control over affairs within and between countries which was earlier the prerogative of the National government: such as setting tariffs on goods or limiting access of goods and services, currency, interest rates etc... Ease of movement of goods was first development due to faster transportation; followed by services through the development of telecommunications and internet. The last barrier is in the ease of movement of people and skills across boundaries which will be the last nail in the coffin of nationalism. If people start moving/migrating to places where their skills are required most or where they feel safe will result in breakdown of regionalization and therefore rise in borderless living.

Currently too national borders are made redundant with people able to work remotely anywhere in the world connected through latest technology of telecommunications such as Telepresence (where people located all over the world can be projected on to screens near a person as if they are present there to hold meetings). Work can be done remotely and virtual teams can share and work seamlessly across borders, timezones. For example, a design team located in Japan or Korea can communicate its ideas on shared websites with other teams located across the globe. Teams from India and Africa then can pick up those ideas and refine them further and create technical specifications for production of the idea. The idea and the specifications can then be test marketed in small target markets in Europe or Americas. The input of that research can then be fed to the design teams in Japan and Korea which can either refine or finalize the design for subsequent production in supply chains located in China, East Europe and South America.

In the above example people need not be grouped by culturally common regions. The team in Japan could group people of different nationalities with design skills who came from all parts of the globe. This is in essence the Multi-National organizational model. Therefore the design expertise is not necessarily Japanese but a centre of expertise which is located in Japan. If that team were to move to Mongolia or Vietnam, then the design expertise has moved to that region or place. This desensitization of local affiliation by race or denationalization would essentially mean the end of the Westphalia model and rise in the international cooperation of organization. Common rules; common standards; common practices and uniform application of rules and arbitration of disputes will be the norm of the new Globalized world.

**Effect on Personal Lives:** Human being is social in nature and are drawn to each other by common ideas, practices and rituals. These cultural ties bound people with common cause and holds the society together. This model worked when people were local and did not have to move to another place except for trade and war. Relationships were crucial in determining the allegiance and, as a result the care and future progress of their own society. Globalization has connected the following human senses: Sight, listening and speech (sound) the essence of trade and business. But taste, smell and touch are senses which have not seen technological development yet hence these would be the next frontier in true globalization. Since an individual can live and travel wherever he or she wants human relationships will be challenged. People can do business with sight and sound, but relationships are endured through touch, taste and smell. With globalization human relationships may be driven by individual need rather than a societal need. Since the devolution of the family unit, marriage as an institution will not be able to hold in a hyper-globalized world. However, there is hope that these last human senses also see some technological advancement which will result in couples or partners keeping in touch despite distances. If this were to happen, there is no limit to where people can live and conduct business. Children might be taken care by one parent or an organization. Parents might still stay connected with their children through all the human senses if technology allows it.

**The reverse could be true too:** that people need not have to migrate if the connectivity of all senses are established that telepresence in all human senses.

**Would we want to live in a Centralized World?:** As the power of international organizations increase and with development of technological advances in human sense telepresence, it would mean that such organizations could have a lot of power. They can control whom to provide or not to provide the means of inter-connectedness. Free will and liberty could be challenged with centralized authority takes precedence over an individual. It will be very odd with increase individual freedom through technology, centralized institutions will rise to the level of last resort of arbitration or decision on certain standards. It is expected that some level of direct democracy is applied in terms of decision making in establishing rules on international level. It would be difficult and not easy considering that it will now be competition of ideas and not regional interests. Increasingly the control of all the interfaces that manage globalization, trade, travel, communication, human emotional exchange through touch and smell would rely on centralized international organization to maintain control. As a result individual freedom would be limited or confined to the rules established for all by a centralized authority. As with evolution we might change too, we may have mechanized robots of ourselves which might be controlled by centralized system allowing our physical self to maintain the individual freedom of doing what he or she might please.

Contributed by Shri. Sanjay, (WB),

Based on discussion with Shri Surendra Nath Dubey About his dream of 22<sup>nd</sup> century.



## JAI JAGAT

-S.N. Subbarao

It was of my many such experience. On top of the Himalayas in Sikkim. I was meeting some 150 small boys and girls aged 6-10 or so. We had a game and song. Then I narrated to them the saying that is 4000 years old in india. "Pepole with small hearts have small homes within four walls; but thouse with large hearts have the whole world as their home".

Then I asked the kids, "How many of you are small hearted? rise your hands" not a single hand went up. Then I asked them "Those who are large hearted rise your hands".

What a beautiful sight it was! 150 pairs of tiny hands went up in the air. My next question confused them a little, "If you are large hearted, then what is an American man to you?" "After a little thought a small girl in the crowd stood up and said, "Brother (Bhai). I went on what is a Russian to you, a German, a Chinese, a Pakistani.... "one after another, Children came out, ' Brother, Brother.....'

This is the parody of the world we live in. As small children, we have large hearts. But as we grow in age and experience and body grows, our hearts shrink! People become limited by caste, religion, ethnic group. party nation.....

Bliss is the children world. Mother Earth would be happy if our heart could also grow as our age. body and experience grow. All people living on earth will be happy if this development could take place.

Nil Armstrong who was the first human being to land on the moon came back to earth and said "The most picturesque scene I ever saw in my life was to see the earth from the moon" and continued "standing on the surface of the moon, I found the beauty of the Earth was enhanced because I could see no lines on the face of earth".

Yes, standing lakhs of miles away. Arm Strong could not notice the we human being have scratched on the face of Mother Earth and so looked more beautiful. The lines human being have written are again, the lines of national boundaries, of castes, religions, languages reces.....

### **Erase the scratches**

We must Erase the scratches on the face of Mother Earth. How can we do it? Where shall we begin?

We may draw a hint from the charter of the UNESCO (United Nations Educational, Scientific & Cultural Organization) which says. "war begins in the minds of man, and hence the defence of peace must be constructed in the minds of man".

The pointer is the minds of man. How can we have minds of man that can build peace in the world?

Ever since witnessed the burning away of the 110 story high World Trade Towers in New York on September 11, 2001, I have grown all the more convinced that for a peaceful future of the world, The individual human minds must become the base.



Individuals, groups, institutions all over the world must introduce a system of training the mind. Ancient Rishies in india had perfected the art of training the mind for peace.

In our times Mahatama Gandhi added a new dimension to the peace process, he maintained peace is not complete, if is not also supported by justice. There can be no exploitation, inequality between man and man.

### **A personal Drill for everybody**

Apart from practicing myself for my own benefit. I use small technique for groups of people all over India and abroad.

To correct many ills of the society one was is to use force, bullets etc.

But it will be more effective when people change from within this process needs to spread for and wind. Even so, the beginning will be individual Let each of us begin from within.

### **The five step exercise**

1. Sit erect with the spinal chord straight.
2. Do deep breathing, both inhaling and exhaling.
3. The Pure air that you inhale each time purifies your blood and freshens the mind. As you keep sitting erect, relax your whole body and mind. Feel light no tension in the body, no tension in the mind, feel comfortable.
4. Ask yourself, "who am I". All scriptures say "you are the divine spark". Feel; the divinity in you, or feel you are the centre of the energy that means the whole world. As such, you are strong, pure, fearless, determined to make the world happy, just and peaceful.
5. Now send your mind.

(A) To all men, women and children in the world and wish them all happiness, health and peace.

(B) To all animals those that fly, walk or swim and with them all happiness, health and peace.

(C) To all plants and trees and with them all happiness, health and peace.

This process will give you the happiness, health and peace that you have always wanted. your powerful current vibrations will make the world more happy, healthy and peaceful.

**And that is the basis for making a better world.**

### **One world; small communities.**

The eminent social philosopher Arnold Toynabe found common feature among the many, varying features of different people of the world and that was "I found man restless all over the world" Searching for answers, he said, "For a happy world there must be on world community at the top and small communities at the base."

However the world Government must be inspired by love, altruism and selflessness and not on exploitations and selfishness.

The beginning is that a process of training the right type of people, especially the youths, must begin. It is good that individuals in their own way are doing this excellent job.



## जय जगत

जय जगत पुकारे जा, सिर अमन पर वारे जा  
सबके हित के वास्ते, अपना सुख बिसारे जा।

प्रेम की पुकार हो, सबका सबसे प्यार हो।  
जीत हो जहान की, क्यों किसी की हार हो।। जय जगत...

न्याय का विधान हो, सबका हक समान हो।  
सबकी अपनी हो जमीन, सबका आसमान हो।। जय जगत...

रंग भेद छोड़ दो, जात-पांत तोड़ दो,  
मानवों की आपसी, अखण्ड प्रीत जोड़ दो।। जय जगत...

शांति की हवा चले, जग कहे वले-वले  
दिन उगे स्नेह का, रात रंज की ढले।। जय जगत...

दुखयाल

## JAI JAGAT PUKARE JA

Jai Jagat, Jai Jagat, Jai Jagat Pukare Jaa.  
Jai Jagat Pukare Jaa, Sir Aman Pae Varre Ja.  
Sabake Hit ke Vaaste, Apana Sukh Bissare Jaa.  
Prem Kee Pukar Ho, Sab Ka Sabse Pyar Ho.  
Jeet Ho Jahan Ke, Kyon Kisee Kee Har Ho.  
Nyaay Kaa Vidhhan Ho, Sab Ka Haq Saman Ho.  
Sab Ki Apani Ho Zameen, Sab Ka Aasmaan Ho.  
Rang Bhed Chhod Do, Jaat Paant Tod Do.  
Manabo ki Appsi, Akhand Preet Jod do.  
Shanti Kee Hawaa Chale, Jag Kahe Bhale Bhale.  
Din Uge Sneh Ka, Rat Ranj Kee Dhale.  
Jai Jagat, Jai Jagat, Jai Jagat Pukare Jaa.

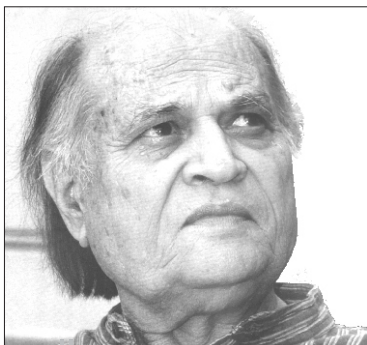
DUKHAYAL

## Peace All!

पृथिवी शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिर्द्यौः शान्तिरापः शान्तिरोषधयः  
शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे मे देवाः शान्तिः सर्वे मे देवाः  
शान्तिः, शान्तिः शान्तिः शान्तिभिः। ताभिः शान्तिभिः सर्वशान्तिभिः  
शमयामोऽहं यदिह घोरं यदिह क्रूरं यदिह पापं तच्छान्तं तच्छिवं  
सर्वमेव शमस्तु नः॥

(Atharvaveda. XIX. 9.14)

Peace earth, Peace atmosphere, Peace heavens,  
Peace waters, Peace herbs, Peace trees, Peace may the  
Viśvedevās be to me; Peace. Peace through all this  
Peace. With all this Peace, may we bring to peace  
whatever here is terrible, is cruel, is sinful. May all that  
be to us tranquil, benevolent, peaceful.



कि दुनिया में करुणा की कमी पड़ गई है  
पता नहीं  
आने वाले लोगों को दुनिया कैसी चाहिये  
कैसी हवा कैसा पानी चाहिये  
पर इतना तो तय है  
कि इस समय दुनिया को  
ढेर सारी करुणा चाहिये

—भगवत रावत

## एक ऐसा दिलचस्प आदमी

हमारे बीच में है जिसका अवदान स्वयं में उल्लेखनीय ही नहीं, स्तुत्य है और अभिनन्दनीय भी। आशय है श्री सुरेंद्रनाथ दुबे से। लगभग आधी सदी से अधिक समय तक उन्होंने अपने शिक्षक दायित्व का निर्वाह करते हुए गांधीवादी विचार धारा के अथाह सागर में गोते लगाए। युग संत विनोबा भावे के मूलमंत्र 'जयजगत' की आत्मा में प्रवेश कर उसका विश्लेषण करते हुए 22वीं सदी के लिये विश्व सरकार की परिकल्पना का सपना देखा और उसे आकार दिया और सोते-जागते अहिर्निश उनका चिंतन करोड़ों बच्चों व करोड़ों शिक्षकों के लिए ही हुआ करता है। जबकि हमारे बीच में आज ऐसे शिक्षक, लेखक, समाज सेवक मौजूद हैं, जो व्यावसायिक स्तर पर मात्र अमुक नियत समय के बाद वह सबकुछ भूलकर सिर्फ अपने और अपनी निजी पारिवारिक स्थिति पर ही सोचते हैं। परिवार नियोजन के जमाने में श्री दुबे जी का परिवार तो देखिए भारत के 50 करोड़ से भी अधिक स्कूली बच्चे व एक करोड़ भाई-बहिन स्कूल शिक्षक के रूप में उन्हें सोचने को मजबूर किए हुए हैं। अपने इस चिंतन को वे एक-एक करके कितने लोगों तक पहुंचा सकते हैं, तब उन्होंने द्विभाषीय मासिक पत्रिका 'स्कूल शिक्षा' को माध्यम बनाया और बैठ गए संपादक की आसन्दी पर। वे मूल रूप से शिक्षक ही हैं। स्कूल शिक्षा पत्रिका ने उन्हें स्कूल की सीमाओं से भी बाहर निकाल कर जो सार्वभौमिकता प्रदान की है, उससे वे अपने आप संत विनोबा द्वारा एक नवम्बर 1957 में किए उद्घोष – "जयजगत" की आत्मा में प्रवेश कर चुके हैं।

राष्ट्र हो या खेल का मैदान,  
आमने-सामने होने पर,  
किसी एक की हार सुनिश्चित है,  
यदि दोनों ही विजय को वरण करना  
चाहें तो,  
जय राष्ट्र के स्थान पर,  
सिर्फ और सिर्फ,  
जय जगत को स्वीकार करें,  
इसके बगैर तो जीतने वाला भी,  
हारा ही समझा जाएगा।  
कहने को हम बेशक विकसित हुए हैं,  
एक से बढ़कर एक  
नित नए उपकरण व यंत्र  
बना लिए हैं हमने,  
जो क्षण भर में महाप्रलय  
भी कर सकते हैं,  
इसके लिए आज हिंसा का मार्ग छोड़  
जरूरत है,  
अहिंसा के मार्ग पर चलने की,  
जिस पर चलकर पाएंगे  
हम करुणा को,  
सत्य और परस्पर प्रेम को,  
फिर नफरतें धुल जाएंगी  
हमेशा-हमेशा के लिए,  
और 'मैं' के स्थान पर 'हम' ही  
निकलेगा हमारे मुंह से,  
और गर्व से कहेंगे हम,  
जय जगत, जय जगत,  
जय जगत ॥



गुणसागर सत्यार्थी

स्वतंत्र भारत का विश्व को संदेश

### महर्षि अरविंद का संबोधन

(15 अगस्त, 1947 को भारत के स्वतंत्रता दिवस पर, जो कि महर्षि अरविंद का जन्मदिन भी है, पर आकाशवाणी द्वारा प्रसारित किया गया।)

मानवजाति का एकीकरण प्रगति के पथ पर है, चाहे है अभी अधूरे प्रारंभ के रूप में ही, वह संगठित तो किया जा चुका है, पर वह बड़ी भारी कठिनाइयों के विरुद्ध संघर्ष कर रहा है लेकिन उसमें बल और वेग है और यदि इतिहास के अनुभव को मार्गदर्शक माना जा सके तो वह अनिवार्य रूप से बढ़ता चला जाएगा और अंत में विजयी होगा। इस कार्य में भी भारतवर्ष ने प्रमुख भाग लेना प्रारंभ कर दिया है और यदि वह उस विशालतर राजनीतिज्ञता को विकसित कर सके, जो वर्तमान घटनाओं और तात्कालिक संभावनाओं से ही सीमित नहीं होती, बल्कि भविष्य में पैठकर उसे देख लेती और निकट ले आती है, तो इस क्षेत्र में भारत की उपस्थिति यह दिखा सकती है कि मंद एवं भीरुतापूर्ण विकास और द्रुत एवं साहसपूर्ण विकास में कितना अधिक भेद है। जो कार्य किया जा रहा है, उसमें महान विपत्ति आ सकती है और वह उसमें बाधा डाल सकती या उसे नष्ट कर सकती है, किंतु फिर भी अंतिम परिणाम निश्चित है। क्योंकि चाहे जो हो, एकीकरण प्रकृति के विकास—क्रम में एक आवश्यक क्रिया है, अनिवार्य गति है और उसकी उपलब्धि की सुरक्षित रूप से भविष्यवाणी की जा सकती है। राष्ट्रों के लिए भी उसकी आवश्यकता स्पष्ट है, क्योंकि इसके बिना छोटे—छोटे राष्ट्रों की स्वाधीनता भविष्य में कभी भी सुरक्षित नहीं रह सकती और बड़े तथा शक्तिशाली राष्ट्र भी वास्तव में सुरक्षित एवं निश्चित नहीं रह सकते। केवल मानवीय आशक्तता एवं मूर्खतापूर्ण स्वार्थपरता ही उसे रोक सकती है। एकीकरण के साधित हो जाने पर राष्ट्रवाद पूर्ण रूप से चरितार्थ हो जाएगा, अंतरराष्ट्रीय भावना और दृष्टि भी आवश्यक विकसित होगी और अंतरराष्ट्रीय पद्धति तथा संस्थाएं भी। यहाँ तक कि यह भी संभव है कि इस परिवर्तन की प्रक्रिया में ऐसी प्रगतियां भी दिखाई दें जैसी कि दो या अनेक देशों का एकसंग नागरिक होना, संस्कृतियों का स्वेच्छापूर्वक घुलना—मिलना आदि और राष्ट्रीयता की भावना अपनी युद्धप्रियता छोड़ इन चीजों को अपनी दृष्टि की अखंडता के साथ पूर्णतया संगत अनुभव करे। एकता की एक नई भावना मनुष्यजाति को अपने अधिकार में कर लेगी।

संसार को भारत का आध्यात्मिक दान प्रारंभ हो चुका है। भारत की आध्यात्मिकता यूरोप और अमेरिका में नित्य बढ़ती हुई मात्रा में प्रवेश कर रही है। यह आंदोलन बढ़ेगा, वर्तमान काल की विपदाओं के बीच अधिकाधिक लोगों की आंखें आशा के साथ भारत की ओर मुड़ रही हैं और न केवल उसकी शिक्षाओं का, बल्कि उसकी आंतरात्मिक और आध्यात्मिक साधना का भी अधिकाधिक आश्रय लिया जा रहा है।

बाकी तो अभी एक व्यक्तिगत आशा है, एक विचार और आदर्श है, जिसने भारत और पश्चिम में, दोनों जगह दूरदर्शी विचारकों को अपने वश में करना शुरू कर दिया है। इस मार्ग की कठिनाइयाँ प्रयास के किसी भी अन्य क्षेत्र की अपेक्षा बहुत अधिक जबरदस्त हैं, परंतु कठिनाइयाँ जीत जाने के लिए ही बनी थीं और यदि 'परम इच्छाशक्ति' का अस्तित्व है, तो वे अवश्य ही पराजित होंगी। यहां भी, यदि इस विकास को घटित होना है और यद्यपि इसका क्षेत्र विश्वव्यापी होगा, फिर भी केंद्रीय आंदोलन भारत ही कर सकता है। ये हैं वे भाव और भावनाएं जिन्हें मैं भारतीय स्वाधीनता की इस तिथि के साथ संबद्ध करता हूँ। क्या यह घटनाक्रम पूरा होगा या कहीं या कितनी शीघ्र पूरा होगा, यह बात इस नए और स्वाधीन भारत पर निर्भर करती है।

कहा जा सकता है कि आत्म—खोज की यह प्रक्रिया भारत में, आज—15 अगस्त, 1947 को—पूर्ण राजनीतिक स्वतंत्रता—प्राप्ति के साथ की है, पूरी हो गई। इससे उन्मुक्त हुई ऊर्जा अब अधिक गहन तरीके से आत्म अभिव्यक्ति की रचना—प्रक्रिया को आगे बढ़ाएगी।

(श्री लालकृष्ण आडवाणी जी की पुस्तक "मेरा देश—मेरा जीवन" से साभार।)



## स्वामी विवेकानंद का वैश्विक दृष्टिकोण



भारत के अतीत से जुड़े और भारत की विरासत पर पूरी तरह से गर्व करने वाले विवेकानंद की नवीन की समस्याओं को सुलझाने की प्रवृत्ति के कारण ही जवाहरलाल नेहरू ने स्वामी विवेकानंद के व्यक्तित्व के इस पहलू की प्रशंसा की है। 'भारत के अतीत से जुड़े और भारत की विरासत पर गर्व करने वाले विवेकानंद की जीवन की समस्याओं को सुलझाने की प्रवृत्ति आधुनिक थी। वे सचमुच भारत के अतीत व वर्तमान के बीच एक सेतु के समान थे।'

नेहरू, जो स्वयं एक अंतरराष्ट्रीयतावादी थे, ने स्वामी विवेकानंद द्वारा वर्ष 1897 में दिए गए व्याख्यान की इन पंक्तियों के प्रति गहरी आस्था व्यक्त करते हुए इन्हें उद्धृत किया है, जिसमें मानवता की एकता की गूंज है –



'राजनीति और समाजशास्त्र में भी, जो समस्याएं बीस वर्ष पहले केवल राष्ट्रीय थीं, उन्हें आज केवल राष्ट्रीय स्तर पर नहीं हल किया जा सकता। उन्होंने वृहत आकार और भयानक रूप ग्रहण कर लिया है। उन्हें केवल तभी हल किया जा सकता है, जब उन्हें अंतर्राष्ट्रीय आधार पर व्यापक दृष्टिकोण से देखा जाए। ऐसा दृष्टिकोण जो वैश्विक एकता का परिचय दे सके। अंतरराष्ट्रीय संगठन, अंतरराष्ट्रीय कानून आज के समय की मांग है। बिना पूरे विश्व को साथ लिए कोई प्रगति नहीं हो सकती और यह हर दिन और भी स्पष्ट होता जा रहा है कि किसी भी समस्या का समाधान वंशीय या राष्ट्रीय अथवा संकीर्ण आधार पर नहीं हो सकता। हर विचार को उस सीमा तक विस्तृत होना होगा, जब तक यह पूरे विश्व को समाहित न कर ले। हर आकांक्षा को तब तक बढ़ना होगा, जब तक यह पूरी मानवता को ही नहीं, पूरे जीवन को अपने में शामिल न कर ले।'

नेहरू ने लिखा, भारत के हाल के अतीत पर इस मानदंड को लागू करते हुए और अपने देशवासियों, हिंदू और मुस्लिम दोनों को चेतावनी देते हुए स्वामी विवेकानंद ने कहा –

मैं इस बात से पूरी तरह सहमत हूँ कि कोई भी व्यक्ति या राष्ट्र दूसरे के समुदाय से स्वयं को अलग रखकर जीवित नहीं रह सकता और जब कभी भी इस तरह का प्रयास हमेशा विनाशक रहा है। 'हमारा विश्व के अन्य देशों से अलगाव ही हमारी अवनति का कारण है और इसका एकमात्र उपचार है विश्व की धारा में पुनः लौटना। गति जीवन की पहचान है।'

नेहरू फिर कहते हैं— उपर्युक्त उद्धरण पचास वर्ष पूर्व कहे गए थे। इनमें आज भी ताजगी और जोश है। स्वामी विवेकानंद के समय में भारत विश्व मामलों में सक्रिय घटक नहीं था। उसका गौरवशाली अतीत कुछ पश्चिमी विशारदों के लिए सहानुभूतिपूर्ण टिप्पणियों और अध्ययन का विषय था पर आमतौर पर विश्व को उसकी दुर्दशा पर तरस आता था। उसके अपने बच्चों को भी अपनी बूढ़ी और निस्तेज मां के कारण आत्मग्लानि की अनुभूति होने लगी थी।

पर यह सब बहुत तेजी से बदल गया। लेकिन उस समय पराजय का क्षोभ एवं दासता की शर्म एक ऐसी चुनौती थी, जिसने उसके भीतर की आग को बुझाने के स्थान पर, जैसे कई अन्य देशों के मामलों में हुआ और जैसे उसके कुछ अपनों ने भी अनुमान लगाया था और भड़काया। इसने विचारों और गतिविधियों में नई तेजस्विता को जन्म दिया, जो राष्ट्रीय पुनर्यौवन की प्राप्ति की शुरुआत बन गई। यह जागरण एक प्रक्रिया थी—पहले आत्म-अन्वेषण की तत्पश्चात इसकी आत्म-अभिव्यक्ति की हैं।

(श्री लालकृष्ण आडवाणी जी की पुस्तक "मेरा देश-मेरा जीवन" से साभार।)

अमृत महोत्सव  
श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे

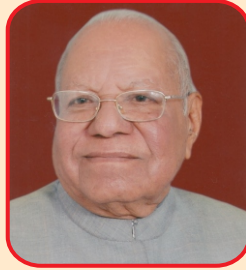
शिक्षक, सेवक, गांधीवादी चिन्तक



जीवनधारा सुरेन्द्रनाथ की एक त्रिवेणी पावन।  
शिक्षक, सेवक, चिन्तक का संगम इसमें मनभावन।  
एक समर्पित शिक्षक मानों सरस्वती की धारा।  
सेवाभावी सेवक इसमें यमुना की जलधारा।  
गांधीवादी चिन्तक जैसे पावन गंगा धारा।  
जीवन के अवरोध हटाकर सबका बना सहारा।

– डॉ. गार्गीशरण मिश्र “मराल”, जबलपुर

जय जगत के पुरोध  
**श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे**



**अभिनादिनी**

भूमिका

**डॉ. गार्गीशरण मिश्र 'मराल', जबलपुर**

**संपादक मण्डल**

**कैलाश श्रीवास्तव 'आदमी'**

**दामोदर जैन**

**रामगोपाल रैकवार**

जबलपुर, मध्यप्रदेश के प्रख्यात साहित्यकार, चिंतक, शिक्षाविद् डॉ. गार्गीशरण मिश्र "मराल" जी ने इस पुस्तक की भूमिका लिखी है। उन्होंने इस पुस्तक का एक-एक शब्द बहुत बारीकी से पढ़ा है। ग्रंथ का संपूर्ण सारांश अपने समीक्षात्मक लेख में प्रस्तुत कर उन्होंने पाठकों का जो मार्गदर्शन किया है पठनीय है। संपादक मंडल डॉ. गार्गीशरण मिश्र जी के प्रति अत्यंत आभारी है।



दामोदर जैन



कैलाश श्रीवास्तव 'आदमी'



रामगोपाल रैकवार

**प्रकाशक**

**निर्दलीय प्रकाशन**

एफ-34/1, दक्षिण तात्याटोपे नगर, भोपाल (मध्यप्रदेश), दूरभाष क्रमांक- 0755-2772406



## श्री सुरेंद्रनाथ दुबे : एक प्रवाहमान त्रिवेणी

मेरे विचार में श्री सुरेंद्रनाथ दुबे एक प्रवाहमान त्रिवेणी हैं। यह त्रिवेणी भारत के तीर्थराज प्रयाग में तीन पवित्र नदियों के संगमस्थल में प्रवाहमान त्रिवेणी के समान ही है। श्री दुबे जी के व्यक्तित्व और कृतित्व में — उनके समर्पित शिक्षक, सेवाभावी सेवक और गांधीवादी चिंतक रूपों में वे सारे गुण समाहित हैं, जो तीर्थराज प्रयाग की संगमभूमि में उपलब्ध है। एक समर्पित शिक्षक के रूप में वे संगम की सरस्वती नदी के समान हैं। मां सरस्वती के सच्चे उपासक के रूप में श्री दुबेजी अपने सभी छात्र-छात्राओं के पूर्ण कल्याण हेतु सदा समर्पित रहते हैं। इस काम में वे स्वयं को उसी प्रकार विस्मृत कर देते हैं जैसे संगम में सरस्वती नदी रहती है। इस काम में वे स्वयं को उसी प्रकार विस्मृत कर देते हैं, जैसे संगम में सरस्वती नदी रहते हुए भी दिखाई नहीं देती। किंतु वहां अवगाहन करने वाले प्रत्येक श्रद्धालु का पूर्ण कल्याण करती है। सेवाभावी सेवक के रूप में दुबे जी भगवान कृष्ण के पारस स्पर्श से अति पवित्र हुई यमुना नदी के समान हैं। श्री दुबे जी का सांवला रंग भी यमुना नदी के श्यामल जल से मेल खाता है। जिस तरह यमुना नदी उसमें अवगाहन करने वाले हर व्यक्ति का ताप हरण कर लेती है, वैसे ही श्री दुबे जी जिस किसी सहायता के लिए प्रयत्नशील होते हैं, उसके कष्ट का निवारण करके ही दम लेते हैं। श्री दुबे जी के जीवन में ऐसे एकाध नहीं, अनेक प्रसंग प्रमाण स्वरूप उपलब्ध हैं। गांधीवादी चिंतक के रूप में श्री दुबे जी तीर्थराज संगम की उस गंगा नदी के समान सिद्ध होते हैं, जो ब्रह्मा और शिव का आशीर्वाद लेकर स्वर्ग से धरा पर उतरती है। जिस प्रकार गंगा नदी रंग, जाति, धर्म, आर्थिक दशा आदि के समस्त भेदभाव भुलाकर सबके पापों का हरण करती हैं, वैसे ही दुबे जी भी समस्त प्रकार के भेदभावों को भुलाकर सबकी समस्याओं के समाधान हेतु तत्पर रहते हैं। जिस प्रकार गंगा को, लोगों का कल्याण करते समय, अपने स्वयं के प्रदूषित होने की चिंता नहीं रहती, उसी प्रकार दुबे जी को भी दूसरों के कल्याण का चिंतन करते समय अपने कष्टों का ध्यान नहीं रहता। जिस प्रकार गंगा नदी को अपने सेवाकार्य में बाधा उत्पन्न करने वाले रास्ते के रोड़ों को हटाने में संकोच नहीं होता, उसी प्रकार दुबे जी को भी दूसरों के काम संवारने में बाधक बनने वाले तत्वों को दरकिनार करने में कोई संकोच नहीं होता।

ऊपर हमने श्री दुबे जी की जिन विशेषताओं का उल्लेख किया है, वह कोई अतिशयोक्तिपूर्ण कथन नहीं है। कारण स्पष्ट है। इसे श्री दुबे जी के व्यक्तित्व और कृतित्व से प्रमाणित किया जा सकता है।

गांधीवादी चिंतन—जय जगत के लिए — सुरेंद्रनाथ दुबे के व्यक्तित्व की प्रवाहमान त्रिवेणी में महत्वपूर्ण धारा गांधीवादी चिंतक की है। इसमें रचनात्मक सोच, जनकल्याण की भावना और चिंतन की ऊंचाई इष्ट है, जिसका लक्ष्य स्वार्थ से ऊपर उठकर केवल परमार्थ की प्राप्ति है। इसमें दुबे जी एक स्वप्नदृष्टा के रूप में उपस्थित होते हैं। इसके अंतर्गत सर्व प्रथम दुबे जी का विश्व सरकार एवं जय जगत का चिंतन प्रस्तुत होता है। जिसे वे आगामी बाइसवीं शताब्दी में आकार ग्रहण करने की भविष्यवाणी करते हैं। इसमें दुबे जी ने 15 बिंदुओं को समाहित किया है — 1. विश्व नागरिकता, 2. मानव अधिकारों का संरक्षण विश्व सरकार द्वारा भी, 3. अंतरराष्ट्रीय न्यायालय एक विश्व न्यायालय, 4. रक्षा व्यवस्था, 5. मूलभूत आवश्यकताएं, 6. मानक अंक, 7. यातायात के सुविधाएं, 8. संचार के साधन, 9. समुद्रजल, 10. कार्बन उत्सर्जन पर व्यापक रोक, 11. प्रदूषण की रोकथाम, 12. एक विश्व मुद्रा अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, 13. विश्व बैंक, 14. अंतरराष्ट्रीय भाषा और 15. ऊर्जा स्रोत।

इनके अंतर्गत प्रमुख चिंतन बिंदु हैं – आज के मानव अधिकार कल मौलिक अधिकार बन जायेंगे, राष्ट्रों की सीमाएं अत्यंत लचीली होंगी इसलिए राष्ट्रीय सुरक्षा की व्यवस्था बहुत कम होगी, रक्षा संस्थानों में 80 प्रतिशत उत्पादन जन कल्याण के लिए होगा। तीनों सेनाएं विश्व सरकार के नियंत्रण में होंगी, मूलभूत आवश्यकताओं— भोजन, पानी, वस्त्र, आवास की व्यवस्था विश्व सरकार करेगी, बालक/बालिकाओं की अनिवार्य शिक्षा व्यवस्था भी विश्व सरकार करेगी, सारे संसार में दशमिक प्रणाली लागू होगी। सब देशों में अंतरराष्ट्रीय मानक अंक प्रचलित होंगे, अंतरराष्ट्रीय यातायात और संचार व्यवस्था लागू होगी, समुद्री जल पर विश्व सरकार का नियंत्रण होगा। सारे विश्व में एक मुद्रा—डॉलर, एक विश्व बैंक और एक भाषा—अंग्रेजी होगी संक्षेप में कुल मिलाकर यही दुबे जी के सपनों की बाइसवीं सदी है। श्री दुबे जी की उपरोक्त संकल्पना के बाइसवीं सदी में साकार होने की भविष्यवाणी सच होगी या नहीं यह तो भविष्य बतायेगा, लेकिन इससे निम्नांकित बातें तो प्रमाणित हो ही जाती हैं – 1. दुबे जी महात्मा गांधी और विनोबा भावे की विश्वबंधुत्व, विश्वशांति की भावना से सहमत हैं। 2. विनोबा भावे का 'जय जगत' का उद्घोष जो हमें राष्ट्रीयता की भावना से ऊपर उठकर संपूर्ण विश्व की मानवता के कल्याण की कामना करने के लिए प्रेरित करता है, निश्चय ही श्रेष्ठ है और दुबे जी का उसको मान्य करना उनकी विस्तृत और उदार दृष्टि का परिचायक है। 3. वस्तुतः आध्यात्मिक दृष्टिकोण ही सारे संसार को परमात्मा का विलास और आवास समझने की शक्ति देता है। हमारे प्राचीन ऋषि— मुनियों की यही सोच हमारे वेद—उपनिषदों में व्यक्त हुई है। वसुधैव कुटुम्बकम् का उद्घोष भी भारत भूमि से उठा। ईशोपनिषद के प्रथम मंत्र में ही इसका उल्लेख मिलता है। मंत्र का हिंदी अनुवाद सबकी सुविधा के लिए प्रस्तुत है –

ईश का है विभव यह सब जगत में जो कुछ विनश्वर।

भोग कर तू त्याग से परसत्त्व की मत कामना कर।

यह मंत्र गांधी जी के जीवन का मूलमंत्र था। त्याग से अर्थात् 'त्येन त्यक्तेन भुंजीथा' को तो उन्होंने भारतीय दर्शन का सर्वोच्च आदर्श स्वीकार किया था। क्योंकि इसमें उनके प्रिय जीवन मूल्यों— अस्तेय और अपरिग्रह का संदेश छिपा है। दुबे जी भी इससे पूरी तरह सहमत हैं। तभी तो उन्होंने मुफ्त में मिलने वाली दैनिक भास्कर की प्रतियों को रद्दी में बेचकर मिलनेवाली राशि को कभी अपने खर्च के लिए स्वीकार नहीं किया। इतना ही नहीं, धन के संग्रह की भावना भी उनमें नहीं थी, अन्यथा वे शिक्षक का पद स्वीकार न कर कोई कमाऊ पद पर नौकरी करना स्वीकार करते। तात्पर्य यह कि श्री दुबे जी सिद्धांत रूप में ही नहीं, व्यवहार रूप में भी आध्यात्मिकता से अद्भुत उपरोक्त बातों को स्वीकार करते हैं। यह व्यवहार उनके आचरण का अंग बन गया है। वे स्वयं गांधी जी को उद्धृत करते हैं – “My mission is not merely freedom of India. But through realization of freedom of India. I hope to realize and carry on mission of brotherhood of Man.” इसी प्रकार वे विनोबा भावे को भी उद्धृत करते हैं – “The goal of our thinking and meditation is to develop consciousness for the whole World.” वे विनोबा को उद्धृत करते हैं – “बाबा राष्ट्र कहता ही नहीं जय जगत कहता है। राष्ट्र—राष्ट्र जपते रहेंगे तो लड़ाइयां तो चलती ही रहेंगी।” श्रीदुखयाल इसी भाव की अभिव्यक्ति करते हुए कहते हैं –

जय जगत पुकारे जा सिर अमन पर वारे जा।

सबके हित के वास्ते अपना सुख बिसारे जा।

### श्री दुबे जी एक शिक्षक के रूप में –

श्री दुबे जी एक शिक्षक ही क्यों बने, जबकि अपनी शैक्षणिक योग्यता के बल पर वे कई अच्छी आमदनी और रुतबे वाले सरकारी पद प्राप्त कर सकते थे। क्या वे अपनी इस स्थिति से संतुष्ट हैं? इस प्रश्न का समाधान 'नहीं' है,

मुझे अफसोस' शीर्षक अपनी कविता में मानो दुबे जी अपनी ओर से कहते हैं –

नहीं, मुझे नहीं है अफसोस मैं एक दीपक बनना चाहता था, तिल— तिल जलकर प्रकाश फैलाना था मेरा काम और वह मैंने किया। क्या हुआ जो कुछ नहीं है मेरे पास, कम से कम अंधेरा तो नहीं है, और मेरे द्वारा जलाये गये सैकड़ों दिये, भले ही टिम-टिम कर ही सही आज भी अंधेरे में जल रहे हैं और फैला रहे हैं प्रकाश। इसलिए नहीं है, मुझे अफसोस रंच मात्र भी। इसी प्रकार श्री रामगोपाल रैकवार श्री दुबे जी की भावनाओं को काव्याभिव्यक्ति देते हुए अपनी

'छोटी सी आशा' नामक कविता में कहते हैं –  
अगर मुझे ऐसा ही करना होता तो खुद को शिक्षा से न जोड़ता,  
तैंतीस वर्ष पूर्व नायब तहसीलदार का पद न छोड़ता।  
मैं इस तरह के कामों में खुद को असमर्थ पाता हूँ,  
क्योंकि मैं आज भी इस दुनिया की नजर में राष्ट्रनिर्माता हूँ।  
मैं उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ जब समाज मुझे सम्मान देगा,  
राजधानी में कम से कम एक बना बनाया मकान देगा।

कवि ने प्रस्तुत कविता में वर्तमान समाज पर कटाक्ष किया है वह राष्ट्रनिर्माता शिक्षक के प्रति कृतघ्नता की सीमा तक उदासीन है। फिर भी सारा समाज ऐसा नहीं है क्योंकि शिक्षाविद् डॉ. गुलाब चौरसिया जी के मार्गदर्शन में श्री दुबे जी को मकान तो नहीं पर अवार्ड ऑफ एक्सीलेंस देकर सम्मानित तो किया गया। श्री एम.डी. शर्मा ने 'सुरेंद्रनाथ दुबे का शैक्षिक अवदान' नामक अपने आलेख में यह बताया है कि शिक्षा की बेहतरी के लिए समर्पित दुबे जी ने किस प्रकार श्री राजीव गांधी के पास नयी शिक्षा नीति की मांग करने वाली अपने हस्ताक्षर की हुई चिट भिजवाई और एक प्रकार से सन् 1986 की शिक्षा नीति बनाये जाने की घोषणा करवाई। साथ ही उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि दुबे जी किस प्रकार नेताओं और मंत्रीगणों के बीच लोकप्रिय थे। तभी तो मुख्यमंत्री श्री मोतीलाल वोरा जी ने (श्री दुबे के लिए) स्वेच्छानुदान से तत्काल दस हजार रुपए के अनुदान की व्यवस्था की, ताकि वे भी प्रतिनिधि मंडल के साथ रुस जा सकें। इसी प्रकार श्री के.के. श्रीवास्तव ने अपने आलेख में बताया कि कैसे अपनी असीम लगन और कठोर परिश्रम से दुबे जी ने बालकों के शिक्षा के अधिकार को संविधान का 86वां संशोधन कराके मौलिक अधिकार 21-ए बनवाया। श्रीवास्तव जी ने यह भी स्पष्ट किया कि श्री दुबे जी अपनी लगन और कठोर परिश्रम से ही शिक्षक कल्याण के कार्य हेतु प्रतिनियुक्ति पर शास्त्री भवन दिल्ली में पदस्थ हुए। उनका मध्यप्रदेश भवन का आवास शिक्षकों का विश्राम गृह बन गया था।

श्री एम. के. सक्सेना, सेवानिवृत्त जिला शिक्षा अधिकारी, बड़वानी, मध्यप्रदेश हायर सेकण्डरी स्कूलों के व्याख्याताओं को राजपत्रित अधिकारी बनवाने में श्री सुरेंद्र नाथ दुबे की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हुए बताते हैं कि उन्होंने अपने निजी संबंधों का लाभ उठाकर डॉ. शंकरदयाल शर्मा, विष्णु राजौरिया, अजीज कुरैशी, सत्यनारायण अग्रवाल आदि से मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह के नाम औपचारिक पत्र प्राप्त कर उन्हें दिये। मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह भी यही चाहते थे, फलतः एक मीटिंग में इसकी घोषणा तत्कालीन शिक्षामंत्री श्री नाथूराम अहिरवार द्वारा भी की गयी। बाद में एक टीप अंकित की गई कि चूंकि व्याख्याताओं की संख्या बहुत अधिक है अतः इन्हें राजपत्रित अधिकारी नहीं बनाया जा सकता और इसलिए इन्हें ऊंचा वेतनमान भी नहीं दिया जा सकता। इस प्रकार मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह और प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की सिफारिश पर भी नौकरशाह भारी पड़े। फिर भी दुबे जी



ने हार नहीं मानी। इस बार उन्होंने साहस करके प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी के सामने वरिष्ठतम अधिकारी की टीप का मामला उठाया। तब इंदिरा जी ने सामने खड़े अर्जुन सिंह से कहा – “कैसी मूर्खतापूर्ण बातें अधिकारी लिख देते हैं। आप व्याख्याताओं को राजपत्रित ओहदा दीजिए और उन्नत वेतनमान भी दीजिए।” तब दूसरे दिन तदाशय की घोषणा की गई। श्री सुरेंद्रनाथ दुबे ने प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की उपस्थिति का लाभ उठाते हुए गरीब बच्चों को निःशुल्क स्कूल ड्रेस तथा मिड- डे मील की मांग उठाई, जिन पर सहानुभूति पूर्वक विचार का आश्वासन मिला तथा मध्यप्रदेश शासन को 10 करोड़ रुपये स्कूल ड्रेस के लिए तुरंत मिल गये। इससे श्री सुरेंद्रनाथ की निर्भीकता, वाकपटुता और सतत प्रयास के गुणों का पता चलता है। इस संदर्भ में श्री एम. के. सक्सेना द्वारा सरकारी अधिकारियों के सरकार में वर्चस्व पर की गई टीप विचारणीय है। वे कहते हैं कि नवम्बर 1965 में लालबहादुर शास्त्री ने मंत्रि परिषद की बैठक में निर्णय करके इंडियन एजुकेशन सर्विस का गठन करने का निर्णय हुआ था तथा एक बिल बनाने का निर्णय भी किया था। उनकी यह बात कि प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों के सामने लगभग सभी राजनेता बौने हैं और जो अधिकारी चाहते हैं, वही होता है। इसी लिए आई.ई.एस. का गठन आज तक नहीं हो पाया है। अधिकारी अक्सर राजनेताओं के बारे में स्पष्ट कहते हैं कि “राजनेताओं का काम तो ट्रॉसफर और पोस्टिंग करना रहा गया है। अधिकांश कर्मचारी भी अपने कामों के लिए उनसे ही मिलते हैं। तो फिर भावी पीढ़ी की चिंता कौन करेगा। इसलिए भी अधिकारी अधिक स्वेच्छाचारी हो गये हैं।” इस संबंध में भी अपनी यह टिप्पणी करने का मैं लोभ संवरण नहीं कर पा रहा हूँ कि हमारे देश के आजाद होने के बाद हमारी शासन व्यवस्था तो प्रजातांत्रिक हो गई किंतु हमारी प्रशासनिक व्यवस्था आज भी, अंग्रेजों की केंद्रीयकृत प्रशासनिक व्यवस्था के समान सामंतवादी बनी हुई है। हमारे प्रशासनिक अधिकारी अभी भी अंग्रेजों की तरह सत्ता का केंद्रीयकरण कर हाकिम बने हुए हैं। उन पर किसी का कोई नियंत्रण नहीं है। वे ‘परम स्वतंत्र न सर पर कोऊ’ की कहावत चरितार्थ कर रहे हैं। इस संबंध में मुझे भी मोरारजी भाई देसाई के प्रधानमंत्रित्व काल की एक घटना का स्मरण आ रहा है, जो समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई थी। इसके अनुसार कुछ मंत्रीगण मोरारजी भाई देसाई के पास गये और उन्होंने शिकायत की कि उनके सेक्रेटरी उनकी बात नहीं सुनते। इस पर मोरारजी भाई देसाई ने कहा, “देखो, ये आई.ए.एस. अधिकारी घोड़े हैं। इन पर सवारी करना सीखो वरना ये तुम्हें उठाकर पटक देंगे।” यह उत्तर तो बड़ा बुद्धिमत्तापूर्ण लगता है किंतु इसमें यह नहीं बताया गया कि इन आई.ए.एस. अधिकारियों पर सवारी कैसे कसी जाए। वस्तुतः हमारी प्रशासनिक व्यवस्था सामंतवादी या हुक्मरानी है। मंत्रियों को भी अपने काम कराने के लिए अपने प्रशासनिक अधिकारी पर निर्भर होना पड़ता है। फिर उन्हें अपने विभाग की सभी जानकारीयां/विधानसभा और लोकसभा में पूछे गये सवालों के उत्तरों की व्यवस्था के लिए भी उनका ही सहारा लेना पड़ता है। उनकी गोपनीय चरित्रावली भी लिखने का उन्हें अधिकार नहीं होता। ऐसी दशा में वे अपने प्रशासनिक अधिकारी पर न तो नाराज होने की हिमाकत कर सकते हैं और न उनसे सख्ती से पेश आ सकते हैं। कुछ दबंग और होशियार मंत्रीगण इसके अपवाद हो सकते हैं किंतु अधिकांश मंत्रीगण इसी स्थिति में रहने को बाध्य होते हैं। इस स्थिति से बचने का एक ही उपाय है कि हमारी प्रशासनिक व्यवस्था को प्रजातांत्रिक बनाया जाए। इसे प्रजातांत्रिक बनाने का सीधा सरल रास्ता यह है कि प्रशासन के प्रत्येक विभाग में उस विभाग के विशेषज्ञों की एक समिति बनाई जाए जो हर मामले में निर्णय लेने के लिए अधिकृत हो। मंत्री जी इस विशेषज्ञ समिति के अध्यक्ष और प्रशासनिक अधिकारी इसके सचिव हों। इस समिति द्वारा लिए गये निर्णयों को लिपिबद्ध किया जाए, और उसे कियान्वित करने का उत्तरदायित्व प्रशासनिक अधिकारी का हो। ऐसी दशा में कोई प्रशासनिक अधिकारी मनमानी करने, विभाग का सर्वज्ञ

बनने, अपनी मर्जी सब पर लादने और स्वयं को सर्वशक्तिशाली समझने की मनोदशा से बाहर निकल आयेंगे।

महात्मा गांधी के अनन्य सेवक श्री एस.एन. सुब्बाराव दुबे जी के संबंध में लिखते हैं :- “Shri Dubey held many offices in Madhya Pradesh and Union Government but kept his character clear and further built a heart that melts at seeing suffering and this concern took Shri Dubey to the point that now he concentrates on creating conscientious citizen for free India. The seeds are to be sown in young Indian minds. So, he with the support from his daughter Anju Bajpai and other dedicated friends has launched the magazine “School Shiksha”

इसी प्रकार मध्यप्रदेश शासन के पूर्व मुख्य सचिव श्री शरदचन्द्र बेहार अपने आलेख में लिखते हैं - “दुबे जी श्री सुब्बाराव के भक्त हैं। यह भी उनके व्यक्तित्व के एक पहलू को रेखांकित करता है। श्री सुब्बाराव ने अपना जीवन देश और समाज की सेवा के लिए समर्पित कर दिया है। दुबे जी इसी वजह से उनके भक्त हैं, यह अहसास कि वे गृहस्थ न होकर श्री सुब्बाराव की तरह देश सेवा में लगे रहते तो कुछ अलग होता, अपने को कम आंकना और दूसरे के गुण को बढ़ा-चढ़ाकर समझना दुबेजी की गुणग्राहकता का परिचायक है।” डॉ. गुलाब चौरसिया, जो अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शिक्षाविद् और श्री दुबे जी के गुरु भी हैं, वे अपने आलेख 'A dedicated Teacher' में लिखते हैं - “Shri Surendra Dubey is a sincere and honest follower of the philosophy of Mahatma Gandhi since his student career, an educationist and holding first class scholars position, a teacher educator and a teacher leader of national repute. He moved effectively to organize the unorganized teachers and brought them under the banner of Shikshak Congress, All India federation of Educational Association, Lecturers Association, National Forum of School Teachers and is founder of Education India----- His Gandhian approach to resolve the various problems of Bhopal area to which he belongs is well Known to Public His personality., sincerety and honesty has further elevated hs image and status in the eyes of residents of Bhopal and among the teaching community of the state.”

वाकपटुता भी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण गुण होता है। श्री दुबे जी में यह गुण कूट-कूटकर भरा है। सन् 1971 के पांच सितंबर (शिक्षक दिवस) की बात है। ‘भावी पीढ़ी के निर्माण में शिक्षक की भूमिका’ विषय पर सेमीनार के अंतर्गत भाषण प्रतियोगिता आयोजित थी। इसमें प्रथम पुरस्कार पानेवाले श्री सुरेंद्रनाथ दुबे का भाषण इतना विद्वतापूर्ण, सारगर्भित और हृदयस्पर्शी था कि श्रोताओं ने ही नहीं, तीनों निर्णायकों ने भी उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। एक निर्णायक ने तो यहाँ तक कहा कि “बेटे आज तुमने मेरी आंखों में आंसू ला दिये। मेरे सारी जिंदगी निकल गई, मैंने इससे अधिक भावनात्मक भाषण कभी नहीं सुना था।” वाकपटुता या वक्तृत्वकला की प्रतिभा उन्हें ईश्वर प्रदत्त है। इसका प्रमाण हमें उनके छात्र जीवन में ही मिल जाता है, जहां वे विद्यालय/महाविद्यालय की हर भाषण या वाद-विवाद प्रतियोगिता में हमेशा प्रथम स्थान पर ही रहे।

एक सेवाभावी सेवक - श्री सुरेंद्रनाथ दुबे एक आदर्श शिक्षक होने के साथ-साथ एक ऐसे सेवाभावी सेवक भी हैं जो संपर्क में आने वाले हर व्यक्ति की निःस्वार्थ भाव से सेवा करता है। इतना ही नहीं, वे समाजसेवा के अभियानों/आंदोलनों में भी हमेशा सक्रिय रहे, तभी तो दुबे जी श्री सुब्बाराव जी के अनेक समाजसेवा शिविरों में सहयोगी बने। नेशनल यूथ प्रोजेक्ट में श्री दुबे जी की सहभागिता तथा “नेशनल फाउंडेशन फॉर टीचर्स वेलफेयर” में अपनी सेवाएं प्रदान करना इसके जीवंत प्रमाण हैं। इस निःस्वार्थ सेवाभाव की प्रेरणा श्री दुबे जी को

महात्मा गांधी, विनोबा भावे और गांधीवादी विचारक श्री एस.एन. सुब्बाराव से मिली। इस संबंध में श्री दामोदर जैन अपने आलेख 'कुशल नेतृत्वकर्ता श्री एस.एन. सुब्बाराव दुबे जी को मानते हैं।' इसके फलस्वरूप 11 सितम्बर को 1958 को दुबे जी ने आजीवन देश की भावी पीढ़ी को शिक्षित करने का संकल्प लिया। श्री दुबे जी की इस सेवाभावी प्रकृति के अनेक दृष्टांत उनकी जीवन यात्रा में बिखरे पड़े हैं। गरीब बालिकाओं के लिए मुफ्त में स्कूल ड्रेस की व्यवस्था हेतु प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से मध्यप्रदेश को दस करोड़ का अनुदान दिलाना, एक मरणासन्न शिक्षक को उसके मरने के ठीक पहले उसके स्वत्वों का भुगतान कराना, पूर्वोत्तर भारत और ओड़ीसा में आई भयानक बाढ़ के पीड़ितों के लिए सहायता राशि जुटाना आदि उनके महत्वपूर्ण सेवाकार्य हैं। इसी क्रम में एक घटना का उल्लेख करना चाहूंगा, जिसे श्री रमेशचंद्र जोशी ने अपने आलेख में 'सर्वजन हितैषी दुबेजी' में प्रस्तुत किया है। श्री जोशी जी कहते हैं कि वे जब दिल्ली में 'अखिल भारतीय शिक्षक संघ' के बैनर तले आयोजित धरने पर बैठे थे, तब "उस समय सुरेंद्रनाथ दुबे जी मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली व शिक्षक कल्याण प्रकोष्ठ में वरिष्ठ अधिकारी के पद पर कार्यरत थे। सरकारी अनुशासन के कठोर आवरण की परिधि को लांघकर अपनी आत्मा की आवाज पर, यह जानते हुए भी कि शिक्षकों के साथ मात्र दिखने भर से उनको कठोर प्रशासनिक जवाबदेही का सामना करना पड़ सकता है। वे धरना स्थल पर उपस्थित हुए तथा लंबे समय तक धरने पर बैठकर हम सबका उत्साह वर्धन किया।"

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि श्री सुरेंद्रनाथ दुबे एक प्रवाहमान त्रिवेणी—आदर्श शिक्षक, सेवाभावी सेवक और गांधीवादी चिंतक हैं। लेकिन इसका यह तात्पर्य नहीं कि श्री दुबे जी में त्रिवेणी की उपरोक्त विशेषताओं के अतिरिक्त कोई और गुण हैं ही नहीं। वे अनेक अन्य स्पृहणीय गुणों के स्वामी हैं। यह बात अलग है कि हम इन गुणों को उपरोक्त त्रिवेणी में मिलने वाली सहायक नदियां/झरने कह सकते हैं, क्योंकि शेष गुण या गतिविधियां भी मुख्य त्रिवेणी से ही उद्भूत और प्रेरित हैं। इनके अंतर्गत हम निम्नांकित बातों का समोवश कर सकते हैं :—

लेखक के रूप में — श्री सुरेन्द्र नाथ दुबे जिस प्रकार एक कुशल वक्ता हैं उसी प्रकार वे एक सफल लेखक भी हैं। एक लेखक के रूप में दुबे जी ने उन्हीं बातों, भावों और विचारों को अभिव्यक्ति दी है, जो उन्होंने एक शिक्षक, सेवक और गांधीवादी चिंतक के रूप में सोचा है। यहां मैं यह स्पष्ट करना चाहूंगा कि श्री दुबे की अपार श्रद्धा तीन व्यक्तियों के प्रति विशेष रूप से दृष्टव्य है — 1. शिक्षाविद डॉ. गुलाब चौरसिया, जिन्हें वे अपना गुरु मानते हैं, 2. श्री शरदचंद्र बेहार, जो मध्यप्रदेश शासन में शिक्षा विभाग के प्रमुख सचिव और बाद में मुख्य सचिव रहे और 3. श्री एस.एन. सुब्बाराव, जो विश्व विख्यात गांधीवादी विचारक और समाजसेवी हैं। एक लेखक के रूप में दुबे जी ने इन तीनों का प्रशस्ति गायन किया है। डॉ. गुलाब चौरसिया के संबंध में श्री दुबे जी अपने आलेख 'Late Dr. Gulab Chourasia' में लिखते हैं — "Throughout his career he has shown devotion to the casuse of education of children, teacher education and welfare of teacher, as a teacher aducator, planner and designer. For about 50 years, visiting country after country and attending, organizing, masterminding and monitoring. Workshops, seminars, conferences, symposia and events of vital importance, he led the academic world to think and contemplate." इसी क्रम में दुबे जी अपने 'श्री शरदचंद्र बेहार की सहृदयता' नामक आलेख में लिखते हैं "बहुत से अधिकारी नियमों की जड़ता की अपेक्षा उद्देश्य की पवित्रता और जनहित को प्राथमिकता देते हुए लीक से हटकर निर्णय लेने में संकोच नहीं करते, वरन् ऐसे निर्णय लेकर एक मिसाल पेश करते हैं। एक ऐसा ही मार्मिक संस्मरण प्रदेश के ख्यातनाम आई.ए.एस. अधिकारी एवं शिक्षाविद् शरदचंद्र बेहार से जुड़ा है।" संस्मरण में दुबे जी सागर के गंभीर रूप से बीमार और आर्थिक संकट से गुजर रहे एक व्याख्याता श्री आर.डी.चौबे द्वारा इलाज के लिए की गई बंबई की यात्रा के व्यय



के भुगतान के संबंध में प्रमुख सचिव श्री शरदचंद्र बेहार द्वारा दिखाई गई सहृदयता, तत्परता, सूझ-बूझ और फॉलोअप का विवरण देते हैं, जिससे शिक्षक को मरने के पहले यात्रा व्यय की राशि मिल जाती है। जहां तक श्री एस.एन. सुब्बाराव का संबंध है, उनकी प्रशस्ति में तो दुबे जी ने पूरी एक पुस्तक 'सुब्बाराव एक यायावर महर्षि' ही लिख डाली और उन पर डाक्यूमेंटरी फिल्म तक बना डाली, जिन्हें अनेक महान हस्तियों ने सराहा। विभिन्न विषयों पर आलेख लिखने वाले श्री दुबे जी ने कई पुस्तकें भी लिखी हैं। इन पुस्तकों का विवरण निम्नानुसार है :— (1) Population of India 2001, (2) Education Scenario in India -2001, (3) Inservice Education for Teachers (4) बच्चे गाएँ : गाँधी गाथा (5) आदर्श युवा संसद (6) सबतें कठिन जाति अवमाना (काव्याभिव्यक्ति गुणसागर) इत्यादि।

ये कृतियां सिद्ध करती हैं कि श्री दुबे जी अंग्रेजी और हिंदी पर समान अधिकार रखने वाले एक सिद्धहस्त लेखक हैं। श्री दुबे जी को एक सिद्धहस्त लेखक और आदर्श शिक्षक के रूप में स्थापित करने वाले पाँच खुले पत्र

सुरेन्द्र नाथ दुबे के पाँच खुले पत्र अनौपचारिक शिक्षा के मार्ग में मील का पत्थर हैं। पहला पत्र 'विश्व के करोड़ों बच्चों की माताओं के नाम' लिखा गया है। क्योंकि माताएं अपने परिवार की प्रथम पाठशाला की प्रथम अनौपचारिक शिक्षिका होती हैं। दुबे जी यह मानकर चलते हैं कि मातृभाषा, दस तक गिनती, पौधों का संरक्षण, पशु-पक्षियों के प्रति दयाभाव और नारी जाति के प्रति सम्मान की शिक्षा मां ही देती है। आज नारी जाति के प्रति अन्याय और अत्याचार की घटनाओं में वृद्धि का कारण वे माताओं द्वारा नारी के सम्मान की शिक्षा अपने बच्चों को विधिवत न दे पाने को मानते हैं। वे अपने पत्र में माताओं से यह कार्य बखूबी करने का आग्रह करते हैं।

दूसरा पत्र आपने विश्व के करोड़ों बच्चों के पिताओं के नाम लिखा है। इसमें दुबे जी ने दो बातों की ओर उनका ध्यान विशेष रूप से खींचा है। पहली बात यह कि "बुढ़ापे में अपने माता-पिता की सही देखभाल और सम्मान वही बच्चें करेंगे, जिनके माता-पिता अपने माता-पिता अर्थात् बच्चों के दादा-दादी का उचित सम्मान और देशभाल करते होंगे। अपनी आँखों के सामने माता-पिता को अपमानित और प्रताड़ित करने वाले पिता का सम्मान उसकी संतान कभी नहीं करती है।" दूसरी बात यह कि "अगर आप चाहते हैं कि हम आपके बच्चे को आदर्श नागरिक के रूप में ढाल सकें तो आपको भी अपने बच्चों को यह सिखाना होगा कि अनीतिपूर्वक सफलता पाने की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफल होना अच्छा है। अगर आप अनीतिपूर्वक सफलता पाने वालों की सराहना करेंगे तो निश्चित ही अपने बच्चों के लिए अनीति का मार्ग प्रशस्त करेंगे। अंत में एक कठोर बात और जिसके लिए क्षमाप्रार्थी भी हूँ। वह यह कि यदि आप गलत तरीके से पैसा कमाकर बच्चों की आवश्यकता पूरी करना चाहोगे तो हम भला कैसे आपके बच्चे को ईमानदार बनने की शिक्षा दे पायेंगे। अनीति, भ्रष्टाचार, नशा, दहेज, आडंबर का कुचक्र तोड़ने के लिए आप हमारी मदद कीजिए।"

तीसरा पत्र दुबे जी ने अभिनेता/अभिनेत्रियों के नाम लिखा है। क्योंकि वे भी बच्चों के सर्वव्यापी अनौपचारिक गुरु हैं और बच्चों पर उनका प्रभाव माता-पिता और गुरु से भी अधिक पड़ता है। इस तथ्य का उद्घाटन करते हुए दुबे जी अपने पत्र में लिखते हैं—"आज बच्चे आपसे जो सीख रहे हैं, वह सकारात्मक कम और नकारात्मक अधिक है। आप जिस मायावी कृत्रिम दुनिया का निर्माण हैं, वह लोगों को यथार्थ से भटका देती है। जब युवा पीढ़ी आपको गांव या छोटे से कस्बे में भागकर महानगर में पहुंचते ही रातों-रात लखपति बनते या झूठी कामयाबी पाते देखती है तो हजारों युवक इस मृग मरीचिका के चक्कर में अपना घरबार छोड़कर फुटपाथों के अंधेरों में अपना जीवन बरबाद कर देते हैं। इनमें से अधिकांश नशे और अपराध के दुष्चक्र में फंस जाते हैं और सामने घटित होती हैं 'दामिनी' जैसी हृदय विदारक घटनाएं।" वे आगे लिखते हैं—"अपनी थोड़ी सी कमाई को

फैशनेबल कपड़ों और श्रृंगार सामग्री पर खर्च करने वाले युवाओं को देखकर उन पर तरस और आप सब पर गुस्सा आता है जो उनके सामने सौंदर्यता के नये-नये प्रतिमान गढ़ते हैं आपने ही अनगिनत बच्चों को शराब, सिगरेट, गुटखा और पान— मसाला खाने की शिक्षा आपने दी है, हिंसा की अधिकांश घटनाएं तो आपकी ही देन हैं।” अपने तर्कों का समापन करते हुए दुबे जी लिखते हैं— “कार्य का औचित्य तर्क नहीं, परिणाम सिद्ध करते हैं। आपके द्वारा दृश्य साधनों के माध्यम से परोसी जा रही नग्नता और कामोत्तेजक वस्त्र प्रदर्शन कहीं न कहीं मासूम बच्चियों, असुरक्षित किशोरियों एवं निर्बल महिलाओं पर अत्याचार के उद्दीपन का काम करते हैं।”

चौथा पत्र दुबे जी ने मीडिया के अनौपचारिक शिक्षक भाइयों के नाम लिखा है। इस पत्र में दुबे जी का यह लिखना कि “लोकतंत्र की सफलता के लिए स्वतंत्र एवं निष्पक्ष मीडिया को होना नितांत आवश्यक है” सर्वथा उचित है। वे मीडिया की गलतियों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं। वे मीडिया के पैसा कमाने के लिए अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को ताक पर रख देने की प्रवृत्ति पर कटाक्ष करते हुए कहते हैं —“आप अपना शिक्षक धर्म भूल चुके हैं। आपकी निष्पक्षता संदिग्ध हो रही है। आपके समाचार प्रचार बन गये हैं। भ्रामक, दूषित और उत्तेजक विज्ञापनों के द्वारा आप बच्चों, युवाओं सहित जन साधारण को क्या संदेश देना चाहते हैं? सनसनीखेज, आपराधिक समाचारों के मकड़जाल में सकारात्मक और रचनात्मक समाचार उलझकर रह गये हैं।” पारिवारिक सीरियलों से हमारे सामने क्या परोस रहे हैं? इन्हें देखकर तो लगता है हमारे परिवार शायद छल-फरेब, स्वार्थ, झूठ, दुष्टता और षड़यंत्र के केंद्र के अतिरिक्त कुछ ही नहीं। परिवारों में ईर्ष्या-कलह के बीज बो रहे इन कार्यक्रमों से आपकी कमाई भले ही चौगुनी बढ़ रही हो पर हमारी सांस्कृतिक संपदा का जो हास हो रहा है उसकी पूर्ति नहीं हो पायेगी। मीडिया का उद्देश्य विज्ञापनों से या अन्य प्रकार से धन अर्जित करना रह गया है।” वे आगे लिखते हैं —“मीडिया केवल नंगा नाच दिखाने का माध्यम या व्यवसाय नहीं है, यह कोई ‘लव गुरु’ नहीं, ‘सामाजिक गुरु’ है। औपचारिक शिक्षकों की भांति अनौपचारिक शिक्षक के रूप में मीडिया को भी श्रेष्ठ नागरिक या राष्ट्र का निर्माण करना चाहिए।”

पांचवां पत्र दुबे जी ने साधु-संतों, प्रवचनकारों और उपदेशकों के नाम लिखा है। इसमें आपने जो सवाल उठाया है वह यह है कि साधु-संतों, प्रवचनकारों, उपदेशकों के प्रवचनों का प्रभाव उनके शिष्यों के चरित्र सुधार में सहायक है या नहीं। उन्हीं के शब्दों में —“क्या इस भीड़ में धर्मभीरु आशीर्वाद लालायित, तनावग्रस्त, कृपालोभी, स्वयं को धार्मिक प्रदर्शित करने वाले महिला-पुरुषों की संख्या ही अधिक नहीं है? क्या आप कभी जनता को यह बताते हैं कि कि जादू-टोना, अंधविश्वास, भूत-प्रेत, गृहदशा, भविष्यवाणी इत्यादि सभी को मानने वाले लोग ईश्वर को सर्वशक्तिमान नहीं मानते हैं। लगता है जैसे इन आयोजनों का लक्ष्य श्रोताओं एवं श्रद्धालुओं की उपस्थिति का कीर्तिमान बनाना ही रहा गया है। इन आयोजनों में सम्मिलित जन केवल नैतिकता का व्याकरण सीख रहे हैं, आचरण का पाठ नहीं।”

इस प्रकार श्री दुबे जी ने पांचों अनौपचारिक शिक्षकों को अपने खुले पत्रों के माध्यम से उनके वास्तविक उद्देश्यों और उत्तरदायित्वों का स्मरण कराया है। अपने इस अभिनव प्रयास से आपने स्वयं एक सच्चे अनौपचारिक शिक्षक होने का परिचय दिया है।

संपादक और प्रकाशक के रूप में सेवानिवृत्ति के पश्चात् भी आप अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हैं। अतः कहा जा सकता है कि दुबे जी 'though retired but not tired' की स्थिति में हैं। वे एक कुशल संपादक और प्रकाशक के रूप में आज भी कार्यरत हैं। इसका जीवंत प्रमाण है आपके द्वारा संपादित और प्रकाशित मासिक

पत्रिका 'स्कूल शिक्षा'। पत्रिका का नामकरण स्वयं कहता है कि दुबे जी अपने मूल अध्यापकीय लक्ष्य से हटे नहीं हैं। इतना ही नहीं, पत्रिका में प्रकाशित सामग्री— दुर्लभ चित्र और रचनात्मक तथा सारगर्भित आलेख, कविता आदि श्री दुबे जी का समर्पित शिक्षक और सफल संपादक होना तो सुनिश्चित करती ही है साथ ही पत्रकारिता और प्रकाशन के उच्च स्तरीय कीर्तिमान भी स्थापित करती है।

अंत में श्री सुरेंद्रनाथ दुबे जी की यह प्रवाहमान त्रिवेणी अपनी समस्त सहायक नदियों, झरनों आदि को लेकर जनकल्याण करने वाली यात्रा करती, उसमें अवगाहन करने वालों को शांति, सुख और संतोष का प्रसाद बांटती हुई ज्ञान के महासागर में विसर्जित हो जाती है, ताकि वहां से पुनः नये ज्ञान के बाल उठकर और बरसकर इस त्रिवेणी को फिर पूर्णता और नवीनता का वरदान दें।



— डॉ. गार्गीशरण मिश्र 'मराल'  
1436/बी, सरस्वती कॉलोनी, चेरीताल वार्ड  
जबलपुर-02, (म.प्र.) मो. 9425899232

#### डॉ. गार्गीशरण मिश्र 'मराल'

डॉ. गार्गीशरण मिश्र 'मराल' का जन्म 4 नवंबर 1936 को मध्य प्रदेश के जबलपुर नगर में हुआ। आपके पिता डॉ. हरिशरण मिश्र 'श्री हरि' भी मध्य प्रदेश के प्रतिष्ठित साहित्यकार थे। 'मराल' जी की साहित्य साधना की प्रेरणा अपने पिताजी से ही प्राप्त हुई।

डॉ. गार्गीशरण मिश्र 'मराल' की साहित्यिक प्रतिभा बहुमुखी है, नाटक विधा में आपके 'परिवर्तन' (एकांकी संकलन) 'उत्सर्ग' (छाया नाटक संकलन); 'जैसे को तैसा' (पंचतंत्र की कहानियों का नाटकीकरण) 'हमारा देश' (नाटक) आदि ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं।

आपके दो निबंध संग्रह (1) 'शिक्षा के विविध आयाम' एवं (2) 'परिस्थितियों का शीर्षासन', दो शोध ग्रंथ (1) 'रीतिकार्य के शाश्वत तत्व' एवं (2) 'रीतिकार्य में रहस्यवाद' तीन काव्य ग्रंथ (1) 'पंखुड़ियाँ' (गेय कविताओं का संग्रह) (2) 'मानव' (महात्मा गाँधी पर महाकाव्य) एवं (3) 'छाती का पीपल' (कविता संग्रह); 'पर्यावरण और हमारा दायित्व'; एक कहानी संग्रह 'अष्टदल' 'हमारे पथ प्रदर्शक' प्रकाशित हो चुके हैं।

**सम्पर्क:**

1436 बी. सरस्वती कालोनी, चेरीताल वार्ड, जबलपुर (म.प्र.)

डॉ० गार्गीशरण मिश्र 'मराल' आजीवन शिक्षा से जुड़े रहे। इसका प्रमाण यही है कि आप मध्यप्रदेश शासन स्कूल शिक्षा विभाग के अंतर्गत प्राचार्य हायर सेकेंडरी स्कूल, जिला शिक्षा अधिकारी, प्राचार्य बी.टी.आई., उप संचालक शिक्षा, अवर सचिव शिक्षा, संयुक्त संचालक शिक्षा, प्राचार्य शासकीय शिक्षा महाविद्यालय (I.A.S.E.), जबलपुर, संचालक, राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान, जबलपुर जैसे महत्वपूर्ण पदों पर पदस्थ रहे। इतना ही नहीं आपने रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर में अधिष्ठाता शिक्षा संकाय और संचालक शारीरिक शिक्षा के पदों को भी सुशोभित किया। आपकी कार्य कुशलता के फलस्वरूप सन् १९६८ में मध्यप्रदेश शासन ने आपको शिक्षा का उत्कृष्टता सम्मान प्रदान किया। मध्यप्रदेश में यह सम्मान पाने वाले आप प्रथम शिक्षाविद् हैं। अब तक आपके मार्गदर्शन में लगभग २५ शोधकर्ता शिक्षा संकाय में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। आपने बाह्य परीक्षक के रूप में लगभग २० शोधकर्ता छात्र-छात्राओं के शिक्षा संकाय के शोधग्रंथों का मूल्यांकन कर मौखिक परीक्षा ली है। शिक्षा के क्षेत्र में आप एक लेखक के रूप में भी प्रतिष्ठित हैं। शिक्षा पर आपकी अब तक तीन कृतियाँ—१. शिक्षा की समस्याएँ और समाधान, २. विश्व के प्रमुख शिक्षा शास्त्री और ३. Today's Education Tomorrow's Nation.- प्रकाशित हो चुकी हैं।

हमारी वर्तमान शिक्षा-व्यवस्था में नैतिक शिक्षा और शारीरिक शिक्षा के अभाव की ओर डॉ० मिश्र ने हमारा ध्यान खींचा है जो सचमुच इस ओर इंगित करता है कि हमने चरित्र और स्वास्थ्य को अपनी शिक्षा-व्यवस्था में उपेक्षित किया है। यह शुभ लक्षण नहीं है। इस दिशा में ठोस प्रयास किया जाना अपेक्षित है।

—डा० जी० चौरसिया



**BIO-DATA**

1. Name :- SURENDRA NATH DUBEY
2. Father's Name:- Late shri Baijnath Prasad Dubey
3. Date of Birth:- 26<sup>th</sup> January, 1939 (Age 75 Years)
4. Place of Birth:- Gangajali Mungaoli, Distt.: Guna (M.P.)
5. Nationality:- Indian
6. Educational Qualification:- M.A. (Economics), M.A. (Political Science),  
M.Ed. (Elementary Education), LL.B., Krishi-visharad
7. Permanent Address:- HIG-238 Bag Mugalia Ext. Bhopal, 462043 (India)
8. Present Address:- 1002, C-Tower, 10<sup>th</sup> Floor, Wembley Estate, Rosewood City-II Sector-50,  
Gurgaon-122018 (Haryana) (Ph:- 0124-4226346, Mob: - 09818612417)
9. Past Experience:-

**AS TEACHER & TEACHER EDUCATOR FOR 41 YEARS**

Important Offices held during this period are as follows:

- (I) **CO-ORDINATOR (EXTENSION SERVICES & IN-SERVICE EDUCATION)**  
**State Council of Education Research & Training (SCERT), Madhya Pradesh, Bhopal (28.10.1978 to 31.01.2001)** During this period entrusted with the following important assignments also -
  - (A) Advisor to Hon. Minister of School Education, Madhya Pradesh (01.09.1984 to 31.01.1989)  
Nominated by Secretary to Govt. of M.P. as Advisor to Hon. Minister of School Education, M.P. (April 99 to 31.01.2001)
  - (B) Officer on Special Duty (OSD), New Education Policy Cell' at Secretariat, (01.02.1989 to 31.03.1990) Officer on Special Duty (OSD), "Centrally sponsored schemes for Elementary Education" Govt. of M.P. Secretariat (01.03.1992 to 31.01.1993)
  - (C) In charge of Centre for Cultural Resources & Training (CCRT) Cell & Non-Formal Education Cell, (M.P. Model-2) (01.04.1990 to 28.02.1992)
  - (D) In charge Human Rights Education, Cell SCERT Govt. of M.P. (01.04.1995 to 31.01.2001)
  - (E) Secretary, State Board of Teacher Education, Madhya Pradesh (Nominated By Govt. of M.P.) (28.01.1996 To 30.10.2000)
- (II) Asstt. Secretary, "National Foundation for Teachers Welfare" on deputation to Govt. of India, Department of Education MHRD, Shastri Bhavan New Delhi 1, (Advisor-Teachers Welfare) (01.02.1993 to 31.03.1995)

**10. HONORARY POSITION IN TEACHER ORGANISATIONS**

- (A) National, General Secretary of All India Federation of Educational Associations (Founded in 1925) (01.05.1982 to this date)
- (B) Senior Vice President of Teachers Congress, Madhya Pradesh (From 01.06.1982 to 30.05.2002) 20 Years, Honorary Visiting Professor National Institute of Human Rights (01.02.2001 to this day)
- (C) President, All India Forum of Awardees Teachers (08.09.1999 to 05.09.2003)

**11. PRESENT ACTIVITIES (AFTER RETIRMENT ON 31.01.2001)**

**Author of the following Books: Published by Author Press New Delhi**

- (I) Population of India 2001, (ii) Education Scenario of India 2001, (iii) In-Service Education for Teachers in India, (iv) Edited bilingual Book "S. N. Subha Rao- A living spirit of Mahatma Gandhi" 'सुब्याराव एक यायावर महर्षि' - First Edition (Released on his 75<sup>th</sup> Birth Day (08.02.2004) at Dharmsthal) by Dr. V. Hegde, Three editions (v) Model Youth Parliament Two Editions, (vi) बच्चे गाएं गांधी गाथा Two Edition, (vii) Hind Swaraj of Gandhijee, (viii) Editor and Publisher of a bilingual monthly magazine 'SCHOOL SHIKSHA' स्कूल शिक्षा. 58 monthly issues published so far.

**12. Follower and close associate of shri S. N. Subba Raojee (1954 to this day)**

## SURENDRA NATH DUBEY

### As a Student

Class I To Class VIII	JUL. 1944-MAY 1951	AVM School Mungaoli, Dist. Guna, Madhya Bharat
Class IX To Class XII	JUL. 1951-MAY 1955	SSL Jain College Bhelsa, Madhya Bharat
Class XII	1955-56	Govt. Hamidia College, Bhopal
B.A., M.A.(Eco.),	JUL. 1956-APR. 1960	Govt. Hamidia College, Bhopal
M.A.( Pol.Sc.), LL.B.	JUL. 1963-APR. 1967	Govt. Hamidia College, Bhopal
B.Ed. (Basic)	1960-61	PGBT College, Bhopal
M.Ed. (Ele.Edn.)	1982-83	Regional College of Education, Bhopal

### As a Teacher & Teacher Educator

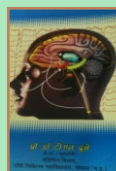
10 <sup>th</sup> October 1958 to 30 <sup>th</sup> June 1960	Wahidia Tech School, Bhopal
1 <sup>st</sup> July 1960 to 30 <sup>th</sup> April 1961	PGBT Bhopal (B.ED)
1 <sup>st</sup> May 1961 to 11 <sup>th</sup> December 1961	Wahidia Tech School, Bhopal
12 <sup>th</sup> December 1961 to 30 <sup>th</sup> August 1962	Head Master, Gandhian Experimental School, Thibgaon, Khargon
1 <sup>st</sup> November 1962 to 28 <sup>th</sup> February 1966	Govt. H.S. School, Piplani, Bhopal
1 <sup>st</sup> March 1966 to 30 <sup>th</sup> July 1966	Lecturer, Govt. H.S. School, Udaipur, Vidisha
1 <sup>st</sup> August 1966 to 9 <sup>th</sup> December 1969	Govt. H.S. School, Piplani
10 <sup>th</sup> December 1969 to 30 <sup>th</sup> December 1973	Subhas H.S. School, Shivaji Nagar, Bhopal
1 <sup>st</sup> January 1974 to 30 <sup>th</sup> April 1974	Lecturer, Pol. Science, Regional College of Education, Bhopal
1 <sup>st</sup> May 1974 to 31 <sup>st</sup> October 1974	H.S. School, Udaipur, Vidisha
1 <sup>st</sup> November 1974 to 30 <sup>th</sup> June 1976	Model School, Sahajanabad, Bhopal
1 <sup>st</sup> July 1974 to 30 <sup>th</sup> June 1977	Sultania H.S. School, Bhopal
1 <sup>st</sup> July 1977 to 10 <sup>th</sup> October 1978	Hamidia Boy's H.S. School, Bhopal
11 <sup>th</sup> October 1978 to 30 <sup>th</sup> June 1982	Co-ordinator State Institute of Education (SIE), Bhopal
1 <sup>st</sup> July 1982 to 30 <sup>th</sup> April 1983	Regional College of Education, Bhopal (M.ED.)
1 <sup>st</sup> May 1983 to 28 <sup>th</sup> January 1993	Co-ordinator, State Council of Educational Research and Training (SCERT), Bhopal
1 <sup>st</sup> February 1993 to 31 <sup>st</sup> April 1995	On Deputation to Govt. of India, MHRD, National Foundation for Teachers Welfare, Shastri Bhavan, New Delhi
1 <sup>st</sup> May 1995 to 31 <sup>st</sup> January 2001	Co-ordinator S.C.E.R.T. & Secretary State Board of Teacher Education, M.P., Bhopal.
During this period he was also nominated to work as advisor to hon. minister of school education, M.P. and OSD New Education Policy Cell of Govt.	

## बैजनाथ प्रकाशन

- ◆ 'एस. एन. सुब्बाराव-ए-लिविंग स्प्रिट ऑफ महात्मा गांधी' - 'सुब्बाराव एक यायावर महर्षि' संपादक-सुरेन्द्रनाथ दुबे- प्रथम संस्करण - द्विभाषी - हिन्दी, अंग्रेजी में।
- ◆ इसी पुस्तक के प्रकाशन पर संपादक/प्रकाशक सुरेन्द्र नाथ दुबे को सुलभ इन्टरनेशनल दिल्ली द्वारा एक लाख रुपये की सम्मान निधि भेंट हुई।
- ◆ इसी पुस्तक का द्वितीय संस्करण (मुख्यतः हिन्दी) में एवं तृतीय संक्षिप्त संस्करण भी प्रकाशित हुआ।
- ◆ 'एस. एन. सुब्बाराव-ए लिविंग स्प्रिट ऑफ महात्मा गांधी' - 'सुब्बाराव एक यायावर महर्षि डाक्यूमेन्ट्री फिल्म' - निर्माता, निर्देशक-सुरेन्द्र नाथ दुबे। वे 1954 से सुब्बाराव जी के घनिष्ठ सहयोगी हैं। सुरेन्द्रनाथ दुबे को रिसोर्स पर्सन मानकर दूरदर्शन ने भी सुब्बाराव जी पर 30 मिनट की एक डाक्यूमेन्ट्री बनाई है। जिसका 22 अप्रैल, 2011 को सभी दूरदर्शन केन्द्रों से प्रसारण हुआ था।
- ◆ आदर्श युवा संसद- लेखन एवं प्रस्तुति- सुरेन्द्रनाथ दुबे- दो संस्करण प्रकाशित
- ◆ संस्मरण- एस.एल.शर्मा- एक वरिष्ठ आई.ए.एस. अधिकारी के - प्रकाशक- सुरेन्द्रनाथ दुबे
- ◆ 'बच्चे गाएं गांधी गाथा'- काव्याभिव्यक्ति - गुणसागर सत्यार्थी- संपादन- सुरेन्द्रनाथ दुबे - दो संस्करण प्रकाशित
- ◆ सबते कठिन जाति अवमाना- संपादन एवं प्रस्तुति सुरेन्द्रनाथ दुबे- काव्याभिव्यक्ति- पं. गुणसागर सत्यार्थी
- ◆ अभिनंदन - डॉ.जी.चौरसिया- संपादन दामोदर जैन - श्रीमती सरोज दुबे
- ◆ स्मृतियों- स्व. पं. बैजनाथ प्रसाद दुबे एवं स्व. श्रीमती जानकी देवी दुबे।
- ◆ सौ वर्षों के बाद गांधीजी का 'हिन्द स्वराज'- सरलीकरण श्री दामोदर जैन - प्रस्तुति श्री एस.एन. दुबे
- ◆ आगामी प्रकाशन - बच्चों की शिक्षा के बारे में - श्री शरद चन्द्र बेहार के हिंदी, अंग्रेजी लेखों का संकलन
- ◆ आगामी प्रकाशन - स्कूल शिक्षा के बारे में - सुरेन्द्र नाथ दुबे के लेखों का संग्रह
- ◆ मिर्गी सामान्य जानकारी-प्रो. डॉ. टी.एन. दुबे, डी.एम. (न्यूरो)
- ◆ मिर्गी सच्चाई एवं भ्रांतियां-लेखक प्रो. डॉ. टी.एन.दुबे, डी.एम. (न्यूरो)
- ◆ जानिये मिर्गी रोग मरीजों के लिए एक उपयोगी पुस्तिका-लेखक प्रो. डॉ. टी.एन. दुबे
- ◆ Comprehensive guide to epileptics their families & friends- Dr. T. N. Dubey
- ◆ एपिलेप्सी-कारण और निदान - लेखक डॉ. टी.एन.दुबे

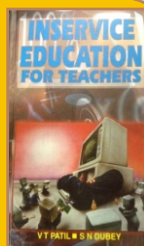
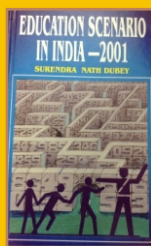
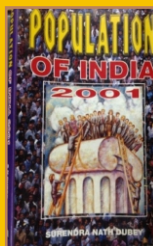


30 मिनट की एक



### Books Written by Surendra Nath Dubey & Published by Author Press, New Delhi

- 1- Population of India-2001
- 2- Education Scenario India-2001
- 3- In -Service Education for Teachers



Surendra Nath Dubey is Editor & Publisher of a National Bilingual Magazine **SCHOOLSHIKSHA**. Email- [schoolshiksha@gmail.com](mailto:schoolshiksha@gmail.com)  
108 Monthly edition published so far.

This magazine has gained reputation at National Level.

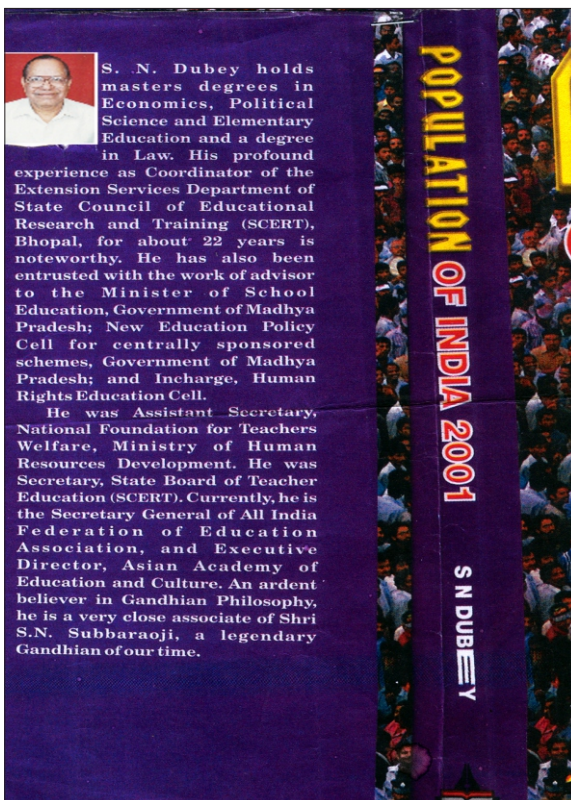
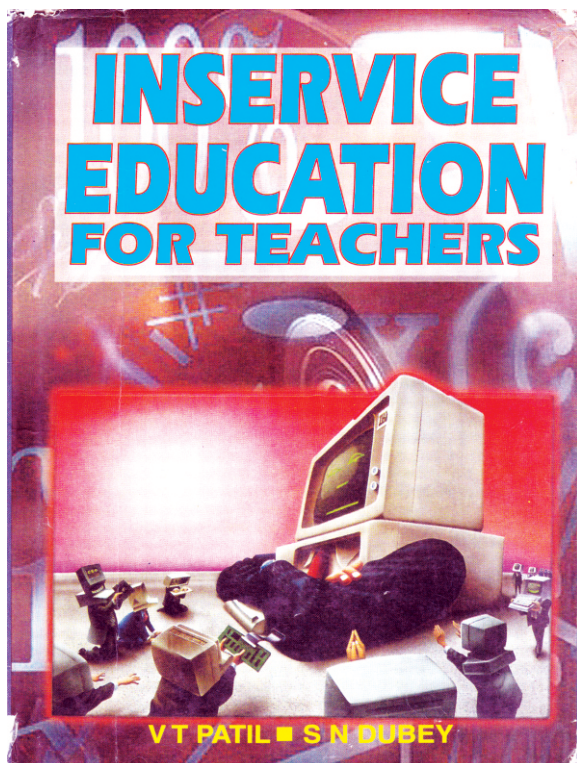
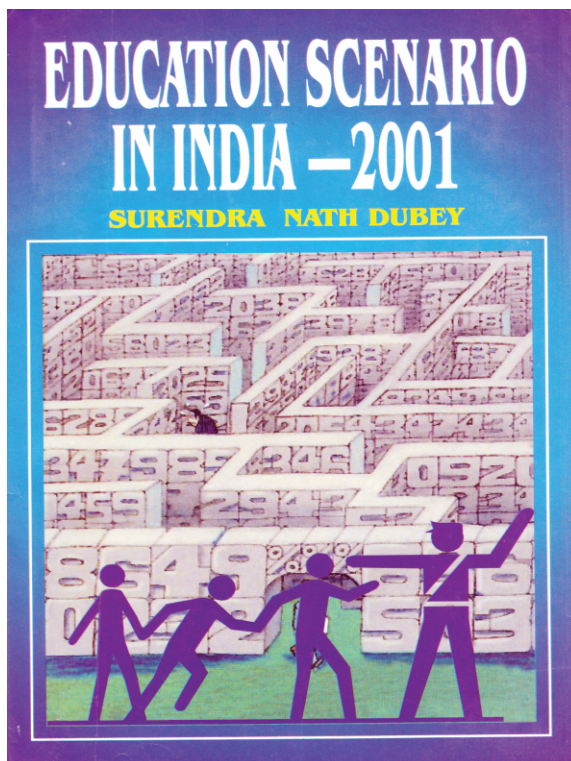
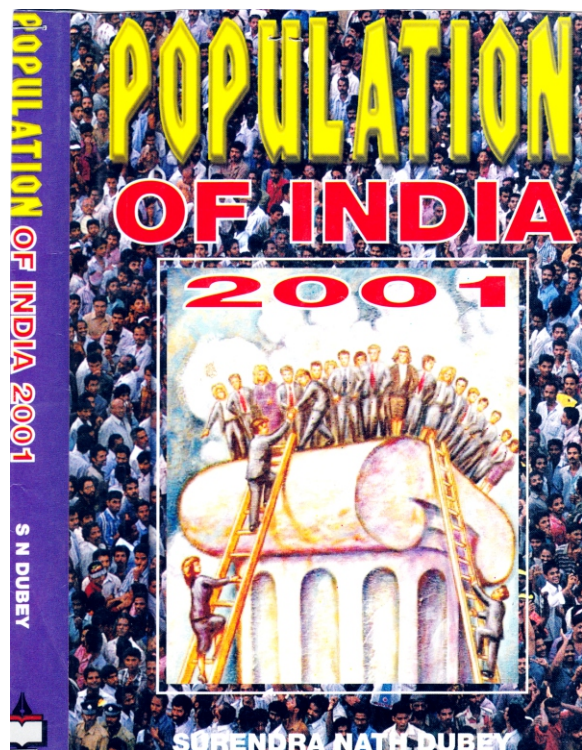
Dr. Anju Bajpai (LL.M., Ph.D.) - Former Judge is Managing Editor.

Address : E - 114/1, Shivaji Nagar, Bhopal-16 Ph.0755-2557272

बैजनाथ प्रकाशन  
स्वत्ताधिकारी-सुरेन्द्रनाथ दुबे मो. 0-9818612417

Residence : 1002-C-WEMBLEY ESTATE, ROSEWOOD CITY, SECTOR-49,50,  
GURGAON(HR)-Pin 122018, Ph. & Fax 0124-4226346

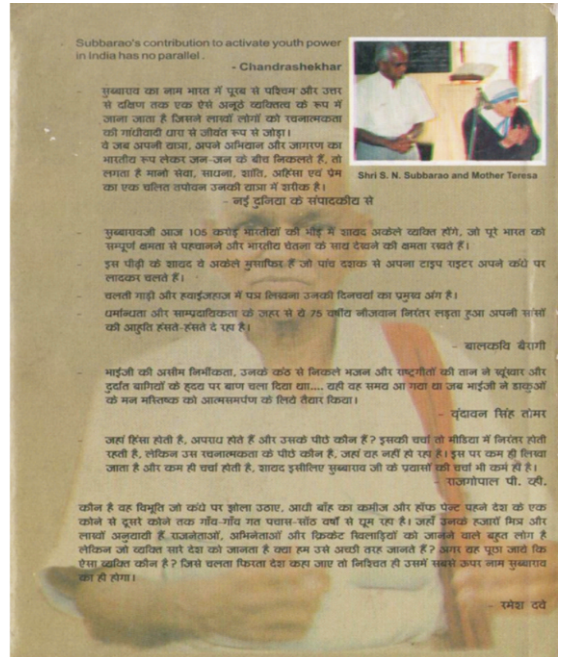
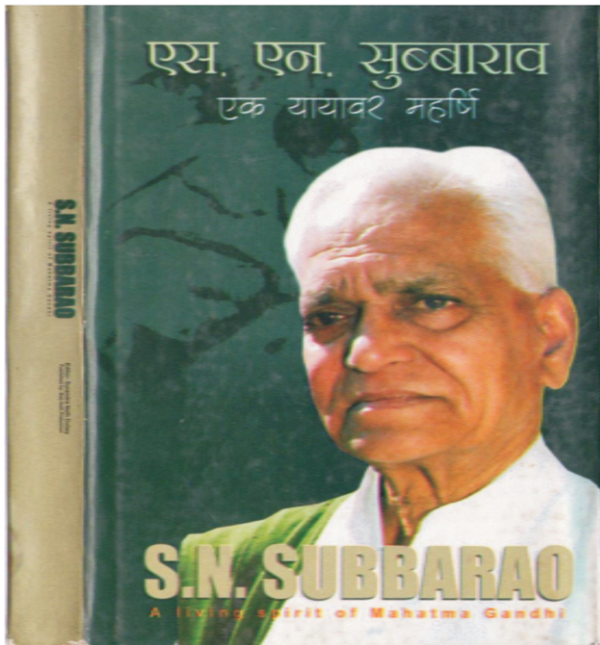




S. N. Dubey holds masters degrees in Economics, Political Science and Elementary Education and a degree in Law. His profound experience as Coordinator of the Extension Services Department of State Council of Educational Research and Training (SCERT), Bhopal, for about 22 years is noteworthy. He has also been entrusted with the work of advisor to the Minister of School Education, Government of Madhya Pradesh; New Education Policy Cell for centrally sponsored schemes, Government of Madhya Pradesh; and Incharge, Human Rights Education Cell.

He was Assistant Secretary, National Foundation for Teachers Welfare, Ministry of Human Resources Development. He was Secretary, State Board of Teacher Education (SCERT). Currently, he is the Secretary General of All India Federation of Education Association, and Executive Director, Asian Academy of Education and Culture. An ardent believer in Gandhian Philosophy, he is a very close associate of Shri S.N. Subbaraoji, a legendary Gandhian of our time.

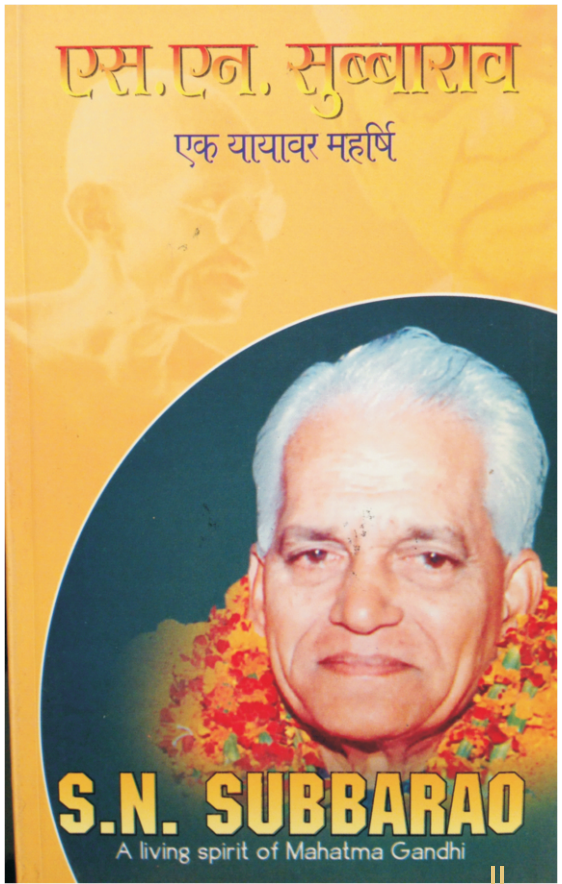




प्रथम संस्करण



द्वितीय संस्करण



तृतीय संस्करण



## आदर्श युवा संसद Model Youth Parliament



प्रमुख एवं लेखक  
सुरेन्द्रनाथ दुबे

### स्वर्गीय श्री पद्मकिरण पी. केनिया के साथ लेखक

श्री एम.पी. केनिया 1953 में एस. एस.एल. जैन कॉलेज भेलसा (विदिशा) के मेधावी छात्र रहे। उन्होंने कॉलेज में मॉक पार्लियामेंट की प्रस्तुति की थी जिसमें वे स्वयं प्रधानमंत्री की भूमिका में थे व लेखक (सुरेन्द्रनाथ दुबे, जो उनसे कनिष्ठ छात्र थे) ने शिक्षा मंत्री की भूमिका का निर्वहन किया था। श्री



केनिया बम्बई उच्च न्यायालय के ख्याति प्राप्त न्यायाधिपति रहे तथा बाद में वे इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति भी रहे। श्री केनिया ने 1993 में ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ एजुकेशनल एसोसियेशन्स के 62वें सम्मेलन (दिल्ली) की अध्यक्षता की थी। यह चित्र उसी अवसर का है। इसी ए.आई.एफ.ई.ए. (1925 में स्थापित) के 1930, 1939 एवं 1947 के सम्मेलनों की अध्यक्षता सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन ने शिक्षक के रूप में की थी।

### My Mentors

स्वर्गीय श्री दीपचन्द जी जैन भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई.ए.एस.-सेवानिवृत्त) की रूप में वे विदिशा व भोपाल के सफल कलेक्टर रहे। वे 1956-57 में हमीरिया कॉलेज भोपाल के छात्र एवं स्टुडेंट्स यूनियन के अध्यक्ष भी थे तभी कॉलेज में जिस मॉक पार्लियामेंट का आयोजन किया गया उसमें स्पीकर की भूमिका में श्री डी.सी. जैन थे, तथा प्रधानमंत्री की भूमिका में लेखक स्वयं थे।



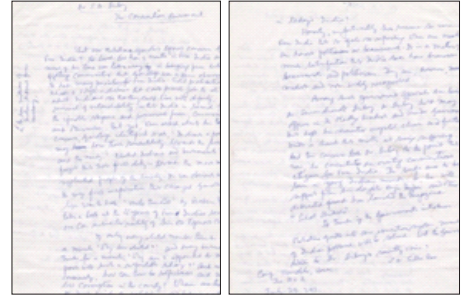
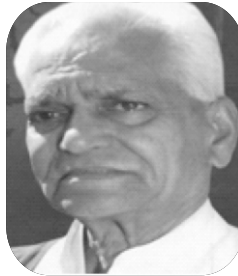
## मुख्य सचिव द्वारा संस्मरण पुस्तक का विमोचन

भोपाल, 3 जनवरी। मुख्य सचिव संकेश साहनी ने आज मंत्रालय में भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी स्व. एसएल शर्मा के जीव संस्मरणों पर लिखी पुस्तक का विमोचन किया। पुस्तक के प्रकाशक सुरेन्द्रनाथ दुबे हैं। पुस्तक में स्वर्गीय श्री शर्मा ने मध्यप्रदेश में पदस्थापना से संबंधित अनुभवों, घटनाओं और विभिन्न छायाचित्रों को संजोया गया है। स्वर्गीय श्री शर्मा अपने सेवाकाल में म. लोकसेवा आयोग के अध्यक्ष तथा भोपाल, गुना, बिलासपुर और मंडल जिले के कलेक्टर रहे। इस अवसर पर जनसंपर्क सचिव मनोज श्रीवास्तव, आमुक्त आदिवासी जयदीप गोविन्द, डी.टी.एन. दुबे, सुरेन्द्र दुबे, अपर संचालक जनसंपर्क आरएमपी सिंह एवं पत्रक उपस्थित थे।



## Message

S N Subba Rao  
Camp Honolulu, Hawaii  
The USA  
July 29, 2013



Shri Surendra Nath Dubey

What was Mahatma Gandhi's top most concern for Free India? He lived less than 5 months in Free India and much of his time was taken away in bringing peace between fighting communities. But Gandhiji was keen observer. He had many priorities for Free India- Total Prohibition to save millions of Indian homes from misery, Khadi & Village Industries that could give jobs to all adult Indians so that they could live with dignity, removal of untouchability so that India is saved from stigma and permanent peace communal and otherwise. It was obvious because the very first inspiration that changed Gandhiji's life was the book 'Unto this Last' by Ruskin. If one takes a look at 66 years of Free India one can realize the reality of his top most concern.

If only every elected member thinking for a minute 'Why I am selected? And every one thinks for a minute 'Why am I appointed to my post with such a respectable salary and act consciously how can there be selfishness and much less corruption in the country? Where are such kind of politicians, bureaucrats and teachers in today's India?'

**Honesty, unfortunately has become rare in Free India that it feels so refreshing when one meets an honest politician, bureaucrat or teacher. It is a matter of much satisfaction that India does have some honest teachers, bureaucrats and politicians. They are however modest and not widely recognized.**

**Among's such government officials and teachers has been Shri Surendra Nath Dubey. Shri Dubey held many offices in the Madhya Pradesh and Union Government but kept his character crystal clear and further built a heart that melts at seeing sufferings and this concern took Shri Dubey to the point that now he concentrate on creating conscientious citizen for Free India. The seeds are to be sown in young Indian minds. So, he with support from his daughter, Anju Bajpai and other dedicated friends has launched the magazine "School Shiksha"**

**He thinks if the Government introduces Mahatma Gandhi into our education system, much of the India's problem will be solved. Will the Government listen to Shri Surendra Nath Dubey's saintly voice?**

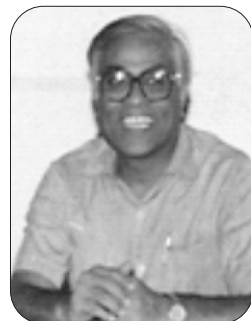
S N Subba Rao



## मानवभूषण दुबे जी या उसकी कल्पना के सहपाठी

—शरदचन्द्र बेहार

यह कल्पना करना कि सुरेन्द्र दुबे और मैं सहपाठी हैं, बहुत सुखद अनुभव है। हम वास्तव में सहपाठी नहीं हैं। मैं उनके ऐसे सहपाठी को जानता हूँ जो मध्यप्रदेश की राजनीति में बहुत प्रतिष्ठित हैं परंतु दुबेजी के आचार, व्यवहार और विचार में कहीं भी उसकी वजह से अपने को महत्वपूर्ण समझने या अपनी महत्ता स्थापित, प्रचारित या प्रसारित करने की किंचित भी चेष्टा परिलक्षित नहीं होती है।



उनकी विनम्रता, सहजता और गुणग्राहकता अद्भुत है। दूसरों, विशेषकर अपने आस-पास के लोगों की प्रतिष्ठा और उत्थान देखने से ज्यादातर लोगों को अंदर से, भले ही बाहर बिल्कुल ही प्रगट न होने दे, कुछ न कुछ जलन होती है। जलन नहीं पर यह विचार तो मैं आ ही जाता है कि जिसके हकदार वे भी हैं वह सब कुछ केवल दूसरों को क्यों मिलता है। इस मानव स्वभाव को एक इटालवी समाजशास्त्री ने एक सिद्धांत के रूप में भी पेश किया है.....यह अद्भुत बात है कि समाजशास्त्री ने दुनिया के सभी हिस्सों में जिस प्रवृत्ति को देखा है, विश्वव्यापी सा पाया है, वह दुबेजी के आस-पास भी नहीं फटकती। दुबेजी दूसरों की प्रगति, प्रतिष्ठा एवं गुणों से जितनी सहजता से आल्हादित, उल्लासित हो जाते हैं। ऐसा लगता है मानो उन्हें वह सब कुछ मिल गया। इस तरह के भाग्यवान लोगों से समान तादात्म्य स्थापित कर सकना सबके वश की बात नहीं है। उनकी यह सरलता, उनकी विनम्रता की तरह रोम-रोम से टपकती है।

मैंने उनके सहपाठी होने की कल्पना क्यों की। वे 26 जनवरी 2014 को 75 वर्ष के हो गये हैं। यह जानकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। मैं तो उन्हें अपने से बहुत अधिक उम्र का मानता हूँ और इसलिए हमेशा दुबेजी कहता हूँ। इसके विपरीत रमेश दवे मुझसे बड़े हैं। ये मुझे अच्छी तरह मालूम है फिर भी मैं उन्हें रमेश नाम से संबोधित करता हूँ। यहाँ मैंने सोचना शुरू किया कि दुबेजी जो मुझसे केवल एक सप्ताह बड़े हैं क्यों मुझे बहुत अधिक उम्र के लगते थे। लगता है कि उनमें जो विवेकपूर्ण परिपक्वता है वह कहीं न कहीं मुझे अहसास दिलाती रही कि वे मुझसे बड़े हैं। अब यह जानकर कि उम्र में बहुत बड़े न होने पर बहुत बड़े, लगने का राज भी खुल गया। उनके जिन गुणों को मैं पाना चाहता हूँ उन्हें पाने में मुझे और साल लगेंगे, कुछ और परिश्रम करना पड़ेगा, कुछ और अनुभव से गुजरना पड़ेगा। ऐसा अहसास होता रहा है और शायद वही उन्हें मुझसे बड़ा स्थापित करता रहा है। उम्र की दूरी हट जाने के बावजूद यह दूरी नहीं मिट सकती और मुझे अभी भी अनुकरणीय नजर आती है।

उनकी विवेकपूर्ण परिपक्वता की बात कह देने के बाद मैं थोड़ा असहज महसूस कर रहा हूँ, क्योंकि इससे ठीक विरोधाभासी गुण भी उनमें कूट-कूटकर भरा है— बालसुलभ, भोलापन, निश्छलता।

75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में किये जाने वाले आयोजन के संदर्भ में मुझे उनकी उम्र की जानकारी हुई। मैंने आश्चर्य प्रगट करते हुए कह दिया कि एक हफ्ते बाद तो मैं भी 75 साल पूरे कर रहा हूँ। मैं इस संवाद के जरिये अपने संभावित सहपाठी होने की खुशी जाहिर कर रहा था। यह पता नहीं था

कि मेरा वह कथन कितना हानिकारक सिद्ध हुआ। उस क्षण से दुबेजी ने अपने 75वें साल के आयोजन के विचार को छोड़कर मेरे सम्मान में आयोजन करने का बीड़ा उठा लिया। इस तरह का त्याग कितना बड़ा होता है, यह सभी जानते हैं। इतना ही नहीं इस तरह त्याग करना, बड़ी सहजता से करना मानो कुछ भी सराहनीय नहीं, जिन गुणों को प्रगट करता है, वह हम सब के लिए अनुकरणीय हैं। मुझे आज भी अनजाने में व्यक्त किए गए इस तथ्य के लिए खेद है। मेरी इच्छा है कि दुबेजी जैसे व्यक्ति के लिए समाज में भव्य आयोजन करना चाहिए, ताकि यह जगजाहिर हो सके कि मनुष्य के गुणों की इज्जत होती है, पद और सत्ता की नहीं।

दुबेजी श्री सुब्बाराव के भक्त हैं। यह भी उनके व्यक्तित्व के एक पहलू को रेखांकित करता है। श्री सुब्बाराव ने अपना जीवन देश और समाज की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। दुबेजी इसी वजह से उनके भक्त हैं। उन्हें यह अहसास भी नहीं है कि सांसारिक गृहस्थ के रूप में रहते हुए भी, वे भी देश और समाज की सेवा के लिए समर्पित हैं, उन्हें यह गलतफहमी भी है कि वे गृहस्थ न होकर श्री सुब्बाराव की तरह देशसेवा में लगे रहते तो कुछ अलग होता। अपने को कम आंकना और दूसरे के गुण बढ़ा-चढ़ाकर समझना उनकी गुण-ग्राहकता का परिचायक है।

यह संयोग है कि मैं सारंगगढ़ में पला-बढ़ा, पढ़ा-लिखा वहाँ, और रहा भोपाल में। यदि एक जगह होते तो हम जरूर साथ होते और सहपाठी होते, न हो सकने का मुझे खेद है कि ऐसे इंसान का साथ बचपन से मिलने के बजाय इतने अधिक समय बाद मिला। इस खेद के साथ यह प्रसन्नता व्यक्त करना भी जरूरी है कि कम से कम ऐसे मानवभूषण का साथ मुझे एक चौथाई शताब्दी तक तो मिला है और ईश्वर से प्रार्थना है कि और एक चौथाई शताब्दी तक यह साथ बना रहे।

**शारदचन्द्र बेहार,**

आई.ए.एस (से.नि.)

पूर्व मुख्य सचिव, मध्यप्रदेश



## SULABH INTERNATIONAL SOCIAL SERVICE ORGANISATION

### सुलभ इन्टरनेशनल सोशल सर्विस ऑर्गनाइजेशन

(NGO in General Consultative Status with the  
Economic and Social Council of the United Nations)

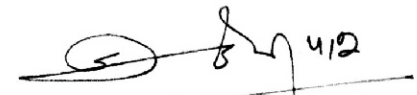


डॉ. विन्देश्वर पाठक  
पीएच.डी., डी.लिट,  
समाजशास्त्री एवं समाजसुधारक  
संस्थापक  
सुलभ-स्वच्छता-आंदोलन



### शुभकामना-संदेश

संपूर्ण देश, विशेषकर शिक्षा-जगत् के लिए यह अति गौरव का विषय है कि माननीय शिक्षाविद् श्री सुरेंद्र नाथ दुबे अपने जीवन के पचहत्तर वर्ष पूरे करने जा रहे हैं। इस पुनीत अवसर पर उन्हें 'शिक्षक और शिक्षा' नामक अभिनंदन-ग्रंथ समर्पित किया जा रहा है, यह अतीव प्रसन्नता की बात है। यह बड़ा ही स्तुत्य कार्य है। वास्तव में, यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि जब हम किसी एक लक्ष्य के साथ, जिसे 'लक्ष्यैकचक्षुष्कता' कहा गया है, किसी कार्य में पूरी तल्लीनता से सक्रिय हो जाते हैं तो उसका परिणाम स्व और सर्व के लिए सुखकारी होता ही है। माननीय श्री दुबे जी का व्यक्तित्व ऐसे ही सुखदायक परिणाम का द्योतक रहा है। शिक्षा-जगत् के विविध क्षेत्रों में कार्य करते हुए उन्होंने उल्लेखनीय ख्याति अर्जित की है। उनके संपादन में प्रकाशित हो रही पत्रिका 'स्कूल शिक्षा' से न केवल छात्र, अपितु शिक्षकगण और संपूर्ण पाठक-समाज लाभान्वित हो रहे हैं। हम 'शिक्षाविद् श्री सुरेंद्र नाथ दुबे-अभिनंदन-समिति' से जुड़े सभी सहृदयों को साधुवाद देते हैं और माननीय श्री दुबे जी के प्रति अपनी हार्दिक शुभकामना व्यक्त करते हैं कि वे दीर्घायु हों और स्वस्थ जीवन व्यतीत करें।

  
-विन्देश्वर पाठक

Website: <http://www.sulabhinternational.org>, [www.sulabhtolietmuseum.org](http://www.sulabhtolietmuseum.org)

Delhi Office: Sulabh Gram, Mahavir Enclave, Palam-Dabri Road, New Delhi - 110 045 (India), Tel.: (+91-11) 25055950, 25055958  
Fax: (+91-11) 25034014, 25055952, E-mail: [sulabhinfo@gmail.com](mailto:sulabhinfo@gmail.com), [sulabhinfo1@gmail.com](mailto:sulabhinfo1@gmail.com), [info@sulabhinternational.org](mailto:info@sulabhinternational.org), [info1@sulabhinternational.org](mailto:info1@sulabhinternational.org)  
Regd. Office: Sulabh Bhawan, New Patliputra Colony, Patna - 800 013 (India), Tel. Off.: (+91-612) 2263650, 2270827, Fax: (+91-612) 2270773





## गांधी भवन न्यास

गांधी भवन, श्यामला हिल्स, भोपाल- 462-002 ( म.प्र. )

रजि. नं. : 4/B.113/77-78  
दूरभाष : 0755-2661453  
4283369

पत्रांक 2556/8/2013

दिनांक 19/8/2013

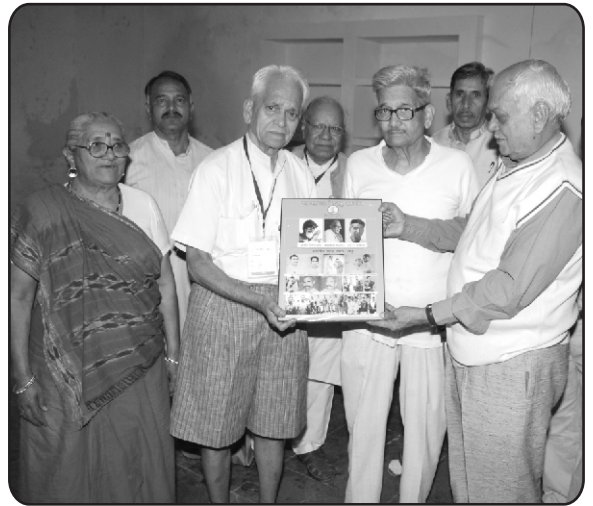
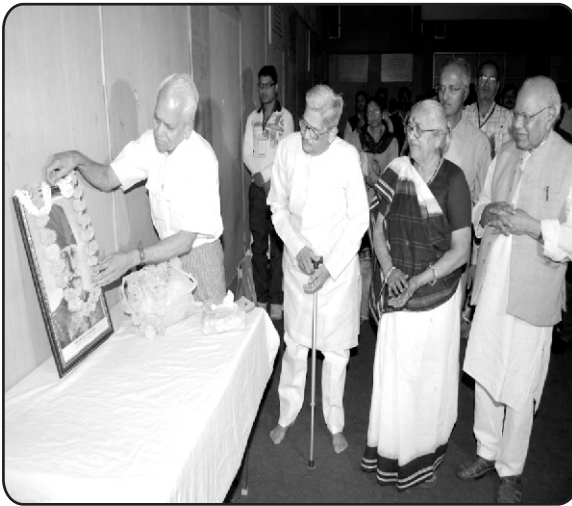
दुबेजी से मेरे सम्बंध वर्षों पुराने हैं। गांधी विनोबा के विचारों के प्रति समर्पित वे एक सरल व्यक्ति हैं।

बच्चों व स्कूल शिक्षा के प्रति उनकी गहरी संवेदनाएँ हैं। स्कूल शिक्षा के सम्बंध में उन्होंने बहुत कार्य किये हैं इसीलिए देश के अग्रणी शिक्षाविदों में उनका नाम लिया जाता है।

उनके जीवन के 75 वर्ष पूर्ण होने के शुभ अवसर पर गांधी भवन न्यास की ओर से हार्दिक बधाई देता हूँ।

धन्यवाद।

21-8-2013  
(रामचन्द्र भार्गव)  
सचिव,



### डॉ. गुलाब चौरसिया के परम स्नेही प्रिय शिष्य, और विश्वस्त साथी सुरेन्द्रनाथ दुबे

— सुशीला चौरसिया

पूर्व पोस्ट मास्टर जनरल, भारत सरकार

मुझे अच्छी तरह याद है कि जुलाई 1960 में मेरे पति जब डॉ. चौरसिया पी.जी. वी.टी. कॉलेज भोपाल के प्रिंसिपल थे, तब वहां बी.एड. कर रहे श्री सुरेन्द्र नाथ दुबे उनके सम्पर्क में आए थे। डॉ. चौरसिया ने दुबेजी की भाषण कला और विशेष योग्यता का आकलन कर उन्हें कॉलेज के तिलक सदन से प्रकाशित होने वाली पत्रिका का संपादक बनाया। श्री सुरेन्द्र दुबे डॉ. साहब के साथ 1960 से 2 अक्टूबर 2009 तक (आजीवन) जुड़े रहे और उनके अनन्य सहयोगी बने रहकर शिक्षा क्षेत्र में अनेक उल्लेखनीय कार्य करते रहे हैं। दुबेजी हमारे पारिवारिक स्नेही और विश्वसनीय साथी बने हुए हैं।



डॉ. चौरसिया के तो पूरे देश और दुनिया में अनेक परिचित और अनेक मित्र रहे हैं, क्योंकि उनका तो स्वभाव ही लोगों को निरंतर जोड़ने का रहा है। वे जिससे जुड़ते और जिसे जोड़ते थे उससे निरंतर संबंध बनाए रखना भी उन्हें खूब आता था। अनेक आई.ए.एस. अधिकारी, राजनीतिज्ञ, शोधार्थी और शिक्षा अधिकारियों के चहेते रहे डॉ. चौरसिया, शिक्षा प्रेमियों को भी अपनाए हुए थे। श्री सुरेन्द्र दुबे डॉ. चौरसिया के चहेतों में प्रमुख रहे हैं, जिन्हें उन्होंने अपने अखिल भारतीय संगठन “एआईएफईए” का प्रमुख पदाधिकारी बनाया। बी.एड प्रशिक्षणार्थी के रूप में जुड़ने से लेकर श्री दुबे और डॉ. चौरसिया साहब का घनिष्ट सम्पर्क अन्त समय तक गुरु — चले जैसा रहा है, अनेक ऐसी यादें हैं जो दुबे जी की विशेष क्षमताओं को प्रतिबिम्बित करती हैं।

जब 1964 — 66 में कोठारी शिक्षा आयोग बना था तो उसकी उपसमितियों में डॉ. साहब ने सुरेन्द्र दुबे को भी अपने साथ रखा। चर्चाओं में भी सहयोगी बनाया। चटोपाध्याय आयोग, राममूर्ति आयोग में दुबेजी और उन्होंने बड़ा काम किया। सबसे ज्यादा असरकारी काम जनसंख्या शिक्षा योजना प्रभारी बनाकर सौंपा था, जिसे दुबेजी ने बखूबी निभाया। जनसंख्या शिक्षा संबंधी कार्यों में सहयोग का विवरण तो टीकमगढ़ के एक सहयोगी गुणसागर सत्यार्थी खूब बताते हैं। 1984 — 86 में जब राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनाई जा रही थी तो विभिन्न मुद्दों पर जो ज्ञापन और लेख सुरेन्द्र दुबे द्वारा तैयार किए गये, उनमें डॉ. साहब का पूरा योगदान रहा और आशीर्वाद रहा। दुबेजी की अनेक बातें राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 में शामिल की गई। मजेदार यह है कि जब हम सब स्कूल शिक्षा के साथ-साथ मानव अधिकार शिक्षा के बारे में भी जुटकर काम कर थे तो सुरेन्द्र भी हमारे साथ जुड़े और देश की कई संस्थाओं में उन्होंने जोरदार भाषण दिए। अभी भी ‘भारतीय शिक्षा सेवा (आई.ई.एस.)’ के गठन के लिए सुरेन्द्र लगातार संघर्ष कर रहे हैं जो डॉ. साहब की प्रिय माँग रही है। काश! डॉ. साहब के सामने आई.ई.एस. का गठन हो जाता तो उनकी और सुरेन्द्र की मेहनत और मंशा कामयाब होती।

शिक्षा को केन्द्र सरकार की सूची समवती सूची में शामिल कराने तथा उसे निरंतर बनाए रखने में भी डॉ. साहब और दुबे जी ने जो सराहनीय पहल की उसे कम ही लोग जानते हैं। पूर्व प्रधानमंत्री स्व. इंदिरा गांधी जी से मुलाकात करने और बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने संबंधी कार्यों में भी इन दोनों की अहम भूमिका

इसीलिए विनोद में डॉ. चौरसिया दुबेजी को आर्टिकल 45 कहते थे, बाद में वे उन्हें आर्टिकल 21-ए कहने लगे। श्री सुरेन्द्र दुबे शिक्षकों के प्रतिनिधि बने रहकर डॉ साहब के कंधे से कंधा मिलाकर काम करते रहे हैं। मुझे इन दोनों की जुगलबंदी जब भी याद आती है तो प्रसन्नता होती है। डॉ. साहब ने अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं WCCI, EI (Education International) एवं International Association of Educators for World Peace से जोड़ा। मैं भी इस संस्था की क्षेत्रीय चांसलर थी तब दुबेजी मेरे महामंत्री थे तब भी उन्होंने मेरे साथ रहकर महत्वपूर्ण कार्य किया। 24-25 दिसम्बर 2000 में Global Assembly of Educators for World Peace, Environment and Human Rights के नवम् विश्व पर्यावरण महासम्मेलन में सुरेन्द्र नाथ दुबे ने प्रतिनिधित्व करते हुए अपना आलेख प्रस्तुत किया था जिसकी सराहना सभी सहभागियों ने की थी। WCCI के अमृतसर सम्मेलन में इनकी भूमिका भी महत्वपूर्ण थी। CTE और AIFEA के इंदौर सम्मेलन का महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व दुबेजी के पास था। पूना के प्रोफेसर सप्रे ने तो यहां तक लिखा था कि यदि दुबेजी वहां न होते तो यह सम्मेलन संभव ही नहीं था। दिल्ली, उज्जैन, इंदौर सम्मेलनों के तो ये समन्वय और स्वागत प्रभारी थे।

भोपाल से दिल्ली तक मानव संसाधन मंत्रालय में शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान में कार्य कर चुके श्री दुबे जी अपने काम को पूरी जिम्मेदारी से करते हुए नित नई ऊचाईयों पर पहुंचे हैं। इनकी पत्रिका 'स्कूल शिक्षा' को मैं बराबर पढ़ती हूँ।

मैं उनके यशस्वी जीवन के 75 वर्ष पूर्ण करने पर उन्हें शुभाशीष देते हुए मंगल कामना करती हूँ कि श्री दुबे अपने जीवन लक्ष्यों को पूरा करें।

श्री दुबे सदैव सुखी और प्रसन्न रहें ऐसी मंगल कामना के साथ।

अध्यक्ष

एशियन इंस्टीट्यूट ऑफ ह्यूमन राइट एजुकेशन  
एफ-24/2 शालीमार गार्डन कोलार रोड, भोपाल





## शालेय शिक्षा को समर्पित शिक्षाविद्

श्री सुरेन्द्र नाथ दुबे, जैसा मैंने देखा

— रविन्द्र मालव

पूर्व अपर संचालक एस.सी.ई.आर.टी.  
एवं राजीव गांधी शिक्षा मिशन म.प्र.

विश्व बैंक तथा यूरोपियन समुदाय द्वारा घोषित “जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम” के संचालनार्थ मध्यप्रदेश में गठित संस्था “राजीव गाँधी शिक्षा मिशन” में जब मुझे अपर संचालक—जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम प्रभाग, म.प्र.राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के रूप में नियुक्ति मिलने पर मैंने कार्यभार संभाला और गठन के प्रारंभिक दौर में मैं मिशन के कार्यालय में ही बैठ रहा था कि एक दिन दुबेजी मेरे पास आए। अपना परिचय दिया और उनके द्वारा प्रकाशित “शिक्षकों के नाम खुला पत्र” की प्रति मुझे थमाते हुए बताया कि वे हर वर्ष “खुला पत्र” प्रकाशित करते हैं, जो देशभर में स्कूल शिक्षा जगत में प्रचारित व प्रसारित किया जाता है तथा 5 सितम्बर शिक्षक दिवस के अवसर पर नेशनल अवार्डी टीचर्स के माध्यम से भी यह पत्र शिक्षकों तक पहुँचाते हैं। इन्होंने मुझसे पुरजोर आग्रह किया कि मैं इसे अवश्य पढ़ूँ। तब मुझे अपना कार्यभार ग्रहण किये लगभग एक माह ही हुआ था। मैंने उन्हें आश्चर्य किया कि मैं इसे अवश्य पढ़ूँगा और बाद में आपके साथ बैठकर इसके विभिन्न बिन्दुओं पर चर्चा भी करूँगा। मैंने इसे पढ़कर यह धारणा बनाई कि दुबेजी के मन में शिक्षा जगत की दुर्दशा के प्रति एक तड़प है। वे इस पर निरन्तर सोचते हैं और कुछ करना चाहते हैं। मैं इस निष्कर्ष पर भी पहुँचा कि शासकीय सेवा में उनका सदुपयोग नहीं हो रहा है। मैंने उनके साथ न केवल खुला पत्र के विभिन्न बिन्दुओं पर विचार विमर्श किया, वरन् शिक्षा जगत की समस्याओं पर उसके सुधार की गुंजाइशों पर गहन चर्चा की। इससे मेरा और अधिक ज्ञानवर्द्धन हुआ। विचारों का आदान—प्रदान हुआ तथा शालेय शिक्षा के बारे में समझ और बेहतर हुई तथा चिन्तन के लिये कुछ और नए बिन्दु मिले। मैंने अन्य कई लोगों की तरह ही दुबेजी से भी इस बात की जानकारी प्राप्त की कि अशासकीय स्तर पर स्वयंसेवी संस्थाएँ एवं शैक्षिक संगठन भी शिक्षा की नीतियों पर गंभीर विचार—विमर्श करते हैं। कुछ ही महीनों बाद मैं, म.प्र. एससीईआरटी में ही बैठने लगा। मैंने एक—एक करके वहाँ के प्रोफेसर्स इत्यादि से कई दौर की चर्चाएँ कीं तथा प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष के रूप से दुबेजी के बारे में भी पूछा और जाना। हीन भावना से ग्रसित लोगों ने उनके बारे में नकारात्मक राय जाहिर की। सामान्य राय यह समझ में आई कि वे केवल हस्ताक्षर करने आते हैं, बरसों से उनका यही रवैया है। इस कारण परिषद् में कोई विशेष काम नहीं करते, उन्हें कोई अधिक काम दिया ही नहीं गया है। शिक्षा की बड़ी—बड़ी योजनाओं एवं नीतियों को लेकर वे मंत्रियों, नेताओं और बड़े अधिकारियों के पास भी जाते रहते हैं, जबकि योजनाएँ बनाना उनका काम नहीं है। मैं कहता कि मुझे तो वह बहुत समझदार आदमी लगते हैं, हमें उनका उपयोग करना चाहिये, तो वे हँसते और कहते कि आप उनसे परिषद् का कोई काम लेकर दिखाओ तो हम आपके प्रशासनिक कौशल को मान जाएंगे। मैंने उनकी बात गाँठ बांध ली। इसके साथ ही मैं इस दिशा में सोचने लगा। एससीईआरटी आने के बाद दुबे जी मुझसे मिलने ही नहीं आएँ, किन्तु मैं बराबर सोचता रहा कि उनका परिषद् में भी कैसे उपयोग किया जाए। कई दिन बाद मैंने उन्हें बुलाया और कहा कि मुझे आपका सहयोग चाहिये।

- तत्काल तो यह कि आप समय—समय पर मुझे सुझाव देते रहें।

- दूसरा मेरे कक्ष में अपने समूह और हममें किसी भी शैक्षिक विषय पर खुलकर चर्चा हो आलोचनात्मक, समालोचनात्मक और विवेचनात्मक करें।
- तीसरा यह कि राज्य में शालेय शिक्षा के क्षेत्र में चल रहे स्वयंसेवी संगठनों के बारे में अपनी राय देते रहें। शालेय शिक्षा के क्षेत्र में मैं जिन्हें नहीं जानता उनसे मिलवाएं, शिक्षाविदों से मिलवाएं, हो सके तो उनके साथ मेरी बैठक कराएं।
- चौथा यह कि राज्य में या राज्य के बाहर जब कभी भी सम्मेलन, गोष्ठी, परिचर्चा आदि हो तो मुझे भी सूचना देने की कृपा करें। उन्होंने यह कार्य अत्यन्त कुशलतापूर्वक किया।

सबसे पहले विश्व विख्यात शिक्षाविद् डॉ. गुलाब चौरसिया जी से मिलवाया, जिनसे बाद में काफी निकट के सम्बन्ध हो गए। मैंने डॉ. चौरसिया को परिषद् की पाठ्यपुस्तक समिति से जुड़वाया और डॉ. चौरसिया ने भी मुझे अपने कुछ संगठनों में जोड़ा। मैंने उनके संगठनों के कई महत्वपूर्ण कार्यक्रमों व सम्मेलनों को आयोजित करने में सहयोग प्रदान किया जो शिक्षा को समर्पित थे। वे पूरे समय शिक्षा के बारे में ही सोचते रहते थे। दुबेजी उनके अत्यन्त प्रिय शिष्यों में से एक थे। दुबेजी ने अन्य शिक्षाविदों से भी मुझे मिलवाया। मैं भी इन दिनों दिनभर शालेय शिक्षा पर ही सोचता रहता था।

हमारे शिक्षा महाविद्यालयों की विचित्र स्थिति थी। उन्हें एससीईआरटी के अलावा उच्च शिक्षा मंत्रालय से भी पटरी बैठानी होती थी, क्योंकि डिग्री कालेज होने के नाते उन्हें कई मामलों में राज्य शासन ने उच्च शिक्षा विभाग के भी अधीन कार्य करना पड़ता था। परीक्षायें तो क्षेत्रानुसार कई विश्वविद्यालय लेते थे। प्रशिक्षण संस्थाओं के प्राचार्य सब कठिनाइयाँ मेरे सामने रखते थे। बहुत सोच-विचार कर मैंने यह पाया कि जब कृषि, खेलकूद, मेडिकल, इन्जीनियरिंग, संगीत, ललित एवं रूपंकर कथाओं के शिक्षण के लिये अलग-अलग विश्वविद्यालय हैं तो क्यों न शिक्षक “शिक्षा” के लिये भी पृथक विश्वविद्यालय बनाये जाएँ। दुबेजी भी यही चाहते हैं।

एससीईआरटी का भी उसी में विलय हो जाए, वही डिप्लोमा, स्नातक, स्नातकोत्तर व डॉक्टरेट के पाठ्यक्रम चलायें। शालेय शिक्षा के पाठ्यक्रम भी बनाएँ। राज्य में शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु अल्पकालीन प्रशिक्षण के कार्यक्रम तैयार करें। योजना बनाएँ। इनका पाठ्यक्रम बनाएँ व इन्हें संचालित करें तथा वे सब अन्य कार्य भी करें जो वर्तमान में एससीईआरटी करती है। इस सारी योजना को बनाने में मुझे दुबेजी ने कड़ी मेहनत कर, संभव सहयोग दिया। संयोग से तब एनसीईआरटी में डॉ. लवलीन कक्कड संचालक थीं। उन्होंने इसे बहुत सराहा और आगे भी बढ़ाया। सुसंयोग यह कि इन दिनों भारत शासन में माननीय अर्जुनसिंह जी मानव संसाधन मंत्री थे, हमने उन्हें भी इस योजना की प्रति दी तथा उनसे इस बाबत चर्चा भी की। उन्होंने भी इसे बहुत सराहा और कहा कि मध्यप्रदेश सरकार से भी इसका प्रस्ताव भिजवायें हम तो केन्द्र से इसे यथाशीघ्र स्वीकृत कर देंगे। मैं तो चाहूँगा कि देश का पहला शिक्षा का विश्वविद्यालय मध्यप्रदेश में ही बने।

उन्हीं दिनों मुझे यह जानकारी में आया कि देश के सभी प्रमुख राज्यों में एससीईआरटी होती है, जहाँ एनसीईआरटी शिक्षक-प्रशिक्षण और शालाओं के लिये पाठ्यक्रम एवं प्रशासकों के प्रशिक्षण का भी कार्य करती है। वहीं “सीमेट” शैक्षिक प्रशासकों के प्रशिक्षण का भी कार्य करती है। राष्ट्रीय संस्था न्यूपा की तर्ज पर एससीईआरटी एज्यूकेशनल प्लानिंग एण्ड मैनेजमेन्ट (जीपा) की तर्ज पर राज्यों में सीमेट काम करती है। इसकी स्थापना का लगभग पूरा व्यय केन्द्र शासन उठाता है। मैंने दुबेजी के सहयोग से देश में जहाँ-जहाँ भी

सीमेट चल रही हैं वहाँ उस रूप को और भी परिष्कृत कर “सीमेट” की विस्तृत योजना बनाई। परिषद् की तत्कालीन संचालक डॉ. लवलीन कक्कड़ ने इसे हाथों हाथ लिया और आगे बढ़ाया। इसमें यह भी था कि यदि प्रदेश में शिक्षा विश्वविद्यालय बनता है तो एससीईआरटी व सीमेट दोनों इसमें विलय हो जाएंगी।

इन्हीं दिनों मुझे पता चला कि म.प्र. में “राज्य शिक्षक प्रशिक्षण मण्डल” के नाम से एक संस्था एससीईआरटी के अधीन ही है, जो कई वर्षों से अस्तित्वहीन पड़ी है। मैंने संचालक से चर्चा कर इसे जीवित एवं सक्रिय करने पर बल दिया कि परिषद् की पत्रिका “पलाश” जो अनियमित प्रकाशित होती थी, का प्रकाशन पुनः इसी मण्डल के अधीन किया जाए। संचालक जी ने कहा कि आप कार्यकारिणी में प्रस्तावित करें। मैंने, कहा कि ‘आप स्वयं ही अध्यक्ष रहेंगी।’ उन्होंने कहा तब ‘उपाध्यक्ष आप रहें’, ज्यादातर काम आपको ही करना है। मैंने आगे बात बढ़ाई कि मैं चाहता हूँ कि, श्री सुरेन्द्रनाथ दुबेजी इसके सचिव हों, शासन से तुरंत इसका आदेश हुआ। पुनः संचालक जी ने कहा कि बाकी कार्यकारिणी भी आप बना लें। पलाश से सम्पादक हेतु इसी क्रम में संचालक ही प्रधान सम्पादक हुए। दुबेजी ने भी प्रबंध संपादक की जिम्मेदारियाँ बखूबी निभाईं। दौड़-दौड़ कर खूब काम किया। परिषद् के लोग यह सब देख दांतों तले अंगुली दबाने लगे। एक दिन मैंने उस वरिष्ठ अधिकारी से जिसने मुझसे कहा था कि ‘यदि दुबे जी को सक्रिय कर दिया तो मैं आपका लोहा मान जाऊँगा’ से पूछा अब आपकी दुबेजी के बारे में क्या राय है तो वे निरुत्तर हो गए। केवल इतना कहा कि ‘मैं आपका लोहा मानता हूँ।’ मैंने कहा कि ‘मैंने तो कुछ खास किया नहीं, केवल इतना किया कि उनकी योग्यता और अभिरुचियों का अध्ययन किया, फिर उनके लिये उसके अनुरूप सम्माननीय काम ढूँढा, जिसमें उन्हें मजा आए। बाकी सब अपने आप हो गया।’ मैं समझता हूँ कि अच्छे प्रशासक को अपने साथियों की योग्यता, क्षमता और अभिरुचियों पर विचार कर उन्हें उसके अनुरूप काम में लगाना चाहिये, तब आता है काम का मजा।

यह हमारा दुर्भाग्य है कि हमने कड़ी मेहनत से शिक्षक शिक्षा के विश्वविद्यालय और सीमेट की जो योजना बनाई थी, उसकी स्कूल शिक्षा में कोई समझ और रुचि न रखने वाले अधिकारियों ने अलग ही रूप दिया। विचारवान व्यक्ति को ढूँढना वैसे ही दुष्कर है, फिर भी हम सोचते हैं कि बात निकली है तो आगे तक जाएगी, अतः हम आशावान हैं कि कभी राख के ढेर में वही चिंगारी धधक उठे और शालेय शिक्षा के क्षेत्र को भ्रष्टाचरण और धनोपार्जन की वृत्ति से मुक्ति मिले तथा ‘शिक्षक शिक्षा के विश्वविद्यालयों’ का गठन कर राज्यों में कार्य हो पाये। मध्यप्रदेश का दुर्भाग्य है कि यहाँ राजीव गाँधी शिक्षा मिशन की एक संचालक ने शिक्षा जगत की सामग्री बनने के सपने के तहत दोनों संस्थाओं का अस्तित्व ही मिटाकर एक नई संस्था म.प्र. राज्य शिक्षा केन्द्र बनाकर दोनों को उसमें विलय कर दिया जिसके दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। दोनों पुरानी संस्थाएँ अब सरकारी दफ्तर बन कर निष्क्रिय हो गई हैं, वहीं दूसरी ओर दुबेजी ने रिटायरमेन्ट के बाद स्वयं को पूर्णतः शैक्षिक विकास के लिये समर्पित कर दिया है। अब वे पहले से ज्यादा सक्रिय हैं। स्कूल शिक्षा पत्रिका का सम्पादन कर रहे हैं। कई बड़ी पुस्तकें लिख डाली हैं। उनको प्रकाशित कर और निरन्तर सक्रिय हैं।

उनके जीवन के 75 वर्ष पूर्ण होने पर मैं उन्हें कोटि-कोटि बधाई देता हूँ। वे शतायु हों, सम्पूर्ण जीवन पूर्ण स्वस्थ रहें और सक्रिय रहकर शैक्षिक जगत की सेवा करते रहें।

प्रेम शांति भवन, फालके बाजार  
ग्वालियर (म.प्र.)



## मेरे छोटे भाई चि. सुरेन्द्र के बारे में

— महेन्द्रनाथ दुबे

मेरे छोटे भाई चि. सुरेन्द्र के बारे में तो मैंने श्री कैलाश जी श्रीवास्तव को पत्र के माध्यम से थोड़ा ही लिखा था। लेकिन अब मैं विस्तार से कुछ कहना चाहता हूँ। लगभग तीन दशक (तीस वर्ष) तक तो हम दोनों भाइयों को एक साथ ही रहने का संयोग मिला है। हॉस्टल हो, घर हो, नौकरी हो, पढ़ाई हो, सरकारी आवास हो, मेरा विवाह हो, उसका विवाह हो, घर के अन्य सदस्यों के विवाह शादियाँ हों, अन्य उत्सव हों, हम दोनों भाइयों को एक साथ ही रहने का अवसर मिला। आज भी हम लोगों का घनिष्ट प्रेम एक उदाहरण हो सकता है। मेरे पिताजी और माताजी तो हमेशा ही हम दोनों की जोड़ी को राम—लक्ष्मण की जोड़ी कहते थे। आज भी चि. सुरेन्द्र का मेरे प्रति सम्मान, आदर और प्रेम किंचित भी कम नहीं हुआ है। इतना ही नहीं, उनकी भाभी (मेरी पत्नी शीला दुबे) का भाभी—देवर प्रसंग सीता—लक्ष्मण का प्रसंग बना रहता है। सारा परिवार और रिश्तेदारों के लिए तो यह हास्य—विनोद का प्रसंग इसलिये बन जाता है कि चि. सुरेन्द्र अपनी भाभी से मिलने के साथ सबसे पहिले उनके पैरों की ओर देखते हैं, पैर छूते हैं और वे तुरंत ही हँसते हुए अपने पैरों को छुपाना चाहती हैं। लगभग पचपन साल पुरानी घटना ही ऐसी है कि वह आज भी हास्य—विनोद का कारण बनी हुई है, जो एक कहानी का रूप ले चुकी है।

हाँ, हमारे पितामह पंडित पन्नालाल जी दुबे के निधन के दिन से ही चि. सुरेन्द्र अपनी पहली स्मृतियों को जोड़ते हैं। हम लोग मूलतः गंगाजली, मुंगावली (तब जिला गुना) पूर्व ग्वालियर स्टेट के निवासी हैं। उस जमाने में गाँव में नर्सिंग होम इत्यादि नहीं होते थे। प्रसव घरों में ही होते थे किंतु यहाँ यह तथ्य उल्लेखनीय है कि हमारे गंगाजली (निवास का नाम) के घर में प्रसव के लिये एक ही निर्धारित स्थान था जो शुभ माना जाता था, इसीलिए उसी स्थान पर मेरे दोनों चाचा पं. ओंकार नाथ दुबे एवं बद्रीनाथ दुबे, मैं (महेन्द्रनाथ), चि. सुरेन्द्र (दूसरे नंबर वाला छोटा भाई), चि. राजेन्द्र (तीसरा छोटा भाई) चारों छोटी बहनें चंद्रकांता (चंदा), शशिकांता (मुन्नी), शील एवं डॉ. कृष्णा (बेबी) का जन्म उसी एक कमरे में हुआ था। (हां दो छोटे भाई त्रिलोकी एवं त्रिभुवन का जन्म अन्य कक्ष में हुआ) एक मनोरंजक तथ्य यह है कि हमारे गाँव के प्रतिष्ठित पालीवाल परिवार के अधिकांश बच्चों का जन्म भी उसी कक्ष में हुआ। मुझे भली प्रकार स्मरण है कि चि. आनंद का जन्म भी उसी कक्ष में हुआ और बाद में वे अपने पिता बाबूलाल जी पालीवाल की तरह मुंगावली नगर पालिका के अध्यक्ष तथा बाद में मुंगावली विधानसभा क्षेत्र से विधायक रहे हैं, वे तो चि. सुरेन्द्र से भी छोटे हैं। चि. सुरेन्द्र पहले तो मुझसे दो कक्षा पीछे थे। जुलाई 1947 में जब ये कक्षा 4 में थे, तब मैं कक्षा 6 में था। 15 अगस्त 1947 को जब भारत आजाद हुआ तब सुरेन्द्र को डबल प्रमोशन का लाभ मिला और इनका प्रमोशन कक्षा पाँचवीं में हो गया। इसका श्रेय मेरी विदुषी माँ जाता है, जिन्होंने इनके प्रमोशन की विशेष तैयारी कराई थी। मुंगावली में तो 1963 में भी ऑठवीं तक का स्कूल था।

मेरे चाचा, मैंने तथा चि. सुरेन्द्र ने ऑठवीं तक की परीक्षा एग्लो वर्नाक्यूलर स्कूल मुंगावली से ही उत्तीर्ण की। संयोग देखिये मेरे चाचा मुझसे दो कक्षा आगे थे, वे कक्षा नौवीं में पढ़ने विदिशा (तब भेलसा था) गए। मैं कक्षा नौवीं एवं दसवीं में पढ़ने के लिये अपने मामा के घर ललितपुर गया। इसके बाद चि. सुरेन्द्र का

सड़सठ वर्ष बीत जाने पर, झोपड़ बस्ती जहां तहां। महल बनाते वही आपके, किन्तु उन्हें आवास कहां॥

एडमिशन कक्षा नौवी में एस.एस.एल. जैन कॉलेज भेलसा (अब विदिशा) में जुलाई 1951 में हुआ। चूंकि मेरे चाचा भी वहीं नये खुले जैन इंटर कॉलेज में ही पढ़ रहे थे इसलिये चि. सुरेन्द्र और चाचाजी हॉस्टल में एक साथ एक ही कमरे में रहे। जुलाई 1952 में चाचाजी तो इंटर मीडिएट पास करने के बाद भोपाल चले गए और मैं ललितपुर से हाईस्कूल पास करके उसी वर्ष 1952 में भेलसा आ गया था, क्योंकि उस समय ललितपुर में केवल हाईस्कूल तक की ही व्यवस्था थी। संयोग देखिये चि. सुरेन्द्र को पहले चाचा का संरक्षण मिला, फिर मेरे आने के बाद मेरा, यानि बड़े भाई का संरक्षण मिला। हम दोनों भाई भी हॉस्टल के एक कमरे में एक वर्ष तक रहे।

बम्बई के मधुकिरण पी. केनिया उसी वर्ष बम्बई से अपने मामाजी के यहाँ आये। वे फर्स्ट ईयर (इन्टर मीडिएट) में मेरे सहपाठी बने। वे अपनी योग्यता, क्षमता एवं सौम्य व्यवहार के कारण कॉलेज की शान थे और संयोग से हम दोनों घनिष्ठ मित्र बन गए। केनिया बहुत अच्छे वक्ता भी थे। वे स्वयं डिबेट्स आयोजित कराते थे, मैंने तो कभी डिबेट्स में भाग नहीं लिया किंतु उन्होंने चि. सुरेन्द्र (जिसे छोटा भाई मानकर स्नेह करते थे) को हमेशा डिबेट्स के लिये तैयार किया। वे स्वयं तो अंग्रेजी में बोलते थे किंतु चि. सुरेन्द्र को हिन्दी में बोलने की तैयारी स्वयं कराते थे। यहाँ चि. सुरेन्द्र के जीवन की एक सबसे बड़ी विशेषता का उल्लेख करना बहुत जरूरी समझता हूँ कि 1954 के बाद से लगभग एक दशक के कॉलेज जीवन में सुरेन्द्र ने डिबेट्स, एलोक्यूशन काम्पटीशन एवं भाषण प्रतियोगिताओं में सदैव ही प्रथम स्थान प्राप्त किया। यहाँ मधुकिरण पी. केनिया के बारे में कुछ कहना चाहूँगा। उन्होंने बम्बई वापिस जाकर बाम्बे हाई कोर्ट के वकील के रूप में नाम कमाया। वे बाम्बे बार लाइब्रेरी और हाईकोर्ट लाइब्रेरी से घनिष्ठ रूप से जुड़े। अपनी योग्यता एवं क्षमता के कारण बाम्बे उच्च न्यायालय के न्यायाधीश बने। बम्बई में प्रतिष्ठा प्राप्त करने के बाद उन्हें इलाहाबाद उच्च न्यायालय के वरिष्ठ न्यायाधीश के रूप में पदस्थ किया गया था। यह मेरा सुखद सौभाग्य रहा कि मैं भारत सरकार में श्रम आयुक्त के पद पर रहते हुये पूरे उत्तर प्रदेश (तब उत्तरांचल, उत्तरप्रदेश का ही हिस्सा था) का प्रभारी था तथा मेरा मुख्यालय कानपुर में था। हम दो पुराने मित्रों का अनेक बार मिलन हुआ। मेरे पिताजी/माताजी जब हमारे पास कानपुर आये, तब वे इलाहाबाद भी गए तथा केनिया जी के घर पर ही रुके। उल्लेखनीय है कि केनिया जी जब भी भोपाल आये, वे हमारे पिताजी से अवश्य मिलते थे।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि भारत के सबसे बड़े शैक्षिक संगठन AIFEA की प्रतिष्ठा रही है क्योंकि 1925 में इसकी स्थापना के बाद से ही एक शिक्षक के रूप में डॉ. राधाकृष्णन ने इसके तीन वार्षिक सम्मेलनों की अध्यक्षता की थी। जब श्री केनिया इलाहाबाद उच्च न्यायालय के विख्यात न्यायाधीश थे, तब 25 जून 1993 को AIFEA के 62वें वार्षिक सम्मेलन की अध्यक्षता करने के लिये विश्वविख्यात शिक्षाविद् डॉ. जी. चौरसिया (जो उस समय AIFEA के अध्यक्ष थे) ने श्री केनिया को ही आमंत्रित किया था। दिल्ली में आयोजित इस 62वें सम्मेलन में मध्यप्रदेश के तत्कालीन मुख्य सचिव श्री शरदचंद्र बेहार, सी.बी.एस.ई. के अध्यक्ष डॉ. बी.पी. खण्डेलवाल, नेशनल काउन्सिल फॉर टीचर एजुकेशन के चेयरमैन तथा भारत सरकार के संयुक्त सचिव डॉ. जे.एस. राजपूत तथा अखिल भारतीय खादी कमीशन के चेयरमैन भी मंच पर उपस्थित थे। चि. सुरेन्द्र उस समय भारत सरकार (शास्त्री भवन) में कार्यरत थे तथा AIFEA में भी सक्रिय थे। इस सम्मेलन को आयोजित कराने का सभी प्रभार सुरेन्द्र के पास था। उस सम्मेलन में श्री मधुकिरण केनिया का

आसमान की खुली छत के, नीचे उनका है संसार। गगन चूमते महल चढ़ाते सभी तरह से वे लाचार।।

अध्यक्षता के लिये आना चि. सुरेन्द्र अपना और AIFEA का सुखद सौभाग्य मानते हैं। AIFEA के 61वें नागपुर सम्मेलन की अध्यक्षता कर चुके डॉ. एस.एन. सुब्बारावजी ने अपना विस्तृत शुभकामना संदेश भेजा था। गाँधी शांति प्रतिष्ठान के हॉल में इस सम्मेलन में उपस्थित मधुकिरण केनिया अस्वस्थ थे और कुछ दिन बाद ही इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश पद पर रहते हुये उनका दुःखद निधन हो गया। किंतु AIFEA के 62वें सम्मेलन (दिल्ली) की अध्यक्षता करते हुये उन्होंने जो विचार व्यक्त किये थे, वह शिक्षा जगत के इतिहास में उल्लेखनीय रहेंगे। उनके निधन की भी एक मर्म स्पर्शी कहानी है। उनके उस हृदय रोग का इलाज उस समय सिर्फ यूएसए में ही संभव था जिसके लिये यदि वे चाहते और प्रयास करते तो विशेष प्रकरण के रूप में उन्हें यूएसए भेजने की अनुमति प्राप्त हो सकती थी, किन्तु उन्होंने इसके लिये स्पष्ट रूप से मना कर दिया था।

हम दोनों भाइयों ने कृषि विशारद परीक्षा उत्तीर्ण करने का निर्णय ले लिया था तथा उस समय हमने ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं कृषि व्यवस्था के बारे में जो अध्ययन किया, वह आज भी हमें भारत की ग्रामीण एवं कृषि व्यवस्था के लिये कुछ कर गुजरने के लिये प्रेरित करता है। मैं इण्टर मीडिएट उत्तीर्ण करने के बाद जुलाई 1954 में हमीदिया कालेज भोपाल (जो उस समय मिंटो हॉल में लगता था) बीए प्रीवियस का विद्यार्थी था, चि. सुरेन्द्र भेलसा में अकेले रह गए थे। जुलाई 1954 में वे एसएसएल जैन कॉलेज में इंटरमीडिएट सेकण्ड ईयर में साइंस बायोलोजी के विद्यार्थी थे, तब भेलसा में केवल इंटर मीडिएट तक की व्यवस्था थी और केवल एक कॉलेज था। यह वर्ष उनके जीवन का एक बहुत बड़ा टर्निंग पॉइंट था। चि. सुरेन्द्र पर श्री मधुकिरण पी. केनिया का प्रभाव तेजी से परिलक्षित हुआ था और वे कॉलेज के सबसे प्रभावशाली भाषणकर्ता बन गए थे। उन दिनों कॉलेज यूनियनों में चुनाव के समय शैक्षिक योग्यता एवं भाषण का महत्व होता था तथा अच्छे कर्ताओं को चुना जाता था।

जुलाई 1955 में चि. सुरेन्द्र को भेलसा (विदिशा) छोड़कर भोपाल आना पड़ा। ये मध्य भारत बोर्ड की इंटरमीडियेट (साइंस) परीक्षा में असफल हुये, किंतु हमारी माँ जब गंभीर रूप से अस्वस्थ थी तब सुरेन्द्र की मुंगावली में उपस्थिति जरूरी थी क्योंकि उस समय पिताजी, चाचाजी और मैं बाहर थे। उस समय घर का सारा भार सुरेन्द्र पर था। तभी चि. श्याम का जन्म हुआ। चि. सुरेन्द्र को हमीदिया कॉलेज में इंटरमीडियेट साइंस (अजमेर बोर्ड) में बड़ी कठिनाई से एडमिशन मिला। मैंने तत्कालिक प्राचार्य श्री प्रेमचन्द्र मल्होत्रा से कहा कि सर यदि आप मेरे छोटे भाई को एडमिशन नहीं देंगे तो मेरा आगे पढ़ना भी मुश्किल हो जायेगा। मल्होत्राजी का मैं अत्यंत प्रिय छात्र था, उन्होंने चि. सुरेन्द्र को तो विशेष प्रकरण के रूप में एडमिशन दिया ही, साथ-ही-साथ हमारे परिवार की आर्थिक स्थिति को देखते हुए अपने दोनों पुत्रों को घर पर अंग्रेजी पढ़ाने का कार्य भी मुझे दिया। इस प्रकार उन्होंने एक भाई की फीस माफ की और ट्यूशन के माध्यम से हमारी मदद की। मैं कॉलेज की अंग्रेजी साहित्य सभा का अध्यक्ष चुना गया था तथा कॉलेज में पृथ्वीराज कपूर के कार्यक्रम एवं श्री नारायण चतुर्वेदी के कार्यक्रमों के सफल आयोजनों से वे मुझसे प्रसन्न थे। उस समय हम दोनों भाई हमीदिया कॉलेज के होस्टल में रहने लगे। मजार के सामने जहाँगीराबाद (आज का पुलिस मुख्यालय) हमारा होस्टल था। मेरा और चि. सुरेन्द्र का कमरा तो सामने ही था— हमें बताया गया है कि आजकल वह एडीशनल आई जी का कक्ष है। इस तरह जहाँगीराबाद के होस्टल के उस कमरे में हम जुलाई 1954 से जनवरी 1956 तक रहे। इसी बीच भारत के सबसे बड़े राज्य मध्यप्रदेश के निर्माण की घोषणा हो चुकी थी और भोपाल नगर को नये प्रदेश की

अद्यनंगे जिनके बच्चे हैं जो कि कुपोषण डेल रहे। शिक्षा से बंचित बेचारा बाल श्रमिक सब देख रहे ।।



राजधानी घोषित किया जा चुका था। हमें तालाब के किनारे नये बने दो होस्टल में से एक, तिलक होस्टल में ऊपर कमरा आवंटित हुआ। जिसमें हम दोनों भाई रहने लगे। हमारे होस्टल के ऊपर के कमरों में खिड़की से थोड़ी ऊपर जो टेबिल बनी थी उस पर लिखते समय ऐसा लगता था जैसे हमारा होस्टल तालाब में तैर रहा हो क्योंकि नीचे की सड़क दिखाई न देकर सीधा तालाब दिखायी देता था। क्या शानदार नजारा था। मैं पास ही मिंटो हॉल में ही पढ़ता था, किंतु चि. सुरेन्द्र पीछे नये बने साईंस ब्लॉक में साईंस की पढ़ाई करता था। अंग्रेजी पढ़ने तथा सभी कार्यक्रमों में तो मिंटो हॉल के बड़े हॉल में ही इन्हें आना पड़ता था। आजकल यही साईंस ब्लॉक मोतीलाल साईंस कॉलेज है।

मैंने अप्रैल 1956 में बीए फाइनल एवं चि. सुरेन्द्र ने अप्रैल में ही इंटर साईंस की परीक्षा इसी मिंटो हॉल में बैठकर दी थी। उस समय ही निर्णय हो चुका था कि भविष्य में यही मिंटो हॉल मध्यप्रदेश की विधानसभा बनेगी और लगभग चार दशक तक यहाँ मध्यप्रदेश की विधानसभा रही।

30 अप्रैल 1956 में बीए फायनल के अंतिम पेपर की परीक्षा देने के बाद मैं सीधे मल्होत्राजी के बच्चों को पढ़ाने गया तथा वहाँ से भोपाल के तत्कालीन विकास आयुक्त कर्नल मेहबूब के पास पहुँचा। कर्नल मेहबूब ने मुझसे कहा था कि तुम परीक्षा देने के बाद सीधे मेरे पास आना। शाम को उनके घर पर मिला तो उन्होंने तुरंत उच्च श्रेणी लिपिक के पद के लिये आवेदन लिया तथा एक सप्ताह में मुझे नौकरी देने का वायदा किया। इन्होंने जुलाई 1956 में बीएससी पार्ट वन में एडमिशन लिया था, इनके अधिकांश साथी सेकंड डिवीजन पाने के कारण भोपाल के नये मेडिकल कॉलेज में प्रवेश पाने में सफल रहे। इनके साथ बीएससी पार्ट वन में जो छात्र रह गये थे उनमें कु. नजमा युसुफ (अब श्रीमती नजमा हेपतुल्ला) एवं संतोष श्रीवास्तव भी थे। बाद में संतोष श्रीवास्तव वाइस चान्सलर तक बनने में सफल रहे एवं नजमाजी के बारे में अब सब जानते हैं। चि. सुरेन्द्र ने तो अगस्त में साईंस छोड़कर हमीदिया कॉलेज में आर्ट्स में एडमिशन ले लिया। इसका उल्लेख मैंने इसलिये भी किया कि कई जगह हम कह देते हैं कि सब भाग्य का खेल है – किंतु अब मैं तो दिनांक 25 जून 2014 को श्री शरद चन्द्र बेहार की सुरेन्द्र के बारे में कही गयी इस टिप्पणी से सहमत हूँ, उन्होंने कहा था कि 'अन्तोगत्वा सेवा विवेकपूर्ण जीवन और त्याग के बाद के सम्मान का अपना एक अलग ही स्वरूप होता है, जो दुबेजी में मैंने पाया है' और इस तरह से चि. सुरेन्द्र कम भाग्यवान नहीं है। अप्रैल 1957 तक हम हमीदिया कॉलेज के उसी तिलक होस्टल में रहे। अप्रैल में हमने होस्टल छोड़ दिया तथा भोपाल के चिंतामन चौक में कामनीगिर मस्जिद के सामने एक किराये का बड़ा सा कमरा लेकर उसमें रहने लगे। यह कमरा क्या एक बड़ा-सा हॉल था जिसका अपना एक मनोरंजक रूप था। एक रात इसी बड़े कमरे में श्री लक्ष्मीनारायण जी शर्मा के स्वयं के विवाह के समय 18 बाराती ठहरे थे। श्री लक्ष्मीनारायण के छोटे भाई शंभूजी (शिवनारायण शर्मा) तो अधिकांशतः हमारे साथ ही रहते थे, ये सभी बाराती भी तो हमारे भी संबंधी थे। अप्रैल 1957 से दो वर्ष तक हम दोनों भाई उसी कमरे में रहे। गली में हमारे दरवाजे के बिलकुल सामने कामनीगिर मस्जिद थी और हम दोनों भाइयों को पाँचों वक्त की नमाज को सुनने और नमाजियों के दर्शन करने का शबाब हासिल होता रहा। चिंतामन चौक से इतवार चौक जाने वाली सड़क के हम बिलकुल पास रहते थे जिसके सामने गुलियादायी गली में डॉ. शंकरदयाल शर्मा का पैतृक मकान था जहाँ उनके पिता उनके पिता वैद्य खुशीलाल रहते और वैद्य का व्यवसाय करते थे।

इस अवधि में चि. सुरेन्द्र का प्रेमीजी, शफीक भाई एवं शहर के बहुत से लोगों से घनिष्ठ संपर्क हुआ। भोपाल नगर की ऐतिहासिक और प्रतिष्ठित जुमेराती-घोड़ा नक्कास चौराहा चौक बाजार इत्यादि की पटिया पॉलिटिक्स से भी जुड़ने का इन्हें अवसर प्राप्त हुआ। घोड़ा नक्कास के गुजरात लॉज में तो हम दोनों भाईयों ने

साक्षरता अभियान देश का खोखला नारा सिद्ध हुआ। अन्तरराष्ट्रीय मापदंडों पर यह सिर्फ फ्राड ही प्रसिद्ध हुआ।।

लगातार तीन वर्षों तक दोनों समय का खाना खाया — उसका अपना एक अलग ही स्वरूप था, आनंद था।

चि. सुरेंद्र के जीवन में एक बड़ा परिवर्तन भी इसी समय में हुआ था। मई—जून 1957 की गर्मियों की छुट्टियों में चि. सुरेंद्र को तो सदैव की तरह मुंगावली में रहना ही था। मैं तो चूंकि को-ऑपरेटिव डिपार्टमेंट की सरकारी नौकरी में था इसलिये मुझे तो मुंगावली (अपने घर) जाने का बहुत कम समय मिलता था। इन्होंने मुंगावली में रहकर 1957 के भारत के आम चुनाव (विधानसभा और लोकसभा के चुनाव एक साथ ही हो जाने की परिपाटी थी) तथा उसके बाद के घटनाक्रम पर एक राजनैतिक विश्लेषणात्मक लेख लिखा था जो (यदि उपलब्ध हो गया तो) मैंने चि. सुरेंद्र से उसे पुनः पुस्तक में प्रकाशित करने को कहा है।

1957 के चुनाव में रविशंकर शुक्ला के पुत्रों को ही नहीं अपितु लगभग सभी बड़े नेताओं के पुत्र—पुत्रियों एवं परिवार के सदस्यों को मध्यप्रदेश में टिकट मिले और जनता ने इस सबको विजयी भी बनाया। केवल मध्यप्रदेश ही नहीं भारतवर्ष के अधिकांश भागों में पूर्व राजनैतिक पृष्ठभूमि के साथ पारिवारिक पृष्ठभूमि के राजनेताओं को भी राजनीति में आने का अवसर मिला। इतना ही नहीं — इनसे अधिक अवसर सामंतवादी ताकतों को मिला। हम लोगों का गाँव मुंगावली, गुना जिले में था। 1957 के चुनावों में ग्वालियर की राजमाता विजयाराजे सिंधिया ने कांग्रेस के टिकिट पर गुना—विदिशा से लोकसभा का चुनाव लड़ा और विजय प्राप्त की। किंतु मजेदार बात तो यह है कि आज 2014 में भी गुना एवं ग्वालियर रियासत के पूरे क्षेत्र में सिंधिया परिवार का राजनैतिक वर्चस्व किसी न किसी रूप में कायम है। कांग्रेस हो, जनसंघ रही हो भाजपा हो, सभी जगह सिंधिया परिवार के साथ ही अधिकांश क्षेत्रों में राजपरिवारों एवं सामंती ताकतों का प्रभाव देखने को मिल रहा था। अगस्त 1958 में प्रकाशित एक विश्लेषणात्मक लेख में परिवारवादी, सामंतवादी ताकतों के बारे में जो भविष्यवाणी की गई थी वह आज 2014 में भी देखने को मिल रही है। एक लेख में तो उस समय ही कहा गया था कि नेहरू और इंदिराजी की कांग्रेस ने अपना राजनैतिक विकल्प आर.एस.एस. परिवार के हौवा के रूप में स्वयं ही खड़ा कर दिया है। उस लेख के अनुसार शायद वहीं कांग्रेस के परिवारवादी स्वरूप को बनाये रखने में मदद करेगा। यहाँ भी राजनैतिक भविष्यवाणी सही साबित हो रही है। आज की राजनीति में इंदिरा गाँधी के परिवार का वर्चस्व बना हुआ है और इसके विकल्प में भी आज आर.एस.एस परिवार ही सामने है।

अब मैं केवल सुरेंद्र की पृष्ठभूमि की चर्चा करूँ। दिसम्बर 1954 के बाद से आज तक महान गाँधीवादी श्री एस.एन. सुब्बाराव का प्रभाव इन पर परिलक्षित है। हमारे निवास के बिलकुल पास में सराफा चौक बाजार था। 11 सितम्बर, 1958 को विनोबा जयंती का कार्यक्रम वहाँ हो रहा था। उस समय 'भूदान आंदोलन' अपने चरम पर था। चि. सुरेंद्र को उस विश्लेषण पर हुयी प्रतिक्रिया और नाराजगी के फलस्वरूप सक्रिय राजनीति से दूर रहकर केवल रचनात्मक कार्यों में भाग लेने का निर्णय घोषित करना पड़ा। इस तरह इन्होंने विनोबा भावे के भावी पीढ़ी (बच्चों के लिये) एवं जयजगत के कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लेने का निश्चय किया। फलस्वरूप पहले भाई रतन कुमारजी तथा बाद में डॉ. शंकरदयालजी शर्मा ने इन्हें शिक्षक बनने में सहयोग भी किया।

जून 1959 से 1960—61 में हम दोनों भाई भारत टाकीज के पीछे इंडस्ट्रियल कॉलोनी में रहे। 1961 में ही मैंने बीएचईएल भोपाल में नौकरी ज्वाइन कर ली थी तथा लगभग डेढ़ वर्ष तक टी.आर.टी. गोविंदपुरा में रहने के बाद पिपलानी में आ गये थे। जून 1963 में चि. सुरेंद्र का विवाह हुआ, सभी भाई—बहनों को पढ़ाने की दृष्टि से हमारी माँ और पूरा परिवार मुंगावली से भोपाल आ गया और इस तरह जुलाई 1963 से दिसम्बर 1969 तक आवास क्र. 679, 680 बी सेक्टर, पिपलानी में रहे। 1966 में, मैं तो भारत सरकार की नौकरी में चला गया किंतु सारा परिवार सुरेंद्र के साथ ही रहा। जनवरी 1970 में चि. सुरेंद्र 6 नं. स्टाप शिवाजी नगर के आवास क्र. एफ 113/9 में पहुंचे और 1974 तक हमारे माँ—पिताजी तथा भाई बहिन उसी एफ टाइप मकान में सुरेंद्र के

बने केन्द्र प्रौढ़ शिक्षा के विश्वविद्यालय ही हैं सारे। बजट करोड़ों का व्यय करके, भी यथ निरक्षर हैं सारे।।

साथ रहे। 1974 में मेरा अपना मकान अरेरा कॉलोनी में बन गया, जिसमें परिवार के अधिकांश सदस्य रहने आ गए। चि. सुरेन्द्र मई 2001 तक छह नम्बर वाले मकान में ही रहे उसके बाद तो इन्हें इंदौर और दिल्ली में ही अधिक रहना पड़ा।

30 जून 1991 को सुरेन्द्र की तत्कालीन मानव संसाधन मंत्री माननीय श्री अर्जुन सिंह से दिल्ली में लंबी मुलाकात हुई थी, जिसमें इन्होंने एक बड़ा मेमोरेन्डम और समस्याएँ उनके सामने प्रस्तुत की थीं। चूंकि अर्जुन सिंह जी पहली बार मानव संसाधन मंत्री बने ही थे तो वे चाहते थे कि उन्हें विभाग की समस्याओं की जानकारी हो। सुरेन्द्र ने 18 विभिन्न प्रकरणों के साथ यह भी बताया था कि 'शास्त्री भवन में मंत्रालय में एक राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान है, जिसके अध्यक्ष माननीय मंत्री जी स्वयं हैं। इस प्रतिष्ठान में पैसा तो बहुत हो गया है, लेकिन शिक्षकों का कल्याण बहुत कम हो रहा है।' श्री अर्जुन सिंह जी ने शायद इस पर भी ध्यान दिया होगा। मुझे बताया गया है कि एक लंबे अरसे बाद उनके पास एक फाइल आयी, जिसमें शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान के लिए एक नये सहायक सचिव की जरूरत बताई गई, जो अकाउंट्स इत्यादि के कार्यों में प्रवीण हो। तब अर्जुन सिंह जी को शायद सुरेन्द्र के ज्ञापन की याद आयी होगी। अर्जुन सिंहजी ने जानना चाहा कि 'क्या इस संगठन का कार्य केवल अकाउंट रखना एवं आडिट करना है?' बताया जाता है कि तब उन्होंने लिखा कि किसी टीचर को यहाँ लाया जाये जो शिक्षक कल्याण में रुचि लेता हो। सारे देश में सरक्यूलर भेजा गया, लेकिन शिक्षकों का न तो कोई प्रार्थना-पत्र आया और न ही कोई शास्त्री भवन में अंग्रेजी में काम करने में रुचि लेता दिखा। चि. सुरेन्द्र को भी यह ज्ञात हुआ और उन्होंने अपना आवेदन डेपुटेशन पर आने के लिए दिया या इन्हें इस पद पर डेपुटेशन पर आने के लिए आमंत्रित किया गया। तदनुसार चि. सुरेन्द्र ने मध्यप्रदेश से अपना डेपुटेशन इस पद पर करा लिया।

संयोग देखिये कि मुझे मध्यप्रदेश, उड़ीसा एवं उत्तरप्रदेश जैसे प्रदेशों का श्रम आयुक्त रहने के बाद भारत सरकार के श्रम विभाग में मुख्यालय में श्रम आयुक्त के रूप में पदस्थ कर दिया गया था और इस तरह हम दोनों भाई फिर दिल्ली में एकसाथ पदस्थ रहे। सुरेन्द्र मध्यप्रदेश भवन के कमरे में रहते थे, इसलिए मैं भी लगभग दो माह इन्हीं के साथ रहा। एक प्रसंग और बताना चाहता हूँ हमारे भोपाल के ही डॉ. शंकरदयालजी शर्मा ने जिस दिन राष्ट्रपति पद की शपथ ली उसी दिन इनके अत्यंत घनिष्ठ श्री शफीक भाई भी इन्हें लेकर शाम 5 बजे राष्ट्रपति भवन में डॉ. साहब से मिले। काफी लंबी चर्चा के बाद डॉ. साहब ने इच्छा व्यक्त की कि सुरेन्द्र को राष्ट्रपति भवन में महामहिम राष्ट्रपति जी के अपर निजी सचिव (एडिशनल प्राइवेट सेक्रेटरी) पद पर नियुक्त किया जाये, जिससे भोपाल के लोगों को भी सुविधा रहेगी, क्योंकि ये तो सभी को पहचानते हैं। अब सुरेन्द्र ने मेरे सामने अपना प्रस्ताव बताया। इनकी इच्छा थी कि राष्ट्रपति भवन में ये ज्वाइन केवल इसलिये भी कर लें कि वहाँ इन्हें अच्छा आवास मिल जायेगा, किंतु आज मैं स्वीकार करता हूँ कि मैंने सुरेन्द्र को इस पद पर ज्वाइन करने के लिए मना किया और निराश भी किया। मैंने कहा कि चूंकि तुमने तहसीलदार का पद छोड़कर शिक्षक का पद ग्रहण किया था तो अभी मानव संसाधन मंत्रालय में तथा शिक्षा का तुम्हारे पास अत्यंत कल्याणकारी और महत्व का नाम और काम है, इसलिए तुम्हारा वहीं रहना उचित है। अपर निजी सचिव का पद है जो तुम्हें सूट नहीं करेगा। जिसको शायद तुम भी नहीं चाहते और अंत में सुरेन्द्र ने अत्यंत विनम्रतापूर्वक राष्ट्रपति के एडिशनल प्राइवेट सेक्रेटरी के पद पर ज्वाइन करने में अनिच्छा जाहिर कर दी। सौभाग्य से अपने ही एक मित्र, जो 30 साल पहले डॉ. साहब के पर्सनल स्टाफ में रह चुके थे उन्हें इस पद पर ज्वाइन करने के

अब मौलिक अधिकार शिक्षा का संविधान ने दिया जरूर। पर नौकरशाहों की चालाकी से कानून का पालन अभी है दूर

## जय जगत

लिए मना लिया। डॉ. साहब भी सहमत और प्रसन्न हुए और उन्होंने कहा कि ठीक है तुम बी.के. शर्मा से कहो कि वे राष्ट्रपति भवन में भी आ सकें। श्री शर्माजी ने भी प्रसन्नतापूर्वक इस पद पर अपनी सेवाएं दीं। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि सुरेन्द्र के पास तो एक प्रकार से शास्त्री भवन में शिक्षक कल्याण अधिकारी और शिक्षक कल्याण के कार्यों के लिए माननीय मंत्रीजी के सलाहकार जैसा सम्मान भी था।

इसके अलावा भी चि. सुरेन्द्र से जुड़ी अनेक घटनाओं का संस्मरण है एवं सुखद व मीठे अनुभव हैं, जो आज भी मस्तिष्क में ताजा है किन्तु उन सबका उल्लेख यहाँ संभव नहीं। इतना अवश्य कहना चाहूँगा कि मैं इसे प्रभु की असीम कृपा और सौभाग्य मानता हूँ कि मैं सुरेन्द्र का बड़ा भाई हूँ और निःसंकोच इससे गर्व महसूस करता हूँ।

मेरा अधिकांश समय विभागीय उत्तरदायित्वों को पूरा करने में व्यतीत हुआ किन्तु मैंने हमेशा देखा कि चि. सुरेन्द्र सदैव ही देशभर के शिक्षाविदों के सम्पर्क में राष्ट्रीय सृजनकर्ताओं में शामिल रहे और पूरे पारिवारिक दायित्वों के साथ-साथ उनका अधिकांश समय 'भावी पीढ़ी की शिक्षा' एवं 'जय जगत' के लिये समर्पित रहा और आज भी लगातार उसी के लिये समर्पित हैं, कार्य कर रहे हैं।

चि. सुरेन्द्र के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं शिक्षा जगत में उनका योगदान निःसंदेह प्रशंसनीय, असीमित व अद्वितीय है। मैं अपना हार्दिक आशीर्वाद, धन्यवाद और बधाई देना चाहता हूँ, उन व्यक्तियों को, जिन्होंने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को सम्मानित करने हेतु एक अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशन करने का निर्णय लिया है। उनकी सफलता की कामना करता हूँ।

### जन्म स्थली



प्रारंभिक शिक्षा बच्चों की, नौकरशाही की भेंट हुई। बजट बनाया बच्चों के हित, पर अधिकांश राशि तो लेप्स हुई।।



सुरेन्द्र नाथ दुबे ने इस कॉलेज में (कक्षा 9 से 12 वीं तक) 4 वर्ष तक अध्ययन किया।



सेठ शिताबराय लक्ष्मीचन्द्र जैन इंटर कॉलेज भेलसा

जुलाई 1951 से अप्रैल 1955



मिटो हॉल 1955-56

## मेरा अभिन्न मित्र सुरेंद्र

- वीरेंद्र जैन (विदिशा)

जुलाई 1951 में सुरेंद्र नाथ दुबे के चाचा ओंकार नाथ दुबे ने बताया कि उनका भतीजा भी कक्षा 9वीं में सेट सिताब राय लक्ष्मीचंद्र जैन इंटर कॉलेज, भेलसा में मेरे साथ ही पढ़ेगा। सुरेंद्र के चाचा पहले से ही मेरे घर में रहकर पढ़ते थे और वे उस समय भी कक्षा 12वीं में पढ़ रहे थे। सुरेंद्र के आने के बाद वे इंटर कॉलेज के हॉस्टल में रहने लगे और सुरेंद्र भी उनके साथ रामद्वारा के नए हॉस्टल में रहने लगे। चूंकि हम दोनों ही कक्षा 9वीं में थे और उनके चाचा के पुराने संबंधों की वजह से हम दोनों में गहरी दोस्ती हो गई।



मुझे अच्छी तरह याद है, मुंगावली से भेलसा आने के बाद सुरेंद्र लगभग एक सप्ताह तक तो मेरे घर में मेरे साथ ही रहे। इनके पिताजी पंडित बैजनाथ प्रसाद दुबे तथा मेरे दादाजी (जिनको हम सभी बब्बा जी कहते थे) के घनिष्ठ परिचितों में से थे। स्वाभाविक रूप से हम पारिवारिक दृष्टि से भी घनिष्ठ थे।

विस्तार में जाने की अपेक्षा यहाँ मैं सुरेंद्र के बारे में एक विशेष घटना का उल्लेख करना उचित समझता हूँ। कक्षा 9वीं में पढ़ने वाले ही मेरे एक पुराने घनिष्ठ मित्र ने जब सुरेंद्र से कहा (किशोर अवस्था में तो सब अच्छी आदतों के साथ कुछ बुरी आदतें भी आ जाती हैं) कि "तुम केवल सिगरेट मुँह में लगा लो नहीं तो तुम्हारी-मेरी दोस्ती टूट जाएगी।" मुझे अच्छी तरह याद है सुरेंद्र ने तब केवल यही कहा था कि "मेरी और तुम्हारी दोस्ती तो टूट ही चुकी है, क्योंकि मेरे पिताजी ने मुझे सिखाया है कि 'दुनिया में सबसे बड़ा दोस्त सिद्धांत होता है' और चूंकि तुम मुझे सिद्धांतों से अलग हटकर सिगरेट मुँह में लगाने के लिए कह रहे हो तो मेरी-तुम्हारी दोस्ती कैसी"। सुरेंद्र के पिताजी खूब बीड़ी बीते थे, लेकिन भेलसा आने के पहले सुरेंद्र की माँ ने पिताजी के माध्यम से ही अपने बच्चों को यह कसम दिलाई थी कि हमारे बच्चे जीवन में कभी बीड़ी-सिगरेट न पियें। मुझे भी यह जानकर आश्चर्य होता है कि सुरेंद्र के साथ ही उसके बड़े भाई महेंद्र (जिन्हें मैं आज भी भैयाजी कहता हूँ) एवं उसके तीन छोटे भाई राजेंद्र, त्रिलोकी एवं डॉ. त्रिभुवन ने जीवन में कभी बीड़ी-सिगरेट नहीं पी है। मैं इस 75 वर्ष की आयु में सुरेंद्र के छोटे भाई डॉ. टी.एन. दुबे (जो आज भोपाल का ही नहीं मध्यप्रदेश का ख्याति प्राप्त डॉक्टर हैं) से अपना इलाज कराता हूँ, ने भी मुझे बताया कि पाँचों भाई माँ और पिताजी के आग्रह के कारण बीड़ी-सिगरेट या किसी प्रकार का नशा नहीं करते हैं।

मैं केवल सुरेंद्र के बारे में इतना जानता हूँ कि बचपन में यह जितना सिद्धांतप्रिय था आज भी उतना ही सिद्धांतप्रिय है। आज की जिंदगी में सिद्धांतों पर अडिग रहने के कारण सुरेंद्र दूर से दिखने वाली उथली राजनीति, सत्ता, संपत्ति और वैभव से बहुत दूर है।

सुरेंद्र कक्षा 9वीं से कक्षा 12वीं तक भेलसा में पढ़ते रहे और मैं इस बात को गर्व से कह सकता हूँ कि इन चार वर्षों तक हम दोनों (जो कि किशोर अवस्था के ही थे) घनिष्ठ रूप से जुड़े रहे और अधिकांश क्रिया-कलापों में साथ ही रहते थे।

हाँ, यहाँ यह उल्लेख करना जरूरी है कि सुरेंद्र के ऊपर इनके अग्रजों का हाथ सदैव रहा है। पहले ये चाचा के साथ रहते थे। चाचा इंटर पास करने के बाद भोपाल चले गये (क्योंकि भेलसा में इंटर के बाद पढ़ाई की व्यवस्था नहीं थी), उसी समय इनके बड़े भाई श्री महेंद्र नाथ दुबे, भेलसा (विदिशा) पढ़ने आ गये। उन्होंने कक्षा 9वीं और 10वीं की पढ़ाई ललितपुर से की थी। ललितपुर में भी 10वीं के बाद पढ़ाई की व्यवस्था

कहाँ गए कानून आपके, नहीं उन्हें मौलिक अधिकार। पर विकास का दम भरते हो, करके श्रम का बंटवारा॥

नहीं थी। आज भी इनके बड़े भाई मेरे लिए भैयाजी ही हैं और अभी भी मुझे उनका स्नेह प्राप्त होता है। अभी एक साल पहले ही सुरेंद्र और भैयाजी एक साथ मेरे घर आये थे। तब मुझे कैसा लगा होगा, इसका अंदाजा ही लगाया जा सकता है।

भैयाजी (महेंद्र) के साथ श्री मधुकिरण पी. केनिया फर्स्ट ईयर में पढ़ते थे और इसे मैं आज विदिशा का सौभाग्य मानता हूँ कि स्वर्गीय श्री मधुकिरण पी. केनिया जैसे व्यक्ति भी विदिशा कॉलेज में पढ़े थे। सुरेंद्र का मानना है कि उनके जीवन में जो मेंटर रहे जिन्होंने उनके जीवन में टर्निंग पॉइंट दिया, वे थे, श्री मधुकिरण पी. केनिया, बड़े भाईसाहब एवं श्री एस.एन.सुब्बाराव जी। इसलिए सुरेंद्र ने तो विदिशा को ही टर्निंग पॉइंट माना है। जब महेंद्र और केनिया इंटर की पढ़ाई करने के बाद भोपाल और बम्बई चले गए तो सुरेंद्र एक प्रकार से हमारे संरक्षण में विदिशा में रह गये। लेकिन जब ये इंटर फाइनल में पढ़ते थे, तब इनके जीवन की दिशा ही बदल गई। इन्होंने कॉलेज यूनियन का चुनाव लड़ा। उस समय इंटर फाइनल में पढ़ रही कुमारी पुष्पा टंडन कॉलेज यूनियन की अध्यक्ष बनीं और सुरेंद्र सचिव बने। यह बचपन से ही इतने अधिक सैद्धांतिक थे कि इन्होंने कहा कि चुनाव का फार्म भरने के लिए (जो दो रूपए लगते हैं) यदि वह तुम (वीरेंद्र जैन) दोगे, तभी मैं चुनाव लड़ूंगा और तुम्हीं मेरा फार्म भरकर काम भी करोगे। सुरेंद्र का शुरू से ही यह कहना रहा है कि सच्चे प्रजातंत्र में जब लोग ही चुनाव लड़ाएँ, लोग ही पैसा खर्च करें और दूसरे लोग ही प्रचार करें, तभी सच्चा प्रतिनिधि चुना जा सकता है और वह आज भी इस सिद्धांत पर पूरी तरह दृढ़ हैं, क्या आज का लोकतंत्र इससे कुछ सबक लेना चाहेगा?

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि उन दिनों में उन्हीं लोगों को चुना जाता था जो अच्छा भाषण दे सकते थे या बहुत योग्य होते थे। सुरेंद्र जब भाषण देते थे तो उसका बहुत प्रभाव होता था। मैंने सुना है कि बाद में भी कॉलेज जीवन में यह डिबेट्स, भाषण प्रतियोगिता इत्यादि में हमेशा प्रथम स्थान प्राप्त करते रहे।

कॉलेज यूनियन का उद्घाटन करने बाबू तख्तमलजी आये और कॉलेज ट्रस्ट के अध्यक्ष सेठ लक्ष्मीचंद्रजी ने उस कार्यक्रम की अध्यक्षता की। सुरेंद्र ने तो केवल स्वागत भाषण दिया था, लेकिन भोले सेठजी ने तो इसे अच्छा भाषण समझकर सुरेंद्र को 10 रूपए का इनाम दिया। उन दिनों होटल का भोजन एक माह का खर्चा ही 10 रूपए होता था। वह दिन सुरेंद्र की जिंदगी में एक अलग प्रकार का दिन था। जब बाबू तख्तमलजी कार्यक्रम के बाद जाने लगे तो उन्होंने जाते-जाते सुरेंद्र को अपने घर आने को कहा। सुरेंद्र और मैं उनके घर भी गए और संयोग देखिए कि सुरेंद्र उस दिन से बाबू तख्तमलजी से ऐसे प्रभावित हुए कि बाबूजी के अंतिम क्षणों तक सुरेंद्र उनके प्रिय पात्र बने रहे और बाबूजी ने सुरेंद्र को खूब स्नेह दिया।

### सुब्बारावजी से संपर्क

उसी समय लगभग चार माह बाद दिसम्बर 1954 में सूचना मिली कि बाबू तख्तमलजी विदिशा से विधानसभा का उपचुनाव लड़ेंगे। यह भारतीय राजनीति के इतिहास की एक उल्लेखनीय घटना है कि भारत के प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू बाबू तख्तमलजी को ही मध्य भारत का मुख्यमंत्री देखना चाहते थे और बाबू तख्तमलजी ने पहला चुनाव बासोदा से, दूसरा उपचुनाव मंदसौर से लड़ा। वे दोनों बार हार गए, लेकिन वाह रे जिददी जवाहरलालजी उन्होंने फिर भी बाबूतख्तमलजी को तीसरा उपचुनाव विदिशा से लड़ने के लिए कहा। चुनाव की सरगर्मियां तेज हो गई थीं और चूंकि बाबू तख्तमलजी मध्यभारत कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भी थे, इसलिए प्रदेश कांग्रेस कमेटी का अस्थायी दफ्तर भेलसा में ही उनके घर पर बनाया गया। उस समय जवाहरलालजी एवं मौलाना आजाद के अत्यंत प्रिय युवा बंगलौर के श्री एस.एन. सुब्बारावजी को पंडित

आजादी को दाग लगाया, आज इन्हीं स्तम्भों ने। प्रजातंत्र कलुषित कर डाला, अहं भाव अरु दम्भों ने॥

नेहरू ने मध्यभारत कांग्रेस में मध्यभारत कांग्रेस सेवादल का कार्य करने का निर्देश दिया था। स्वाभाविक रूप से श्री सुब्बारावजी मध्यभारत कांग्रेस के अस्थायी आफिस भेलसा में बाबू तख्तमल जी के घर में रहकर उपचुनाव में भी सहायक बने। सुरेंद्र के जीवन में एक बड़ी घटना तब घटी, जब वे लगातार एक माह तक सुब्बारावजी के संपर्क में रहे। सुरेंद्र, सुब्बारावजी एवं श्री स्व. वृंदावन सिंह तोमर के साथ प्रतिदिन चरण तीर्थ (बेतवा का घाट) पर जाते और साथ में एक आने के गुढ़-चने में ही लुत्फ उठाते थे। क्या मनोरंजक इतिहास है कि सुरेंद्र ने एक बार सुब्बारावजी का साथ क्या पकड़ा आज भी वे सुब्बारावजी के घनिष्ठ संपर्क में हैं। सुरेंद्र ने सुब्बारावजी के 75वें जन्मदिन पर 'सुब्बाराव ए लिविंग स्पिरिट ऑफ महात्मा गांधी' एवं 'एसएन सुब्बाराव एक यायावर महर्षि' पुस्तक का संपादन प्रकाशन किया, जिसका विमोचन धर्म स्थल, कर्नाटक में 7 फरवरी 2004 को मुनि डॉ. वीरेंद्र हेगड़े ने किया था। संयोग देखिए कि ठीक दस वर्ष बाद सुब्बारावजी से दस साल छोटे सुरेंद्र का 75वां जन्मदिन हमने जनवरी 2014 को मनाया है। बाबू तख्तमलजी के घर पर (भेलसा में) सुरेंद्र का संपर्क सुब्बारावजी से हुआ और वह आज तक बना हुआ है। सुरेंद्र आज भी सुब्बारावजी को ही अपना आदर्श और गुरु मानते हैं तथा उनके बहुत से कार्यों में उनका सहयोग कर रहे हैं। सुरेंद्र ने सुब्बारावजी बारे में पुस्तक के तीन संस्करण प्रकाशित किए और उन पर एक डाक्यूमेंट्री फिल्म भी बनाई है।

मैं एक घटना का और उल्लेख करना चाहता हूँ। चम्बल में डाकुओं के समर्पण कराने में पोरसा (मुरैना) के रहने वाले स्व. वृंदावनसिंह तोमर की मुख्य भूमिका तो थी ही किंतु उनके माध्यम से ग्वालियर-चंबल संभाग के अनेक कार्यकर्ताओं एवं नेताओं से परिचय भेलसा उपचुनाव में ही हुआ था। सुरेंद्र का तो मानना है कि सुब्बाराव जी द्वारा चंबल के बागियों के समर्पण करा पाने की सारे विश्व इतिहास को चमत्कृत करने वाली घटना का बीजारोपण जनवरी 1955 के उपचुनाव में भेलसा में ही हो गया था। मनोरंजक तथ्य यह भी है कि जौरा (मुरैना) में जब पहला गाँधी आश्रम बना तो सुरेंद्रनाथ दुबे उसके संस्थापक सदस्यों में से एक रहे तथा उद्घाटन के दिन भी जौरा में ही उपस्थित थे। यही तो आज भी समर्पण आश्रम भी कहलाता है।

जब इंटर फाइनल में पुष्पा टंडन कालेज यूनियन की अध्यक्ष और सुरेंद्र यूनियन के सचिव थे, तभी भोपाल के श्री श्रीकृष्ण प्रेमीजी ने विद्यार्थी कांग्रेस भेलसा का भी गठन किया और कुमारी पुष्पा टंडन को अध्यक्ष तथा सुरेंद्रनाथ दुबे को महामंत्री बनाया था। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि कुमारी पुष्पा टंडन भेलसा के एडीजे श्री टंडन की पुत्री थी और सुरेंद्र उन्हें बड़ी बहन मानते थे। डॉ. पुष्पा टंडन भोपाल से एमबीबीएस करने के बाद बम्बई चली गईं और सुना है कि उनकी भतीजियाँ और बेटियाँ सिनेमा जगत की अभिनेत्रियाँ हैं।

### सुरेंद्र की जिंदगी का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष

अब यहाँ सुरेंद्र के बारे में जीवन के अन्य पक्ष की चर्चा करना उचित समझता हूँ। सुरेंद्र अप्रैल 1955 में इंटरफायनल (साइंस बायलॉजी) नहीं कर पाये और जून 1955 में इन्होंने भेलसा छोड़कर अपने बड़े भाई के साथ इंटरमीडिएट की पढ़ाई भोपाल में ही करने का निश्चय किया और एक प्रकार से हम दोनों सहपाठियों का चार साल का संबंध छूट गया, लेकिन मैंने तो इन्हें अपना अभिन्न मित्र कहा है और इसलिए इनके भोपाल जाने के बाद या कहीं भी रहने के बाद इनकी 75 साल की उम्र में भी मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि हम दोनों आज भी अभिन्न मित्र हैं, इसीलिए इसके बाद के सुरेंद्र जीवन की बात विस्तार से कहना चाहूँगा। कहने को तो यह भोपाल चले गये, लेकिन इनका भेलसा (विदिशा) से और मुझसे कभी बिछोह नहीं हो पाया। जैसे

आखिर कोई सहे कहाँ तक, सहने की है सीमा भी। सह न सकें अपमान सतत यो, टूटेगी वह सीमा भी॥



अवकाश होता, यह मेरे पास आ जाते थे। हाँ, मैंने इनके जीवन के एक परिवर्तन की बात नहीं बताई। भेलसा में ही पढ़ाई से हटकर ये राजनीति में बहुत अधिक रुचि लेने लगे। 1957 में लोकसभा के चुनाव में ग्वालियर की महारानी श्रीमती विजयाराजे सिंधिया विदिशा-गुना सीट से कांग्रेस की प्रत्याशी बनीं। सुरेन्द्र विदिशा आये और इन्होंने राजनीति से मोह भंग होने की व्यथा सुनाई। मैंने कहा कि “भैया अभी तो तुम राजनीति में आये ही थे और इतनी जल्दी सक्रिय राजनीति से विरक्त क्यों होना चाहते हो।” उस समय दिल्ली में तो निश्चित लगता था कि श्रीमती इंदिरा गाँधी ही पं. जवाहरलाल नेहरू की उत्तराधिकारी बनेंगी और शायद पीढ़ियों तक यह चले भी। चूँकि सुरेन्द्र मुँगावली जिला-गुना का रहने वाले हैं और अब यदि ये भविष्य में सक्रिय राजनीति में भाग लेना चाहते भी तो इनके लिए कोई जगह नहीं थी। एक तो इनकी पारिवारिक (आर्थिक) परिस्थिति इस योग्य नहीं थी और दूसरी ओर इन्होंने समझ लिया था कि पारिवारिक बेकग्राउण्ड के बिना भविष्य की राजनीति में कोई स्थान होना कठिन है। ये सिद्धांतों से समझौता करके तो राजनीति नहीं कर सकते थे यह इनके स्वभाव में भी नहीं है। चापलूसी भी हमारी राजनैतिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग रहा है जो ये कर ही नहीं सकते थे।

मैं तो यहाँ यह कहना चाहता हूँ कि सुरेन्द्र ने आज से ठीक 6 दशक पहले जब राजनीति के बारे में यह कहा था कि ‘भविष्य में यदि भारत की प्रजातांत्रिक व्यवस्था पारिवारिक, सामंती पृष्ठभूमि, जातिवादी व्यवस्था और चापलूसी में चलेगी तो लोकतंत्र असफल माना जावेगा’ और इसलिए सुरेन्द्र ने तो सक्रिय राजनीति में भाग लेने से 1958 में ही तौबा कर लिया था। आज मुझे लग रहा है कि सुरेन्द्र का निर्णय सही था। छह दशक के बाद आज भी पुराने ग्वालियर रियासती क्षेत्र में केवल सिंधिया परिवार का वर्चस्व है। भारतीय राजनीति में केवल जवाहरलाल नेहरू-इंदिरा गाँधी के परिवार की कांग्रेस ही नहीं अपितु विरोधी दलों में भी जातिवादी एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि पूरी तरह हावी है। मैं कभी नहीं भूलता जब लोग कहते थे कि विदिशा के क्षेत्र में तो बिना सिंधिया परिवार की अनुमति के कोई प्रवेश ही नहीं कर सकता और इस बात को भी झुठलाया भी नहीं जा सकता क्योंकि सारी राजनीति को मैं भी अच्छी तरह समझ गया हूँ। राजमाता या उनके पुत्र माधवराव सिंधिया ने जिसको चाहा वही विदिशा से संसद में जा सका। अरे, इस बात में कोई झूठ है कि श्री रामसहाय पांडे, श्री रामनाथ गोयनका, श्री शर्मा (वैद्य) जो बम्बई से सीधे चुनाव लड़ने आये थे तथा विदिशा के राघवजी भी राजमाता के आशीर्वाद से ही संसद में जा सके। भाई श्री प्रताप भानू शर्मा पर श्री माधवराव सिंधिया का पूरा बरदहस्त रहा। क्या आज भी जो कुछ राजनीति विदिशा क्षेत्र की दिखाई देती है क्या, कभी उसमें राजमाता सिंधिया या सिंधिया परिवार का आशीर्वाद एवं मूक समर्थन नहीं रहा था। जो लोग अन्यथा सोचते हैं वे विदिशा और ग्वालियर रियासत के क्षेत्रों की राजनीति को अंदरूनी ढंग से देख नहीं पा रहे हैं। राजमाता ने तो आचार्य कृपलानी, श्री रामनाथ गोयनका को आश्वस्त किया था कि पुरानी ग्वालियर रियासत क्षेत्र में तो वे स्वयं देख लेंगी। वाह रे, सुरेन्द्र तुमने तो पहले ही इसका अंदाजा लगा लिया था। राजमाता सिंधिया और उनके परिवार ने आर.एस.एस. एवं जनसंघ को और बाद में भारतीय जनता पार्टी को जो मदद की है क्या? इतिहास में उसे भुलाया जा सकता है। भाजपा के नेता तो इसे स्वीकार भी करते हैं। स्व. कुशाभाई ठाकरे ने तो अपने लेख में स्पष्ट स्वीकार किया था, कि राजमाता सिंधिया ने जनसंघ, भाजपा और उसके मूल संगठन को जो सहयोग और सहायता दी वह स्मरणीय रहेगा।

पं. नेहरू एवं इंदिरा गाँधी ने तो अपनी कांग्रेस का विकल्प स्वयं ही तैयार कर लिया था। वे अपने विरोधियों में पहले हिंदू महासभा और बाद में 1957 के बाद से अब तक केवल आरएसएस को ही अपना सबसे

**सह-सह यह अपमान जातियाँ, दहक उठी अब भीतर ही। होगा फिर विस्फोट भयंकर, पनप रहा जो भीतर ही।।**

बड़ा विरोधी और विकल्प कहती रही है। आज भी नेहरू-इंदिरा गाँधी कांग्रेस परिवार के लोग तो केवल आरएसएस को ही अपना सबसे बड़ा विरोधी और विकल्प बताने में नहीं चूकते। शायद यही इंदिरा कांग्रेस की सफलता का सबसे बड़ा राज रहा है। अन्यथा भारतीय राजनीति में कांग्रेस की परिवारवादी व्यवस्था की ताकत इतनी अधिक नहीं होती। राजमाता ने तो (सुरेन्द्र के जन्मस्थान मुंगावली में) एक चौंकाने वाला जातिवादी रूप भी स्वयं देखा था जहाँ 1957 में संसद में कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में उनको भारी बहुमत मिला, वहीं विधानसभा के लिए साथ हो रहे चुनाव में अन्य दल के उम्मीदवार को जाति के आधार पर सफलता मिली तब 1958 में सुरेन्द्र का यह सोचना कि भविष्य में सामंतवादी, परिवारवादी एवं जातिवादी राजनीति में उनका रहना संभव नहीं है, ठीक ही था।

सुरेन्द्र ने अच्छा ही किया जो सक्रिय राजनीति से अपने आपको दूर कर लिया, किंतु यह आज भी सत्य है कि राजनीति का कीड़ा इस 75 वर्ष की आयु में भी उनके दिमाग को काटता रहता है। ये घंटों राजनीति पर बात कर सकते हैं और करते भी हैं। हाँ, केवल चुनाव की राजनीति एवं दलगत से बिल्कुल अलग है। अब एक दूसरी बात जो इनके मित्रों ने बताई और मैंने सुनी उस तथ्य का उल्लेख करना जरूरी है। 1958 में राजनीति से तो यह ऊबे हुए थे, किंतु विनोबा भावे के रचनात्मक आंदोलनों में इन्होंने रुचि लेना प्रारंभ किया था। मुझे एक घटना बताई जाती है कि 11 सितम्बर 1958 (विनोबा जयंती) को इन्होंने भूदान आंदोलन के लिए जीवनदान देने का प्रयास करना चाहा था। तब बताया जाता है कि वरिष्ठ श्रमिक नेता और गाँधीवादी कार्यकर्ता श्री बाबू भैया ने इनका हाथ पकड़कर इनको समझाया और कहा कि तुम केवल भावी पीढ़ी के लिए काम करने की घोषणा कर दो। सुरेन्द्र ने वही किया और घोषणा कर दी कि भविष्य में 'मैं भावी पीढ़ी और बच्चों की शिक्षा के लिए काम करूँगा।' इसके साथ ही इन्होंने एक दूसरी घोषणा भी की कि 'विनोबा भावे के जय-जगत के उद्घोष के लिए भी मैं काम करूँगा।' 'जय-जगत' के बारे में आज भी सोचना अत्यंत भ्रांतिपूर्ण है। किंतु एक घनिष्ठ साथी होने के नाते सुरेन्द्र मुझे 'जय-जगत' के बारे में जो कुछ भी बताते हैं, सुनाते हैं, उससे मैं आश्वस्त हूँ कि सचमुच सुरेन्द्र किसी बड़ी भावी योजना पर कार्य कर रहे हैं, जिस पर अभी विस्तार से इसने किसी को कुछ नहीं बताया है। पता नहीं जय जगत के बारे में इसके मन में क्या कल्पना और योजनाएँ हैं। हाँ, मैं तो इतना जानता हूँ कि उसने भावी पीढ़ी विशेष रूप से स्कूली बच्चों के लिए अपने जीवन के 55 वर्ष पूरी तरह खपा दिये हैं और बहुत सारे लोग इस पर विस्तार से प्रकाश डालेंगे। मैं तो इतना जानता हूँ कि आज भी ये स्कूल शिक्षा पत्रिका के प्रकाशक और संपादक हैं और सुबह से शाम तक सैकड़ों लोगों का सहयोग लेकर भावी पीढ़ी के बारे में गंभीरता से सोच रहे हैं। यह क्रियाशील रहकर उनके लिए कुछ कर भी रहे हैं।

आज का मीडिया तो केवल सिनेमा, क्रिकेट, कार्ड्स इत्यादि पर निर्भर है, यह तो राजनेताओं को डराने के काम में लगा हुआ है किंतु उसके पात्र, कहॉनिया एवं समाचार क्षणभंगुर हैं। हम जानते हैं कि रचनात्मकता ही स्थाई होती है इसलिए सुरेन्द्र का रचनात्मक कार्यों में लग जाना ही भावी पीढ़ी को कुछ दे पायेगा। इनकी रचनात्मकता एवं भावी दुनियां के बारे में इनकी सोच को इतिहास में तो स्थान प्राप्त होगा ही।

मैं अपने इस अभिन्न मित्र के लिए यही कामना कर सकता हूँ कि हम लंबे दिनों तक इसी प्रकार साथी बने रहे।

वीरेन्द्र जैन (स्वामी जी)

एचआईजी-89, इंद्रा कालोनी, नीमताल विदिशा

बदल गए सब मानदण्ड अब, तुलसी-गांधी गौण हुए। सर्रेआम बिक गया मीडिया, सिद्धांत स्वयं में द्रोण हुये॥

## भाई स्व. श्री श्रीकृष्ण प्रेमी के प्रिय सुरेन्द्रनाथ दुबे

– पंडित शिवनारायण शर्मा



श्री श्रीकृष्ण प्रेमी

हमारा पहला परिचय श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे से अगस्त 1954 में भेलसा (अब विदिशा) में हुआ था। भाई श्री श्रीकृष्ण प्रेमी ने भोपाल की तरह भेलसा में भी विद्यार्थी कांग्रेस का गठन किया था और जैन कॉलेज भेलसा की यूनियन की अध्यक्ष कुमारी पुष्पा टण्डन और सचिव सुरेन्द्रनाथ दुबे को विद्यार्थी कांग्रेस में भी अध्यक्ष और महामंत्री बनाया था। अगस्त 1954 के अंतिम माह में पूर्वोत्तर भारत और उड़ीसा में भयानक बाढ़ आई थी। बाढ़ पीड़ितों की सहायताार्थ भी प्रेमी जी ने भोपाल और भेलसा में धनसंग्रह के प्रयास किये। भोपाल में तो एक वेरायटी शो का आयोजन किया गया था। उसी टीम को उन्होंने भेलसा भी भेजा तथा मुझे और मेरे साथी स्व. गंगाप्रसाद गुप्ता को इस वेरायटी शो करने वाली टीम के साथ भेजा था। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि प्रेमी जी ने भेलसा में धन इकट्ठा करने के लिए वेरायटी शो के टिकट बेचने और शो आयोजित करने का काम कुमारी पुष्पा टण्डन और सुरेन्द्रनाथ दुबे को दिया था। सुरेन्द्रनाथ दुबे के प्रयासों एवं सेवा भावना को मैंने तब देखा और उनके प्रयासों से बहुत सफलता मिली थी। प्रयास बाढ़ पीड़ितों के लिए मददगार साबित हुआ।

सुरेन्द्रनाथ दुबे से मेरी दूसरी बार भेंट भाई श्री श्रीकृष्ण प्रेमी के शुभ विवाह (1954) में बड़े बाग (भोपाल टाकीज के पास) स्वागत समारोह में हुई। ये और कु. पुष्पा टण्डन खास तौर से शादी में शामिल होने भेलसा से भोपाल आये थे। इस समारोह में भोपाल के पूर्व नवाब हमीदुल्ला खाँ एवं तत्कालीन भोपाल रियासत के मुख्यमंत्री डॉ. शंकर दयाल शर्मा, श्री उमराव सिंह जी, मौलाना तरजी मशरिकी, बाबू कामता प्रसाद एवं इन सबके अग्रज गुरु श्री रामचरण राय एवं भोपाल के सैकड़ों गणमान्य लोग आये थे। उनका स्वागत करने का दायित्व तो परिवार के बड़े भैया सेठ लक्ष्मीनारायण एवं गणेश भैया ने संभाल रखा था। प्रेमीजी जो उस समय दूल्हा थे, ने चुपचाप मुझे बुलाकर भेलसा से आयी पुष्पा टंडन एवं सुरेंद्र का स्वागत करने को कहा था। उसके बाद अगले साल ही सुरेंद्र नाथ दुबे ने हमीदिया कॉलेज के (विज्ञान विभाग) में इंटर मीडिएट में एडमिशन ले लिया था। श्री श्रीकृष्ण प्रेमी जी ने भोपाल में संगठक होने की प्रतिष्ठा प्राप्त की थी, तब वे स्वयं सेवादल, नेहरू फ्रंट एवं विद्यार्थी कांग्रेस के सर्वेसर्वा थे। उन्होंने विद्यार्थी कांग्रेस में श्री दीपचंद जैन को अध्यक्ष, (जो बाद में आयईएस) होकर भोपाल एवं विदिशा के ख्याति प्राप्त कलेक्टर रहे, श्री अजीज कुरैशी (जो अब उत्तराखंड के महामहिम राज्यपाल हैं) एवं सुरेंद्र नाथ दुबे को महामंत्री बनाया था, दुबेजी तो भेलसा में भी महामंत्री थे। प्रेमीजी ने चंद्रमोहन बजाज को संयुक्त मंत्री बनाया था। विद्यार्थी कांग्रेस का कार्यालय श्री चंद्रमोहन बजाज के सराफा चौक में ऊपर की मंजिल के बैठक कक्ष में था। हाँ, श्री नरेंद्र मित्तल (जो बाद में मौलाना आजाद कॉलेज (एमएसीटी) भोपाल में डायरेक्टर के पद से सेवानिवृत्त हुये) विद्यार्थी कांग्रेस के उपाध्यक्ष एवं श्री अंबिका तिवारी सलाहकार एवं संयोजक थे। (तिवारी जी बाद में मध्यप्रदेश शिक्षक कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष बने)।

सुरेंद्रनाथ दुबे भेलसा से आये थे, इसलिये प्रेमी जी ने इन्हें पूरी तरह राजनीति में भी दीक्षित किया। प्रेमी जी ने इनकी सबसे पहली मुलाकात श्री बाबूलाल थनवार (वाल्मिकी समाज) से एक एमएलए के घर करायी। थनवार साहब ने सन् 1955 में अपने हाथों से दुबे जी को गुलाब-जामुन खिलाए थे। अगस्त 1955 में ही भाई श्री अजीज कुरैशी ने शाहजहाँनाबाद में अपने मामू के घर पर दुबे जी के प्रथम भोपाल आगमन पर

धार्मिक संस्थाएं बेहक हैं बड़ी-बड़ी इस भारत में। जिनके तले पनपती नित ही वे कुरीतियां भारत में॥

सबको खाना खिलाया था, इसमें प्रेमी जी एवं विद्यार्थी कांग्रेस के अन्य लोग भी शामिल थे। इस तरह भोपाल आये (मुंगावली वाले) इन पंडित जी को प्रेमी जी ने भोपाली संस्कारों में दीक्षित और परिचित कराया।

कॉलेज की यूनियन में श्री नरेंद्र मित्तल साइंस फेकल्टी की ओर से प्रतिनिधि थे तथा श्री दीपचंद जी कॉमर्स फेकल्टी की ओर से प्रतिनिधि थे। श्री नरेंद्र मित्तल को अन्य विद्यार्थियों के संगठनों से समझौते के कारण कॉलेज यूनियन के अध्यक्ष बनने का अवसर मिला। उस समय कॉलेज यूनियन का अध्यक्ष का पद स्पीकर की तरह होता था।

सुरेंद्र और नरेंद्र मित्तल साइंस फेकल्टी में एक साथ थे। सुरेंद्र के बड़े भाई श्री महेंद्रनाथ जो कॉलेज में पहले से ही पढ़ते थे वे एक बार अंग्रेजी साहित्य परिषद् के अध्यक्ष बने और उनके साथ भाई श्री जितेन्द्र सक्सेना सचिव थे तथा दूसरी बार महेंद्र दुबे हिंदी साहित्य परिषद् के अध्यक्ष बने और इनके सचिव श्री मदनमोहन जोशी थे। उसी समय मिंटो हॉल में हिंदी और अंग्रेजी साहित्य परिषद् की ओर से श्री पृथ्वीराज कपूर को बुलाया गया था।

सुरेन्द्रनाथ दुबे ने जुलाई 1956 में बीएससी पार्ट वन में एडमिशन लिया और बाद में इन्होंने बीए प्रीवियस में एडमिशन लिया था। उस समय मध्यप्रदेश बनने तथा भोपाल को राजधानी बनाया गया था। भोपाल में मेडिकल कॉलेज भी खुल गया था। उस समय यह निर्णय हुआ था कि जिनके 45 प्रतिशत से अधिक अंक (यानी सेकंड डिवीजन) थे उन्हें मेडिकल कॉलेज में एडमिशन मिलेगा इसी वजह से सुरेन्द्र के बहुत सारे साथियों का मेडिकल में एडमिशन हो गया। विडंबना देखिये, सुरेन्द्र के इंटरमीडिएट में 48 प्रतिशत अंक थे। किंतु इन्हें कोई डिवीजन इसलिये नहीं मिली क्योंकि इन्हें फिजिक्स में 100 में से केवल 27 अंक प्राप्त हुए और इन्हें पूरक परीक्षा में बैठना पड़ा और इनको सप्लीमेंट्री डिवीजन दिया गया। उस समय सुरेंद्र जी ने स्थिति बताई कि उन्हें तो 45 प्रतिशत से भी अधिक अंक हैं। लेकिन उन्हें मेडिकल कॉलेज में प्रवेश नहीं मिल रहा है, तब स्वास्थ्य मंत्री ने कहा था कि हमने प्रतिशत नहीं सेकंड डिवीजन के लोगों को मेडिकल में प्रवेश दिया है। इसलिए सुरेंद्र बहुत दुखी हुए। इन्होंने बीएससी पार्ट वन में विज्ञान छोड़कर आर्ट्स विषयों में पढ़ना मंजूर किया। यहाँ एक तथ्य और उल्लेखनीय है जो लोग मेडिकल में नहीं जा सके, वे बीएससी पार्ट वन में ही रहे। मजेदार तथ्य यह है कि बीएससी पार्ट वन में सुरेन्द्रनाथ दुबे के जो कई साथी थे उनमें कु. नजमा यूसुफ जो बाद में डॉ. नजमा हेपतुल्ला नाम से प्रतिष्ठित हुईं एवं श्री संतोष श्रीवास्तव जिन्होंने पीएचडी की वे कुछ दिन के लिए वे सागर विश्वविद्यालय के बाइस चांसलर बने।

जब सुरेन्द्रनाथ बीए प्रीवियस में पढ़ते थे, तब इनके साथ श्री गिरीश सक्सेना, श्री आरिफ कुरैशी श्री खालिद कुरैशी, श्री बाबूलाल गौर, श्री अजीज कुरैशी एवं श्री सत्यनारायण अग्रवाल सहपाठी थे। बीए फाइनल में भी ये सभी सहपाठी रहे।

भाई सुरेन्द्र की एक विशेषता का उल्लेख करना चाहूँगा कि कॉलेज में वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में, तात्कालिक भाषण प्रतियोगिताओं में हमेशा ही प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते थे और जब ये शिक्षक बने, तब भी राष्ट्रीय स्तर के सेमीनारों में भी यह शीर्ष पर ही छाये रहे। मुझे अच्छी तरह याद है कि एक बार सेफिया कॉलेज के विद्यार्थी जावेद एवं सुरेंद्र को एक तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता में बोलने का अवसर मिला। उस समय यह नियम था कि तात्कालिक भाषण के विषय आधे घंटे पहले सभी प्रतिभागियों को दे दिये जाते थे और वे आपस में

**जाति-धर्म अब केवल साधन मात्र वोट पा जाने का। जाति संगठन, धर्म आचरण उपक्रम ढोल बजाने का।।**



उन्हें बदल भी सकते थे। एक तात्कालिक प्रतियोगिता में सुरेंद्र को जो परची मिली, उसमें विषय था 'कबाब में हड्डी' एवं जावेद को विषय मिला 'द्रविड़'। जावेद घबराया और उसने दुबे जी से कहा कि आपका विषय 'कबाब में हड्डी' मुझे दे दो और आप मेरा 'द्रविड़' विषय ले लो। सुरेन्द्र तो चाहते ही यही थे इन्होंने समझ लिया था कि द्रविड़ विषय क्यों दिया गया। इन्होंने अपने भाषण में द्रविड़ जाति के साथ श्री बी.बी. द्रविड़ जो मध्यप्रदेश के बड़े गाँधीवादी अत्यंत प्रतिष्ठित श्रम मंत्री थे, उनके बारे में भी विस्तार से कहा। मनोरंजक तथ्य यह है कि कॉलेज में द्रविड़ जी मुख्य अतिथि के रूप में आने वाले थे और सुरेंद्र ने यह बात समझ ली थी। चूंकि इनकी पृष्ठभूमि राजनीतिक तो थी ही इन्हें प्रथम और जावेद को द्वितीय पुरस्कार मिला।

एक बार अग्रवाल धर्मशाला, भोपाल में सारे स्थानीय कॉलेजों की वाद-विवाद प्रतियोगिता थी, तब मेरे सामने जावेद ने दुबे जी से कहा था कि भाईजान आपके रहते मैं कभी प्रथम स्थान प्राप्त करूँगा कि नहीं, तब दुबे जी ने कहा था कि आगे आने वाली प्रतियोगिताओं में तुम जरूर प्रथम आओगे।

मुझे भी मालूम था कि सुरेंद्र शीघ्र ही निमाड़ (मध्य भारत) के गाँधीवादी प्रयोग के स्कूल, ठिपगाँव में हेडमास्टर बनाकर भेजे जा रहे हैं और इस तरह इन्हें भोपाल में तो रहना ही नहीं था। इसी क्रम में मैं यह भी बताना चाहूँगा कि जब प्रेमी जी ने डॉ. शंकरदयाल शर्मा से दुबे जी को भोपाल में ही पदस्थ रखने को कहा तो डॉ. साहब ने प्रेमी जी से एक बात ही कही थी कि 'अभी सुरेन्द्र को कुछ दिन तो वहाँ रहकर गाँधीवादी शिक्षाविधि में प्रयोग कराने दो।' एक साल बाद में प्रेमी जी के अत्यंत आग्रह के बाद डॉ. शंकर दयाल शर्मा ने (जो उस समय मध्यप्रदेश के शिक्षा मंत्री भी थे) ने दुबेजी का भोपाल ट्रांसफर किया और प्रेमी जी से कहा कि लो अब तुम्हारे दुबे जी को भोपाल ही ला रहा हूँ। ठिपगाँव (खरगौन) में इन्हें बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला। यहां उल्लेखनीय है कि प्रेमीजी, इनके बड़े भाई एवं सारे परिवार के तो डॉ. शंकरदयाल शर्मा जी से पारिवारिक संबंध थे।

मैं आज याद कर रहा हूँ, इनके एक घनिष्ठ मित्र स्व. श्री वीरेन्द्र मिश्रा को जो भाई अजीज कुरैशी (वर्तमान में उत्तराखंड के राज्यपाल) के सबसे बड़े सहयोगी एवं शुभचिंतक थे और श्री अजीज भाई की सफलता में उनका योगदान कम नहीं आंका जा सकता है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि सुरेंद्र और वीरेन्द्र मिश्रा पड़ौसी होने के साथ-साथ अन्य कारणों से चार दशकों तक अत्यंत घनिष्ठ मित्र रहे हैं। मेरे दो घनिष्ठ मित्र श्री कन्हैयालाल साहू एवं सुरेंद्रनाथ दुबे ने मेरी तरह ही अपनी निजी परिस्थितियों के कारण शिक्षकीय भूमिका चुनी। सुरेन्द्र के बारे में एक बात और उल्लेखनीय है कि भाई रतनकुमार जी (भोपाल के प्रतिष्ठित स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं साहित्यकार) ने सुरेंद्र को दिगम्बर जैन स्कूल, भोपाल में आग्रह करके शिक्षक बनाया था। केएल साहू के शासकीय शिक्षक बनने के बाद सुरेन्द्र ने भी इसके बारे में थोड़ा सोचा था। प्रेमी जी से कहा आपके सुरेन्द्र दुबे ने अपने एक भाषण में राजनीति में परिवारवाद सामंतवाद एवं जातिवाद की आलोचना की है, एवं वर्तमान परिस्थितियों में उचित नहीं है, दुबे जी ने प्रेमी जी से कहा कि आजकल युवा नेताओं की व्यर्थ की शिकायतें भी हो रही हैं और मैं इस प्रकार की अनुचित शिकायतें सुनना नहीं चाहता। मैं राजनीति में रहा तो आरोप लगेंगे ही। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि सुरेंद्र उस समय मध्यप्रदेश के युवा प्रभारी श्री रामेश्वर अग्रवाल के साथ मध्य भारत क्षेत्र के लिए भी उपसंयोजक थे। चूंकि ये जीवन भर सिद्धांत प्रिय रहे हैं और इनकी आर्थिक परिस्थितियाँ भी ऐसी नहीं थी कि यह राजनीति करते फिरे और इस तरह इन्होंने युवा

आज मीडिया कुछ भी उछाले नेता उससे सभी डरे। सिखा रहा वह जब दुनियां को, क्यों दुनियां इनकार करें।।

## जय जगत

राजनीति से सन्यास लेने का मन बना लिया था। हालाँकि एक घटना इनके साथ दूसरी भी थी कि 11 सितम्बर 1958 को विनोबा जयंती के अवसर पर इन्होंने भावावेश में भूदान आंदोलन के लिए जीवन दान देना चाहा, तब श्री रामचरण राय के छोटे भाई बाबू भैया जो बड़े गाँधीवादी और श्रमिक नेता थे, ने सुरेंद्र का हाथ पकड़कर कहा कि अभी तुम्हें जीवन दान देने की जरूरत नहीं है। हाँ, विनोबा जी चाहते हैं कि अच्छे नौजवान भावी पीढ़ी का जीवन बनाने के लिए कार्य करें। विशेष रूप से शिक्षा का कार्य करें। चूँकि विनोबा जी ने जयहिंद की जगह 'जय-जगत' के नारे की घोषणा भी की थी। इसीलिए सुरेंद्र ने 'भावी पीढ़ी' और 'जय-जगत' के लिए कार्य करने की प्रतिज्ञा, चौक की आमसभा में की थी। इसीलिए भी सुरेन्द्र ने शिक्षक बनने का निर्णय किया। इसमें सक्रिय सहयोग स्व. श्री शफीक भाई एवं स्व. श्री श्रीकृष्ण प्रेमी एवं रतन कुमार जी का भी रहा था।



भाई रतनकुमार जी

श्री अजीज कुरैशी एवं अपने छोटे भाई सत्यनारायण अग्रवाल को राजनीति में लाने का श्रेय भी प्रेमीजी को ही है। मुझे प्रसन्नता है कि मेरा यह दोस्त आज भी अत्यंत सैद्धांतिक और ऐकैडमिक क्षेत्रों में अपनी श्रेष्ठता लिये हुए है और शायद इसी कारण श्री अर्जुन सिंह ने अपने पहले कार्यकाल में इन्हें मानव संसाधन मंत्रालय, दिल्ली में शिक्षक कल्याण के कार्यों के लिए सलाहकार बनाया था। हम सभी लोग और पूरा देश श्री एसएन सुब्बाराव को मानते हैं। दुबे जी दिसम्बर 1954 से ही सुब्बाराव जी के घनिष्ठ संपर्क में आ गये थे। दुबे जी ने उनपर किताबें लिखकर और डाक्यूमेंट्री बनाकर श्रेष्ठ कार्य किया है। दुबे जी ने चौक बाजार, भोपाल में 11 सितम्बर 1958 में घोषणा की थी कि वे विनोबा भावे के आदर्शों पर चलकर भावी पीढ़ी और 'जय-जगत' के लिए कार्य करेंगे। इस कार्य में वे आज भी लगे हुए हैं। रचनात्मक कार्यों में इनकी भूमिका ऐतिहासिक है, स्व. श्री श्रीकृष्ण प्रेमी जी की आत्मा की शांति के लिये यह कहना पर्याप्त होगा कि दुबे जी ने रचनात्मक मार्ग पर चलकर सबके लिए सच्ची श्रद्धा अर्पित की है। मैं अपने इस मित्र के स्वस्थ जीवन की कामना करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि लंबा साथ व मित्रता इसी प्रकार बनी रहे।



खड़े हुए - श्री अजीज कुरैशी एवं श्री सत्यनारायण अग्रवाल  
बैठे हुए- श्री सुरेन्द्र नाथ दुबे, श्री शिवनारायण शर्मा एवं श्री कन्हैया लाल साहू

अध्यक्ष,  
राजीव गाँधी शिक्षा समिति एवं स्कूल  
पत्रकार कॉलोनी, भोपाल

11 नवम्बर, 1958 को विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में बी. ए. की उपाधि प्राप्त करने के बाद - पाँच सहपाठी (घनिष्ठ मित्र)।

यहां उल्लेखनीय है कि भारत के प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू, विश्वविद्यालय के पहले उपाधि वितरण समारोह के मुख्य अतिथि थे।

निज उत्पाद बेचने तक में, बच्चे ही उसके मजदूर। विज्ञापन का जरिया बनने, नॉनिहाल होते मजबूर॥

## मेरे सहपाठी सुरेन्द्रनाथ दुबे.....

— कन्हैयालाल साहू

यद्यपि सुरेन्द्रनाथ दुबे ने जुलाई 1955 में ही हमीदिया कॉलेज भोपाल (मिंटो हॉल) में इंटरमीडिएट फाइनल में प्रवेश ले लिया था उस समय ये साइंस (बायोलोजी सेक्शन) में थे और मैं आर्ट्स में था। केवल एक पीरियड अंग्रेजी की एक क्लास में हम एक साथ पढ़ते थे। परंतु इनसे दोस्ती तो श्रीकृष्ण प्रेमीजी के माध्यम से हो ही गई थी इसलिए कैंटीन में भी हम साथ मिला करते थे। अब सहपाठी होने की बात करूंगा। इंटरमीडिएट पास करने के बाद इन्होंने बीएससी पार्ट वन में एडमिशन तो लिया था किंतु सितम्बर 1956 में ही इन्होंने आर्ट्स ले लिया और हम एकसाथ हो गए। भोपाल राजधानी बनने के कारण हमें मई 1956 में ही मिंटो हॉल से हटा दिया गया था और पॉलिटेक्निक के सामने बनी नई कॉलेज बिल्डिंग में हमीदिया कॉलेज के आर्ट्स और कॉमर्स सेक्शन आ गये थे और लगभग तीन दशक तक तो हमीदिया कॉलेज उसी बिल्डिंग में रहा। मैं और सुरेंद्र ही नहीं, हमारे साथ पढ़ने वालों में मुख्य रूप से सर्वश्री सत्यनारायण अग्रवाल, आरिफ कुरैशी, खालिद कुरैशी, अजीज कुरैशी, बाबूलाल गौर गिरीश सक्सेना इत्यादि कई साथी थे। कई लड़कियाँ भी हमारे साथ पढ़ती थीं किंतु यहाँ केवल मैं एक लड़की परवीन कौसर का उल्लेख करना चाहूँगा क्योंकि दुबेजी उसे अपनी बहन मानते थे। मैं यहाँ स्पष्ट कहना चाहता हूँ कि सुरेंद्रनाथ दुबे और आरिफ कुरैशी एक अलग प्रकार के छात्र थे और इनकी गहरी दोस्ती थी। जब परवीन का विवाह आरिफ से हुआ तो आरिफ कुरैशी इनके दूल्हा भाई (बहनोई) बन गये। हमारे साथ एक लड़की कु. जान वार्कले भी थी—उसकी माँ डॉ. वार्कले जो भोपाल की प्रतिष्ठित महिला चिकित्सक भी थीं, वे सुरेन्द्र को पुत्रवत् स्नेह करती थी और इसीलिए सुरेन्द्र कु. जॉन वार्कले को भी अपनी बहन के रूप में मानते थे।

बीए पार्ट वन 1956—57 की कुछ मनोरंजक घटनाओं का उल्लेख करना मैं उचित समझता हूँ। इकोनॉमिक्स की क्लास में सुरेन्द्रनाथ बिल्कुल पीछे की बेंच पर बैठते थे और अपने एक सहपाठी जो कपड़ा मिल से काम पूरा करके देर से आ पाते थे, तब हमारे मित्र अजीज कुरैशी जोर से चिल्लाकर कहते दुबे की बेंच पर कोई मत बैठना, बाबू आ रहा है और ये उसी का इंतजार करते रहते थे। सचमुच में श्री बाबूलाल गौर, गोयल साहब की क्लास में पीछे सुरेंद्रनाथ दुबे के साथ ही बैठा करते थे। सत्यनारायण अग्रवाल और मैं तो एक ही बेंच पर एक साथ बैठते थे।

यहाँ मैं कक्षा में सहभागिता का उल्लेख करना चाहूँगा। श्री पीएन माथुर राजनीति शास्त्र के प्रोफेसर थे और उनकी क्लास अत्यंत प्रतिष्ठित हुआ करती थी, किंतु प्रोफेसर माथुर जैसे अत्यंत मेधावी और प्रतिष्ठित अध्यापक के साथ यदि कोई दो लोग अत्यंत सक्रिय सहभागिता करते थे खूब बहस करते थे, वो थे सुरेन्द्रनाथ दुबे और आरिफ कुरैशी। दोनों का वास्तव में राजनीति विज्ञान में ही नहीं अर्थशास्त्र में भी सहभागिता और सक्रियता का मुझे आज भी स्मरण है। आरिफ कुरैशी तो बाद में एमएसीटी में मानविकी विभाग के प्राध्यापक भी रहे। एक बार सुरेन्द्रनाथ के सुपुत्र अरविंद को एमएसीटी में सिविल ब्रांच में प्रवेश मिला था, किंतु आरिफ कुरैशी ने विषय बदलवा कर गवर्नमेंट इंजीनियरिंग कॉलेज में कंप्यूटर साइंस ब्रांच में ही प्रवेश लेने के लिए कहा, जो आसानी से मिल रहा था। इसका श्रेय दुबेजी हमेशा दूल्हा भाई आरिफ कुरैशी को देते हैं। मैं तो एक सहपाठी के रूप में ही उल्लेख करना उचित समझता हूँ।

बीए फाइनल में भी हम सभी उपरोक्त वर्णित मित्र एक साथ पढ़ते थे और फाइनल में भी बैकवेंचर दुबेजी, बाबूलाल गौर के लिए ही अपनी बेंच रिजर्व रखते थे। विद्यार्थी राजनीति में तो अजीज कुरैशी और

आपचारिक से भी बढ़कर वह, अनौपचारिक हैं शिक्षक। भुला दिए दायित्व स्वयं के, बन बैठे वे सब शिक्षक।।

सुरेंद्रनाथ सर्वाधिक सक्रिय थे। हालाँकि इतिहास और राजनीति विज्ञान समिति का अध्यक्ष चुने जाने का गौरव मुझे प्राप्त हुआ। यहाँ मैं कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण प्रसंगों का वर्णन करना चाहूँगा। जिसके साथ-साथ सुरेंद्रनाथ की एक विशेषता का उल्लेख बहुत जरूरी है। इंटरफाइनल, बीए प्रीवियस और फाइनल तथा एमए प्रीवियस और फाइनल के पाँच वर्षों में सुरेंद्रनाथ दुबे ने भाषण प्रतियोगिताओं, वाद-विवाद प्रतियोगिताओं एवं तात्कालिक भाषण प्रतियोगिताओं में हमेशा भाग लिया और यह उनके जीवन के इतिहास का उल्लेखनीय तथ्य है कि सुरेंद्र ने इन प्रतियोगिताओं में शायद ही कभी दूसरा स्थान प्राप्त किया हो, ये हमेशा प्रथम आने के लिए ही बोला करते थे और इसी कारण यह हमारे प्रिंसिपल पी.सी. मल्हौत्रा एवं अन्य अध्यापकों के प्रिय भी रहे। एक बार श्री ईसा सिद्दकी कॉलेज यूनिजन के अध्यक्ष थे और उन्होंने डिबेट्स का विषय रखा था “भारत की समस्याओं का हल कम्युनिज्म से ही हो सकता है।” सुरेंद्रनाथ ने विषय के विपक्ष में भाषण दिया और प्रथम स्थान प्राप्त किया। किंतु पुरस्कार में इन्हें चार सैल की एक लंबी, लाल टॉच दी गई। मैंने बहुत ध्यान से सुना इनके बड़े भाई की तरह रहे ईसा सिद्दकी ने कहा ‘सुरेंद्र तुम कभी लाल रोशनी में भी देखना शुरू करो।’

एक और घटना है जब मैंने इतिहास और राजनीति विज्ञान समिति के अध्यक्ष के रूप में वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन करवाया तो सुरेंद्रनाथ ने उसमें भी प्रथम स्थान प्राप्त किया। इन्होंने धीरे से मुझसे कहा कि मित्र मुझे ट्वेंटियथ सेंच्युरी डिक्शनरी की बहुत जरूरत है और मैंने इनकी बात मानकर एक बहुत मोटी डिक्शनरी इनको पुरस्कार में दिलाई जो आज भी इनके पास है और उसमें एक ओर प्रिंसिपल पी.सी. मल्हौत्रा के हस्ताक्षर हैं और दूसरी ओर मेरे हस्ताक्षर हैं। जब मैं उनसे मिलता हूँ तो मुझे दिखाते भी हैं जिसमें मेरे हस्ताक्षर हैं। एक बार एक वाद-विवाद की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में एक बहुत बड़ा कप दिया गया वो भी आज भी सुरक्षित है। इसलिए प्रिंसिपल मल्हौत्रा ने निर्णय किया कि अब इसे अंतिम बार प्रथम वक्ता सुरेंद्रनाथ दुबे को दे ही दिया जाये। जब सुरेंद्रनाथ दुबे के हाथ में यह कप दिया जा रहा था तो भाई अजीज कुरैशी ने चिल्लाकर कहा था कि दुबे तो इस ट्रॉफी को उठा भी नहीं पायेगा क्या मैं मदद को आऊँ? इसी समय में सेफिया कॉलेज, भोपाल से एक विद्यार्थी जावेद आया करते थे और उसने भी दुबे भाई से पूछा था आप हमेशा ही प्रथम आते हैं, क्या मैं कभी पहला स्थान प्राप्त करूँगा?

हाँ, यहाँ मैं हम दोनों के शिक्षक बनने और उसके बाद के सफर की बात बताना चाहूँगा। हम दोनों की नियुक्ति शिक्षक के रूप में अक्टूबर 1958 में बहीदिया टेक्निकल स्कूल में हुई और हम दोनों ही सामाजिक विज्ञान के शिक्षक थे, चूँकि जुलाई 1958 में हम दोनों ने एम ए में प्रवेश लिया था और हमीदिया कॉलेज में एमए की कक्षाएं 10 बजे तक ही लगती थीं तथा लगभग सभी छात्र कहीं न कहीं नौकरी भी करते थे। हम लोगों का स्कूल 11 बजे लगता था, इसलिए हम आसानी से स्कूल की प्रार्थना शुरू होने से पहले स्कूल पहुँच जाया करते थे। हम क्लास टीचर भी थे, इसलिए हमारा समय पर पहुँचना जरूरी रहता था। यहाँ एक बात और उल्लेखनीय है हमारे हेड मास्टर श्री नजमी साहब बुजुर्ग थे और वे बचपन से लंबे समय तक तत्कालीन शिक्षा मंत्री डॉ. शंकरदयाल शर्मा के सहपाठी भी रहे थे। इसीलिए बहुत चटकारे लेकर डॉ. शर्मा की बातें सुनाया करते थे। डॉ. शंकरदयाल शर्मा को भी यह बात मालूम थी कि श्री नजमी साहब एक स्कूल के हेडमास्टर हैं। नजमी साहब वास्तव में सज्जन आदमी थे और सुबह से शाम तक स्कूल के कामों में जुटे रहते थे। दुबेजी और मेरे एम.ए. के विषय अलग-अलग थे। मैं एम.ए. प्रीवियस (इतिहास) का विद्यार्थी था तथा सुरेंद्रनाथ एम.ए. (अर्थशास्त्र) के विद्यार्थी थे। हमारे वरिष्ठ साथी श्री दीपचंद जैन भी एम.कॉम. कर चुके थे और नौकरी करते हुए वे भी सुरेंद्रनाथ के साथ एम.ए. अर्थशास्त्र के विद्यार्थी थे। यही दीपचंदजी बाद में आय.ए.एस. बन गये थे।

मीडिया बिका हुआ पूंजीपतियों हित, जनहित का दम भरता है। चरित्र हनन, सिनेमा, किरकिरी, अपराधों से पलता है॥



बाद में विदिशा व भोपाल के ख्यातिनाम कलेक्टर हुये। दीपचन्द जी ने विदिशा एवं भोपाल के कालेज में अध्ययन किया था। सुरेन्द्र को उन्होने सदैव छोटे भाई का स्नेह दिया ये भी संयोग था कि सुरेन्द्र के बहुत अच्छे मित्र आरिफ कुरैशी इनके साथ ही अर्थशास्त्र में थे और इनके बड़े भाई एमए इंग्लिश लिटरेचर के बाद इन्हीं के साथ एमए अर्थशास्त्र से कर रहे थे। यदि इनकी एमए की क्लास 2-4 मिनट लेट होती थी तो मैं इनका इंतजार करता था और यदि मेरी क्लास लेट होती तो यह मेरा इंतजार करते और हम इस तरह समय पर स्कूल पहुँच जाया करते थे। हम लोगों ने 1960 में एमए कर लिया था।

संयोग देखिए कि हम दोनों का चयन सरकार की ओर से ही बीएड करने के लिए हो गया था और जुलाई 1960 में हम लोग एक साथ बीएड करने के लिए पीजीवीटी कॉलेज भोपाल में प्रतिनियुक्त हुए। पूरे मध्यप्रदेश के विशेष रूप से भोपाल संभाग, इंदौर संभाग और उज्जैन के अनेक कार्यरत शिक्षक-शिक्षिकाएँ बीएड करने के लिए भोपाल कॉलेज में प्रतिनियुक्त हुए थे। इसी समय श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा भी अपने स्कूल से बीएड करने के लिए हमारे साथ थे। 1955 जुलाई में जब सुरेन्द्रनाथ भोपाल आए थे, तभी से ये लक्ष्मीनारायण शर्मा के निकट संपर्क में रहे थे इनकी आपस में खूब पटती भी थी। सुरेन्द्रनाथ दुबे भाषण देने में बहुत प्रवीण थे, इसलिए यह तत्कालीन प्राचार्य डॉ. गुलाब चौरसिया जी के निकट संपर्क में आ गये थे। हमारे यहाँ बीएड में चार सदन हुआ करते थे। मैं, सुरेन्द्रनाथ और लक्ष्मीनारायण संयोग से तिलक सदन में थे। हर सदन की अपनी एक वार्षिक पत्रिका निकलती थी। सुरेन्द्र दुबे तिलक सदन की पत्रिका के प्रधान संपादक और इनके साथ लक्ष्मीनारायण शर्मा एवं श्री शिवकुमार मिश्रा 'रज्जन' संपादक थे। हमारे साथ विदिशा के श्री चन्द्रभान शर्मा भी थे जिन्होंने प्रथम स्थान प्राप्त किया था। मैंने देखा कि लक्ष्मीनारायण जी सुरेन्द्र को बहुत स्नेह करते थे और सम्मान देते थे। ये दोनों पूर्वी भारत के शैक्षिक दूर पर भी गये थे, तब सुरेन्द्रनाथ ने बताया कि लक्ष्मीनारायण ने उनकी बहुत सेवा की ये वही लक्ष्मीनारायण शर्मा थे जो 2 साल तक शिक्षक रहे, फिर नौकरी छोड़ दी और वे बैरसिया से चुनाव लड़कर जनसंघ के एमएलए चुने गये थे। लक्ष्मीनारायण शर्मा 1968 में उपराजस्व मंत्री बने तथा बाद में 1977 में एवं 1990 में भाजपा मध्यप्रदेश मंत्रिमंडल के सबसे वरिष्ठ मंत्रियों में से एक रहे, उस समय श्री बाबूलाल गौर विधायक थे। सुरेन्द्रनाथ ने बताया कि लक्ष्मीनारायण शर्मा उनके निधन के दो माह पूर्व ही जब राज्यसभा सदस्य थे, उनके घर दिल्ली में अचानक ही मिलने आये और साढ़े तीन घंटे तक बैठे और बतियाते रहे।

एक और उल्लेखनीय तथ्य है कि 1 अगस्त 1960 को तिलक जयंती के अवसर पर डॉ. गुलाब चौरसिया के संपर्क में ये क्या आये कि 87 वर्ष की आयु में उनके निधन के दिन 3 अक्टूबर के एक दिन पहले 2 अक्टूबर 2009 तक ये उनके अत्यंत ही घनिष्ठ संपर्क में रहे। डॉ. चौरसिया एआईएफईए (AIFEA) के अध्यक्ष थे और सुरेन्द्रनाथ दुबे लंबे अरसे तक एआईएफईए के महामंत्री रहे। डॉ. गुलाब चौरसिया ने शिक्षा के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की। सुरेन्द्र का मानना है कि जीवन के अंतिम दिन तक डॉ. गुलाब चौरसिया का वरदहस्त इनके ऊपर रहा और ये अपने जीवन की अनेक शैक्षिक उपलब्धियों के लिए डॉ. चौरसिया के ऋणी हैं। कोठारी आयोग, चटोपाध्याय आयोग, राममूर्ति आयोग-चार वित्त आयोगों, शिक्षा को समवर्ती सूची में लाने, राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर सुरेन्द्र दुबे ने डॉ. चौरसिया के मार्ग दर्शन में काम किया।

मेरा सुरेन्द्रनाथ दुबे से 1955 के बाद से आज तिथि तक घनिष्ठ संबंध रहा है और इस बात को बहुत सारे लोग जानते हैं कि हम दोनों घनिष्ठ मित्र रहे हैं। चूँकि हम दोनों ही एक साथ शिक्षक बने और लगभग एक साथ ही सेवानिवृत्त हुए इसलिए भी अन्य दोस्तों के मुकाबले हमारे सहपाठी जीवन के संबंध बच्चों की शिक्षा के हित में भी सहपाठी जैसे ही रहे। वैसे सुरेन्द्र और मैं बीए, एमए तथा बीएड में सहपाठी तो रहे ही

शिक्षा की पूरी मर्यादा, बेच खाई विज्ञापन में। बच्चों के संस्कार बिगाड़े, उनके स्वर्णिम जीवन में।।

## जय जगत

जिससे हमारी बहुत सारी स्मृतियाँ जुड़ी हुई हैं। हम दोनों के लिए ही ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हमारा संबंध इसी प्रकार चलते हुए हम लोग स्वस्थ जीवन व्यतीत करते रहें। डॉ. शंकर दयाल जी शर्मा से हम लोगों के सम्बंध तो थे ही, वे अनेक बार भोपाल से सांसद चुने गए— सुरेन्द्र लगभग 30 वर्ष तक छह नम्बर स्टॉप पर रहें, डॉ. साहब का नया निवास भी बिल्कुल पास था। अप्रैल 1981 में इन्हें एन.सी.ई.आर.टी. में लगभग एक माह के लिये भेजा गया था, संयोग से डॉ. साहब और ये एक ही कम्पार्टमेंट में थे। तब डॉ. साहब सांसद एवं नेहरू मेमोरियल कमेटी के चेयरमैन थे उन्होंने दुबे जी को अपने तीन मूर्ति में ही अपने साथ आग्रह करके मेहमान बनाया था, वे दुबेजी की क्षमताओं से सदैव प्रभावित रहे।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि भाई सत्यनारायण अग्रवाल और भाई अजीज कुरैशी आज भी राजनीति में सक्रिय हैं। सत्यनारायण जी और कुरैशी जी दोनों ही मध्यप्रदेश में मंत्री रहे। श्री अजीज कुरैशी तो लोकसभा के सदस्य भी रहे और अब उत्तराखंड के राज्यपाल हैं, किंतु आज भी हम साहसपूर्वक यह कह सकते हैं कि हम लोगों के संबंध वैसे ही घनिष्ठ बने हुए हैं जैसे कि सहपाठी रहते हुए थे। हां श्री बाबूलाल गौर भी जो बी.ए. में हमारे सहपाठी थे आज मध्यप्रदेश सरकार में मंत्री है, किंतु अब उनसे हमारे संबंध एक पुराने सहपाठी के ही हैं। दुबेजी की सोच और रचनात्मक प्रवृत्ति सबके ऊपर है।

मैं तो यह कहना चाहूँगा कि सुरेंद्र ने सक्रिय राजनीति तथा पद और तथाकथित प्रतिष्ठा छोड़कर आज भी रचनात्मकता से अपने आप को जोड़कर सामाजिक व्यवस्था में तो पहला स्थान ही रखा है। आज की दुनिया में लोग राजनीति, नौकरी, पद या संपत्ति की ऊँचाइयों को चाहे जितना प्रतिष्ठित मान लें किंतु प्रतिभा के मामले में और रचनात्मकता के मामले में पीछे ही रहेंगे। रचनात्मक कार्यों का स्थान तो इतिहास में होता है।

सर्वोदय स्कूल शिक्षा समिति,  
घोड़ा नक्कास, जुमेराती, भोपाल



श्री सुरेन्द्र नाथ दुबे ने एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली में अपना प्रोजेक्ट आडियो विजुअल एजुकेशन पर प्रस्तुत किया था जिसके बारे में एन.सी.ई.आर.टी. के अपर निदेशक श्री चौधरी अपनी जिज्ञासा प्रगट करते हुए।

कार्य-पालिका न्यायपालिका, अरू विधायिका बेचारी। पर चौथा स्तम्भ मीडिया, उन पर भी सबसे भारी।।

## अपने प्यारे दोस्त सुरेन्द्रनाथ दुबे के बारे में

—मुहम्मद अनीस

मैं 1958–59 में हमीदिया कॉलेज तिलक हॉस्टल (जो छोटे तालाब के सामने था) में रहता था। मेरे पास के ऊपर के कमरे में सुरेन्द्र दुबे भी रहते थे। एक कमरे में दो-दो लोग रहते थे। सुरेन्द्र के कमरे में उनके साथ ही उनके बड़े भाई महेन्द्र नाथ दुबे भी रहते थे और वे भी हमीदिया कॉलेज में एमए में पढ़ते थे। महेन्द्र नाथ दुबे ने ललितपुर से हाईस्कूल परीक्षा पास की थी और चूँकि मैं भी ललितपुर का रहने वाला हूँ इसलिये मेरी इनके बड़े भाई साहब से अच्छी दोस्ती थी। सुरेन्द्र नाथ प्रारम्भ से ही एक प्रसिद्ध स्टूटेंट लीडर थे। बीए पास करने के बाद महेन्द्रनाथजी को तो नौकरी भी मिल गयी थी। सुबह का कॉलेज अटेन्ड करने के बाद वे दफ्तर चले जाया करते थे। कॉलेज के पीरियड अटेन्ड करने के बाद सुरेन्द्रनाथ अपने दोस्तों के साथ हॉस्टल के कमरे में मीटिंग जमा लिया करते थे। इनके खास दोस्तों में श्री अजीज कुरैशी, श्री कन्हैयालाल साहू, श्री सत्यनारायण अग्रवाल तथा अन्य दोस्त भी साथ में आया करते थे। भाई अजीज कुरैशी को तो बहुत बार उनके ही कमरे में देखा करता था और मिलता रहता था। दुबेजी तो आज भी अजीज कुरैशी के घनिष्ठ मित्र हैं। कभी-कभी भाई दीपचन्द्र जैन भी इनके कमरे में आते थे जो उस समय स्टूडेंट कांग्रेस के अध्यक्ष थे। दीपचन्द्रजी तो सुरेन्द्रनाथ को सदैव ही अपने छोटे भाई की तरह प्यार करते थे।

1964 में मैंने अपने घर ललितपुर में अपना 'सदन बस सर्विस' का (ट्रांसपोर्ट) बिजनेस संभाल लिया था। मेरी एक बस ललितपुर से जामनी बाँध चलती थी और लम्बे समय (लगभग 30 वर्ष) तक डाक गाड़ी (बस) के रूप में उसे जाना जाता था। हमारे बुन्देलखण्ड में तो न जाने क्यों डाक गाड़ी की प्रतिष्ठा बनी रहती है। एक दिन मुझे अचानक मालूम हुआ कि संचार विभाग ने मेरी बस के स्थान पर किसी अन्य की बस को डाक गाड़ी बना दिया है। मुझे इस बात का बहुत दुख हुआ। एक नेता जी ने झूठी प्रतिष्ठा के नाम पर मेरी बस की जगह अपनी बस को डाक बस बनवा लिया था। मैं दुखी मन से भोपाल आया। वहाँ मैंने पुराने घनिष्ठ मित्र सुरेन्द्रनाथ दुबे से सम्पर्क किया और उन्हें अपनी दुख भरी कहानी सुनाई। मैं उनके इस स्वभाव को किशोर अवस्था से ही जानता हूँ कि वे अन्याय के खिलाफ तुरन्त लड़ने के लिए तैयार हो जाते हैं। समस्या सुलझाने के लिए मैंने उनसे दिल्ली चलने का आग्रह किया, वे मान गये और मेरे साथ दिल्ली आ गये। उस समय भाई अजीज कुरैशी लोकसभा के सदस्य थे। दुबेजी तो इसी पुराने साथी भाई अजीज कुरैशी के आवास पर ही ठहरते थे, वहीं इन्होंने मुझे भी अपने साथ ठहरा लिया। इन्होंने भाई अजीज कुरैशी को मेरी सारी समस्या से परिचित कराया। उन्हें भी मेरी परेशानी से दुख हुआ। उस समय कुरैशीजी के पैर में फैंक्चर था। फिर भी अजीज कुरैशी ने तत्कालीन संचार मंत्री श्री अर्जुनसिंह जी से केवल फोन पर चर्चा की। बाद में श्री अर्जुनसिंह जी से चर्चा करते समय मैंने दुबेजी के साहसिक रूप को देखा है। एक स्कूल शिक्षक कितनी हिम्मत के साथ अपनी बात कह सकता है, यह मैंने पहली बार देखा। अर्जुनसिंह जी ने इनकी बात को ध्यान से सुना और उन्होंने मेरी बस को ही डाक गाड़ी के रूप में बनाये रखने के लिए निर्देश दिया था। नेताजी को तो उस समय भी अपनी झूठी प्रतिष्ठा का ही ख्याल था, उन्होंने अधिकारियों से मिलने के बाद मंत्री जी से भी चर्चा करने का प्रयास किया। मुझे उस समय अर्जुनसिंह जी की द्वारा कही गयी बातों की जानकारी मिली जिसे मैं इस प्रकार बताना चाहता हूँ— 'नेताजी देखिये मेरे एक अध्यापक मित्र ने साहस पूर्वक मुझसे कहा है कि' "नेताजी

द्रोण बना वह कौरव दल का, कौरव ही तो हैं अभिजात्य। भारतीय संस्कृति बांटी है, पटरानी संस्कृति पाट्वात्य॥

## जय जगत

अपने पैरों पर स्वयं कुल्हाड़ी मार रहे हैं।” अर्जुनसिंह ने कहा— मैं अपने उस अध्यापक भाई की बात को गम्भीरता से ले रहा हूँ तथा मैं उनसे सहमत भी हूँ।’ नेताजी तो अपनी जिद पर थे। उन्होंने अधिकारियों के माध्यम से भी अपनी बात को मनवाना चाहा था।’

सुरेन्द्रनाथ दुबे की इस साहसिक आवाज को अर्जुन सिंहजी तो हमेशा ही समझते थे। हम लोग अर्जुन सिंह जी के कमरे से निकलकर बाहर आये, वहाँ उनके निजी सहायक ने दुबे जी से आकर पूछा कि मंत्री जी जानना चाहते हैं कि आप कब तक दिल्ली में रुकेंगे। दुबेजी ने मुझसे चर्चा के बाद बताया कि लगभग 2—3 दिन दिल्ली में रहेंगे। तब निजी सहायक ने कहा कि साहब ने कहलवाया है कि आपको (दुबेजी को) साहब ने भोपाल नगर की टेलीफोन एडवाइजरी कमेटी का सदस्य नियुक्त किया है। दुबेजी आप अपनी नियुक्ति का आदेश कल संचार मंत्रालय से लेकर ही जावें। हम दोनों तो इस बात को सुनकर आश्चर्यचकित थे क्योंकि दुबेजी ने अपने लिये न तो कुछ माँगा था और ना ही कुछ निवेदन किया था। अरे! वाह रे अर्जुन सिंहजी आपने बिना माँगे ही दुबेजी को यह उपहार दे दिया।

बाद में दुबेजी ने 1993 से 1995 तक (लगभग 2 वर्ष 3 माह) केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्रालय, शास्त्री भवन में अर्जुन सिंह जी के साथ रहकर शिक्षक कल्याण के परामर्शदाता के रूप में भी कार्य किया जो ऐतिहासिक है। ऐसे प्यारे दोस्त के जज्बे को सलाम करता हुआ, उसकी सलामती, बेहतर स्वास्थ्य और लम्बी उम्र की दुआ करता हूँ।

नदीपुरा, ललितपुर (उ.प्र.)



अर्जुन सिंह : छवि का लाभ: छाया -अशोक वाही

साप्ताहिक दिनमान : दिसम्बर, 1985

नहीं महानगर भारत है, गांवों में बसता भारत। नहीं मीडिया देख पा रहा, गांव हुए हैं क्यों आरत॥



## पृथ्वी की विपुलता सा व्यक्तित्व 'सुरेन्द्र नाथ दुबे'

—कृष्ण देव चतुर्वेदी

शासकीय सुभाष उच्चतर माध्यमिक विद्यालय (1464) शिवाजी नगर में जब मैंने कक्षा 9वीं में प्रवेश लिया उस समय मेरी आयु 14 वर्ष की थी। मैंने कला संकाय में प्रवेश लिया था क्योंकि पूर्व माध्यमिक परीक्षा में मुझे विज्ञान विषय में तीन अंक का कृपांक प्रदान कर उत्तीर्ण घोषित किया था। कला संकाय के विषयों में इतिहास, नागरिक शास्त्र तथा अर्थ शास्त्र मुख्य विषय के रूप में पढ़ाये जाते थे तथा सहायक विषय के रूप में सामान्य हिन्दी और सामान्य अंग्रेजी भी पढ़ना होती थी। इतिहास श्री शुक्लाजी, नागरिक शास्त्र सुरेन्द्रनाथ दुबेजी तथा अर्थ शास्त्र श्री बरूआ जी पढ़ाते थे।

मैं बड़े स्वाभाविक ढंग से स्वीकारता हूँ कि मेरे शिक्षक दुबे सर अपने शिक्षण कार्य में जो पाठ्य-वस्तु पढ़ाते थे उसका लक्ष्य "एक अच्छा नागरिक" गढ़ना हुआ करता था। इस पुण्य-पावन अवसर पर मैं एक घटना का उल्लेख करना उचित समझ रहा हूँ जिसने मुझे आन्दोलित ही नहीं किया वरन् आज पर्यन्त प्रेरणा बन कर मार्ग प्रशस्त कर रही है। दुबे सर का कालखण्ड आरम्भ हो चुका था, वे प्राचार्य के कक्ष में किसी अन्य कार्य की चर्चा में व्यस्त थे। कक्षा के अन्दर हम लोग आपसी बातचीत में लग गये। शनैः शनैः बातचीत की ध्वनि बढ़ती गई और शोर में तब्दील हो गई। दुबे सर इस शोर से आहत हुये तथा कक्षा में आ कर 'डस्टर' को 'टेबल' पर ठोक ठोक-कर शांत होने का इशारा करते हुये चाक से श्याम पट्ट पर लिखा "आज आप लोग बातचीत करते रहें, मैं मौन रहता हूँ।" सर ने मौन साध लिया। साथ ही कक्षा में भी स्तब्धता छा गयी। इस घटना के पश्चात् मुझे आज तक स्मरण है कि हमने अपने स्कूली जीवन के किसी भी कालखण्ड में उस तरह का उतना शोर भरा उत्पात नहीं मचाया। एक और तथ्य का उल्लेख करना चाहता हूँ दुबेजी ने शाला में ही युवा संसद का आयोजन कराया था इस युवा संसद और छाया संसदों का आयोजन करने में इन्हें विशेष ख्याति मिली थी।

यही वह मूल संस्कार है जिसने मेरे जीवन को अभिमंत्रित किया तथा मेरे मन में शिक्षक बनने की जिज्ञासा उत्पन्न की। मैंने सन् 1975 में उच्च माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के साथ निजी क्षेत्र के विद्यालय में 100रु. के पारिश्रमिक पर शिक्षण कार्य करना स्वीकार लिया। लगभग दस वर्षों के पश्चात् जब मैं शासकीय सेवा में आया तब पुनः दुबे सर की चर्चा एक चिंतक के साथ-साथ शिक्षा और शिक्षकों के हित में चल रहे संघर्ष की अगुआई करने वाले व्यक्तित्व के रूप में उभर कर आई। मैं उनके विचार लेख यदा-कदा किसी पत्रिका में पढ़ लेता था किन्तु जब मेरी मुलाकात सर्वोदयी कार्यकर्ता निर्दलीय के सम्पादक श्री कैलाश आदमी से हुई तो ज्ञात हुआ कि गुरुवर श्री सुरेन्द्र नाथ दुबे जी "सुब्बारावजी" के संग विश्व-व्यापी 'जय जगत' के वाहक के रूप में कार्यशील हैं। अनायास ही विधायक विश्राम गृह में आयोजित शिक्षक सभा में दुबे सर को पुनः सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। इस अवसर पर श्री शरदचन्द्र बेहार, टीकमगढ़ क्षेत्र के समाजवादी विचारक पूर्व विधायक गौरीशंकर शुक्ल तथा उभरते हुये चिंतक श्री दामोदर जैन भी उपस्थित थे। दुबे सर की उपलब्धियों को वर्तमान 85लाख शिक्षकों, शिक्षक व्याख्याताओं सहित शिक्षाविदों, समाज सेवियों यहाँ तक कि सक्रिय राजनीति से जुड़े विद्वानों ने स्वीकारा तथा अमल किया। वह इनके द्वारा लिखित पुस्तकों, लेखों तथा खुले पत्रों में निहित है। उदाहरणार्थ मैं उनके द्वारा 'स्कूल शिक्षा' मासिक के जुलाई 12 अंक की सम्पादकीय का अंश प्रस्तुत करता हूँ— "अभी समूचा सरकारी शिक्षा-तंत्र निजी शिक्षणतंत्र का यशोगान करते हुये उसके समक्ष घुटने टेकता नज़र आ रहा है। हद तो यह है कि सरकार ने खुद ही ऐसा, विचित्र कानून बना लिया है जिसके अनुसार गरीब परिवार अपने बच्चों को यह निजी स्कूल बेमन से (जबरदस्ती) पढ़ायेंगे इसका सीधा

गाँधी का शब्दार्थ बदल कर, जय कारे जित होते हैं। प्रगतिशील वही समझें अब, जोकि वोदका पीते हैं।।

निहितार्थ यह है कि शासकीय शिक्षण—तंत्र को अपनी क्षमता और शिक्षण संस्थाओं पर अब भरोसा नहीं रह गया है।”

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि दुबे सर का व्यक्तित्व, किसी मत, विचारधारा या वर्ग विशेष के उपासक या प्रशंसक नहीं है, वरन् सत्यवादिता की कसौटी पर घिस कर विशुद्ध शिक्षक जिसे हमारे प्राचीन संस्कृति ने ‘गुरु’ कह कर सम्मानित किया है। आज जब मनुष्य अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्पर्धा, प्रतिद्वन्द्विता, ईर्ष्या, उत्पाद एवं अवसाद आदि से मुक्त दिखाई नहीं देता तब इस विषम परिस्थिति में भी दुबे सर प्रसन्न, आनन्दित, सक्रिय रूप से तथा सर्वेभवन्तु सुखिनः के मंत्र के साथ अपने परिचितों—अपरिचितों एवं संघर्षरत युवाओं का प्रेरणा स्रोत बने हुये हैं। यही वह तथ्य है जिसके अन्तर्निहित हमारे पूर्वजों ने कहा है —

गुरु ब्रह्मा गुरुर विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरा,  
गुरु साक्षात् पर ब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवे नमः।

मैंने बड़े ध्यान से देखा है कि दुबे सर में पृथ्वी की विपुलता सा धैर्य धारण करना उनके व्यक्तित्व का गुण है। अपने शिष्यों, साथियों, सहकर्मियों, आन्दोलनकारियों, मनीषियों, अधिकारियों और राजनीतिज्ञों तक को कहीं न कहीं, उनकी प्रतिभा को किसी रूप में स्वीकार करना पड़ा है। यह पृथ्वी की विपुलता भी दुबे सर में दिखाई पड़ रही है क्योंकि उन्होंने जिस लक्ष्य के लिये अपना कदम बढ़ाया है उस पर निरन्तर अथक प्रयत्नशील रहे हैं —

एक कवि के शब्दों में  
लक्ष्य प्रेरित बाण हूँ मैं ठहरने का नाम कैसा?  
लक्ष्य तक पहुँचे बिना पथ में पथिक विश्राम कैसा।

इसी बात का आवाहन करते हुये हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने अपनी एक कविता में लिखा है —

‘आँधी लघु—लघु दीप बुझाती, पर धधकाती दावानल।  
कोटि—कोटि हृदय की ज्वाला, कौन बुझाए किसमें—बल ॥

522, पंचशील नगर भोपाल, (म.प्र.)



अपने गुरु के सम्मान में

कठपुतली अभिजात्य वर्ग की, बना मीडिया भारत में। जिसे न दिखता मोहनगांधी, देश न दिखता आरत में॥

## आपकी शिक्षा

लोक हितैषी आपकी दीक्षा  
घर-घर पहुँची आपकी शिक्षा  
मनव प्रीत वातसल्य बॉट  
किया आपने जग कल्याण!  
जगा-जगा कर यह स्वाभिमान!  
आप देश के सच्चे सेवक  
चन्द्र गुप्त सा गढ़ा प्रबंधक  
प्यासे हर पौधे को सींचा  
निर्भय किया हमारा प्राण!  
जगा जगा कर यह स्वाभिमान  
बाल-बालिका हित संवर्धन  
शिक्षण-पथ का बन संवर्धन  
अभ्युत्थान का लक्ष्य दिखाया  
आपने सींचा मूर्छित प्राण!  
जगा जगा कर यह स्वाभिमान!  
प्रजातंत्र को दिये बटोही  
अब भी बहुत अपेक्षा है,  
कदम-ताल सी साध साधना  
अमर रहेगा सीखा ज्ञान!  
जगा जगा कर यह स्वाभिमान  
अमृत महोत्सव आज आपका  
देता हम को शुभ संदेश:  
सर्वधर्म समभाव सदा हो  
लिखने-पढ़ने का परिवेश!  
सदा जगाया यह स्वभिमान!

## स्वयं सुदामा सुरेन्द्रनाथ जी

सरस्वती के दीप जलाये, किये प्रभावित जीवन धारा।  
कुल गौरव पा गया ऊँचाई, पास-पड़ोसी को ब्यौहारा।।  
सादा जीवन सदा निभाया, जीवन को वरदान बनाया।  
शिक्षक-शिक्षा लक्ष्य सदा, प्रीत-प्यार दे हमें हर्षाया।।  
पीछे मुड़कर कभी न देखा, शिक्षण से अमृत बरसाया।  
शिक्षा-दीक्षा रुढ़ी त्याग कर, जीवन-पथ में सदा लुटाया।।  
'सुरेन्द्र नाथ जी' स्वयं सुदामा, मित्रों को 'कृष्ण' बनाया।  
मौलिक वचन विलक्षण प्रतिभा, छात्र वृंद ने सम्मुख पाया।।  
भूल न पायेंगे 'शिक्षक' उनके सदकार्यों का संपादन!  
कई पुस्तके गुण गाती हैं, जग करता इनका अभिनंदन!!

## सद्कर्मों से मुझको जोड़ा

रोक रही थी निशा मार्ग जब  
मौन साध कर खड़ी दिशा थी?  
सन्नाटा भय दिखलाता था  
दूर खड़े थे सखा-सखाए  
छोड़ दिया अपनों ने साथ  
'गुरु' आपने साथ न छोड़ा,  
सद्कर्मों से मुझको जोड़ा!  
आप धन्य हैं उन स्वजनों में,  
जिनने पथ में दिया सहारा  
हाथ पकड़कर सदा उठाया  
हर ठोकर का अर्थ बताया  
दीप ज्योति बन मुझे दिखाया  
'गुरु' आपने.....  
अभी जरूरत हमें आपकी  
शिक्षक के इस सौम्य रूप की  
असमंजस में है, मेरे भाई!  
सुरेन्द्र नाथ ने आशा जगाई!  
झीनी चादर संग इस पथ पर  
'गुरु' आपने.....

- कृष्ण देव चतुर्वेदी

## शत् शत् नमन

—तुलाराम आढ्या

शिक्षा के उन्नायक मार्ग में साहित्य जगत् के प्रीत प्यार में!  
क्षण—क्षण किया समर्पण / शत् शत् नमन आपको कहते!!  
“सुरेन्द्रनाथ” है नाथ हमारे। जग कहता हो भले अनाथ।  
नगर—नगर और शहर—शहर में,  
पाता हूँ मैं तुमको साथ  
संघर्ष सिखाया बापू सा पढ़ गौतम गाँधी का संदेश  
प्रीत भरे नयनों से शत् शत् नमन आपको कहते।  
बीते कई बसंत यहाँ पर शिक्षण—पथ पर चलते—चलते।  
यश कीर्ति का फहरा ध्वज, लेख—पत्र सब लिखते लिखते।  
वृक्षों सी शीतलता दी है।  
ज्योति बने स्वयं दीप सा ग्रीष्म—शीत सब सहते।  
पुलक रहा है मेरा मन अब शत् शत् नमन आपको कहते!!  
जैसा कहा किया आपने, मिथ्या हुई कभी न वाणी!  
सेवा की है मौन साधकर सत्य—साधना पहचानी!!  
आत्म निरीक्षण अस्त्र आपका सद्—इच्छा की भाषा!  
रोपा पौधा आपने चुनकर, शत् नमन आपको कहते!!  
सफल रहे सब शब्द अर्चना  
विमल—विमल सरल मन की वाणी!  
सौहार्द—मतैक्य से गूँथ पुष्प यह, बने कर्ण से दानी!!  
उत्तम चरित्र खिलाया जग में जहाँ रखा पगराज पावन!  
अभिनन्दन के इस अवसर पर  
शत् शत् नमन आपको कहते!!

## शिक्षक का दुःख

— राम गोपाल रैक्वार, टीकमगढ़

कल रात मेरे सपने में ब्रह्मा जी आए  
मैंने पहले किया नमन।  
फिर कहा— भगवन!  
मेरी कुछ मदद कीजिए।  
मैं अकेला शिक्षक हूँ  
कक्षाएँ हैं पाँच  
आपके हैं चार मुँह  
चार हाथ,  
कुछ कक्षाएँ आप पढ़ा दीजिए।  
ब्रह्मा जी घबराए  
बोले— वत्स,  
मुझे बख्श  
मैंने तेरी पुस्तकें पढ़ी हैं  
उनकी गतिविधियाँ देखी हैं  
मैं यह सब नहीं करा पाऊँगा,  
तू मुझे भुला दे।  
अपनी कक्षाएँ पढ़ाने के लिए  
तू रावण को बुला ले।

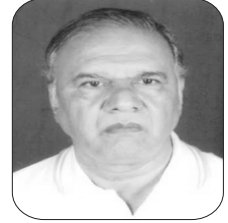
कहने को जनतंत्र राष्ट्र है, लेकिन “जन” ही मरा हुआ। अभिजात्य स्वयं ही जन बन बैठा तंत्र स्वयं में मरा हुआ।।



## श्री सुरेन्द्र नाथ दुबे एक प्रभावशाली व्यक्तित्व

ओमप्रकाश शुक्ला

श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे ने मुझे 1963-64 नागरिक शास्त्र (राजनीति शास्त्र) विषय पढ़ाया। उनका विषय पर पूरा अधिकार था। वे एक अनुशासनप्रिय शिक्षक रहे। शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणीय विकास के पक्षधर थे उन्होंने इस क्षेत्र में कई प्रयोग किए। वे सही अर्थों में प्रयोजन मूलक शिक्षक थे। उन्होंने शास. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बरखेड़ा बीएचईएल में अक्टूबर 1962 में जॉइन किया था, उस समय +2 पाठ्यक्रम चालू था।



उनके पढ़ाने का ढंग विशेष प्रकार का था। वे विद्यार्थियों के मार्गदर्शक थे। उन्होंने राजनीति शास्त्र के अनेक पहलू पर प्रयोग किए। विद्यालय में छाया संसद बनायी और चलायी भी। भारतीय संविधान की विशेषताओं पर प्रयोग किए। छात्र प्रतिनिधियों को अमेरिकन शासन पद्धति के अनुसार "इलेक्टोरेल कॉलेज" सिस्टम बनाकर मुख्य छात्र प्रतिनिधियों के चुनाव करवाये।

श्री दुबे सर का भाषा की शुद्धता पर सदैव जोर देते थे। वे प्रत्येक छात्र से दैनिक रूप से एक पेज अंग्रेजी तथा एक पेज हिंदी की नकल किताब से या समाचार पत्र से लिखने को कहते थे। उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि दुबे सर एक आदर्श शिक्षक थे। उनकी योग्यता का लोहा बड़े अधिकारी भी मानते थे। दुबे सर सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करते थे।

वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी (सेवा निवृत्त) बीएचईएल, भोपाल  
आवास :- 229/9बी, साकेत नगर, मो.नं. 9472583425

## शिक्षक कल्याण के लिए समर्पित सुरेन्द्रनाथ दुबे

-ए.आर. सिद्धकी

श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे जी से मेरी घनिष्टता शिक्षक कल्याण कार्यों के लिए हुई। मैं मध्यप्रदेश शिक्षक कांग्रेस का महामंत्री रहा हूँ, तब मैंने दुबे जी के प्रयासों और गतिविधियों को अच्छी तरह देखा है। वे एक प्रतिष्ठित शिक्षाविद् होने के साथ-साथ शिक्षक कल्याण के लिए पूरी तरह समर्पित रहते हैं। जब ये मध्यप्रदेश के शिक्षा मंत्री श्री बंशीलाल धृतलहरे के सलाहकार थे तब इन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के निर्माण में जो भूमिका निभाई वह ऐतिहासिक है। एससीईआरटी में लंबे समय तक रहकर इन्होंने अनेक राष्ट्रीय सेमिनारों में मध्यप्रदेश का प्रतिनिधित्व किया। शिक्षक कल्याण के कार्यों के लिए इन्होंने मध्यप्रदेश का भी भ्रमण किया। मेरे यहाँ राजनांदगाँव में भी ये आते थे विशेष रूप से बीटीआई की परीक्षा लेने। दुर्ग, रायपुर इत्यादि में जब भी ये आये, हमारे यहाँ जरूर आते थे। राजनांदगाँव में प्रदेश के शिक्षकों का एक बहुत बड़ा सम्मेलन हुआ था तब उस सम्मेलन को सफल बनाने में दुबे जी ने लगभग एक सप्ताह राजनांदगाँव में रहकर मेरा मार्गदर्शन किया क्योंकि स्थानीय होने के नाते इस सम्मेलन को सफल बनाने की जिम्मेदारी मुझपर ही थी। तबसे मैं और दुबेजी घनिष्टता से जुड़े तथा मैं इनकी कार्यशैली से प्रभावित हुआ।



दुबेजी ने शिक्षा एवं शिक्षकों के लिए तीन बार श्रीमती इंदिरा गाँधी से भेंट की और जिस प्रभावशाली ढंग से शिक्षकों के हित में उनसे चर्चाएँ कीं और कुछ घोषणाएँ भी करा सके, उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। दुबेजी अर्जुन सिंहजी के साथ शिक्षक कल्याण के लिए सलाहकार के रूप में दिल्ली में भी कार्यरत रहे, तब इनकी प्रभावशाली भूमिका को हम लोगों ने देखा है। ये आज भी स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। 75 वर्ष पूर्ण करने के अवसर पर मैं इनके स्वस्थ और दीर्घजीवी होने की कामना करता हूँ।

कैलाश नगर, राजनांदगाँव, (कंप हैदराबाद)

शिक्षा की साक्षात् प्रतिमूर्ति सुरेन्द्रनाथ दुबे जी को समर्पित कविता

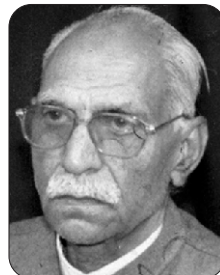
### “उनको ही मिलता मोती है”

डॉ. हुकुमपाल सिंह ‘विकल’

जीने को तो रो धोकर  
सब जी लेते हैं।  
पीने को तो अमृत  
सब ही पी लेते हैं।  
किंतु जिंदगी तो केवल  
उन जीने वालों की होती है।

गरल धरा के पीने वालों की होती है।  
मन चाहे तो सागर के सागर पी सकते,  
तन चाहे धरती पर उतरे चांद सितारे।  
साँसे चाहें समर भूमि में मरे हुए मुर्दे जी सकते,  
जीवन चाहे मझधारों के हाथ थाम लें स्वयं किनारे।  
जिनके जीवित संकल्प हार को  
हंस-हंस गलहार बना लेते हैं  
उनके चरण धरा पर देखो  
स्वयं विजय आकर धोती है।  
और जिंदगी भी ऐसे ही  
जीने वालों की होती है।।

व्यर्थ नहीं जाया करता है  
हर माथे से गिरा पसीना,  
फूल और कलियों से हँसती,  
पत्थर की वॉझाली छाती।  
स्वयं सुलगते दिवस मान का,  
जीवन में विश्वास देख लो,  
अंधियारे बाँचा करते,  
किरणों की पाती।  
सरेआम संध्या को जिसने  
गले लगाया,  
प्यार किया है अंधियारों को,  
उसकी एक-एक चितवन में,  
ऊषा जड़ी सृष्टि सोती है।  
और जिंदगी भी ऐसे ही,  
जीने वालों की होती है।।



बिना भिगोए साँस धरा पर,  
जीवन छंद नहीं बनता है,  
भारत माँ की माटी का,  
कण-कण कहता है।  
उस मरुस्थल के आँगन ही,  
गंगा बहती है,  
जहाँ हिमालय-सा कोई भी,  
जीवन की हलचल सहता है।  
जो अपनी घायल साँसों से,  
आग लगा देते पानी में,  
उनके घर मंजिल आती है,  
उनको ही मिलता मोती है।  
और जिंदगी भी ऐसे ही  
जीने वालों की होती है।।

सत्य, अहिंसा, करुणा का पथ भुला दिया है हमने क्यों। और मीडिया पथ भटकाता, शिक्षक बना हमारा क्यों।।

## शिक्षा और साहित्य का आलोक: श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे

—डॉ.गार्गीशरण मिश्र 'मराल'

संवेदनशील और सेवाभावी शिक्षक श्री सुरेन्द्रनाथ ने अपनी पढ़ाई—लिखाई समाप्त करने के बाद आजीविका एक शिक्षक के रूप में अर्जित करना श्रेयस्कर समझा। वे चाहते तो किसी कमाऊ विभाग में अच्छी नौकरी पा सकते थे, क्योंकि यह वह ज़माना था, जब पढ़े—लिखे लोगों की कमी थी। अतः एक पढ़ा—लिखा आदमी अपनी शैक्षणिक योग्यता के अनुसार जिस पद के लिए आवेदन करता था, उसे उस पर नियुक्ति सहजता से मिल जाती थी। लेकिन श्री सुरेन्द्रनाथ जी के मन में तो राष्ट्र निर्माण की भावना हिलौरें मार रही थी। अतः उन्होंने शिक्षक बनकर देश का भविष्य गढ़ने का निर्णय लिया। यह निर्णय अपने आप उनकी सेवा भावना को उजागर करता है।

एक बार “ब्लिट्ज” के संपादक करंजिया जी से किसी ने प्रश्न पूछा कि “महान कैसे बना जा सकता है?” करंजिया जी ने जवाब दिया कि महान बनने के दो रास्ते हैं। या तो आप छोटे लोगों के बीच खड़े हो जायें या फिर महान कार्य करें। अब इस सुझाव को व्यवहार की कसौटी पर कस कर देखें तो आपको पता लगेगा कि शिक्षक जब कक्षा में अपने छात्र—छात्राओं के बीच खड़ा होता है, तब वह पहले रास्ते से महान बन जाता है, लेकिन जब वह अपने छात्र—छात्राओं को पढ़ाकर देश का भविष्य गढ़ने का संकल्प लेता है तो वह दूसरे रास्ते से भी महान बन जाता है। श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे ने उपरोक्त दोनों प्रकार से महान बन कर दिखाया। कारण स्पष्ट है। एक संवेदनशील और समाजसेवी शिक्षक के रूप में उन्होंने अपने छात्र—छात्राओं को पूरी निष्ठा के साथ पढ़ाकर देश का भविष्य हमारी कक्षाओं में गढ़ा है। इस प्रकार शासकीय सेवा निष्ठा और समर्पण की भावना से करने वाले वे एक बिरले शिक्षक रहे हैं।

वैसे तो श्री दुबे जी और मैं एक ही शिक्षा—परिवार के सदस्य रहे हैं, फिर भी हमारे बीच संबंध—सेतु रहे अंतरराष्ट्रीय ख्यातिलब्ध शिक्षाविद् और शिक्षा के लिए निष्काम भाव से समर्पित शिक्षा जगत के भीष्म पितामह डॉ. गुलाब चौरसिया जी। यह बात अलग है कि श्री दुबे जी मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में रहे और मैं मध्यप्रदेश की संस्कारधानी जबलपुर में। फिर भी हमारे हृदय सदा एक—दूसरे के निकट रहे।

गाँधीवादी विचारक और सेवक श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे सन् 1954 में विश्वविख्यात गाँधीवादी विचारक श्री सुब्बारावजी के संपर्क में आये। उनके प्रभाव से दुबे जी की सोच गाँधीवादी अर्थात् रचनात्मक और सेवाभावी हो गई। फलतः आज तक वे श्री सुब्बारावजी के रचनात्मक कार्यों में सहभागी बने रहते हैं। इसी बीच आप पर संत और शिक्षाविद् विनोबा भावे का भी प्रभाव पड़ा। इसके फलस्वरूप आपने 11 सितम्बर, 1958 को आजीवन देश की भावी पीढ़ी को शिक्षित करने का संकल्प लिया। वे आज भी अपने इस संकल्प के प्रति समर्पित हैं। इसी का प्रतिफल है कि वे शासकीय नौकरी से सेवानिवृत्त होने के बाद ‘स्कूल शिक्षा’ नाम से एक मासिक पत्रिका का संपादन कर रहे हैं और इस पत्रिका के माध्यम से देश की भावी पीढ़ी को शिक्षा की सौगात दे रहे हैं।

लेखक और संपादक के रूप में सेवानिवृत्ति के बाद श्री दुबे जी स्वाभाविक रूप से शिक्षण और प्रशिक्षण से मुक्त हो गये। अतः उसकी क्षतिपूर्ति अब वे लेखन और संपादन के द्वारा कर रहे हैं। वेदों के ‘चरैवेति चरैवेति’ सिद्धान्त का पालन करते हुए दुबे जी सेवानिवृत्ति के बाद भी शिक्षा और साहित्य की सेवा में

दारुण दुख कितने ही आएँ, हंसकर गले लगायेंगे। किन्तु नहीं अपमान गरीब का, सहन कभी कर पायेंगे॥

## जय जगत

संलग्न हैं। उनके लिए आराम हराम है। अपने शैक्षिक अनुभव और ज्ञान को सब तक पहुँचाने के लिए आपने एक मासिक पत्रिका “स्कूल शिक्षा” का प्रकाशन प्रारंभ किया है। इसमें श्री दुबे जी के लेखक और संपादक के दोनों रूपों को यथोचित अभिव्यक्ति मिल रही है। अपने अथक परिश्रम से ‘स्कूल शिक्षा’ पत्रिका इतने थोड़े समय में आकर्षक कवर और सार्थक कलेवर के साथ प्रकाशित हो रही है और बार-बार हमें यह संदेश दे रही है कि ‘सोने के पहले अभी तो मीलों का सफर तय करना है। मैं तो वह दीपक हूँ, जो सबेरा होने के पहले बुझनेवाला नहीं है।’ मैं श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे रूपी इस दीपक के यशस्वी और शतायु होने की शुभकामना करता हूँ।

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि श्री दुबेजी अपने जीवन के 75 वर्ष पूरे करने जा रहे हैं। तात्पर्य यह है कि अब वे सन्यास आश्रम में पदार्पण कर रहे हैं, जहाँ सब कार्य ईश्वर के लिए होते हैं। तब भव को भगवान समझकर संसार की सेवा में निष्काम भाव से समर्पित होना ही एक मात्र उद्देश्य रह जाता है। इसी उच्च भावभूमि में पहुँचकर मनुष्य संत तुलसीदास जी की तरह कह उठता है—

**परहित सरिस्त्र धरम नहि भाई। पर पीड़ा सम नहि अधमाई॥**

ऐसे संत पुरुष श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे की हीरक जयंती पर ‘जय जगत’ शीर्षक से अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित किये जाने का निर्णय परमानंद का विषय है। वह शिक्षकों/प्रशिक्षकों के लिए एक प्रकाश स्तंभ सिद्ध होगा। इस हेतु मेरा साधुवाद स्वीकार करें।

1436/बी, सरस्वती कालोनी, चेतीताल वार्ड, जबलपुर



साबरमती आश्रम, अहमदाबाद में गांधीजी के चरखे के पास अमृत मोदी, निदेशक आश्रम के साथ चर्चा करते हुए सुरेन्द्र नाथ दुबे एवं उनकी पुत्रियाँ।

**यह चौथा स्तम्भ - देश को, अब और नहीं भरमाएगा। बहुत हो चुका जो होना था, अब करनी पर पछताएगा॥**



## कभी सेवानिवृत्त न होने वाले अहिर्निश शिक्षक

भाई सुरेन्द्र नाथ दुबे

—पं. गुणसागर “सत्यार्थी”

‘स्कूल शिक्षा’ मासिक पत्रिका का जुलाई का अंक मिला। इसके मुख्य आवरण पृष्ठ पर “विश्व जनसंख्या दिवस” पर उल्लेख किया गया है कि विकास का मतलब केवल मृत्यु—दर कम करना ही नहीं है, अपितु साथ में जन्म दर को घटाना भी है। शिक्षकों के मन में यह जिज्ञासा (प्रश्न) भी उठायी गयी कि ‘क्या शिक्षा के द्वारा भी जनसंख्या विस्फोट रोका जा सकता है?’ सुरेन्द्र नाथ दुबे द्वारा संपादित/प्रकाशित इस पत्रिका को देखकर इन पंक्तियों के लेखक को अब से लगभग साढ़े चार दशक पहले की घटना याद आ रही है। विश्वविख्यात शिक्षाविद् डॉ. जी. चौरसिया की पहल पर मध्यप्रदेश के स्कूल शिक्षा विभाग में ‘जनसंख्या शिक्षा’ का प्रकोष्ठ बनाया गया था। हमारे कार्यरत शिक्षकों में अनेक प्रतिभाशाली लेखक हैं। प्रतिभा संपन्न लेखकों की कमला नेहरू कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, भोपाल में कार्यशाला आयोजित हुई। इन पंक्तियों का लेखक भी इस अपने किस्म की पहली कार्यशाला में सहभागिता के लिए पहुँचा था।



45 वर्ष पूर्व ‘जनसंख्या शिक्षा’ एकदम नया विषय था। हम लोग लिखें तो क्या लिखें? उन्मुखीकरण हेतु डॉ. चौरसिया का भाषण भी ज्यादा समझ में नहीं आया। डर था कि जो पाठ लिखे जाएँगे, वे कहीं परिवार नियोजन योजना की प्रचार सामग्री न बन जाएँ! भला परिवार नियोजन से छात्रों का वासता क्या है? छात्रों के लिए परिवार नियोजन समझाने वाले पाठ लेखन का औचित्य भी नहीं है। उस समय तो धर्म—शास्त्रों की दुहाई देकर दकियानूस किस्म के लोग परिवार नियोजन के विरोध में खड़े दिखाई देते थे। तब उस कार्यशाला में सहभागी शिक्षक कहाँ से अपनी बात शुरू करें, विकट समस्या सबके सामने थी। डॉ. गुलाब चौरसिया का एक प्रिय सहयोगी नवयुवक जिसकी आँखों में तेज झलक रहा था, वह लगभग मेरी ही आयु का बल्कि एकाध वर्ष मुझसे छोटा ही था, घूम—घूमकर कार्यशाला की प्रत्येक मेज पर जाता और प्रतिभागियों के लेखन पर जिज्ञासु दृष्टि से देखता था। मानो इस कठिन समस्या का हल खोजने का भारी बोझ उसी के सिर पर हो और वह उस बोझ से मुक्ति हेतु छटपटा रहा था। हाँ, डॉ. चौरसिया (वे बड़े अधिकारी थे) तो थोड़ी देर रुककर आफिस में फाइलें निपटाने चले जाया करते थे किंतु हम लोगों की समस्याओं का समाधान तो उस बेचारे को करना ही होता था। मुझे तो बड़ा आश्चर्य हो रहा है कि आज भी ‘जनसंख्या शिक्षा’ को जनसंख्या नियंत्रण का रचनात्मक प्रयास मानते हुए विगत 45 वर्षों से अब 75 वर्षीय नौजवान भाई इस विषय पर भी विचार और कार्य कर रहे हैं।

मैंने एक पाठ कहानी विधा में लिखना शुरू किया। पाठ का मुख्य उद्देश्य था कि इस पाठ को पढ़कर छात्र अपने उन परंपरावादी अभिभावकों का जनसंख्या नियंत्रण का रचनात्मक प्रयास आगे बढ़ाएँ—

“राम भरोसे जो रहे, पर्वत पै हरयाय।

दिल्ली राष्ट्र नहीं होगा तब, राष्ट्र बनेगा पूरा देश। और देश भी गांवों में हैं, गांव राष्ट्र के हों परिवेश॥

### “भगवान नें चौंच दी है तो चुग्गा भी वही देता है”

इसकी परवाह में हम व्यर्थ दुबले क्यों हों?’ मेरी कहानी का प्लॉट पौराणिक आख्यान से ही लिया गया था जिसमें राजा सगर के साठ हजार पुत्रों का नाकारा होना और भागीरथ जैसे मात्र एक पुत्र द्वारा पृथ्वी पर गंगा को ले आना था, जिससे अंसख्य लोगों का तरण-तारण हुआ दर्शाया गया। डॉ. चौरसिया का सहयोगी वह युवक मेरी मेज पर आकर ठहर गया, मेरी कलम अबाध गति से चल रही थी और वह युवक एक-एक शब्द पढ़ता जा रहा था। युवक ने मुझे गले से लगाया और कहा— मित्र कहाँ से आए हो? और नाम क्या है तुम्हारा? मैंने विनम्र भाव से अपना नाम व पूरा परिचय उस युवक को दिया। **वह युवक और कोई नहीं, द्विभाषी मासिक पत्रिका “स्कूल शिक्षा” का आज संपादन करने वाले भाई सुरेन्द्र नाथ दुबे थे।** इसी दीर्घ अंतराल की अवधि में भाई सुरेन्द्रनाथ दुबे के जीवन में कितने उतार-चढ़ाव आए! कितने और कैसे-कैसे संघर्षों की भट्टी में तपकर वह निकले, वह सब मैंने अपनी आँखों से देखा है। मेरी और उनकी सहायता में बहुत समानता है। दूसरे विभागों से आने वाली प्रतिभा का भरपूर दोहन किया गया तो कमोबेश मेरा भी वही हाल था। प्रशासनिक अधिकारियों की आँखों में तो प्रतिभा देख पाने की क्षमता होती नहीं है। इसलिए चापलूसों की बल्ले-बल्ले और भाई दुबेजी जैसी प्रतिभाओं पर अधिकारियों की वक्र दृष्टि ही यदि रही तो इसमें आश्चर्य नहीं। मैं भी स्नातकोत्तर तक की योग्यता के साथ महात्मा गाँधी के शिक्षा-दर्शन में गहरी पैठ का अनुभवशील व्यक्ति था। सुरेन्द्रनाथ भी तो प्रारम्भ से ही गाँधीमार्गीय थे। मेरे आँसू पोंछते हुए दुबे जी कहते— ‘आप क्यों कहते हैं कि मैं एलडीटी ही जीवनभर बना रहा’। आपका काम आपके पद से बहुत ऊपर है, आपने जो शिक्षा जगत को दिया और जितना दिया, उतना तो व्याख्याता या प्राचार्य लोग तक नहीं दे सकेंगे।

उन्होंने मुझे राज्य की शैक्षिक पत्रिका “पलाश” के संपादक मंडल में सम्मिलित तो करवाया ही, शिक्षक-शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए राज्य स्तरीय उत्कृष्टता सम्मान महामहिम राज्यपाल म. प्र. के करकमलों से सम्मानित करवाकर मान बढ़ाया।

आज हम दोनों कहने को सेवानिवृत्त हो गए, न तो मैं एल.डी.टी. हूँ और न वे किसी सरकारी पद पर हैं। प्रायः लोग सेवानिवृत्ति के पश्चात् कार्यक्षेत्र भूल जाते हैं, लेकिन मनोरंजक तथ्य तो यह है कि 31 जनवरी 2001 को सेवानिवृत्त होने के बाद सुरेन्द्रनाथ दुबे की सबसे पहली पुस्तक जो दिल्ली के आथर प्रेस ने प्रकाशित की, वह **Population of India, 2001** (अंग्रेजी में) थी। इसके बाद आथर प्रेस ने दो पुस्तकें अंग्रेजी में और प्रकाशित की। बाद में वे लेखक और प्रकाशक बन गये। तब भी मुझे भान था कि यह व्यक्ति मात्र बच्चों की शिक्षा के लिये दीवाना है। मेरी दृष्टि में डॉ. जी. चौरसिया, डॉ. जे.एस. राजपूत एवं स्व. पी. एन. रुसिया जैसे लोगों की परंपरा में भाई सुरेन्द्र नाथ दुबे कभी सेवानिवृत्त न होने वाले अहिर्निश शिक्षक हैं। सरकारी नौकरी में उनके भीतर के शिक्षक का एक सीमित क्षेत्र था। आज वे देश के 50 करोड़ बच्चों और 85 लाख स्कूली शिक्षकों के बीच उसी जीवटता के साथ बच्चों के शिक्षण के कार्य में ही प्राण-प्रण से जुटे हुए हैं। सुरेन्द्रनाथ दुबे अपने संघर्षशील, कर्मठ जीवन के 75 वर्ष पूर्ण करने जा रहे हैं। उनकी इस यात्रा में किए गए कार्यों का लेखा रखना उतना आसान नहीं है। बड़े भाई होने के नाते हार्दिक आशीर्वाद के साथ इतना ही कहूँगा — “जीवेत् शरद्ः शतम्”।

‘ज्योति कलश’ कुण्डेश्वर, जिला टीकमगढ़ (म.प्र.)

कवि रूपी बेताल आज फिर, नई प्रभाती गाएगा। तुलसी के उस महामंत्र से, जग को आज जगाएगा॥

## कुशल नेतृत्वकर्ता श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे जी

- दामोदर जैन



आज से करीब 25 वर्ष पूर्व मुझे जब श्री रामेश्वर जी नीखरा के नेतृत्व में संचालित मध्यप्रदेश शिक्षक कांग्रेस संगठन, से जुड़ने का सुअवसर मिला, तब संगठन की बैठकों में सम्माननीय श्री सुरेन्द्र नाथ दुबेजी को भी सुनने का मौका मिलता था। बैठक के बाद सभी पदाधिकारी आपस में मिलते-जुलते तो मैं भी इस दौरान दुबेजी से मिलता और उनसे अपने मन की बातें करता। संगठन के मंच से बच्चों के शैक्षिक हितों की बातें करने वाले एकमात्र प्रवक्ता श्री दुबेजी की कार्य पद्धति का प्रत्यक्ष परिचय मुझे तब मिला जब एशिया मानव अधिकार शिक्षा संस्थान से जुड़ने का मौका मिला। विश्वविख्यात शिक्षाविद् डॉ. गुलाब चौरसियाजी के नेतृत्व में मानव अधिकार शिक्षा की संगोष्ठियों में भागीदारी के साथ-साथ हमें म.प्र. मानव अधिकार आयोग की राज्य स्तरीय संगोष्ठी में भी सहभागी होने का सुअवसर मिल गया। आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री गुलाब गुप्ता जी मानव अधिकारों के प्रसार हेतु जो पहल करने का प्रस्ताव करते, वे कार्य हम लोग पहले ही कर चुके हैं, यह जानकर उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई। अपने समय से पहले सोचने और करने की सद्प्रेरणा देने वाले डॉ. गुलाब चौरसियाजी आज भले ही हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनके विचारों और कार्यों का श्रेष्ठतम प्रतिरूप मुझे सम्माननीय श्री दुबे जी में सदैव देखने को मिलता है। बहुत कम ऐसे अवसर आए होंगे जब दुबेजी को मैंने नाराज होते देखा हो। बड़े से बड़ी भूल हो जाने या नुकसान होने के बाद भी कभी उनके चेहरे पर तनाव, परेशानी या नाराजगी नहीं दिखी।

वर्ष 1997 में मुझे उनकी सद्प्रेरणा से सीसीआरटी, नई दिल्ली का 21 दिवसीय अनुस्थापन प्रशिक्षण प्राप्त करने का मौका मिला। मैं इस कार्यक्रम में सहभागी होकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। संगठन के अलावा प्रशासनिक नेतृत्व की क्षमता का यह मेरे समक्ष दूसरा श्रेष्ठ उदाहरण था। मेरा चयन विभागीय तौर पर शायद ही हो पाता लेकिन दुबेजी ने मेरी लगन, उत्साह और क्षमता को भाँपकर अपने स्तर पर प्रस्ताव प्रस्तुत कर मेरा चयन कराया। आपके सानिध्य में कार्य करते हुए मुझे अनेक राष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभागी होने का मौका मिला। आपने राज्य के शिक्षक-प्रशिक्षकों को राज्य स्तर पर कार्य की गुणवत्ता के आधार पर सम्मानित करने का निर्णय एससीईआरटी/एसबीटीई की ओर से कराया और कार्यक्रम के आयोजन की रुपरेखा तय कर कुण्डेश्वर (टीकमगढ़) डाइट में हमें सम्मान समारोह आयोजित करने की जिम्मेदारी सौंपी। इस कार्यक्रम के माध्यम से हमें एक और चुम्बकीय व्यक्तित्व के साथ जुड़ने का मौका मिला। आयोजन के मुख्य अतिथि श्री शरद् चन्द्र जी बेहार (पूर्व मुख्य सचिव, म.प्र. शासन) के साथ हमें कुछ समय रहने और उनसे सीखने का जो मौका मिला उसके माध्यम से मैं अब श्री बेहार साहब के सुपरिचितों में शामिल हो गया हूँ। यह नेतृत्व का एक अनूठा उदाहरण है जो दुबेजी जैसे पारस के प्रभाव को प्रतिबिम्बित करता है। स्वयं के शीर्ष स्तरीय संबंधों को आम लोगों के बीच लोकप्रिय बनाना कोई आपसे सीखे। अपने सम्पूर्ण सेवाकाल में राज्य स्तरीय संस्थान में अधिकांश समय कार्यरत रहते हुए प्रदेश एवं देश के सुनामधन्य शिक्षाविदों से आपका सहज परिचय रहा। प्रो. जे. एस. राजपूतजी (तत्कालीन निदेशक एन.सी.टी.ई.) से मुझे जोड़ने का श्रेय श्री सुरेन्द्र नाथ दुबेजी को ही है। अपने पूर्ण विश्वास के साथ उन्होंने मेरी लेखन क्षमता और कार्य निष्ठा का विवरण प्रस्तुत कर मुझे राजपूतजी के साथ निरन्तर जुड़े रहने का मार्ग प्रशस्त किया है। मध्यप्रदेश शासकीय अध्यापक एसोशिएसन के बैनर तले हुए राज्य स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन में पूरे उत्साह से सहभागी होकर उन्होंने हमारे साथियों का मनोबल बढ़ाया। यह जानते हुए कि हमारे पास संख्याबल अपेक्षित नहीं हैं लेकिन कार्यक्रम में पूरे समय उपस्थित रहकर आपने हमें जो संरक्षण दिया, जिसे याद कर हम अपने आपको गौरवान्वित महसूस करते हैं।

ग्राम सुराज का स्वर्णिम सपना, जो देखा था गांधी ने। जातिवाद के विष-पौधे को, खोद उखाड़ा गांधी ने।।

अपने सम्पूर्ण जीवन की श्रेष्ठतम उपलब्धियों को प्रस्तुत करते हुए आदरणीय दुबेजी सदैव लोकमंगल की कामना करते हैं। अपनी निहित स्वार्थ भावना से परे देश की जनता जनार्दन के सार्वभौमिक हितों को ध्यान में रखकर कार्य करने वाले दुबेजी अपना प्रेरणा स्रोत श्री एस.एन. सुब्बाराव भाई जी को मानते हैं। अपने सहज संबंधों को सार्वजनिक कर आपने ही मुझे भी भाईजी का स्नेहिल बनाया। भाईजी के प्रिय पात्र होने पर भला किसे प्रसन्नता नहीं होगी। भाईजी का उदार और प्रेरक व्यक्तित्व सदा ही सभी को अपना बनाता है। यह श्री दुबेजी के नेतृत्व का ही प्रभाव है कि भाईजी के साथ अनेक लोग सहज जुड़ते जा रहे हैं। शिक्षा में अनेक पुस्तकों के लेखक होने के साथ-साथ उनकी इच्छा रही कि शिक्षा पर एक नियमित प्रकाशन शुरू करना चाहिए। उनकी इच्छा के अनुरूप शीर्षक 'स्कूल शिक्षा' प्राप्त होते ही उन्होंने मुझे इसके प्रकाशन की योजना से जोड़ा। स्कूल शिक्षा मई, 2010 से अनवरत प्रतिमाह प्रकाशित हो रही है। यह एक श्रेष्ठतम शैक्षिक नेतृत्व की कला की प्रभावी प्रस्तुति है।

मुझे सर्वाधिक प्रभावित करने वाले श्री दुबेजी की सहजता और संवेदनशीलता उनको कभी-कभी क्षोभ की स्थिति में भी ला देती है। अपने भरे-पूरे परिवार में सभी के स्नेहपात्र रहते हुए उनकी मनःस्थिति सदैव सकारात्मक रहती है। इसी भलमनसाहत का लाभ उठाकर कई लोग उनकी क्षमता का नाजायज उपयोग कर अपना स्वार्थ सिद्धि कर लेते हैं। अपने कार्यों की दम पर मानव संसाधन मंत्रालय जैसी शीर्ष संस्था तक सेवाएँ प्रदान करने वाले श्री दुबेजी ऑल इण्डिया फ़ैडरेशन ऑफ एज्यूकेशनल एसोसिएशन (AIFEA) के भी शीर्ष पदाधिकारी रहे हैं। अखिल भारतीय फोरम ऑफ अवार्डी टीचर्स के संस्थापक श्री दुबेजी का प्रिय कार्य प्रतिवर्ष 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के अवसर पर पुरस्तक शिक्षकों के माध्यम से शिक्षकों के नाम खुला पत्र लिखना रहा है। उनकी लेखन शैली अनूठी और अद्वितीय है। मुझे भी उन्होंने अनेक विषयों पर लिखने की सतत् प्रेरणा दी है जिसके माध्यम से मैं आज कुछ लिखने लायक हो पाया हूँ। यह अत्यंत क्षोभ का विषय है कि सरकारी संस्थाएँ और शैक्षिक संगठन, शैक्षिक विचारों और विचारकों की अभी भी अपेक्षित कद्र नहीं कर रहे हैं।

यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे सम्माननीय श्री दुबेजी का प्रेरक सानिध्य मिला हुआ है और आपकी प्रेरणा से ही मेरा जीवन ध्येय 'शैक्षिक सेवा' बना। मैं 1989 से 1995 तक निरन्तर शैक्षिक संघर्ष के दौर से गुजरा हूँ। 1996 में मुझे उनके परम सहयोगी श्री रवीन्द्र मालवजी (पूर्व अपर संचालक एन सी ई आर टी) की कृपा से जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) कुण्डेश्वर से जुड़ने का मौका मिला तभी से मेरी कार्य पद्धति बदली और मैं एक शैक्षिक कार्यकर्ता बन सका। अपने चुबंकीय व्यक्तित्व से प्रभावित करना, वर्तमान की सर्वाधिक श्रेष्ठ नेतृत्व कला है। अक्सर लोग अपने निहित स्वार्थ की भावना के वशीभूत होकर ही किसी को प्रश्रय देते हैं। लेकिन श्री दुबेजी ने अपने सभी संपर्कों के साथ मुझे न केवल जोड़ा बल्कि उनका विश्वासपात्र भी बनाया—यह मेरे लिए अत्यंत गौरव और गरिमा की बात है। एक शिक्षक से लेकर अनेक शिक्षा मंत्रियों के सलाहकार तक की भूमिका में रहते हुए वे सदैव कुशल नेतृत्वकर्ता की भूमिका में रहे हैं। दुबे जी की यही विशिष्ट भूमिका मुझे सदैव प्रेरित करती है।

आदरणीय दुबेजी अपने जीवन के 75 वर्ष पूर्ण कर चुके हैं। मैं चाहता हूँ कि देश के शैक्षिक जगत को आपकी सेवाएँ निरन्तर मिलती रहें आप स्वस्थ रहें, दीर्घायु हों, यही मंगल कामना है।

पूर्व सदस्य एन सी ई आर टी, नई दिल्ली  
बी, 51/2, राजहर्ष कॉलोनी अकबरपुर, कोलार रोड, भोपाल

होकर अब चाणक्य शिक्षा को, राष्ट्र हितार्थ खोलना है। बहुत हो गया सुनते-सुनते, सब खुलकर हमें बोलना है॥



## सुरेन्द्रनाथ दुबे

### इमारत बता रही है कि खंडहर बुलंद होंगे

— रामगोपाल रायकवार

बात यहाँ हमारे परनाम धन्य आदरणीय श्री सुरेन्द्रनाथ जी दुबे की हो रही है। यहाँ 'परनाम धन्य' शब्द परम्परागत व्यंग्य भाव 'स्वनाम धन्य' के स्थान पर इसलिए प्रयुक्त किया गया है क्योंकि वास्तव में ये अच्छे शिक्षाविद् हैं और उनकी प्रशंसा सभी गुणीजन करते हैं। इसके बावजूद श्री दुबेजी अपने आपको शिक्षक के रूप में ही मानने और कहलाने में विश्वास रखते हैं। मानवाधिकार—शिक्षा, शिक्षक—शिक्षा, सामान्य शिक्षा और 'जनसंख्या शिक्षा' के प्रकांड विद्वान स्व. डॉ. गुलाब चौरसिया श्री दुबेजी को परिहास में पहले आर्टिकल फोरटी फाइव ही कहा करते थे, क्योंकि दुबे जी प्रारंभिक शिक्षा के अधिकार के लिये हमेशा ही संघर्षरत रहे हैं। अब यह शिक्षा का मौलिक अधिकार आर्टिकल 21 ए हो गया है।



बहुत से पाठक श्री दुबेजी को मुख माध्यम अर्थात् बाई फेस भी जानते होंगे पर अधिकांश पाठकों ने संभवतः प्रत्यक्ष नहीं देखा होगा इसलिए उनका एक शाब्दिक चित्र प्रस्तुत कर रहा हूँ। अपने आलोच्य पुरुष श्री दुबेजी अपनी आयु के 76 वें वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं। बाईपास सर्जरी और घुटनों के दर्द से पीड़ित होने के बाद भी पूर्णरूपेण सक्रिय हैं, विशेषकर मानसिक सक्रियता में कोई कमी नहीं आई है। हलका गोरा रंग, भरा चेहरा, उन्नत ललाट, बड़ी-बड़ी आँखें और सिर पर बचे-खुचे बाल जिनके बारे में विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है कि धूप में सफेद नहीं हुए हैं। आमतौर पर कुरता-पाजामा पहनते हैं, पर सफारी सूट या बन्द गले के सूट में भी उनका व्यक्तित्व उतना ही प्रभावी नजर आता है। इस उम्र के लोगों के बारे अक्सर मजाक में कहते हैं, कि 'खंडहर बता रहे हैं कि इमारत बुलंद थी' पर दुबे जी पर यह उक्ति उचित नहीं बैठती। उनके लिए तो यही कहा जा सकता है— 'इमारत बता रही है कि खंडहर बुलंद होंगे।' हम चाहते हैं कि यह इमारत कम से कम पच्चीस साल तक इसी तरह मजबूती से टिकी रहे।

'प्रारंभिक शिक्षा अधिकार' के अतिरिक्त उनका दूसरा प्रिय विषय 'इकाई योजना' एवं 'सतत मूल्यांकन' ही रहा है। आज भी वे इस पर घंटों बातचीत कर सकते हैं और भाषण दे सकते हैं। वे कहते हैं कि एक जानवर के गाँव में मर जाने के बाद गाँव के चौधरी उसे चमड़ा उतारने के लिए गाँव के बाहर ले जाते हैं। प्रायः साथ में उनके बच्चे भी होते हैं, मरे जानवर पर से चमड़ा निकालना एक बहुत ही कौशल का कार्य है और इस कौशल को भी शिक्षा में मान्यता मिलना चाहिए। बच्चों के व्यवहार में परिवर्तन लाना है न कि उन्हें रट्टू तोता बनाना, इसलिए वे परम्परागत परीक्षा के विरुद्ध रहे हैं, उनकी इस मान्यता को आज सतत एवं इकाई मूल्यांकन के रूप में स्वीकार किया जा रहा है और गैर शैक्षिक या सह शैक्षिक क्षेत्रों सहित बच्चों के व्यक्तिगत एवं सामाजिक गुणों को मूल्यांकन का हिस्सा बनाया जा चुका है।

दुबेजी से मेरी प्रथम स्मरणीय भेंट 25 जून 1997 को माउंट आबू के ब्रम्हकुमारी आश्रम के मुख्यालय में आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार शिक्षा सम्मेलन में हुई थी, जिसमें डॉ. गुलाब चौरसिया का 75वाँ जन्मदिवस (हीरक जयंती) भव्यतापूर्वक मनाया गया था। माउन्ट आबू में ही 3 दिवसीय शिक्षा सम्मेलन में विभिन्न गुप्तों में भी चर्चा हुई। ऐसे ही एक विषय का संयोजक दुबेजी को भी बनाया गया था। माउंट आबू से

भोपाल लौटते समय कार में श्री रवीन्द्र मालव तत्कालीन अतिरिक्त संचालक, राजीव गांधी प्राथमिक शिक्षा मिशन, म.प्र., दुबेजी, उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सरोजजी, पुत्री अंजू (जो बाद में मजिस्ट्रेट के पद पर कार्यरत रहीं और वर्तमान में पारिवारिक उत्तरदायित्वों के कारण त्यागपत्र देकर दुबेजी की साकार कल्पना 'स्कूल शिक्षा' पत्रिका की प्रबंध संपादक हैं) अंतरंग साथी श्री दामोदर जी जैन के साथ लेखक भी था। उस समय दुबेजी म.प्र. राज्य 'शैक्षिक पलाश' के प्रबंध संपादक थे। उन्हें पलाश में प्रकाशित मेरी एक व्यंग्य कविता 'शिक्षक का दुख' जो बहुकक्षा शिक्षण पर केंद्रित थी, बहुत पसंद आई थी। उन्हीं की प्रेरणा से मैंने 'शिक्षक बनाम सर्वेक्षक' शीर्षक व्यंग्य कविता लिखी थी जो आज भी शिक्षा जगत के साथ-साथ शैक्षिक प्रशासन में दुबेजी के कारण ही चर्चित है। दुबेजी को ये दोनों कविताएँ बहुत पसंद हैं। बाद में दुबेजी, दामोदर जैन और चौरसियाजी के साथ कई मानवाधिकार शिक्षा सम्मेलनों में उदयपुर, नई दिल्ली और भोपाल आदि नगरों में सहभागिता की। लेखक के गृह नगर टीकमगढ़ में भी राष्ट्रीय मानव अधिकार शिक्षा सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें आदरणीय दुबेजी के अलावा डॉ. चौरसिया, श्रीमती सुशीला चौरसिया, डॉ. देवराज विज, रामायण प्रसाद जी आदि अनेक जानी-मानी हस्तियों ने भाग लिया था। 31 जनवरी 2001 को सेवानिवृत्त होने के बाद श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे की पहली यात्रा या कहें नये जीवन प्रवेश का स्वागत समारोह था। उनके बारे में कहा गया था कि वे अब समाज सेवा में प्रवृत्त हो रहे हैं।

दुबेजी लेखक को अपने परिवार का एक अंग मानते हैं। वे स्वयं एक अच्छे लेखक हैं पर उन्होंने अपने जीवन से जुड़े कई प्रसंग लेखक से लिखवाएँ हैं। मेरे द्वारा उनके जीवन की सत्य घटना पर आधारित कहानी 'संकल्प' समाचार-पत्र राजस्थान 'पत्रिका' में प्रकाशित हो चुकी है। मेरे बहुत-से व्यंग्य उनकी प्रेरणा और 'विचार' पर लिखे गए हैं। उनकी आदत है कि जब तक वे अपनी इच्छानुसार लिखा नहीं लेते चैन नहीं लेते। कभी-कभी उनका आग्रह विचित्र होता है जैसे कि वे चाहते थे मैं उनके बारे में जो लिखूँ वह व्यंग्य हो किंतु संस्मरण पर व्यंग्य लिखना आसान नहीं होता। फिर भी दुबेजी में कर्मचारी संगठन में उच्च पदाधिकारी रहने के बाद भी 'नेता' जैसे (दुर) गुण भी नहीं हैं। रिटायर होने के बाद भी 'नेतागिरी' नहीं कर रहे हैं। हाँ, कुछ बातें जरूर मजेदार हैं जैसे कि वे खाते कम हैं पर बोलते ज्यादा हैं। बोलते समय उन्हें साँस लेने की भी फुरसत नहीं मिलती। सुनने वाला सिर्फ हाँ, हूँ, जी हाँ कहने की औपचारिकता निभाने की असफल कोशिश करता रहता है। आमने-सामने बैठते हैं तो प्रायः अतीत के महत्वपूर्ण प्रसंगों, संस्मरणों और घटनाओं के बारे में बताते रहते हैं। उनका इतिहास बोध प्रशंसनीय है। व्यक्तियों, घटनाओं और तिथियों के बारे में उनकी जानकारी इतनी सटीक रहती है कि आश्चर्य होता है। शिक्षा, प्रशासन, समाज और विशेष राजनीति से जुड़ी अतीत की बहुत-सी महत्वपूर्ण बातें उनके द्वारा ही सुनने को मिलती हैं। उन्होंने बहुत-से शिक्षा मंत्रियों के सलाहकार के रूप में काम किया है। बहुत-से लोग नहीं जानते कि उनके इस आग्रह पर कि 'सारे देश में कक्षा आठ तक के बालक-बालिकाओं को गणवेश पहनना आवश्यक कर दिया जाये तथा साधनहीन बच्चों को सरकार ही गणवेश उपलब्ध कराये', तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी ने तो स्वयं मध्यप्रदेश की छात्राओं के लिए दस करोड़ रुपए गणवेश के लिए स्वीकृत किए थे जो बाद में छात्राओं के लिए गणवेश देने की योजना का आधार बने। 1986 की नई शिक्षा नीति निर्माण के समय उनके कई महत्वपूर्ण विचार और सुझाव श्री बंशीलाल धृतलहरे एवं नीखराजी के माध्यम से श्री राजीव गाँधी तक पहुँचे और क्रियान्वित हुए। श्री दुबेजी संगठनों से 'हमारी मांगें पूरी करो' वाली मानसिकता से नहीं बल्कि 'हम अपना शैक्षिक दायित्व कैसे निभाएँ' इस विचार से जुड़े हैं। शिक्षकों से बातचीत करते समय उनमें यही भाव और विचार भरने का प्रयास करते हैं।

दुबेजी सुप्रसिद्ध गाँधीवादी एवं समाजसेवी श्री एसएन सुब्बाराव जी के प्रबल अनुयायी हैं। श्री सुब्बारावजी के बारे में लिखी उनकी किताब 'एक यायावर महर्षि' और सुब्बारावजी पर बनी फिल्म उनके उल्लेखनीय कार्य हैं। 'युवा संसद' पुस्तक उनके गाँधीवादी विचारों को ध्वनित करती है, जिसमें उन्होंने आदर्श राजनीति और शासन कैसा हो? पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। यह पुस्तक नाट्य रूप में विभिन्न युवा संगठनों द्वारा मंचित की जा चुकी है।

'स्कूल शिक्षा' द्विभाषी मासिक पत्रिका उनका एक ऐसा शाहकार है जिसे वे बरसों से अपने मन में संजोए थे। सीमित साधनों के बावजूद लगातार चार वर्षों से प्रकाशित करना उनका शिक्षा के प्रति समर्पित भावना का ही परिणाम है।

डॉ. गुलाब चौरसिया, श्री शरदचंद्र बेहार और दुबेजी की त्रयी ने शिक्षा, शिक्षक-शिक्षा, जनसंख्या शिक्षा और मानवाधिकार शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया है। ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ एजुकेशनल एशोसिएशन (ए.आई.एफ.इ.ए.) के महासचिव, के रूप में किए गए दुबेजी के कार्य भी उल्लेखनीय हैं। दुबेजी उन लोगों में से एक हैं जो अपने-आपको खबरों की दुनिया से दूर रखते हैं और स्वांतः सुखाय एवं यज्ञीय भावना से अपना कार्य करते हैं। अपने बेलाग विचारों के कारण वे शासनप्रिय भले न रहे हो पर शिक्षा जगत में उनके योगदान को कम नहीं आँका जा सकता है। उनके विचार भविष्य में शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी सामग्री सिद्ध होंगे।

उनके जीवन के 75 वर्ष पूर्ण होने पर 'जीवेम शरद् शतम्' की हार्दिक शुभकामनाएँ। उनका स्नेह भरा मार्गदर्शन और आशीर्वाद सदैव प्राप्त होता रहे यही ईश्वर से प्रार्थना है।

— प्रहलादपुरम, तखा मजरा  
झाँसी रोड, टीकमगढ़, म.प्र.

**“गांधी सुब्बाराव जी जिसके हैं, आदर्श  
शिक्षक-शिक्षा के लिये किया सदा संघर्ष  
सुरेन्द्र नाथजी का कृतित्व बहुत विशेष  
बच्चों का कल्याण ही जीवन का उद्देश्य  
शास्त्री भवन में किया शिक्षक हित का  
कार्य एकमात्र शिक्षक यही,  
किये गए स्वीकार्य”  
—रामगोपाल रैकवार**



24 जून 1997 को ब्रह्मकुमारी आश्रम— माउण्ट आबू  
में दुबेजी को प्रशस्ति पत्र देते हुए दादी माँ

## मेरे प्रेरणा स्रोत - श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे

- माधुरी चौरसिया

जीवन में कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिन्हें हमेशा याद रखा जाता है, उन्हीं में से एक श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे हैं। श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे एवं उनके परिवार का परिचय डॉ. जी. चौरसिया के माध्यम से हुआ था। उदयपुर में “मानवाधिकार” पर सेमीनार के दौरान मैंने दुबेजी को गहराई से जाना। उदयपुर से लौटते समय डॉ. चौरसिया, श्री दुबेजी और उनके साथी नीमच में रुके थे। तब हमने नीमच में नगर के बुद्धिजीवियों के लिये एक गोष्ठी आयोजित की थी। नीमच के बुद्धिजीवियों का तबका इन दोनों के विचारों से बहुत प्रभावित हुआ था।

उसके बाद तो दुबेजी एवं उनके परिवार से मेरा आत्मीय लगाव हो गया था। भोपाल प्रवास के दौरान एवं पत्रों के माध्यम से हमारी बौद्धिक चर्चा प्रारंभ हो चुकी थी। उस समय तक बहुत से विषयों पर मेरी सोच को एक दिशा निर्देशन की आवश्यकता थी। बहुत से विषयों पर बेबाक चर्चा का लाभ मुझे आज तक मिल रहा है।

हालाँकि, मेरे पापा साहित्यकार स्व. भगवान चौरसिया ने मेरे व्यक्तित्व में अच्छे संस्कारों का बीजारोपण कर दिया था फलस्वरूप मैंने लिखना-पढ़ना प्रारंभ कर दिया था और एक छोटा सा बालमंदिर “ज्ञानोदय” नाम से प्रारंभ कर दिया था। लेकिन बाल मन के प्रति दृष्टिकोण का विकास श्री दुबेजी के माध्यम से ही हुआ। वे अक्सर कहा करते हैं कि बच्चे फूलों से नाजुक एवं सागर की लहरों की तरह चंचल होते हैं। उनकी बाल सुलभ गतिविधियों को उन्मुक्त वातावरण प्रदान कर हम उन्हें खेल-खेल में ही दिशा निर्देशित कर सकते हैं। वे हमेशा कहते हैं बच्चों को बालगीत, कविता, कहानी, अभिनय एवं गतिविधियों के माध्यम से खेल-खेल में शिक्षा दी जानी चाहिए।

दुबेजी से चर्चाओं के दौर बढ़ने के साथ शिक्षा को गहराई से जानने की इच्छा के फलस्वरूप ही मेरी एक किताब “शिक्षा : एक सार्थक परिसंवाद” आई। इस पुस्तक में मैंने देश के जाने-माने शिक्षा शास्त्रियों से शिक्षा के विभिन्न पहलूओं पर हुई चर्चा का उल्लेख किया है। इसका विमोचन स्व. माधवराव सिंधिया द्वारा भोपाल में किया गया। उस आयोजन की व्यवस्थाओं में श्री दुबेजी ने बहुत सहयोग दिया। दुबेजी किसी भी प्रकार का सहयोग देने के लिये हमेशा तत्पर रहते हैं, इसीलिए विमोचन कार्यक्रम का संचालन दुबेजी ने ही किया था।

चर्चा के दौरान दुबेजी को ज्ञात हुआ कि नीमच में अध्यापक शिक्षा के लिए कोई भी संस्थान नहीं है तो वे काफी परेशान हो गये। उन्होंने हमें बी.एड. कॉलेज खोलने के लिए प्रेरित किया। डॉ. चौरसिया ने कॉलेज प्रारंभ करने हेतु पूर्व की समस्त जानकारीयों से अवगत कराया। इन दोनों महापुरुषों के मार्ग निर्देशन में सन् 2003 में हमारी संस्था ज्ञानोदय शिक्षण समिति द्वारा “बालकवि बैरागी शिक्षा महाविद्यालय” की स्थापना की गई। उसके बाद 2004 में डी. एड. पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया। धीरे-धीरे बालकवि बैरागी शिक्षा महाविद्यालय, अध्यापक शिक्षा के लिये प्रतिबद्ध एक श्रेष्ठ संस्था बन गई।

इसके बाद ज्ञानोदय शिक्षण समिति ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। प्रतिवर्ष छात्रों के लिये सुविधाओं में वृद्धि कर नवीन पाठ्यक्रमों के साथ उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अनुपम सौगात बन गई है। 20 पाठ्यक्रमों और लगभग तीन हजार विद्यालयीन एवं महाविद्यालयीन छात्रों की इस संस्था की स्थापना और इस मुकाम तक



पहुँचाने में जिन लोगों का नाम आता है, उनमें से एक प्रमुख नाम श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे का भी है।

श्री दुबे जी का जीवन, शिक्षा के लिये समर्पित है, वे शिक्षा के लिये जीते हैं। दुबेजी की सोच का दायरा शिक्षा से शुरु होकर शिक्षा पर ही समाप्त होता है। इसी की वजह से उनसे जब भी बातें होती है शिक्षा से जुड़ी बातें ही होती हैं। स्कूल शिक्षा को प्रारंभ करने के बाद दुबेजी का फोन मेरे पास आया था उन्होंने मुझे सिर्फ एक बात कही थी 'तुम इसके लिये लिखो'। हमें लेख भेजती रहो और कुछ हमें नहीं चाहिये, व्यवसायिकता के जमाने में कोई इस तरह की बात करे, यह उनकी महानता है वरना आज तो पत्रिकाएँ विज्ञापन से आमदनी प्राप्त करने के लिये ही छपी जाती हैं।

बच्चों और स्कूल शिक्षा के लिए हमेशा तत्पर रहने वाले संवेदनशील शिक्षाविद् एवं श्री सुब्बाराव जी के शिष्य दुबेजी के 75 वें जन्मदिवस के अवसर पर उन्हें शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए मुझे गर्व हो रहा है — ईश्वर उन्हें शतायु करे एवं उनमें इतनी क्षमताएँ भर दे कि जीवन का हर पल वे शिक्षा के लिये समर्पित कर दें।

निदेशक : बालकवि बैरागी महाविद्यालय, नीमच (म.प्र.)



श्रीमती माधुरी चौरसिया की पुस्तक एक सार्थक परिसंवाद का विमोचन करते हुए—श्री माधवराव सिंधिया  
पुस्तक के बारे में समीक्षा प्रस्तुत करते हुए श्री सुरेन्द्र नाथ दुबे

## सुरेंद्रनाथ दुबे का शैक्षिक अवदान

- एम.डी. शर्मा

श्री सुरेंद्रनाथ दुबे के बारे में अपनी बात 23 जुलाई 1983 की घटना से शुरू करना चाहता हूँ। जब मैं उनके घनिष्ठ संपर्क में आया। श्री संजय गाँधी की अकाल मृत्यु के बाद श्रीमती इंदिरा गाँधी ने जो स्वयं इंदिरा कांग्रेस की अध्यक्ष थी, ने श्री राजीव गांधी को कांग्रेस का महासचिव नियुक्त किया था। मध्यप्रदेश शिक्षक कांग्रेस के प्रथम सम्मेलन पर उसके संस्थापक अध्यक्ष एवं सांसद श्री रामेश्वर नीखरा ने श्री राजीव गाँधी को सबसे पहले भोपाल में 23 जुलाई 1983 को ही आमंत्रित किया। राजीवजी के राजनीतिक जीवन की शुरुआत का भोपाल में यह पहला अवसर ही था, हालाँकि हवाई जहाज के पायलट के रूप में तो इंडियन एयर लाइन्स का जहाज लेकर वे प्रायः भोपाल आते रहे थे, लेकिन तब उन्होंने राजनीति में अपनी दिलचस्पी कभी नहीं दिखाई थी। श्री अर्जुन सिंह जी उस समय मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री थे। चूँकि राजनीति में आने के बाद राजीवजी का भोपाल का पहला कार्यक्रम था, इसलिए अर्जुन सिंह जी ने भी शिक्षक कांग्रेस के उस कार्यक्रम में गहरी रुचि दिखायी थी। श्री रामेश्वर नीखरा ने शिक्षक कांग्रेस जैसी संस्था का गठन किया ही था इसलिए अर्जुन सिंह जी ने भी सलाह दी, उन्होंने कहा कि यदि आप चाहें तो एक शिक्षक है, शायद उनका सहयोग ले सकें, चूँकि राजीवजी के कार्यक्रम पर चर्चा हो रही थी इसलिए तत्कालीन शिक्षा सचिव श्री अशोक वाजपेयी जो वहाँ उपस्थित थे, ने पूरा नाम बताया कि सुरेंद्र नाथ दुबे, तब श्री अर्जुन सिंह जी ने कहा कि 'मैं तो उन्हें और श्री अजीज कुरैशी को तब से जानता हूँ जब मेरे द्वारा गठित सीपा क्लब (1958) से ही हमारे कार्यक्रमों से वे जुड़े थे।' वहीं उपस्थित श्री अंबिका तिवारी ने कहा कि वह तो मेरे छोटे भाई जैसा है। मैं उसे 1955 से जानता हूँ वह मेरी आज्ञा का जरूर पालन करेगा, इसीलिए श्री सुरेंद्र नाथ दुबे जून 1963 से ही मध्य प्रदेश शिक्षक कांग्रेस से जुड़ने के लिए बाध्य हुए थे।

यहाँ 23 जुलाई के कार्यक्रम की घटना का विस्तार से चर्चा करना जरूरी है। श्री राजीव गाँधी के आगमन के बाद राजीवजी के साथ स्टेज पर श्री अर्जुन सिंह जी, श्री रामेश्वर नीखरा, स्कूल शिक्षा मंत्री बंशीलाल धृतलहरे, उच्च शिक्षा मंत्री श्री मोतीलाल वोरा थे तथा पीछे की कुर्सियों पर श्री अंबिका तिवारी, श्री मधु गार्गव, मैं एवं सुरेंद्र नाथ दुबे मेरे बगल में बैठे थे। तब डॉ. शंकर दयाल शर्मा एवं श्री माधवराव सिंधिया सामने फर्श पर बैठे थे। उसी समय दुबेजी ने मुझसे एक कोरा कागज कुछ लिखने के लिए माँगा था। मेरे पास कोई कोरा कागज नहीं था, तब मैंने नीचे पड़ी एक ड्राइंगशीट का कटा हुआ छोटा टुकड़ा दुबेजी को दिया तथा पूछा कि क्या इससे उनका काम चल जायेगा, उन्होंने तत्काल ड्राइंगशीट का कटा हुआ छोटा-सा टुकड़ा मुझसे लिया तथा उस पर लिखा "श्रीमान शिक्षा की एक नयी राष्ट्रनीति बननी चाहिए।" दुबेजी ने उस पर अपने हस्ताक्षर करके तथा नाम लिखकर मेरे हाथ में दिया, मैंने वह पर्ची धीरे से श्री रामेश्वर नीखरा को दी उन्होंने पास में बैठे अर्जुन सिंह को दी। श्री अर्जुन सिंह ने वह पर्ची पास में बैठे श्री राजीव गाँधी के हाथ में दे दी। श्री राजीव गाँधी ने अपने भाषण में स्पष्ट कहा कि 'शिक्षा की एक राष्ट्रनीति तुरंत बनायी जानी चाहिए।' नवंबर 1983 के शिक्षा जगत के समाचार-पत्र ने श्री राजीव गाँधी का भाषण अविकल रूप में छापा था।

मैंने भी उस समय श्री नीखराजी से एक माँग पुनः प्रस्तुत करने के लिए कहा था, जिसके अनुसार निम्न श्रेणी शिक्षक का नाम बदलकर सहायक शिक्षक रखने के लिए कहा था। श्री नीखराजी ने भी मुख्यमंत्री श्री अर्जुन सिंह के सामने यह माँग प्रस्तुत की थी और वहीं अर्जुन सिंह जी ने यह घोषणा की, कि शिक्षक के साथ 'निम्न श्रेणी' शब्द लगाना उपयुक्त नहीं है इसलिए अब सहायक शिक्षक नाम दिया जायेगा।

**सोवियत संघ की यात्रा-** भारत सोवियत मैत्री संघ, मध्य प्रदेश के अध्यक्ष श्री एमडी वैद्य के प्रयास से शिक्षकों तथा शिक्षा में रुचि रखने वालों के लिये बहुत सस्ते टूर आयोजित किये गये थे। मैं और श्री

सुरेंद्रनाथजी ने भी उस यात्रा में जाने का निश्चय किया। सोवियत संघ ने हवाई यात्रा लगभग नगण्य दरों पर (केवल बारह हजार रुपये में) के साथ-साथ वहाँ ठहरने, खाने-पीने एवं घूमने की व्यवस्था की थी। हमारी इस यात्रा में ताशकंद, मास्को, लेनिनग्राड, मिन्स्क और कीव शामिल थे। मध्यप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री मोतीलाल वोरा ने भारत-सोवियत मैत्रीसंघ के अध्यक्ष से यात्रा की विस्तृत जानकारी ली थी। यहाँ उल्लेखनीय है कि श्री वोरा जी के सुपुत्र अरुण वोरा को भी हमारे साथ इस यात्रा में शामिल करने के लिए हमने अनुरोध किया था। तब श्री वैद्य ने तत्कालीन मुख्यमंत्री वोराजी को बताया कि शायद श्री सुरेंद्रनाथ दुबे इस यात्रा में नहीं जाएँगे क्योंकि उनके पास पैसों की व्यवस्था नहीं हो पाई है और फिलहाल उनका नाम शामिल नहीं हो पाया है। वोराजी ने तत्काल अपने सचिव श्री एस.पी. दुबे से जानना चाहा कि क्या मैं सुरेंद्रनाथ दुबे को शिक्षक के रूप में कुछ मदद कर सकता हूँ। सचिव ने बताया कि हाँ, दस हजार का अनुदान आप तुरंत मुख्यमंत्री कोष से दे सकते हैं। श्री सुरेंद्रनाथ दुबे को तो पता भी नहीं था (वोराजी ने स्वतः संज्ञान लेकर) दुबेजी की यात्रा के लिए अनुदान के रूप में दस हजार रुपये मैत्री संघ को दिये थे। शायद सुरेंद्रनाथ दुबे तो ऐसा अनुदान अपने लिए माँगने के लिए सोच भी नहीं सकते थे। दुबेजी की यात्रा की व्यवस्था हुई और इस तरह सुरेंद्रनाथ और मैं सोवियत संघ की पूरी यात्रा में एक साथ रहे।

मेरा और दुबेजी का घनिष्ठ संपर्क रहा है। सुरेंद्रनाथजी ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनवाने में जो योगदान दिया है उसका उल्लेख तो श्री वंशीलाल धृतलहरे के पत्रों में हुआ है। संयोग देखिये मैं स्कूल शिक्षा मंत्री के कार्यालय में ओएसडी था। तभी मुझे ज्ञात हुआ कि उन्होंने एक पत्र, शैक्षिक मामलों में परामर्श देने के लिए एससीईआरटी के संचालक को दिया था तथा चाहा था कि 'किसी एक शिक्षाविद को उनके परामर्शदाता के रूप में कार्य करने को कहा जाय।' एससीईआरटी के तत्कालीन संचालक श्री शरदचंद्र बेहार ने अपने सहयोगियों से चर्चा करने के बाद श्री सुरेंद्रनाथ दुबे का चयन किया था और इस तरह अपने कार्यों के साथ ही साथ ये स्कूल शिक्षा मंत्री श्री वंशीलाल धृतलहरे के परामर्शदाता भी थे। इनका मुख्य कार्य माननीय मंत्रीजी के शैक्षिक भाषणों को लिखना होता था। इसी समय तो दुबेजी ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर विशेष कार्य किया था।

माननीय मंत्री के विभाग बदले जाने के बाद प्रमुख सचिव शिक्षा श्री शरदचंद्र बेहार ने उच्च शिक्षा विभाग में एक राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रकोष्ठ का गठन किया था। जिसमें श्री यू.एस. पाठक (अपर संचालक उच्च शिक्षा) के साथ-साथ मैं तथा सुरेंद्रनाथ दुबे ओएसडी थे। हमारा कार्यालय उच्च शिक्षा विभाग में ही था तथा हम दोनों एक प्रकार से अपने वरिष्ठ श्री यू.एस. पाठक के मार्गदर्शन में कार्य कर रहे थे। मुख्य कार्य तो 'स्कूल शिक्षा' का ही था, इसलिए मैं एवं सुरेंद्रनाथ तो पूर्णकालिक रूप में राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर कार्य करते रहे और यह कार्य हमने लगभग एक वर्ष तक किया। जब मैं जिला शिक्षा अधिकारी था तब शिक्षा नीति के विषय में नीपा, दिल्ली में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम भी था। मैंने उस समय बहुत सारे सुझाव नीपा में दिये थे, उस समय नीपा के तत्कालीन डायरेक्टर माह में दो बार प्रधानमंत्री एवं मानव संसाधन मंत्री के साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर भी चर्चा करने के लिए बुलाये जाते थे और वे हम सब लोगों से भी सुझाव प्राप्त करते थे, बाद में उन्हें फील्ड से प्राप्त सुझाव मानकर प्रस्तुत करते थे।

मुझे दुबेजी के साथ काम करने का जो अवसर प्राप्त हुआ उसी के आधार पर मैं कहता हूँ कि भाई सुरेंद्रनाथ दुबे के शैक्षिक अवदान के बारे में जितना भी कहा जाए कम है। मैं अपने छोटे भाई सुरेंद्रनाथ दुबे के स्वस्थ एवं लंबे जीवन की कामना करता हूँ।

से.नि. संयुक्त संचालक

49/23 साउथ टीटी नगर भोपाल मो. 0932947022

## सुरेन्द्रनाथजी - आर्टिकल 45 जब आर्टिकल 21 'ए' बन गए

- के.के. श्रीवास्तव

मुझे अच्छी तरह याद है कि 25 जून 2003 को तात्याटोपे नगर भोपाल के डीएबी कॉलेज में शिक्षकों का एक सम्मेलन हो रहा था और उसमें डॉ. गुलाब चौरसियाजी के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में अभिनंदन का कार्यक्रम भी था। मंच पर डॉ. रविप्रकाश, श्री शरदचंद्र बेहार इत्यादि अनेक शिक्षाविद् बैठे हुए थे। वहाँ श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे कॉलेज के कार्यालय में दूसरी तैयारियों में लगे थे। थोड़ी देर में वो वहाँ आ गये। मैंने अपनी चिरपरिचित व्यंग्य शैली में जोर से कहा, डॉ. साहब 'लो आपके आर्टिकल 45' आ गये हैं। डॉ. गुलाब चौरसिया ने तुरंत कहा के. के., अब सुरेन्द्रनाथजी को आर्टिकल 45 मत कहा करो, अब यह 'आर्टिकल 21 'ए'' बन गये हैं। भारतीय संविधान में 86वें संशोधन के बाद आर्टिकल 45, अब 21 'ए' बन गया है, सो हमारे दुबे जी को भी अब 'आर्टिकल 21 'ए'' कहा करो।

मैं और दुबे जी लंबे अर्से के साथी हैं और संगठन में तो हमे वरिष्ठ पदाधिकारी होने के कारण घंटों साथ बैठकर काम करना पड़ता था। ये जनाब हैं कि तब भी बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा के अधिकारों के बारे में चिंतित रहा करते थे। यहाँ स्पष्ट करना चाहूँगा कि भारतीय संविधान में नीति निर्देशक तत्वों के अनुच्छेद 45 के अनुसार प्रारंभिक शिक्षा का अधिकार मिला हुआ था जिसमें दायित्व सरकारों का था लेकिन सैकड़ों अन्य लोगों की तरह दुबे जी चाहते थे कि प्रारंभिक शिक्षा का अधिकार मौलिक अधिकारों में शामिल होना चाहिए, तभी हम इसे ढंग से लागू करा पायेंगे। इनकी पीड़ा इतनी जबरदस्त थी कि इन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय इसी संघर्ष में लगा दिया। एनडीए के शासनकाल में ही उनके घोषणा पत्र के संदर्भ में (श्री जार्ज फर्नांडिस एवं डॉ. मुरली मनोहर जोशी) को आर्टिकल 45 को ठीक उसी रूप में मौलिक अधिकारों के रूप में आर्टिकल 21 'ए' में शामिल करना पड़ा और भारत की संसद के दोनों सदनों में संविधान संशोधन 86 के अनुसार शिक्षा को मौलिक अधिकार बना दिया गया। इसके लिए दुबेजी के प्रयास को सभी जानते हैं। मैं तो घनिष्ठ साथी होने के कारण ही दुबेजी को आर्टिकल 45 नाम से हास्य विनोद में ही पुकारा करता था, इसके पीछे मेरी सद्भावना इनके प्रति हमेशा बनी रही।

एक अन्य घटना का उल्लेख यहाँ करना चाहूँगा। 1991 में केंद्र में श्री नरसिंहराव जी के नेतृत्व में सरकार का गठन हुआ, जिसमें अर्जुन सिंह जी दूसरे वरिष्ठ नेता के रूप में मानव संसाधन मंत्री बनाये गये थे। इस समय मध्यप्रदेश में पटवा जी के नेतृत्व में एनडीए की सरकार थी। श्री रामेश्वर नीखरा जी ने सागर में शिक्षक कांग्रेस का एक विशाल सम्मेलन बुलाया, इसमें अर्जुन सिंह जी मुख्य अतिथि के रूप में आये थे। मुझे याद है कि इस विशाल सम्मेलन में लगभग आठ हजार शिक्षक प्रदेश के विभिन्न कोनों से आये थे। मैंने एवं श्री अंबिकाप्रसाद तिवारी ने शिक्षकों को चर्चा में लगाये रखा था, बीच में नीखराजी भी आ गये और उन्होंने भी अपनी बातें संक्षेप में कहीं। हम मंच पर बैठे पदाधिकारियों को नीखराजी ने धीरे से बताया कि भाई अर्जुन सिंह जी का हवाईजहाज कुछ देरी से पहुँच रहा है। मैं उन्हें लेने ढाना हवाईपट्टी पर जा रहा हूँ, हमें किसी प्रकार से भी शिक्षकों को शांत रखकर रोकना होगा। नीखराजी ने सम्मेलन में कहा कि प्रदेश के चारों कोनों से मुझे इकाई योजना एवं सतत मूल्यांकन के बारे में बहुत शिकायतें मिल रही हैं। मैं स्वयं भी इस योजना के बारे में बहुत अधिक नहीं जानता हूँ, किंतु हमारे सुरेन्द्रनाथ जी दुबे यहाँ मौजूद हैं, ये तो शिक्षक, प्रशिक्षक हैं और जिंदगीभर इनकी आदत रही है कि शिक्षकों की कम से कम 45 से 50 मिनट की क्लास ये लेते हैं। आज मैं



चाहता हूँ कि वे इकाई एव सतत् मूल्यांकन योजना पर विस्तार से हम सबको और शिक्षकों को बतायें। हम तो चाहते हैं कि अर्जुन सिंहजी आ भी जायें, तब भी दुबेजी अपनी क्लास न छोड़े और प्रत्येक शिक्षक को ऐसा लगे कि वह जान गया है कि यह योजना क्या है और इस तरह नीखराजी ने दुबे जी को निर्देश दिया कि आप भाषण नहीं दीजिए, पूरी क्लास लीजिये। उन्होंने कहा मैं बाद में आकर पूछूँगा कि लोगों ने आपकी बात को कैसे समझा। मैं उन क्षणों को स्मरण करता हूँ कि दुबेजी ने वास्तव में पूरे 50 मिनट की क्लास ली। अर्जुन सिंह आ भी गये, तब नीखरा जी ने हास्य में कहा, सर अभी दुबेजी की क्लास चल रही है, जरा इस क्लास को भी सुनकर देखे। दुबेजी ने एक-दो मिनट में ही उपसंहार करते हुए कहा कि शिक्षक के रूप में 50 मिनट की क्लास लेकर थक गया हूँ अब मंच नीखराजी के जिम्मे छोड़ता हूँ। इस दिन को मैं स्वयं भी खूब याद करता हूँ। वाह, दुबेजी इन्होंने तो मुझे भी बहुत कुछ सीखने-समझने का अवसर दिया था, जिसका फायदा मैंने आने वाले दिनों में खूब उठाया।

अर्जुन सिंहजी उन लोगों में से रहे हैं, जो संघर्ष करने वालों और जनहित की बात करने वालों की सुनते थे। उन्होंने दुबे जी की क्षमताओं को तथा शिक्षक कल्याण के प्रति उनकी लगन को पहचाना। बाद में दुबेजी लगभग ढाई वर्ष तक शास्त्री भवन, दिल्ली में शिक्षक कल्याण के कार्य के लिये प्रतिनियुक्त रहे तथा वहाँ उन्होंने शिक्षक कल्याण का कार्य करके एक इतिहास बनाया है।

दुबेजी ने सचमुच शिक्षा के अधिकार के लिए लंबी लड़ाई लड़ी है और भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश तथा भारत के पूर्व मानव अधिकार के अध्यक्ष श्री रंगनाथ मिश्रा ने जो राज्यसभा के सदस्य नामांकित हो गये थे, इनके प्रयासों की भरपूर प्रशंसा की। उन्होंने भी राज्यसभा एवं सरकार को 'शिक्षा का अधिकार' को लागू करने के लिए जोर देकर प्रयास किया। अंततोगत्वा आर्टिकल 45 संविधान का आर्टिकल 21 'ए' हो गया। मैं अपने इस दोस्त के शैक्षिक प्रयासों में स्वयं भी साक्षी रहा हूँ। आजकल दुबेजी अपनी बेटी जो पूर्व में जज रही हैं एवं नेशनल ज्यूडिशियल एकेडमी की प्राध्यापक भी रही हैं, के साथ मिलकर 'स्कूल शिक्षा पत्रिका' का लगभग 4 वर्ष से सफलतापूर्वक प्रकाशन एवं संपादन कर रहे हैं। इस तरह इन्होंने 1958 में बच्चों की शिक्षा के लिए कार्यरत रहने के लिए तथा भावी पीढ़ी का काम करने का जो वचन दिया था, उसका निर्वहन आज भी कर रहे हैं।

ईश्वर से प्रार्थना है कि आगे भी हम दोनों मिलकर तथा स्वस्थ रहकर भावी पीढ़ी के हित में कार्य करते रहें।

पूर्व प्रमुख महामंत्री, म.प्र. शिक्षक कांग्रेस  
एल.आई.जी. 180, हर्षवर्धन नगर, भोपाल, म.प्र.



## सर्व जन हितैषी दुबेजी

— रमेश चन्द्र जोशी

मैं मध्य प्रदेश के शासकीय प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक शिक्षक संघ से जुड़ा ही था तब मध्य प्रदेश तृतीय वर्ग कर्मचारी संघ के भोपाल में तत्कालीन अध्यक्ष स्व. नारायण प्रसाद शर्मा के माध्यम से मेरी श्री सुरेंद्र नाथ दुबेजी से भेंट हुई। गंगा प्रसाद गुप्ता जो कि व्याख्याता संघ के कर्ताधर्ता थे, ने भी दुबेजी से स्फूर्ति ग्रहण करने की प्रेरणा मुझे दी। तब मैं अपने राष्ट्रीय संघ की प्रांतीय कार्यकारिणी में संयोजक का दायित्व निर्वहन कर रहा था। कई विषयों पर चर्चा के लिये/सलाह के लिये दुबेजी से भेंट करता रहता था। श्री दुबेजी की सौम्यता, जीवटता और कर्मठता के कई संस्मरण हैं दो—एक दृष्टांत प्रस्तुत करना उचित लग रहा है।

प्रथमतः दिल्ली के जन्तर—मन्तर पर पूरे देश के शिक्षक “अखिल भारतीय शिक्षक संघ” के बैनर तले आयोजित धरने पर बैठे थे। जिसमें प्रत्येक प्रान्त से चयनित शिक्षक प्रतिनिधि एवं कार्यकारिणी के सदस्य सहभागिता कर रहे थे। मध्यप्रदेश से तत्कालीन अध्यक्ष कछवाहा के नेतृत्व में एकदल शामिल हुआ था, जिसमें मुझे चयनित किया था। इस धरने ने पूरे देश में शिक्षक—शिक्षा की एक ऐसी लहर उत्पन्न की, जिसने शासन को अपनी और देखने पर मजबूर कर दिया था। **उस समय दुबेजी मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन, नई दिल्ली व शिक्षक कल्याण प्रकोष्ठ में सलाहकार एवं वरिष्ठ अधिकारी के पद पर कार्यरत थे। सरकारी अनुशासन के कठोर आवरण की परिधि को लाँघ कर अपनी आत्मा की आवाज पर यह जानते हुये भी कि शिक्षकों के साथ दिखनेभर मात्रा से उनको कठोर प्रशासनिक जवाबदेही का सामना करना पड़ सकता है वे हमारे धरने स्थल पर उपस्थित हुये तथा लम्बे समय तक धरने पर बैठकर हम सबका उत्साहवर्धन किया। यह दृष्टांत इस बात का पुख्ता प्रमाण है कि दुबेजी की अन्तरआत्मा में ‘प्राथमिक शिक्षा की जड़ों में ही विश्वबंधुत्व का भाव है। “स्कूल शिक्षा” का यह उनका अनोखा सपना है जिसकी जड़ें शिक्षाविद् डा. चौरसिया के सानिध्य से उपजी। दुबेजी ने डॉ. चौरसिया के शिष्य रहकर बी. एड. किया। वे उन्हें अपना गुरु मानते रहे थे। डॉ. चौरसिया के साथ AIFEA के संचालन में दुबेजी की मुख्य भूमिका रही है। इस संगठन को सक्रिय बनाये रखने हेतु वे आज भी सक्रिय हैं। इस प्रकार भारतीय गुरु शिष्य परम्परा को कायम रखने में श्रेष्ठतम भूमिका का निर्वहन वे कर रहे हैं।**

दुबेजी शिक्षक हैं, शिक्षकों के लिये समर्पित हैं। शिक्षकों के द्वारा प्राप्त आमंत्रण पर मंत्रमुग्ध हो कर उनके हित में चल पड़ते हैं। ऐसा ही एक दृष्टांत बताना चाहता हूँ कि जब हमारे संगठन का प्रांतीय चुनाव मध्य प्रदेश के सागर जिले में आयोजित हो रहा था, उसमें राष्ट्रीय पर्यवेक्षक रामपाल सिंह, प्रांतीय अध्यक्ष हिन्दू सिंहजी आ चुके थे तथा दुबेजी को चुनाव अधिकारी नियुक्त किया गया था। शीतऋतु अपनी युवावस्था का मद बिखेर रही थी। दिल्ली ठंड से ठिठुर रही थी। लोग घर से बाहर निकलना भी नहीं चाहते थे। ऐसी विषम परिस्थिति में दुबेजी ने हमारा निमंत्रण स्वीकार किया तथा दिल्ली से ट्रेन द्वारा झाँसी रेलवे स्टेशन पहुँचे। हम सब ठंड से काँप रहे थे, तब भी दुबेजी ने हमको ढाँढस बँधाया और कहा “शिक्षक ही वह शक्ति है जो दृष्टांत बनता है।”

एक अवसर पर हमारे संघ के राष्ट्रीय महासचिव एस. ईश्वरन दिल्ली से आने वाले थे, हम उनके हवाईजहाज का भोपाल में इंतजार कर रहे थे। अचानक एक जहाज उतरा, हमने समझा कि ईश्वरनजी

की फ्लाइट होगी। हम दरवाजे पर माला लेकर खड़े हो गये किन्तु यह देखकर घोर आश्चर्य हुआ कि मानव संसाधन मंत्री माननीय अर्जुन सिंहजी अकेले अपने अंगरक्षक के साथ बाहर आ रहे हैं, न उन्हें रिसीव करने वाले कार्यकर्ता थे न प्रशासनिक अमला। वे द्वार से निकले और सबसे आगे मुझे माला लिये हुये देख रुक गये। मैंने माला उनके गले में पहना दी, हौले से मुस्कुराते हुये उन्होंने प्रश्न किया। किस संगठन से हैं आप लोग? मैंने तपाक से उत्तर दिया 'राष्ट्रीय प्राथमिक संघ'। सुनकर वे बोले —'हाँ' सुरेन्द्रनाथ दुबेजी ने आपके बारे में बताया था, कहते हुये आगे बढ़ गये आराम कक्ष की ओर। तब हमें मालूम पड़ा कि इन्हें इन्दौर में उतरना था, किन्तु मौसम की खराबी के कारणों से वे भोपाल उतर गये हैं।

मेरे कहने का तात्पर्य है कि दुबेजी ने अपने संगठनों के साथ-साथ सहायक संगठनों की प्रस्तुतियाँ भी उत्तम ढंग से करते रहे हैं जिसके कारण माननीय अर्जुन सिंहजी को भी उनके नाम का जिक्र करना उचित लगा। ऐसे सर्वजन हिताय के मंत्र सहित आज भी आगे बढ़ने को प्रेरित करने वाले दुबेजी को बारम्बार नमन करता हूँ तथा जय जगत् के लिए श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे के कार्यों के प्रति अपनी सद्भावना, शुभेच्छा प्रगट करता हूँ। बचपन बचाओ आंदोलन के श्री कैलाश 'सत्यार्थी' शिक्षक संगठनों से जुड़कर कार्य करते रहे हैं। जय हिन्द! जय जगत!!

पूर्व प्रांताध्यक्ष प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षक संघ, भोपाल



## An Ideal Teacher S.N.Dubey

Dr.O.P.Gupta

It is generally said that our ancient education system was excellent because of teachers like Vasist, Rishi Sandipini, Maharshi Vishvamitra, Maharshi Valmiki, Acharya Chanakya etc. They still hold high respect in our society, I am sure that some of the examples of ideal teachers still gives strength to the Indian culture and values and contributing regularly. The live example is of Mr. S.N.Dubey, who has completed the 75<sup>th</sup> year of golden springs on 26<sup>th</sup> January 2014, with his full strength and support to the school education system with his innovative ideas and with the high morals of society. A reputed bilingual magazine “School Shiksha” is regularly being published under his guardianship and guidance for the welfare of the society and with the spirit of universalization of education along with the quality education. It is important to say that he has written many articles, editorials and also books for the betterment of education. Thus he is really an ideal and noble teacher performing his duty sincerely.



I remember the year of 1986-87 when I came in contact of Mr. Surendra Nath Dubey, who was residing at that time on 6<sup>th</sup>. No. Bus Stop in Govt. Quarter, which was very near to Board Office Guest House of Bhopal, where I generally use to stay. He was working in SCERT as co-ordinator and was also devoted for the welfare of the teachers, as a Provincial vice-President of Madhya Pradesh Teachers Congress. I also joined the M.P Teachers Congress as its provincial secretary and was also working as a lecturer in school education, thus we both were working for the same cause and swimming in the same boat.

Mr. Dubey was not economically sound. But I saw that a crowd of teachers also remained round about him. He used his personal vehicle scooter and resources for helping the teachers. He also believes in positive attitude and thinking. He believes in “Simple living and high thinking”. He always encourages the aggrieved teachers by morally boosting his faith in the almighty God. I saw that he used to wipe the tears of the teachers and participate in the grievances of teachers. It is important to mention that for the welfare of teachers community of the country he left his home city and family and accepted the post in Shastri Bhavan (M.H.R.D.) in Teachers welfare foundation. He stayed in M.P. Bhavan, but at that time the room of Shri Dubey became the rest house of teachers and educationist. He very sincerely entertained the teachers and did the best possible hospitality.

From 1986 till date we are in close contact. He advised and helped me in opening the school, and establishing the pre-primary teachers training institute which is now running D.Ed., B.Ed. and M.Ed. I will not hesitate to say that these all activities became possible with the moral support of Shri. S.N.Dubey. I have high regard to this great personality.

Shri S.N.Dubey a great patriot saint, great thinker, ideal teacher leader and also a social reformer, which for him signifies man making, as the very mission of his life. He wants to



promote spiritualism perfection, divinity, self-reliance, universal brotherhood and faith through education.

Shri Dubey possesses all qualities of a good teacher such as high moral values, knowledge, communication skill, motivation, leadership, passion, creativity, researching, positive attitude, empathy and hardworking etc.

As regards his family, he belongs to a very pious Brahmin family of Mungaoali district Guna, Madhya Pradesh. His parents were also socially devoted. He has four brothers. His elder brother is retired from the high post of labor commissioner and his younger brother is a reputed neurologist of Bhopal. He is fortunate enough to have the well qualified daughters and son. His son in laws are also well reputed and always regards Mr. Dubey as a father and thus he is very happy with his family. His daughter-in-law is a consultant doctor in Max Hospital, Gurgaon. Dubeyji is living in Gurgaon with his son.

He is having good social relationship with highly reputed persons and believe in maintaining the relations sincerely. He was very close to Dr. G. Chaurasia the renowned educationist and founder of council for teacher education. The prominent personality and Ex-chief secretary Dr. Sharad Behar is also an inspiring and motivating personality. Many big personalities and educationist are in the close contact of Mr. Dubey, thus he is a well known figure. At present he is closely associated with the Indian National dignitary Mr. S.N.Subba Rao, the missionary worker. He is also participating in his mission. His wife Smt. Saroj Dubey is my Bhabhi and I always seeks her blessings and touch her feet.

I would say prosperous and joyful “Happy Birth Day”.

Chairman,  
Veena Vadini Teacher Training Institute Gwalior



**Veenavadini Teachers Training Institute, Gwalior**

## भावी पीढ़ी के निर्माण में शिक्षक की भूमिका

— पी. एन. शर्मा

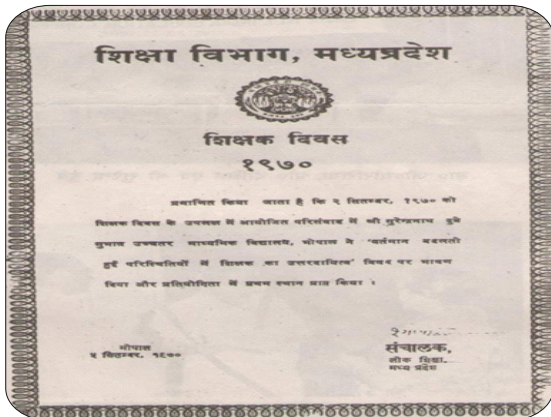
2 सितम्बर, 1971 को भोपाल के एक स्कूल के हॉल में शिक्षक दिवस (5 सितम्बर) के लिये आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला में एक राज्यस्तरीय परिसंवाद “भावी पीढ़ी के भविष्य निर्माण में शिक्षक की भूमिका” विषय पर आयोजित किया गया था। मैं तब सुभाष उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में था। श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे ने हम सबका प्रतिनिधित्व करते हुए भाषण दिया और कहा “माननीय अध्यक्ष महोदय, जब एक शिक्षक अपनी कक्षा में 40 या 45 मिनट के लिये पहुँचता है तो उसके सामने जो बच्चे बैठे होते हैं, उन्हें कक्षा में समाज ने एवं बच्चों के पालकों ने जिस अपेक्षा से भेजा है, उसे वह पूरा करे। शिक्षक का मुख्य दायित्व है कि वह अपने सामने बैठे हुये विद्यार्थियों के भविष्य के लिये जो कुछ कर सकता है, करे। दुबेजी ने कहा कि शिक्षक को उन 45 मिनटों में, अपनी पारिवारिक कठिनाइयों, प्राचार्य और साथी शिक्षकों से शाला प्रशासन की कठिनाइयों, विवादों तथा कटुताओं को भुलाकर कक्षा में प्रवेश करना चाहिये। आपके सामने जो बच्चे बैठे हैं वे आपकी कठिनाइयों, कुंठाओं एवं दैनिक जीवन के संघर्षों और विवादों से परे आपसे कुछ पाने की अपेक्षा लेकर आये हैं। आपका सारा व्यवहार उन सभी के प्रति प्रेम से ओतप्रोत सुअवसर आदर्श होना चाहिये, क्योंकि वे भोले-भाले हैं। आपको अपना ज्ञान, अपनी बुद्धिमत्ता को पूरे कौशल के साथ उनके सामने प्रस्तुत करना चाहिए। दुबेजी ने कहा कि उन बच्चों को आपकी परेशानियों से क्या लेना-देना है? वह तो भावी पीढ़ी का नागरिक है जो आपके सामने बैठा है। आप अपनी परेशानियों को 45 मिनट भूलकर केवल भावी पीढ़ियों के बारे में सोचिये, उनकी जिंदगी के बारे में सोचिये। इससे आपका कुछ नुकसान नहीं होगा फायदा ही होगा। एक बार आप क्लास में पहुँच ही गये हैं तो फिर आप अपने कर्तव्य का पालन करें, तभी आप सच्चे शिक्षक हैं।”

अब यहाँ यह उल्लेख करना जरूरी है कि शिक्षक दिवस के लिये यह राज्यस्तरीय सेमीनार था और इसमें दुबेजी को प्रथम पुरस्कार मिला। इससे बड़ा पुरस्कार इन्हें जो जीवन में मिला, वह यह था कि उस सेमीनार में जो तीन जज थे, उनमें से एक क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय (भारत सरकार) के भाषा विभाग के विभागाध्यक्ष थे। परिणाम घोषित हो चुके थे। चाय इत्यादि लेने के बाद उन्होंने दुबेजी को अलग से बुलाया, मैं भी दुबे जी के साथ था। उन्होंने कहा ‘बेटे, आज तुमने मेरी आँखों में आँसू ला दिये। मेरी सारी जिंदगी निकल गई। मैंने इससे अधिक भावनात्मक भाषण कभी नहीं सुना था’ और दूसरे निर्णायकगणों का भी यही मत था। दुबेजी को प्रथम पुरस्कार मिलने से ज्यादा खुशी उन जज महोदय की टिप्पणी से हुई।

5 सितम्बर को उन्हें केवल प्रथम पुरस्कार ही नहीं मिला अपितु राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान से तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री श्यामाचरण शुक्ल ने सम्मानित भी किया। इस अवसर पर मध्यप्रदेश के संचालक लोकशिक्षण (जो उस समय सबसे बड़े अधिकारी होते थे) श्री एस.पी. वर्मा भी उपस्थित थे तथा उन्होंने दुबेजी को अलग से बधाई दी।

—से. नि. प्राचार्य

शास. हाईस्कूल, 25वीं बटालियन, भोपाल



## शासकीय हायर सेकेण्डरी के व्याख्याताओं के राजपत्रित ओहदा पाने की कहानी

— एम.के. सक्सेना

वेतन आयोग की रिपोर्ट आने के पहले मध्यप्रदेश के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के व्याख्याताओं का वेतनमान 250—450 था तथा तहसीलदार का वेतनमान 240—440 था, लेकिन वेतन आयोग की रिपोर्ट आने के बाद केवल तहसीलदार ही नहीं, अनेक पदधारियों का वेतनमान 350—650 कर दिया गया और उन्हें राजपत्रित अधिकारी भी घोषित कर दिया गया। चूँकि व्याख्याताओं की संख्या 10 हजार से अधिक थी और प्रशासनिक सेवाओं के अधिकारी हमेशा की तरह इतने व्याख्याताओं को राजपत्रित करना ही नहीं चाहते थे, इसलिए उनके लिए इन्होंने वेतनमान 350—600 घोषित किया। व्याख्याताओं ने इसके लिए लंबी लड़ाई लड़ी, किंतु बेचारे राजनेता भी इन अधिकारियों के सामने कर ही क्या सकते हैं! और वह हुआ भी। उस समय डॉ. शंकरदयाल शर्मा प्रतिष्ठित सांसद और नेहरू मेमोरियल कमेटी के चेयरमैन थे। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि महान गांधीवादी श्री सुब्बारावजी की वजह से 1955 से ही दुबेजी डॉ. शंकरदयाल शर्मा के घनिष्ठ संपर्क में थे। उन्होंने दुबेजी के आग्रह पर व्याख्याताओं के बारे में तत्कालीन मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह को पत्र लिखा। अन्य कई राजनेताओं ने भी इसके लिए पत्र लिखे। बेचारे मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह की भी इच्छा थी कि कम से कम वेतनमान तो शिक्षकों को सही मिल पाये किंतु अधिकारियों की जिद थी कि कभी न कभी तो राजपत्रित और गैर राजपत्रित कर्मचारियों के वेतनमान में अंतर करना ही होगा।

स्व. श्रीमती प्रभा विजयवर्गीय तब व्याख्याता संघ की अध्यक्ष थीं और उन्होंने व्याख्याताओं को राजपत्रित अधिकारी घोषित करवाने के लिए खूब प्रयास किये। श्रीमती मुकुल बेनर्जी एवं डॉ. गुलाब चौरसिया के नेतृत्व में पूरे भारत के शिक्षकों ने दिल्ली में शिक्षा पर चर्चा की थी। चर्चा के बाद एक दल ने 21 फरवरी 1981 को प्रातः तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी से भी औपचारिक भेंट की, यद्यपि व्याख्याताओं की समस्या से देश के सारे भागों से आये हुये शिक्षक सहभागियों का कोई संबंध नहीं था। हाँ, स्व. श्रीमती प्रभा विजयवर्गीय अत्यंत साहसी महिला थीं उन्होंने एक मिनट के लिए इंदिरा गाँधी से अलग से बात कर ही ली और उनके हाथ में जो मेमोरेण्डम था, वो उन्होंने श्रीमती इंदिरा गाँधी को दिया, जो उन्होंने वहाँ उपस्थित श्री पी.एन. हक्सर को भी दिया और कहा कि इसे भी देख लें। श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे जो एक व्याख्याता थे, किंतु उस समय उनका व्याख्याता संघ से कुछ भी लेना—देना नहीं था, फिर भी श्रीमती प्रभा विजयवर्गीय ने दुबेजी को अपने साथ ले लिया। दुबेजी तो वहाँ ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ एजुकेशनल एसोसिएशन के सैक्रेटरी के नाते उपस्थित थे और शिक्षकों का यह सम्मेलन भी तो एआईएफईए का ही था। इस तरह इंदिराजी से भेंट करते समय दुबेजी भी साथ थे। दिल्ली से वापस आने के बाद श्रीमती प्रभा विजयवर्गीय ने बहुत प्रयास किये लेकिन सफलता हाथ नहीं लगी।

एक दिन श्रीमती विजयवर्गीय ने मध्यप्रदेश शासकीय व्याख्याता संघ से इस्तीफा दे दिया और बैठक में व्याख्याताओं से कहा कि मैं चाहती हूँ कि श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे को अध्यक्ष बना दिया जाये। शायद वे कुछ कर सकते हैं। दुबेजी ने जब यह सुना तो अध्यक्ष पद लेने से स्पष्ट इंकार कर दिया। काफी चर्चाओं के बाद दुबेजी ने कहा कि श्रीमती प्रभा विजयवर्गीय अध्यक्ष रहें और मैं केवल महामंत्री रहकर ही कार्य करना उचित समझूँगा।

## जय जगत

और दुबे जी ने यह शर्त भी रखी थी कि केवल मेरा प्रयास व्याख्याताओं को राजपत्रित पद दिलाने तक रहेगा और उसके बाद मैं संघ में काम नहीं करूँगा। दुबेजी ने इस शर्त के आधार पर ही पद ग्रहण किया।

दुबेजी ने अपने निजी संबंधों का फायदा उठाकर डॉ. शंकरदयाल शर्मा से पुनः अर्जुन सिंह जी के नाम पत्र प्राप्त कर लिया एवं श्री विष्णु राजोरिया, श्री अजीज कुरैशी एवं श्री सत्यनारायण अग्रवाल से भी मुख्यमंत्री के नाम औपचारिक पत्र प्राप्त कर लिए। श्री अर्जुन सिंहजी स्वयं चाहते थे कि व्याख्याताओं के साथ न्याय हो। आखिर में एक मीटिंग तय हुई तथा यह निर्णय हुआ कि उस बैठक में व्याख्याताओं को राजपत्रित होने की घोषणा की जायेगी। डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने उस बैठक की अध्यक्षता की तथा श्री अर्जुन सिंह की अस्वस्थता के कारण तत्कालीन शिक्षामंत्री श्री नाथूराम अहिरवार ने 18 अप्रैल 1981 को मुख्यमंत्री की ओर से व्याख्याताओं को राजपत्रित करने की घोषणा भी कर दी थी। वेदराम समिति ने भी इस घोषणा को मानने के लिए लिखा था। लेकिन शासन व्यवस्था ने इस सबके बावजूद समिति की सिफारिशों के सामने लिखा कि 'चूँकि व्याख्याताओं की संख्या बहुत अधिक है और इन्हें राजपत्रित अधिकारी नहीं बनाया जा सकता, इसलिए इन्हें ऊँचा वेतनमान भी नहीं दिया जा सकता।

इस बीच श्रीमती प्रभा विजयवर्गीय के नेतृत्व में श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे, स्व. श्री गंगाप्रसाद गुप्ता, मैं और श्री पी.एन. शर्मा ने अपनी बातें श्रीमती इंदिरा गांधी के सामने रखी। जैसा की सामान्य रूप से होता है, इंदिरा जी ने शायद मेमोरेंडम दस्तखत कर दिया होगा लेकिन श्री अर्जुन सिंहजी के चाहने के बाद तथा इंदिराजी की सिफारिश (दिनांक 20 जुलाई 1981 को राजभवन में दूसरी बार भेंट हो चुकी थी) के बाद भी व्याख्यातागण को राजपत्रित वेतनमान नहीं मिल सका। आज तो शास्त्री भवन से लेकर नीचे तक की शिक्षा व्यवस्था पर भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों की मनमानी चलती है।

श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे सद्कार्यों के लिए एक जिद्दी आदमी हैं, एक बार जो ठान लेते हैं उसे पूरा करके ही मानते हैं। भोपाल में दिनांक 13 फरवरी, 1982 को श्रीमती इंदिरा गाँधी भोपाल आई और वे 20 सूत्रीय कार्यक्रम के बारे में चर्चा करना चाहती थीं। हम 5 लोग ही पुनः उपस्थित थे। मेरे जीवन में ऐसा अजीब दृश्य मैंने कभी नहीं देखा था। श्रीमती इंदिरा गाँधी से तृतीय वर्ग कर्मचारी संघ के स्व. श्री नारायण प्रसाद शर्मा के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल मिला। मुझे अच्छी तरह याद है, इंदिराजी ने उनसे केवल एक मिनट बात की। फिर श्री शिखरचंद गोधा के नेतृत्व में वकीलों का एक प्रतिनिधिमंडल इंदिराजी से मिला और उन्होंने लगभग दो मिनट बात की। कई प्रतिनिधिमंडल मिल रहे थे तथा इंदिराजी ने उनसे एक या दो मिनट बात की। आज दुबेजी की यह जिद थी कि श्रीमती प्रभा विजयवर्गीय एवं हममें से कोई भी एक शब्द भी बीच में नहीं बोलेगा। दुबेजी ने हास्य-व्यंग्य में वायदा किया कि आज आप बीच में नहीं बोलेंगे तो आज हम राजपत्रित ओहदा पाकर ही बाहर निकलेंगे। दुबेजी ने इंदिराजी से मिलकर 20 सूत्रीय कार्यक्रम के प्रारंभिक शिक्षा की अनिवार्यता के सूत्र पर चर्चा करने की बात कही। इंदिराजी ने तुरंत कहा कि हाँ, मैं तो बीस सूत्रीय कार्यक्रम पर ही चर्चा करना चाहती हूँ। आप बताइये बच्चे स्कूल क्यों नहीं आते और बीच में स्कूल क्यों छोड़ देते हैं? इसलिए प्रारंभिक शिक्षा के लक्ष्य प्राप्त करना कठिन हो रहा है। बस यही तो दुबेजी को मालूम ही था कि उन्होंने तो बीस सूत्रीय कार्यक्रम की चर्चा करने के लिए सबको बुलाया था और दूसरे लोग केवल अपनी समस्याओं को लेकर बात कर रहे थे। इसलिए उन्होंने सबको जल्दी चलता कर दिया। पाठक विश्वास करें कि दुबेजी ने इंदिरा जी से जब चर्चा प्रारंभ की तब इंदिराजी ने हम सबको बिठा लिया और ध्यान से उनकी



बात सुनी। दुबेजी ने कहा कि आदरणीया जी, बच्चियाँ स्कूल क्यों नहीं आतीं और क्यों बीच में स्कूल छोड़ने के लिए बाध्य होती हैं इसके लिए मैं आपको विदिशा जिले के गुलाबगंज की एक घटना सुनाना चाहता हूँ। शायद उसके सुने बिना भारत की प्रधानमंत्री प्रारंभिक शिक्षा की समस्याओं को शायद हल नहीं कर पायेंगी। दुबेजी ने बताया कि महोदया मैं, गाँव में उस बहन से मिला जिसकी बेटा ने कक्षा पाँच में प्रथम स्थान प्राप्त किया था किंतु वह छठवीं कक्षा में भर्ती नहीं हुई थी। दुबेजी ने कहा कि मैंने उस माँ से जानना चाहा तथा कारण पूछा कि तुमने अपनी इतनी योग्य बच्ची को आगे की छठवीं कक्षा में भर्ती क्यों नहीं कराया। तब उस माँ ने जो कुछ कहा उसे दुबेजी ने प्रधानमंत्री इंदिराजी को भी सुनाया। वह यह था कि “मास्साब जा मोड़ी सयानी हो गई है, (उसने इशारे से कुछ बताया जो दुबेजी ने प्रधानमंत्री को भी यह कहते हुए कहा कि आप मेरी माँ तुल्य हैं मैं आपको बता रहा हूँ।) उस माँ ने बच्ची की ओर इशारा करते हुए कहा कि “जा मोड़ी की लाज ढकवे काजे उन्ना नइया, हम जाखो स्कूल कैसे भेज दयें।” उस समय वह लड़की एक फटी तोलिया बदन पर लिये थी। इसी को दुबेजी ने अंग्रेजी में भी इंदिराजी को सुनाया। “The girl was coming up in life but she did not have cloths to wear”। श्रीमती इंदिरा गाँधी की हालत देखने लायक थी। दुबेजी ने लगभग आँखों में आँसू भरकर इस सच्चे दृश्य का वर्णन किया था। तब इंदिराजी ने चर्चा में रुचि ली। दुबेजी ने कहा कि महोदया आप पूरे देश में यूनिफॉर्म अनिवार्य कर दीजिए और जो लोग यूनिफॉर्म के लिए पैसा नहीं जुटा सके, उनके लिए सरकारी सहायता से यूनिफॉर्म दीजिए। दुबेजी ने यह भी कहा कि भूखे बच्चों से यह अपेक्षा करें कि वह सारा दिन कक्षा में बैठकर पढ़ें तो यह बहुत कठिन है। तमिलनाडु के मिड-डे मीलस के प्रयोग पर भी दुबेजी ने चर्चा की। इंदिरा जी का कहना था कि अभी यूनिफॉर्म अनिवार्य करना और पूरे देश में मिड डे-मील्स की व्यवस्था करना एकदम संभव तो नहीं है, फिर भी केंद्र सरकार इस पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करेगी। बाद में पता चला कि श्रीमती इंदिरा गाँधी ने उसी समय गरीब बच्चों को यूनिफॉर्म देने के लिए 10 करोड़ रुपए मध्यप्रदेश सरकार के लिए खड़े-खड़े स्वीकृत कर दिये थे।

अब दुबेजी ने श्रीमती प्रभा विजयवर्गीय से कहा कि आप क्या कहना चाहती हैं? आप भी तो कुछ कहना चाहती हैं? श्रीमती प्रभा ने पुरानी दो मुलाकातों का हवाला देते हुए व्याख्याताओं को ऊँचा वेतनमान देने का ज्ञापन दिया। अब दुबेजी ने भी बीच में इंदिराजी से कहा तथा एक कागज उनके हाथ में दिया कि महोदया, जरा यह भी देखिये। एडिशनल चीफ सैक्रेटरी स्तर के अधिकारी लिख रहे हैं कि “चूंकि 10 हजार से अधिक व्याख्याताओं को राजपत्रित नहीं किया जा सकता, इसलिए इन्हें राजपत्रित के बराबर का नया वेतनमान देना भी उचित नहीं है।” दुबेजी ने इंदिराजी से कहा, महोदया, ये कौन सा लॉजिक है। इंदिराजी ने तुरंत बात को समझा और सामने खड़े अर्जुन सिंहजी को बुलाकर कहा “कैसी मूर्खतापूर्ण बातें अधिकारी लिख देते हैं, आप व्याख्याताओं को राजपत्रित ओहदा दीजिए और उन्नत वेतनमान भी दीजिए।” “अर्जुन सिंह जी ने तत्काल कहा— मेडम, आज ही आदेश कर दूंगा।”

दूसरे दिन सुबह शासन की ओर से घोषणा की गई कि व्याख्याताओं को उन्नत वेतनमान और राजपत्रित ओहदा दिया जा रहा है।

देखिए दुबेजी 75 वर्ष की आयु पूर्ण करने के बाद भी उनका यह दृढ़ विचार है कि बच्चों की शिक्षा के बारे में कुछ अधिकारी राजनेताओं को मूर्ख बनाते रहते हैं और बेचारे राजनेता समझ ही नहीं पाते कि सच्चाई क्या है। सूचना का अधिकार के अंतर्गत उन्हें जो सूचना प्राप्त हुई है, उसका उदाहरण देते हैं कि नवंबर 1965

## जय जगत

में श्री लालबहादुर शास्त्री ने मंत्री परिषद् में निर्णय करके इण्डियन एज्यूकेशन सर्विस बनाने का निर्णय लिया था तथा एक बिल संसद में प्रस्तुत करने का भी निर्णय हुआ था।

इसे प्रशासनिक अधिकारियों ने अपने अधिकारों पर कुठाराघात समझते हुए आज 2014 तक आइईएस का गठन नहीं हो पाया और दुबेजी को इसका लंबा इतिहास याद है। उनका यह मानना है कि प्रशासकीय सेवा के अधिकारियों के सामने लगभग सभी राजनेता बौने हैं और जो अधिकारी चाहते हैं वही होता है। इण्डियन एज्यूकेशन सर्विस (आइईएस (IES)) का गठन न हो पाना इसका एक उदाहरण है। दुबेजी एक उदाहरण और देते हैं कि एक राज्य सरकार ने तो 100 दिन में 'स्कूल शिक्षा आयोग' गठित करने का संकल्प व्यक्त किया था। वे व्यंग्य में कहते हैं कि 100 माह बीत जाने के बाद भी अपना वायदा भूल गये अधिकारियों ने उस संकल्प को हवा भी लगने नहीं दी। कभी-कभी अधिकारी कुछ अच्छे तर्क भी देते हैं, "वे कहते हैं कि राजनेताओं का काम तो ट्रांसफर और पोस्टिंग कराना रह गया है।" अधिकांश कर्मचारी भी तो अपने निजी कामों के लिए ही राजनेताओं से मिलते हैं, तो फिर भावी पीढ़ी की चिंता कौन करेगा? शायद इसीलिए भी अधिकारी अधिक स्वेच्छाचारी हो गये हैं। शायद वे यह समझने लगे हैं कि बच्चों की समस्याओं के बारे में वे ही सब कुछ जानते हैं।

सेवा निवृत्त  
जिला शिक्षा अधिकारी, बड़वानी, म.प्र.

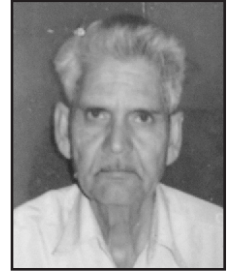


5 अक्टूबर 1966 को यूनेस्को ने स्टेटस ऑफ टीचर्स का जो संकल्प स्वीकृत किया था। उसकी प्रति प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी को प्रस्तुत करते हुए श्रीमती डॉ. प्रभा विजयवर्गीय एवं श्री सुरेन्द्र नाथ दुबे इसी अवसर पर शिक्षा, शिक्षकों एवं व्याख्याताओं की समस्याओं के संबंध में ज्ञापन प्रस्तुत किये।

## श्री सुरेन्द्र नाथ दुबे - शिक्षकों के लिए समर्पित व्यक्तित्व

-विजय गुप्ता

समाज में कुछ संवेदनशील, मानवीय गुणों से विभूषित एवं जुझारु नेता होते हैं, जो फल की चिन्ता न करते हुए काम करते जाते हैं। इन्हीं गुणों से विभूषित श्री सुरेन्द्र दुबे का मुझे विगत 30 वर्षों से सानिध्य प्राप्त है। आपके कार्य करने की अनूठी शैली, मार्ग-दर्शन एवं नेतृत्व की कला अनुकरणीय है।



श्री दुबे विगत 40 वर्षों से, शिक्षकों के हितों के लिये तथा भारत के संविधान के 'अनुच्छेद 45 के 6 से 14 वर्ष के बच्चों की अनिवार्य शिक्षा के प्रावधान के लिए' अपने खुले पत्रों के माध्यम से सभी को सचेत करते रहे हैं। आपके प्रयासों से शिक्षा के क्षेत्र में अनेकों सकारात्मक परिवर्तन एवं विशेष रूप से शिक्षकों का हित संवर्धन हुआ है।

पुरुस्कृत शिक्षकों के माध्यम से, श्री सुरेन्द्र दुबे ने अपने खुले पत्रों में लिखा है कि "हमें चाहिए कि हम शिक्षकों की संगठित शक्ति का उपयोग इस तरह करें जिससे सामाजिक पतन की नकारात्मक धारा को सकारात्मक उत्थान की ओर मोड़ा जा सके। अब बहुत दिनों तक हमें चुप नहीं रखा जा सकता और बहुत दिनों तक हमारी उपेक्षा भी नहीं की जा सकती है। अब शिक्षकों को ही समाज की अस्मिता की रक्षा करने के लिए संगठित और दृढ़प्रतिज्ञ होकर कार्य करना होगा।"

हमारे साथ ही श्री सुरेन्द्र दुबे का अब यह दृढ़ मत है कि "राजनीति को पथ भ्रष्ट करने तथा अपराधीकरण करने का मुख्य कार्य प्रिंट मीडिया और विजुअल मीडिया के द्वारा किया जा रहा है, आर्थिक अपराधी सबसे पहले इन पर कब्जा कर लेते हैं, और फिर राजनीति को इन्हीं माध्यमों से ही प्रभावित कर रहे हैं।

जुलाई 1983 को प्रथम सप्ताह में म.प्र. शिक्षक कांग्रेस के प्रान्ताध्यक्ष श्री रामेश्वर नीखरा ने दुबेजी से शिक्षा नीति पर आधार पत्र तैयार करने के लिए कहा था।

23 जुलाई 1983 को लगभग 20 हजार शिक्षकों की एक विशाल सभा में अ.भा. कांग्रेस के तत्कालीन महासचिव एवं सांसद श्री राजीव गांधी ने आधार पत्र से सहमत होते हुये, एक नयी शिक्षा नीति के निर्माण की आवश्यकता प्रतिपादित की थी।

5 जनवरी 1983 को प्रधानमंत्री के रूप में श्री राजीव गांधी ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के निर्माण की घोषणा की थी। तब से आज तक श्री दुबे ने अपने अनेकों ज्ञापनों के माध्यम से जो कार्य किया है उसका एक अनूठा इतिहास है। जिला शिक्षा संस्थानों की स्थापना, एन.सी.टी.ई. को वैधिक स्वरूप प्रदान करना, स्कूल कॉम्पलेक्स बनाने इत्यादि के 12 लेख एवं ज्ञापन श्री सुरेन्द्र दुबे ने तैयार किये थे। ये लेख श्री नीखरा जी एवं श्री धृतलहरे जी ने श्री के.सी. पंत तथा श्री नरसिंहराव जी को प्रेषित किये जिसके आधार पर शिक्षा नीति का प्रारूप तैयार करने में सहायता मिली।

श्री सुरेन्द्र दुबे प्रतिष्ठित गांधी वादी श्री एस.एन. सुब्बाराव के घनिष्ठ सम्पर्क में हैं। दुबेजी प्रदेश में शिक्षकों का नेतृत्व करते हुए देश के सबसे पुराने एवं महत्वपूर्ण शिक्षक संगठन ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ ऐजुकेशनल एसोसिएशनस के महासचिव एवं अध्यक्ष रहे हैं। आपके कार्यकाल में ए.आई.एफ.ई.ए. के 7 महत्वपूर्ण वार्षिक शिक्षा सम्मेलन आयोजित किए।

दुबे जी के अमृत उत्सव के शुभ अवसर पर अनंत शुभकामनाएं और हार्दिक बधाई।

विदिशा (म.प्र.)

### दुबे जी को शुभकामनाएँ

- महेश तिवारी

परम आदरणीय श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे से मेरे लगभग 25-30 वर्ष पुराने संबंध हैं। हम दोनों के बीच सेतु के रूप में स्वर्गीय श्री वीरेन्द्र मिश्राजी थे। दुबेजी के साथ तथा वीरेन्द्र मिश्रा के बारे में अनेक संस्मरण हैं। सबसे पहले मैं एक संस्मरण का उल्लेख करना चाहूँगा। दुबे जी शासकीय आवास क्रमांक एफ - 113/9 (नं. 6 स्टॉप) शिवाजी नगर, भोपाल में लगभग 30 वर्ष रहे। उनकी सेवानिवृत्ति के बाद मैं चाहता था कि उनका इतना अच्छा आवास मुझे आवंटित हो जाये। दुबेजी ने अपने प्रभाव का इस्तेमाल करके यह आवास मेरे नाम आवंटित करा दिया और उनके बाद मैं उस आवास में रहा।



मैंने देखा कि दुबेजी शिक्षक कल्याण के कार्यों के लिए श्री अर्जुन सिंह के सलाहकार के रूप में दिल्ली में भी कार्यरत रहे थे। शिक्षा के क्षेत्र में तो उनके अवदान की जितनी तारीफ की जाये उतनी कम है।

इस उम्र में भी जब पत्रिका के पाठकों का अकाल है, पत्रिका की लागत जुटा पाना भी कठिन है। तब दुबेजी निरंतर 'स्कूल शिक्षा' मासिक पत्रिका उत्कृष्ट श्रेणी के कागज व रचना सामग्री के साथ प्रकाशित कर रहे हैं।

उनके व्यक्तित्व के बारे में बहुत सी बातें भाई वीरेन्द्र मिश्रा बताया करते थे कि दुबेजी ने एक ईमानदार शिक्षाविद् रहते हुए, अपने छोटे भाई बहनों को भी जो उत्कृष्ट श्रेणी की शिक्षा दिलाई वह अत्यंत उल्लेखनीय है। जब इनके बड़े भाई साहब भारत सरकार की नौकरी में चले गये और पिताजी भी नौकरी में बाहर थे, तभी उक्त आवास गृह में अपनी माँ के साथ इनके पाँच छोटे भाई-बहन दुबेजी के साथ रहे। वीरेन्द्र भाई तो इन सबके बारे में बताते रहे। इनकी एक बहन चद्रकांता की शादी एक स्कूल शिक्षक स्व. श्री भगवत रावत से हुई थी, जो बाद में कालेज में प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष बने तथा ख्यातिप्राप्त प्रसिद्ध कवि रहे। दूसरी बहन शशिकांता की शादी डी एफ ओ स्व. श्री रमेशदत्त पुरोहित से हुई थी। तीसरी बहन शीलकांता ने बीएससी प्रथम श्रेणी में किया और उसका विवाह सागर के प्रसिद्ध बाल्य रोग चिकित्सक डॉ. मनोहर मिश्रा के साथ हुआ। इनके एक भाई राजेन्द्रनाथ ने बीएससी, एलएलबी करने के बाद कोल इंडिया में नौकरी की और सीनियर ऑफीसर के पद से सेवानिवृत्त हुए। इनकी एक बहन डॉ. कृष्णा ने मेडिकल कॉलेज भोपाल से स्त्री रोग चिकित्सा में स्नातकोत्तर करने के बाद जो प्रशंसा प्राप्त की वह उल्लेखनीय है। उनके पति डॉ. वी.के. शर्मा भोपाल मेडीकल कॉलेज के मेडीसिन विभाग के विभागाध्यक्ष के पद से रिटायर हुए। इनके एक अन्य भाई त्रिलोकीनाथ एमएसीटी से इंजीनियरिंग करने के बाद भाभा परमाणु केंद्र मुंबई के चीफ इंजीनियर के पद से अभी हाल ही सेवानिवृत्त हुए हैं। इनके सबसे छोटे भाई डॉ. टीएन दुबे विख्यात न्यूरोलॉजिस्ट हैं तथा उन्होंने बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त की है। अपने सभी छोटे भाई-बहनों को दुबेजी ने जिस तरह से पढ़ाया-लिखाया वह अत्यंत उल्लेखनीय है।

इतना ही नहीं दुबे जी ने अपनी तीन बेटियों और अपने पुत्र को उत्कृष्ट शिक्षा तो दिलवाई और बच्चों के विवाह भी अपने संकल्प के अनुसार किये। भाई वीरेन्द्र मिश्रा इन सब में दुबेजी के सहयोगी और साक्षी रहे। मैं ईश्वर से दुबेजी के स्वस्थ जीवन की कामना करता करता हूँ और चाहता हूँ कि उनका आशीर्वाद हमें लंबे समय तक मिलता रहे।

विधि समन्वयक म.प्र. भवन, नई दिल्ली



## यह तुम्हारे मामा का ही घर है

—डॉ. प्रशांत पाठक

वे अलग दिन थे, जब चिट्ठियाँ हाथ से लिखी जाती थीं, पोस्ट की जाती थी और बहुधा हाथ से ही भेजी जाती थीं। ऐसी ही एक हाथ से लिखी चिट्ठी अपने हाथ में लिए मैं राजधानी भोपाल की दिसम्बर-77 की एक सर्द सुबह शिवाजी नगर में मकान नं. 113/9 खोज रहा था।

मेरे गांधी चिकित्सा महाविद्यालय में प्रवेश के प्रारंभिक दिन थे, वैसे ही भय से भरे जैसे प्रथम वर्ष में हुआ करते हैं, विशेषकर जब रैगिंग परम्परा पराकाष्ठा पर हो। रविवार की सुबह हॉस्टल में भाग जाना ही श्रेयस्कर हुआ करता था और मैं उसी तरह भागा हुआ 6 नं. स्टॉप पर एक घर ढूँढ़ रहा था, हाथ में चिट्ठी लिए।

घर मिला, घंटी बजाई..... दरवाजा खुला.... “पापा तो घर पर नहीं हैं”। “ये चिट्ठी उन्हें देना थी”। बस चिट्ठी थमाकर मैं वापस हो गया। जावरा जैसी छोटी जगह से नितांत अपरिचित भोपाल में पिछले कई दिनों से अपनी कॉपी में सहेजकर रखी, अपने मामा शिव कुमार मिश्रा ‘रज्जन’ के हाथ की लिखी अपने एक मित्र के नाम की चिट्ठी अब मुकाम पर पहुँच चुकी थी और मैं पुनः अपने आतंकित कर देने वाले हॉस्टल में वापस था। अनजान अपरिचितों के बीच दिन गुजरते रहे। कई दिनों बाद रविवार की एक शाम मैं पुनः उसी घर के दरवाजे पर खड़ा सोच रहा था, घंटी बजाऊ या नहीं, पर अचानक दरवाजा बिना दस्तक या घंटी के खुला और निकलने वाले सज्जन और मैं लगभग टकरा ही गये होते अगर मैं पीछे न हटा होता।

आप कौन? यहाँ कैसे खड़े हैं? मैं लगभग घबरा ही गया और मेरे मुँह से सिर्फ इतना ही निकला “मैं प्रशांत.....”

उन्होंने मुझे दोनों हाथों से पकड़ा और भीतर खींचकर सोफे पर करीब-करीब गिरा ही दिया, मेरा गला सूख चुका था। “तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई, सरोज जरा देखना इसे ये रज्जन मिश्रा का भाँजा है, पिछली बार दरवाजे पर से ही चिट्ठी थमा कर भाग गया था”। तब तक घर के सभी सदस्य ड्राइंग रूम में आ चुके थे।

“देखो सबसे मिल लो, मैं घर पर उपलब्ध होऊँ या नहीं, तुम जब भी आओगे खाना खाए बिना वापस नहीं जाओगे समझे? मैं सहज होता तब तक खाना लग चुका था।

‘प्रशांत... हमारे और रज्जन मिश्रा के संबंध बहुत पुराने और प्रगाढ़ हैं, समझ लो ये तुम्हारे मामा का ही घर है।’ बस चंद ही क्षणों में मेरा ‘भोपाल-भय’ जाता रहा और जो सुरक्षा और अपनत्व की गरमाहट उस वक्त मैंने महसूस की वो वर्णनातीत है।

लगातार कई रविवार और अन्य छुट्टियों में यह क्रम चलता रहा। इस बीच मेरे साथ कई उतार-चढ़ाव आते रहे और कुछ दिनों में मेरी ओर से संपर्क लगभग टूट सा गया। मुझे बड़ा अपराध बोध सा होता था कि मैं मिल ही नहीं पा रहा था। पर फिर कई वर्षों बाद अचानक से मुलाकात हुई... उसी गर्मजोशी से, उन्होंने कहा “तुम्हारा बहुत दिनों का खाना ड्यू हो गया है”। मुझे लगा वर्षों का अंतराल एक क्षण में भर गया है। कुछ संबंधों की ऊर्जा वर्णन से परे होती है, ये रक्त संबंध नहीं होते, स्वार्थ पर आधारित नहीं होते, इनमें एक-दूसरे से कोई काम नहीं होता, सच पूछा जाए तो इन संबंधों की कोई वजह नहीं होती। पर ये बन जाते हैं और इन्हें सिर्फ महसूस किया जा सकता है न इनका आकलन होता है न ही गहराई नापी जा सकती है। संभवतः पूर्व जन्म के संबंधों की अवधारणा ऐसे ही जन्मी हो।

अनुप्रभा क्लिनिक 3—श्रीराम कुंजभरत नगर रोड,  
ई-8, शाहपुरा, भोपाल, मो. 9827003976

### मेरे पापा ...

—डॉ. अंजू वाजपेयी

मैं अपने माता पिता की तीसरी लड़की हूँ। जब पैदा हुई तो मम्मी को रोना आ गया लेकिन पापा ने तो खुशी जाहिर की। मम्मी से हमेशा सुनती हूँ कि जब मैं 10 दिन की थी गले में एक बड़ा फोड़ा हो गया था तो मम्मी-पापा दोनों डॉक्टर के सामने मुझे जल्दी से जल्दी ठीक करने की प्रार्थना कर रहे थे और बताया है कि मम्मी के आँसू थम ही नहीं रहे थे।

हम तीन बहनें हैं और एक छोटा भाई है फिर भी हमने घर पर कभी कोई भाई-बहन का अंतर महसूस नहीं किया बल्कि भाई तो पापा से यह जरूर कहता है कि आपको तो अपनी लड़कियों से ज्यादा प्यार है। धुंधली सी यादें हैं, बहुत छोटे थे पापा ने ब्रश करना, जीभी करना सिखाया था। कुछ भी खाने के पहले हाथ धोना, फल खाने के पहले धोना उन्हीं से सीखा है। इसी आदत की वजह से मैं भी अपने बच्चों को ठेले पर से कुछ खाने नहीं देती। बुआ, चाचा को भी बोलते सुना है कि जब हम कोई चीज खाने बैठते हैं तो भैया के हाथ धोने की बात याद आ जाती है, वो हमारे सामने नहीं होते हैं फिर भी हम हाथ धोते हैं और कई बार तो दो बार हाथ धो लेते हैं। जब कभी हम बीमार होते थे तो रात-रात भर जागते उन्हें देखा है, बार-बार आकर पूछते थे अब कैसी तबियत है।

दूसरी तरफ उनका कठोर स्वभाव भी याद है फिल्में देखना उन्हें पसंद नहीं है फिर भी संस्कारी फिल्में बाल हनुमान, जय संतोषी माँ उन्हीं ने हमें थियेटर में दिखाई थी। बड़े होने पर परिवार के दूसरे सदस्यों के साथ हमने छुपकर फिल्में देखी हैं। परिवार के बड़े व्यक्तियों के नाम बता देते थे तो डाँट नहीं पड़ती थी।

राखी के त्यौहार पर पूरे परिवार वाले हमारे घर खाना खाने आते थे और सब नये कपड़े पहन कर आते थे। मुझे आज भी याद है राखी पर हमारे नये कपड़े पहले से नहीं आ पाए थे तो राखी के ही दिन पापा मुझे और मेरी दीदी को लेकर सिटी गए और दोनों को एकसी फ्राक दिलाकर लाए। कितनी ही बार दशहरे पर स्कूटर पर बिठाकर दशहरा मैदान में दशहरा दिखाने ले गए।

एक ईमानदार स्कूल शिक्षक होने के नाते जितने संस्कार हम बच्चों को दे सकते थे, उन्होंने दिए। गर्मियों की छुट्टियों में अनगिनत अमर चित्र कथाएँ, बाल कल्याण और बच्चों से संबंधित अनेकों पुस्तकें पढ़ने के लिये लाते थे। हम नानाजी के घर जाते थे तो चारों बच्चों को एक-एक रजिस्टर दे दिया जाता था। उस पर तारीख लिखकर 1 पेज हिंदी, 1 पेज अंग्रेजी में लिखना आवश्यक था जिसका असर हमारी हस्तलेखनी पर पड़ा। पापा ने मुझे कभी न साइकिल सीखने से रोका, न स्कूटर चलाने से रोका, बल्कि हमेशा प्रोत्साहित किया। जब घर पर मारुति लेने की बात हुई तो हमारे पास जितना पैसा था हम उसमें एक पुरानी मारुति ले आए लेकिन पता चला कि वो खराब थी तो पापा ने बैंक में जाकर बात की अपने नाम पर लोन लिया और उसी दिन नई मारुति खरीद कर दी।

पापा की एक आदत है कि कोई भी व्यक्ति चाहे हमारा दूर का रिश्तेदार हो या मित्र उसको हमारे

घर में रुकना होता था। इसकी वजह से हमारे बासाहब (दादाजी) से पापा को कई बार डाँट भी खानी पड़ी है। पापा की वजह से ही हमने सीखा है कि तीन कमरों के एफ टाईप मकान जो हमेशा ही मेहमानों से घिरा रहता था, कैसे रहते हैं हाँलॉकि इसमें मेरी मम्मी का सहयोग भी बहुत महत्वपूर्ण रहा है। पापा किसी का काम करवाते थे तो उसे सख्त निर्देश देते थे कि मेरे घर कुछ लेकर मत आना मिठाई तक नहीं, बस चाय पीकर जरूर जाना। एक बार बस में एक व्यक्ति ने उन्हें बैठने की जगह नहीं दी, बाद में पापा ने बातों से उसको इतना प्रभावित किया कि वो पापा के साथ हमारे घर पर आए। हमारे यहाँ उन्होंने चाय नाश्ता भी किया और वे बहुत शर्मिदा हो गए उन्होंने अपने व्यवहार के लिए क्षमा माँगी।

पापा भाई—बहनों में दूसरे नंबर के हैं। उनके शिक्षकीय स्वभाव का असर उनके छोटे भाई—बहनों पर सबसे अधिक पड़ा और वे सभी पढ़ाई—लिखाई में काफी अच्छे रहे। मुझे पता है बी.एस.सी. करने के बाद सबने मुझे एम.एस.सी. करने को कहा पर मैं एलएल.बी. करना चाहती थी। पापा ने मुझे सपोर्ट किया, क्योंकि (दादाजी) बासाहब भी तो चाहते थे कि मैं एलएल.बी. करके जज बनूँ और उनके आशीर्वाद से मैं बनी भी।

पापा ने हमेशा भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। ये उनकी पढ़ने की आदत की वजह से। उनकी यह आदत कुछ हद तक हममें भी आई है। उसका फायदा हमें शिक्षा के दौरान मिला। यह पत्र मैं पूरे परिवार की ओर से लिख रही हूँ इसलिये बताना आवश्यक है कि उनके और मम्मी के सहयोग एवं बड़ों के आशीर्वाद से हम समाज के जो चार मुख्य व्यवसाय होते हैं हम चारों भाई—बहन पा सके। सबसे बड़ी बहन शिक्षिका, दूसरी डॉक्टर, मैं पहले वकील फिर जज, बाद में नौकरी छोड़ कर फिर वकील तथा छोटा भाई इंजीनियर बना।

मुझे याद है जब हम सब अविवाहित थे हमारे पड़ोसी बोला करते थे आप मकान कैसे खरीद सकते हैं आपके घर में तो एचआईजी, एमआईजी और एलआईजी तीनों ही हैं। लेकिन पापा ने ऐसा कभी नहीं माना और प्रण किया कि वे चारों बच्चों की शादी बिना दहेज दिए या लिए करेंगे और उन्होंने ऐसा किया भी। मेरे बड़े जीजाजी जिनके पापा, दादाजी के दोस्त थे और पापा का नाम लेते थे क्योंकि वो पापा को छोटा भाई मानते थे, वो इतने सरल और सौम्य थे कि सगाई के वक्त उन्होंने पापा से कहा सुरेन्द्र तुम्हें सूखे मेवे, मिठाईयां या फल अलग से खरीदने की जरूरत नहीं है, जो हम सुबह ओली में लेकर आएँगे उन्हें ही शाम को फलदान में ले आना। रेणु दीदी की सास ऐसी है कि शायद ही आपने ऐसी सास देखी या सुनी होगी जो माँ से भी बढ़कर हैं। दीदी की देवरानी जब शादी होकर आई तो पापा ने कहा कि अब हमारी चौथी बेटी आ गई तो वो और दीदी के देवर वैसा ही रिश्ता आजतक निभाते आ रहे हैं।

मेरी दूसरी डा. रूपम बहन के सास—ससुर अपनी बेटी के घर का पानी तो नहीं पीते थे लेकिन यदि हम लोग उनके घर पहुँच जाये तो जिद करके प्यार से बैठकर खाना खिलाते थे। वो लोग आज नहीं है लेकिन आज दीदी के जेठ—जेठानी और देवर—देवरानी हमारे मम्मी—पापा को अपने मम्मी—पापा की तरह मानते हैं।

कभी—कभी हमको जलन होती है क्योंकि हमारे पापा हमारी भाभी को हमसे ज्यादा प्यार करते हैं।

## जय जगत

वैसे हमें खुशी है कि वो हमसे ज्यादा हमारे पापा का ख्याल रखती है। मेरा भाई भी मेरे मम्मी-पापा का बहुत ख्याल रखता है, वो उनके बिना एक दिन भी नहीं रहता। मेरे पापा की बाइपास सर्जरी के समय उसको कंपनी की तरफ से दूसरी बार लंदन भेजा गया था वो उस दिन उनके साथ अस्पताल में नहीं था इसलिए उसने वो नौकरी ही छोड़ दी। मेरे भाई की दोनों लड़कियाँ अपने दादा-दादी की जान हैं। भाभी के मम्मी-पापा भी बहुत अच्छे इंसान हैं उन्होंने अपनी डाक्टर बेटी को बहुत अच्छे संस्कार दिए हैं। भाई ने प्रेम विवाह किया है लेकिन हमारे बासाहब के आशीर्वाद से। हम यदि ढूँढ़ते तो भी हमें इतनी अच्छी भाभी नहीं मिल सकती थी।

मेरे बड़े जीजाजी एक बड़े वकील है तथा दीदी कॉलेज में अध्यापिका हैं। उनका बेटा इंजीनियर बनने जा रहा है। बेटी वकील बनने की परीक्षा की तैयारी में है। दूसरी दीदी डॉक्टर हैं और जीजाजी इंजीनियर हैं। उनके दोनों पुत्र नौवीं और आठवीं कक्षा में अध्ययनरत हैं। मेरी जुड़वा बच्चियाँ भी स्कूल में पढ़ती हैं। मेरे पति एक डॉक्टर तथा राजनीतिज्ञ हैं तथा ससुर रिटायर्ड इंजीनियर शिक्षक। ये मेरा भाग्य है कि मैं एक स्कूल शिक्षक की पुत्री और कॉलेज शिक्षक की बहू हूँ। मेरी ननद भी डॉक्टर है और शिक्षिका बनने की तैयारी कर रही है। उसके पति चिकित्सक शिक्षक हैं, मेरे देवर-देवरानी अमेरिका में निवासरत इंजीनियर हैं। भाई इंजीनियर तथा भाभी हमारी डॉक्टर है। उनकी दोनों लड़कियाँ पहली और छठवीं में पढ़ती हैं।

बिना मेरा ननिहाल का जिक्र किए यह लेख अधूरा है। मेरी मम्मी अपने घर की सबसे बड़ी लड़की हैं। पापा को नानी के हाथ के मैथी की भाजी के पकौड़े बहुत पसंद हैं। आज तो नानी चल फिर नहीं सकती पर जब तक उनके हाथों में बनाने की ताकत थी पापा कितने भी बजे मेरे ननिहाल पहुँचे वो गरम-गरम पकौड़े बनाती थी। मेरे नानाजी बहुत सीधे सज्जन पुरुष थे, उन्होंने अपने अंतिम समय के कुछ दिन पहले तक (84 वर्ष तक) नौकरी की थी। उनका अंतिम समय हमारे घर में बीता और हमारे पास रहते हुए उन्होंने अंतिम साँस नवदुर्गा के दिनों में मौसी की लड़की एक छोटी कन्या के हाथ से जल पीकर ली। मेरी बड़ी मौसी राजेश्वरी बबेले स्कूल में अध्यापिका हैं। मौसाजी अरुण कुमार बबेले कलेक्ट्रेट से सेवा निवृत्त हैं। पापा उन्हें छोटे भाई की तरह मानते हैं। एक बार वो बहुत बीमार हो गए थे, मम्मी-पापा ने समय पर पहुँचकर उनका इलाज कराया था। आज वो एकदम स्वस्थ हैं। मेरे मम्मी के दो भाई हैं। छोटे मामा डॉ. दिनेश पटैरिया ने इंदौर से बी.ए.एम.एस. किया है। जब वो पढ़ते थे, उनका हमारे घर में ज्यादा आना-जाना था। वो मम्मी के चाचा के लड़के हैं। लेकिन बहुत बड़े तक हमें यह पता ही नहीं था। पापा का उनके प्रति कुछ विशेष स्नेह है। मेरे बड़े मामा श्री जगदीश पटैरिया मेरे नानाजी की तरह सीधे-सच्चे हैं। नानाजी की तरह ही बैंक की नौकरी से सेवा निवृत्त हुए हैं। मेरे सबसे छोटे मौसाजी श्री गिरीश द्विवेदी सरल स्वभाव के हैं, वे नौकरी करने के साथ-साथ अच्छे लेखक भी रहे हैं।

हमारे परिवार के साथ हमारे ईमानदार, कर्मठ, पिता का साथ है और हमेशा बने रहे ऐसी हमारी कामना है।

पूर्व न्यायाधीश, ई-114/1, शिवाजी नगर, भोपाल



## जीवनगाथा चित्रों में

अमृत महोत्सव- सुरेन्द्रनाथ दुबे



पिता पं. बैजनाथ प्रसाद दुबे एवं मां श्रीमती जानकी देवी दुबे



सुरेन्द्रनाथ दुबे अपने भाईयों के साथ सर्वश्री महेन्द्रनाथ दुबे, राजेन्द्रनाथ दुबे, त्रिलोकीनाथ दुबे, डॉ. त्रिभुवननाथ दुबे।



पिता पं. बैजनाथ प्रसाद दुबे, एवं मा श्रीमति जानकीदेवी दुबे एवं पांच भाई एवं उनके पुत्र-पुत्रियाँ। महेन्द्रनाथ दुबे पत्नि शीला दुबे – तीन पुत्रियां एवं एक पुत्र- ममता, दिव्या, प्रियंका एवं आशीष। सुरेन्द्रनाथ दुबे पत्नि श्रीमति सरोज दुबे – तीन पुत्रियाँ एवं एक पुत्र- रेणु, रुपम, अंजु एवं अरविंद। राजेन्द्रनाथ दुबे पत्नि श्रीमति संध्या दुबे – एक पुत्री एक पुत्र- अभिषेक एवं पूर्वा। त्रिलोकीनाथ दुबे पत्नि रश्मी दुबे – दो पुत्रियाँ- मिनी एवं शुभी। डॉ. त्रिभुवननाथ दुबे पत्नि डॉ. रंजना दुबे दो पुत्र- आयुष एवं शुभम।

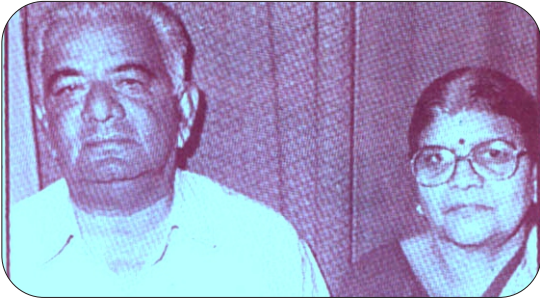


पं. बैजनाथ प्रसाद दुबे एवं श्रीमती जानकी देवी दुबे

FATHER AND MOTHER OF MR. S.N. DUBEY



## दोनों चाचा-चाचियाँ



स्व. पं. ओंकारनाथ दुबे एवं श्रीमती शकुंतला दुबे।

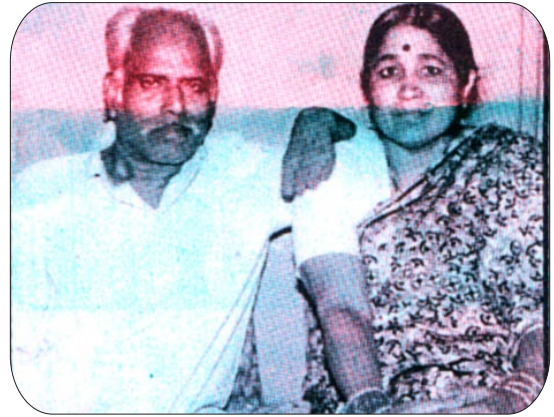


श्री बद्रीनाथ दुबे एवं श्रीमती तारा दुबे।

## चार बहिनें एवं चार बहिनोई



चंद्रकांता रावत एवं स्व. भगवत रावत।



स्व. रमेशदत्त पुरोहित एवं शशि पुरोहित।



डॉ. एम.एल. मिश्रा एवं शीलकान्ता मिश्रा।



डॉ. व्ही.के. शर्मा एवं डॉ. कृष्णा शर्मा।



चार पीढ़ियाँ - श्रीमती शांति देवी, उनकी पुत्री श्रीमती सरोज (पत्नि सुरेन्द्र दुवे),  
उनकी बड़ी पुत्री डॉ. रेणु मिश्रा, उनकी पुत्री पल्लवी मिश्रा



लक्ष्मण झूला ऋषिकेश में  
पुत्र चिरंजीव अरविंद गोदी में



लक्ष्मण झूला पर ही उसके ठीक 31 वर्ष बाद  
चिरंजीव अरविंद की बेटी लावण्या गोदी में





ज्येष्ठ पुत्री डॉ. रेणु मिश्रा, पति श्री अजय मिश्रा,  
पुत्र चि. आदित्य एवं पुत्री पल्लवी।



द्वितीय पुत्री डॉ. रूपम शर्मा, पति श्री लोकेश शर्मा,  
दो पुत्र चि. अपूर्व एवं हर्ष।



तृतीय पुत्री डॉ. अंजू बाजपेयी, पति डॉ. हितेश बाजपेयी  
पुत्रियां— श्रावणी एवं पावनी।



पुत्र चि. अरविंद, पुत्र वधु डॉ. नलिनी, पुत्रियां— लावण्या  
एवं सुरम्या सुरेन्द्रनाथ दुबे एवं श्रीमती सरोज के साथ।



सुरेन्द्रनाथ दुबे एवं श्रीमती सरोज अपने परिवार के साथ।



पल्लवी, डॉ. नलिनी, चि. अरविंद एवं चि. आदित्य।



श्री सुब्बाराव जी एवं श्री माधवाचार्य जी।



श्री सुब्बाराव जी डॉ. अंजू के शुभविवाह के अवसर पर।



श्री सुब्बाराव जी का आशीर्वाद।



वि. अरविंद एवं डॉ. नलिनी के शुभ विवाह के अवसर पर श्री सुब्बाराव जी का आशीर्वाद।



श्री माधवाचार्य जी एवं सुरेन्द्र दुबे अपनी पौत्री के साथ।



अमरकंटक में श्रीमती सरोज, डॉ. अंजू, श्री रामेश्वर नीखरा, पिता पं. बैजनाथप्रसाद दुबे एवं सुरेन्द्र दुबे।





Retd. from service  
on 31 Jan 2001

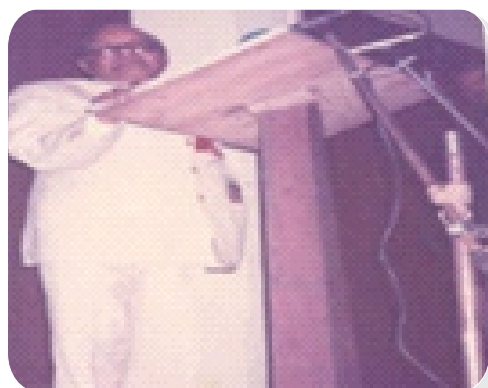


Entered in Social service



स्कूल शिक्षा की तृयी

सुरेन्द्र दुबे की पुस्तक इन सर्विस एजुकेशन फॉर टीचर्स का विमोचन करते हुए डॉ. जी. चौरसिया एवं श्री एस.सी बेहार।



राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986 पर अपना आलेख राष्ट्रीय सेमिनार में प्रस्तुत करते हुए सुरेन्द्र दुबे।



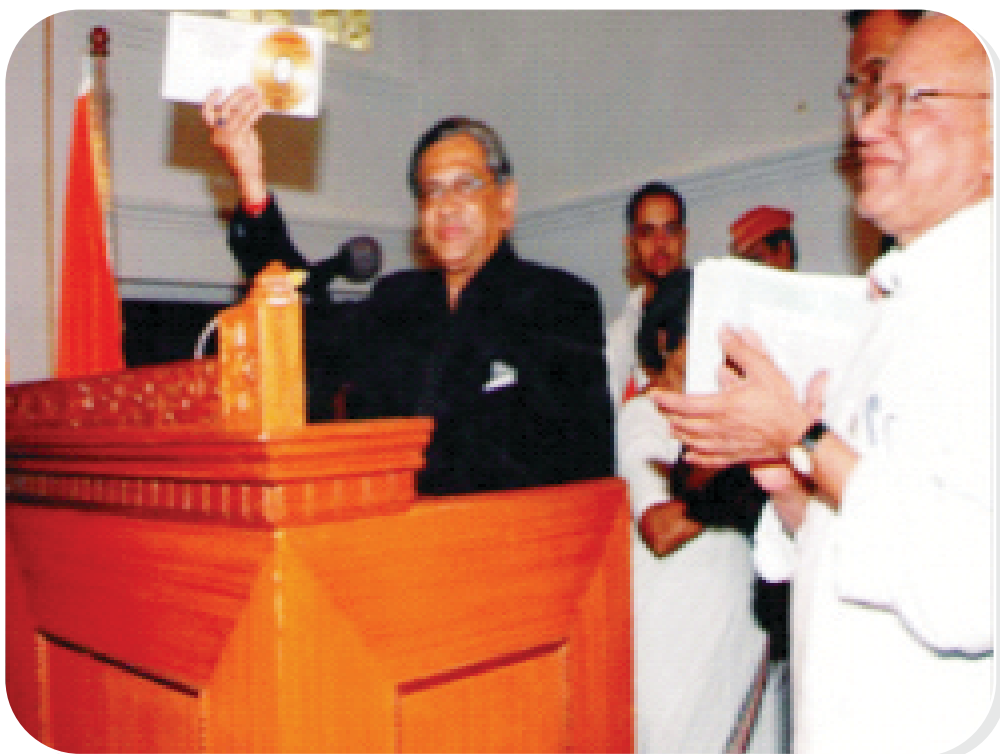
My Mentors in school days.

बड़े भाई महेन्द्र नाथ दुबे एवं श्री मधुकिरण केनिया





नवम् विश्व पर्यावरण महा सम्मेलन को संबोधित करते हुए श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे।



श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे ने श्री एस.एन. सुब्बाराव जी पर एक 30 मिनट की डाक्यूमेंट्री का निर्माण किया। जिसका विमोचन महाराष्ट्र के तत्कालीन राज्यपाल ने बंबई में एक समारोह में किया।





डॉ. शंकरदयाल शर्मा द्वारा राष्ट्रपति पद की शपथ लेने के तत्काल बाद उनसे चर्चा करते हुए श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे।

राष्ट्रपति डॉ.शंकरदयाल जी शर्मा से चर्चा करते हुए सुब्बाराव जी, सुरेंद्र दुबे साथ में।



Award of excellence



श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे को विश्व अहिंसा सम्मान साप्ताहिक निर्दलीय की ओर से।



स्व. श्री गंगा प्रसाद गुप्ता के साथ



द्योमपुर सम्मेलन



माउन्ट आबू में





## जय जगत



5 नवंबर 2002 को अपनी स्वरचित पुस्तकें भेंट की।



वित्त आयोग के अध्यक्ष से ज्ञापन पर चर्चा।



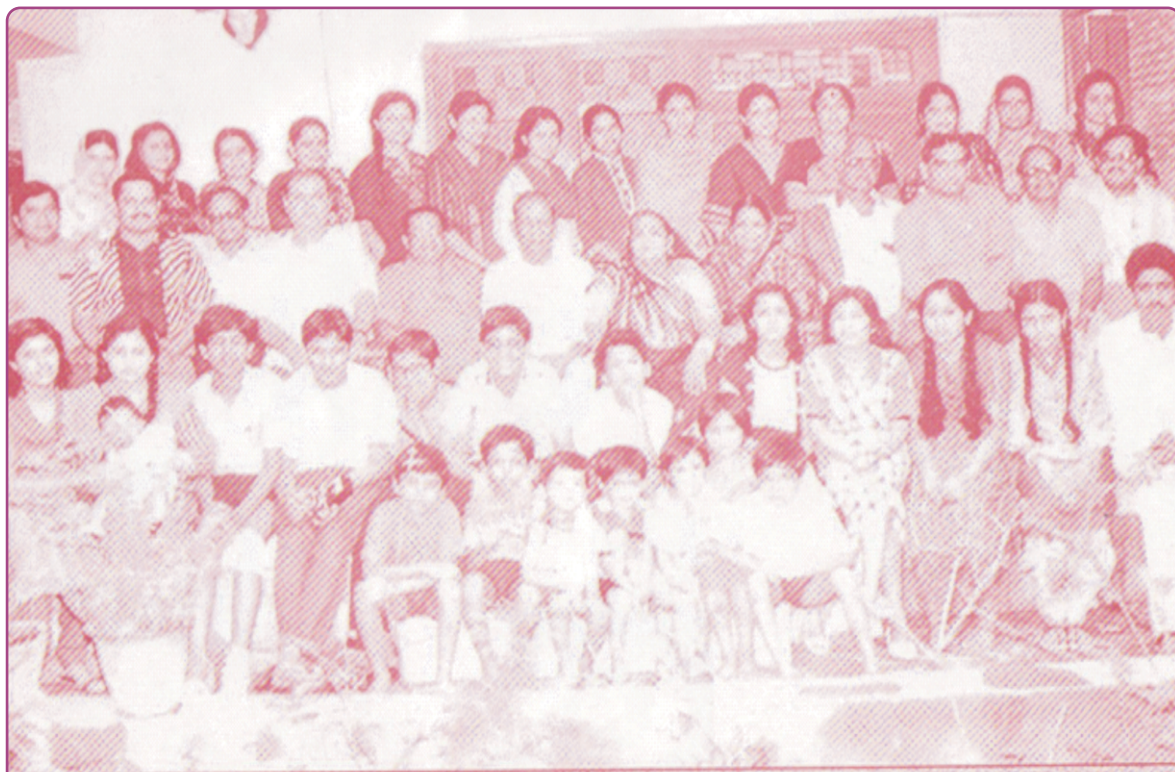
वि. त्रिभुवन- डी.एम.(ब्यूरोलाजी)की डिग्री प्राप्त करते हुये।



एस.एन. सुब्बाराव जी के साथ पूर्व मुख्य सचिव म.प्र. श्री शरद चंद्र बेहार (जन्मदिन 31 जनवरी 2011 को), श्री एस.एन. दुबे, संपादक स्कूल शिक्षा और एड-एट-एक्शन संस्था के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री प्रवीण भोपे।







अपने परिवार के साथ

परिवार के साथ



पाँच पुत्रों के साथ



पाँच पुत्रवधूओं के साथ



मामा जी श्री  
रामागोपाल शुक्ला ।



मामा जी श्री  
कृष्ण गोपाल शुक्ला ।



## जय जगत



टीकमगढ़ में



लक्ष्मण झूला घर



लंदन में



लंदन में चि. में आशीष-पल्लवी



जन्म : 1893

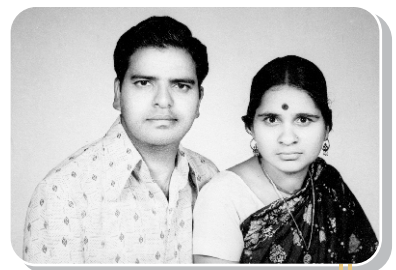
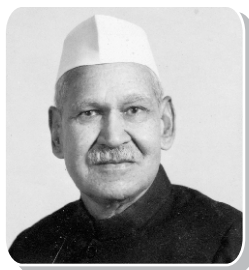
देहावसान : नवम्बर 1983 एकादशी

शिक्षा के लिए आजीवन सर्मर्पित श्रेष्ठ लेखिका एवं ख्याति प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षिका  
स्व. श्रीमती राजकुँवर देवी को स्कूल शिक्षा परिवार की ओर से सादर नमस्



भारत मां के दो महान सपूत







## जय जगत



महेन्द्र नाथ दुबे को 26 जनवरी  
(जन्म दिवस) पर आशीर्वाद देते हुए  
उनके पिता पं. बैजनाथ प्रसाद दुबे  
एवं माँ जानकी देवी दुबे



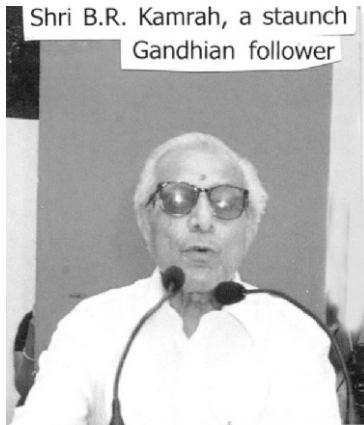
महेन्द्र नाथ दुबे अपने घनिष्ठ मित्र श्री मधुकिरण पी. केनिया (प्रशासनिक  
न्यायाधिपति इलाहाबाद उच्च न्यायालय), श्रीमती विमला केनिया तथा  
अपने पिता बैजनाथ प्रसाद दुबे के साथ



श्री अर्जुन सिंह, तत्कालीन मुख्यमंत्री म.प्र.शासन, श्री सुरेन्द्र दुबे को अभिनन्दन पत्र देते हुए  
16 अगस्त, 1988 - संफिया कॉलेज, भोपाल



ए.आई.एफ.ई.ए. के महासचिव एस.एन. दुबे सम्बोधित करते हुए।



Gandhian in thought, words and deeds

गुड़गांव में 11 सितंबर, 2014 को विनोबा जयंती के अवसर पर श्री बलदेव कामराह जी ने इंस्टीट्यूट के स्टाफ और विद्यार्थियों को संबोधित किया। इस अवसर पर स्कूल शिक्षा के संपादक श्री सुरेन्द्र नाथ दुबे जी ने विनोबा जी के जय जगत के बारे में संबोधित किया।



### सुब्बाराव एक यायावर महर्षि

भारतवर्ष में जब वर्षा होती है तो वे प्रतिवर्ष संयुक्त राज अमेरिका जाते हैं, विगत 31 वर्षों से वे लगातार वहां जा रहे हैं और वहां चौमासा व्यतीत करके युवा शिविरों को उन्होंने सफल आयोजन किया है। दिनांक 5 सितम्बर 1995 को सुब्बाराव जी प्रातः शिक्षकों की एक बैठक में यूएसए से सीधे आकर प्रेस क्लब ऑफ इंडिया, नई दिल्ली के हॉल में शिक्षक दिवस के अवसर पर शिक्षकों के बीच उपस्थित हुए। उनके सम्मान में जो अभिनंदन प्रस्तुत किया गया था। वह अबिकल रूप में प्रस्तुत है।

### श्री सुब्बाराव जी को अभिनंदन पत्र

भारतवर्ष तो सदा से ही महापुरुषों की निधि रहा है, यह वह निधि है जो कभी पराभूत नहीं होती। जिसे किसी भी विप्लवकारी शक्ति का भय नहीं होता है। आधुनिक समय में इन महर्षियों की संख्या बहुत कम हो गई है, किंतु ईश्वर की कृपा से यत्रतत्र तो इनकी उपस्थिति बनी हुई है।

श्री एसएन सुब्बाराव जी आधुनिक भारत के ऐसे ही एक यायावर महर्षि हैं। श्री सुब्बाराव में अविनाशी ब्रह्म तत्व की अनुभूति करने के लिए शारीरिक एवं मानसिक दोषों के सोधक, असाध्य किंतु ब्रह्मर्षि मुनियों द्वारा अनुमोदित कठिन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया है। श्री हार्डिकर जी के सानिध्य में उनके आदर्शों से प्रेरणा प्राप्त करके उनके जीवन से सेवा तथा युवा शक्ति के बीच काम करने के भाव को ग्रहण कर अपना जीवन व्यवहार प्रारंभ किया।

‘अनुभूत’ ज्ञान को केवल अपने अंतःकरण तक सीमित रखना अन्यत्र उसका प्रचार व प्रसार न करना यह भव अत्यंत निन्दनीय है, अतएवं सुब्बारावजी ने प्रारंभ से अपने सत्यानुभवों को न यी पीढ़ी तक पहुंचाने का कार्य प्रारंभ किया। कर्म और ज्ञान का समन्वय करके युवाशक्ति के माध्यम से जनकल्याण का मार्ग चुनने वाले इस व्यक्तित्व को अपने ध्येय में भारी सफलता प्राप्त हुई है।

श्री सुब्बाराव आज इस देश के ऐसे महान व्यक्ति हैं जिन्होंने भारत वर्ष के सभी अंचलों में भ्रमण करके युवा आंदोलनों को एक नया स्वरूप प्रदान किया है। देश का शायद ही कोई ऐसा अंचल बाकी होगा जहां सुब्बाराव जी के मित्र न होंगे। बालकों एवं युवाओं में सहज रूप से कुल मिल जाने के कारण आपको विशिष्ट ख्याति प्राप्ति हुई है। उनके सुमधुर कंठ से गाये गये देश भक्ति के गीतों ने बालकों, युवाओं एवं प्रौढ़ों को समान रूप से प्रभावित किया है। अधिकांश गायक स्वयं ही गाते हैं किंतु सुब्बाराव ही ऐसे विरले व्यक्ति हैं जो अपने गाने स्वयं ही गाते हैं किंतु सुब्बाराव ही ऐसे विरले व्यक्ति हैं जो अपने गायन सभी में सभी श्रोताओं को शामिल कर लेते हैं और इस तरह उनका गायन मुख्य रूप से सामूहिक गायन होता है, इसीलिए इनके गीतों का प्रभाव भी स्थायी होता है। आज इस देश में लाखों नौजवान ऐसे हैं जिन्होंने सुब्बाराव जी के जीवन से प्रेरणा प्राप्त की है। श्री के.सी. रेड्डी ने कहा था – “जब कभी मन में निराशा होती है तब श्री सुब्बाराव जी हमारे लिए आशा की एक किरण के रूप में दिखाई देते हैं और हमें विश्वास होने लगता है कि जब इन जैसा व्यक्तित्व इस देश में मौजूद है हमें निराशा होने की आवश्यकता नहीं है तथा भारत का भविष्य उज्ज्वल है।”

श्री एस.एन. सुब्बाराव ने 1950 से 1969 तक ‘अखिल भारतीय सेवादल’ के माध्यम से सारे देश में युवाशक्ति को जो प्रेरणा दी है वह इतिहास का एक स्मर्णिम पृष्ठ है। उनके सौम्य व्यक्तित्व का एक अनूठा उदाहरण है कि जब पंडित जवाहरलाल नेहरू पार्टी के मुख्यालय में आते थे, तो सुब्बाराव जी को देखते ही प्रसन्न हो उठते और अपने इस नौजवान मित्र से गीत गाने की मांग कर बैठते थे। लोगों ने बताया है कि नेहरूजी कितने ही गुस्से में क्यों न हो सुब्बाराव को सामने देखते ही गुस्सा दूर हो जाता था।

उन्होंने जौरा, जिला मुरैना में एक आश्रम की स्थापना की और इसके माध्यम से एक अंतर्राष्ट्रीय युवा श्रम शिविर का आयोजन किया जो लम्बे अर्से तक चला और अंततोगत्वा इसी शिविर के माध्यम से चम्बल घाटी



के दुर्दान्त डाकुओं के आत्मसमर्पण का मार्ग प्रशस्त हुआ जिसकी कहानी सारी दुनिया को चमत्कृत करने वाली है। 1969 से आज तक राजनीति से अलग रहकर नेशनल यूथ प्रोजेक्ट के कैम्प से उन्होंने इस देश की युवा शक्ति संगठन को एक नया स्वरूप और प्रेरणा प्रदान की है।

संयुक्त राज अमेरिका में प्रति वर्ष चौमासा व्यतीत करके युवा शिविरों का उन्होंने सफल आयोजन किया है, जिससे अमेरिका के नौजवानों ने सदैव ही प्रेरणा प्राप्त की है। संयुक्त राज्य अमेरिका के लोग चाहते हैं कि सुब्बारावजी उनके बीच में रहकर उनके बच्चों का पथ प्रदर्शन करें किन्तु सुब्बाराव जी अल्पकाल ही वहां व्यतीत कर भारत आकर नौजवानों के मार्गदर्शन का कार्य प्रारंभ कर देते हैं। 1969 में उन्होंने गांधी दर्शन ट्रेन का सफल संचालन किया था, उसी को आदर्श मानकर 1993-95 में लगातार एक वर्ष तक सुब्बाराव जी को सद्भावना यात्रा ट्रेन के संचालन का कार्यभार सौंपा गया और इस यात्रा ने क्रांतिकारी कार्य किया है उसकी अनुभूति प्राप्त करने वाले ही उसकी सफलता का सही आकलन कर पाते हैं।

सुरेन्द्रनाथ दुबे (5 सितंबर 95)

प्रेस क्लब ऑफ इंडिया- नई दिल्ली में

### मेरे प्रेरणास्त्रोत एवं गुरु श्री सुब्बाराव जी

श्री सुब्बाराव जी, उन व्यक्तियों में से हैं जिन्होंने मेरे जीवन को एक नई दिशा दी। दिसम्बर 1954 एवं जनवरी 1955 को भेलसा (अब विदिशा) में सबसे पहले उनसे जुड़ा। वे बाबू तख्तमल जी के यहां आये हुए थे, क्योंकि उस समय तख्तमल जी प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष भी थे और तीन बार विधानसभा चुनाव हारने के बाद भी जवाहरलाल जी की जिद से वे विदिशा का उपचुनाव लड़ रहे थे। सुब्बाराव जी के साथ प्रतिदिन बेतवा तट पर जाने और चर्चा करने का अवसर मिला। देश के लाखों युवाओं के प्रेरणास्त्रोत सुब्बाराव जी ने जिस तरह मुझे प्रभावित किया, वह मेरे जीवन के लिए मार्गदर्शक बना। सुब्बाराव जी जिन्हे भाईजी के नाम से जाना जाता है उनका जन्म 8 फरवरी 1929 को बैंगलोर में हुआ था। वे जीवन के 86 वर्ष पूर्ण कर चुके हैं, किंतु इस उम्र में भी वे पूरी तरह युवा की तरह कार्य करते दिखाई देते हैं। आज वे गांधीवादी विचारों के सबसे बड़े प्रचारक सर्वधर्म समभाव, सर्वधर्म प्रार्थना के माध्यम से जन-जन को जोड़ने वाले महान व्यक्तित्व हैं।

“श्री नागर जी के शब्दों में गांधी उनकी आत्मा का गीत है, विनोबा उनकी आस्था की वाणी है वे क्रांति से शांति की बजाय शांति से क्रांति के अग्रदूत हैं। उनके गाये हुए गीत सुनकर ही कभी चंबल की बीहड़ों के बागी रोमांचित हुए थे और उन्होंने बंदूकें छोड़कर सुब्बाराव जी के साथ भजन गाना शुरू किया था। यह सब सुब्बाराव जी के गांधीवादी विचारों एवं उनके गाये भजनों एवं गीतों का प्रभाव था।”

यहां यह उल्लेखनीय है कि 6 दशक पूर्व सुब्बाराव जी के संपर्क में आया और आज तक उनके साथ घनिष्टता से जुड़ा हुआ हूँ। मैंने 7 फरवरी 2004 को उनके 75वें जन्मदिवस पर एक बड़ा द्विभाषी ग्रंथ संपादित एवं प्रकाशित किया था, जिसका शीर्षक था। “सुब्बाराव एक यायावर महर्षि” इस पुस्तक की भूमिका मध्यप्रदेश की पूर्व मुख्य सचिव एवं विख्यात शिक्षाविद श्री शरदचंद्र बेहार ने लिखी थी। इस पुस्तक का विमोचन धर्मस्थल (कर्नाटक में) प्रतिष्ठित जैन मुनि डॉ० वीरेंद्र हेगड़े ने किया था। इस पुस्तक के विमोचन के अवसर पर श्री शरदचंद्र बेहार की धर्मस्थल में उपस्थित उल्लेखनीय रही। इसी पुस्तक में बाद में मुझे सुलभ इंटरनेशनल के संस्थापक डॉ. बिदेश्वर पाठक ने एक लाख रु. की सम्मान निधि भी भेंट की थी। इसी पुस्तक का दूसरा पेपर बैक संस्करण एक वर्ष बाद पुनः प्रकाशित हुआ तथा दो वर्ष बाद तीसरा संक्षिप्त संस्करण केवल हिन्दी में प्रकाशित हुआ। मैंने श्री सुब्बाराव जी पर 30 मिनट की एक डॉक्यूमेंटरी सुब्बाराव एक यायावर महर्षि और S.N.Subbarao - A Living sprit of Mahatma Gandhi बनाई जिसका व्यापक स्वागत हुआ। मेरी पुस्तक एवं मेरी डॉक्यूमेंटरी को आधार मानकर भारत सरकार के दूरदर्शन विभाग ने एक अन्य डॉक्यूमेंटरी बनाई

और मुझे उसमें रिसोर्स पर्सन माना गया तथा 22 अप्रैल 2011 को दूरदर्शन के सभी केंद्रों से प्रसारित किया गया।

मेरा यह सुखद सौभाग्य रहा कि दिल्ली में रहते हुए मुझे सुब्बाराव जी के 3 युवा कैम्प – सम्रतान स्कूल, जसोला बिहार, नई दिल्ली में पहला कैम्प, डीएबी स्कूल, जसोला बिहार, नई दिल्ली में दूसरा कैम्प एवं शासकीय इंजीनियरिंग यूनिवर्सिटी, बवाना, नई दिल्ली में तीसरा कैम्प आयोजित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करना पड़ा।

मैं एक द्विभाषी मासिक पत्रिका स्कूल शिक्षा का संपादक प्रकाशक हूँ और विगत साढ़े चार वर्षों से यह पत्रिका लगातार प्रकाशित होकर इसके 55 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। सौभाग्य से सुब्बाराव जी इसके संरक्षक हैं और इसके प्रथम मासिक अंक का विमोचन श्री सुब्बाराव जी ने ही किया था तथा इसकी अध्यक्षता गांधी शांति प्रतिष्ठान नई दिल्ली की प्रतिष्ठित अध्यक्षा सुश्री राधा बहन भट्ट ने की थी और इस तरह आज भी मैं सुब्बाराव जी से गहन रूप से जुड़ा हुआ हूँ। उनका मेरे जीवन में क्या प्रभाव है इसका आंकलन पाठक स्वयं कर सकते हैं।

जनसत्ता  
**रविवारी**

• २५ सितंबर २००५ •

# एक यायावर अहिंसक क्रांति का

एस्पेन सुख्खाराव का नाम आज सुखियों में नहीं है क्योंकि बाजार और तरह-तरह के सिंघारों पर सदा प्रचार-माध्यम की उन जैसी हस्तियों में कोई दिलचस्पी नहीं रही। लेकिन हकीकत में वे ऐसे गौरवमय हैं जो प्रचार की परवाह किए बिना अहिंसक क्रांति के प्रयोगों में लीन रहते हैं। इन्हीं प्रयोगों के लिए वे देश-विदेश में जाने जाते हैं। चंबल के बागियों की जिदगी बदलने वाले और युवाओं को नई दिशा देने वाले इस अहिंसक धायावर के जीवन को करीब से देखने की कोशिश की है प्रसून लताते ने।

[illegible]

१. अपने बालिका को भी सही तरह से बाँझो।

मुम्बई को भी यह बात देते बताया है। इसकी पुष्टि का मुम्बई विचार बोर्ड नहीं करे है कि कोई अन्य जगह है-मुम्बई का मुम्बई नगर है। तो कोई मुम्बई और अजमेरा का भी यह बात बताएगा नहीं बताए है। अजमेरा जिले का यह जगह बताए है।

पिता के इस व्यक्तित्व का प्रभाव मुन्नालाल पर पड़ा ही, बाल्य ही रामकृष्ण परमहंस और महात्मा गांधी का भी प्रभाव उनके बाल मन पर पड़ा। आज आधुनिक दिनों की गलत कल्पे हुए हुए मुन्नालाल कहते हैं, "जब मैं ठीक करी का था, उन दिनों मैं गलत कल्पों का भी पशुन था। पशुन दुन दुन कि हो प्रभाव, १९४२ की व काले काले में प्रभाव

[illegible]

which, otherwise, is not

[illegible]

गां



100

[illegible]

## Late Dr. Gulab Chaurasia A Visionary

-Surendra Nath Dubey  
President AIFEA



Dr. Gulab Chaurasia died on 3rd Oct. 2009 at the age of 87. He was former President of World Council of Curriculum and Instruction (HQ, USA) former President of All India Federation of Educational Associations (Estd. 1925), Chairman, Asian Academy of Education and Culture, Chairman, Media Center, President, Council for Teacher Education (CTE) and fellow and Life Member, Commonwealth Council for Educational Administration and Management. Above all, he was a humanist, a visionary and an educationist of International repute. He was closely associated with various other international & National Organisations.

Throughout his career he has shown devotion to the cause of education of children, teacher education and welfare of teachers, as a teacher educator, planner and designer. His varied interests and deep involvement in the process of man-making and educational management have helped to understand the very basics and dynamics of educational theory and practice.

For about 50 years, visiting country after country and attending, organizing, masterminding, and monitoring workshops, seminars, conferences, symposia, and other events of vital importance, he led the academic world to think and contemplate.

Teachers of the world are indebted to him. He guided and helped his co-worker's and they drafted "A declaration entitled "status of teachers" which was approved in an intergovernmental conference organised by UNESCO at Paris on October 5, 1966. On the demand, of his co-workers in 1994 UNESCO decided to celebrate the World Teacher's Day every year on October 5. Since then education ministers of all countries of world are also invited to attend celebration at UNESCO headquarters each year on this day.

LIFE :-

1. Dr. Gulab Chaurasia Born on 25th June 1922 at Jabalpur (Central India). He completed his four-year primary education in 1932 in Jabalpur from a school near his home and for class he studied in a newly started Sarvajanic school. He joined Jabalpur's most reputed non-government school Hitkarini High School and completed high school in 1939. During this period Jagmohan Das, son of Seth Givind Das, was his classmate. Jagmohan had a magnetic personality. His friendship with him soon turned into "hero worship". Their influence on each other was largely responsible for giving new direction, new ambition and hope to new life. They studied together and he spent most of his time in Jagmohan Dasji's residence (Gokuldas Palace). Seth Govind Das was assiduously trying to groom his son Jagmohan as his political successor, but paid personal attention to both, his son & Gulab Chaurasia. This laid a solid foundation for discipline, punctuality, patriotism, character and a deep commitment to serve the country and mankind in keeping with the

moral, spiritual and cultural heritage of India.

During 1939-1945 he studied at the Robertson College, Jabalpur (established in 1836) for Intermediate B.A. and M.A. Jagmohan exercised even more influence on him and both shared dreams for serving Mother India, for global involvement, and for service to mankind. At the Tripuri (Jabalpur) Session of the Indian National Congress in 1939, they worked as volunteers and interacted with the top national leadership as well as with other participants. On August 9 the "Quit India" movement saw both of them on the streets, boycotting classes and singing patriotic songs to inspire generation. Rampresad Bismil's famous outburst: "SAR PHAROSHI KI TAMANNA AB HAMARE DIL MEN HAI, DEKHANA HAI ZOR KITNA BAJU-E-KATIL MEN HAI" became their pet declaration. Gulab Chaurasia use to sing patriotic songs along with his friends.

In July 1945 he started teaching English at Hitkarini City College, Jabalpur and a year later he was selected as Lecturer in English in his own Robertson College where he taught Inter, B.A. and M.A. classes upto January 1948. Shri Brijesh Mishra S/o Shri D.P. Mishra was one of his student in M.A. Previous.

### 2. The New York Experience :

Having been selected by the Government of India for an overseas scholarship in 1947. He proceeded to the United States on January 30, 1948. He boarded the TWA flight for New York and left Bombay at 2.00 p.m. The inflight radio announced the assassination of Mahatma Gandhi after 5.30 p.m. and Gulab broke down in tears. At all stops on route people made anxious inquiries about the assassination and expressed their shock and grief on losing the greatest champion of peace and freedom. Although it was the first international flight for him. His excitement was completely overshadowed by a deep sense of sorrow and loss.

On arrival in New York City he was escorted to the International House and then to the Teachers College of Columbia University. This world famous institution accorded a warm welcome to international students and he was overwhelmed by the friendly approach of the professors. He completed his studies in August of 1950 and was awarded the Doctor of Education degree. The degree certificate was signed by General Dwight Eisenhower, former President of the USA and Professor W.G. Russell, President of Teachers College. The College enjoyed international reputation primarily because of the presence of world famous scholars and researchers on the faculty.

A great disciple of John Dewey and father of the Project Method, W.H. Kilpatrick had retired from active service but was available on campus. He took instant liking for Chaurasia. With the active guidance of Professor Kilpatrick he organised the first conference on Modern Indian Education. This instilled in him a life-long passion for conferences and seminars. He was also President of the Indian Students Association and this inducted him into professional organisations of teachers. For his Ed.D, dissertation he prepared a Blueprint for Inservice Education of Teachers in India. He was thrilled with the immense possibilities of providing meaningful opportunities to teachers for their professional development through inservice education programmes. He read everything that he could find on inservice education in the United States.



He started working as Professor in the Government College of Education at Jabalpur in January 1952, following his return to India.

### 3. Inservice Education : From Dissertation to Implementation

Doctoral dissertations, usually decorate the shelves of libraries and are consulted only by handful of researchers in the context of their own research. Fortunately in his case that was not to be. In 1954, the Government of India invited a team of U.S. experts to plan for inservice education of teachers. This team and its Indian counterpart in the Ministry of Education in New Delhi, invited scores of teacher educators to formulate a national strategy for inservice education of school teachers and administrators. Here Dr. Chaurasia found himself at the right time at the right place. For meeting new challenges in Education, the Government of India established the All India Council for Secondary Education. As its executive wing, the Directorate of Extension Programmes in Secondary Education (DEPSE) was created for implementing the national programmes of inservice education with the assistance of American experts. During 1954-1956, 150 extension service centres were approved for secondary and elementary teacher training institutions in the country.

This also marked the fulfilment of cherished dream of Dr. G. Chaurasia. As Principal of the Post Graduate Basic Training College in Bhopal Dr. Chaurasia directed the activities of the extension department with a team of coordinators and subject area experts. I came in his contact in Aug. 1960 in this College only. School improvement programmes were planned and offered in Madhya Pradesh, this was a coveted opportunity for Dr. Chaurasia to put into practice his pet ideas toward the development of teacher's competence and skills.

### 4. On to Delhi : Greater Challenges, Greater Opportunities

For searching talented teacher educators and scholars, with a flair for innovation, NCERT Joint Director Raja Roy Singh and DEPSE Director T.K.N. Menon went round the States. They visited P.G.B.T. College Bhopal in October 1961 and studied the impact of extension services on schools. They were so impressed with his achievements that, before leaving Bhopal, Professor Menon whispered in ears : of Gulab Chaurasia . "You have been selected for deputation to NCERT. Be ready to join soon. On January 12, 1962 he said good-bye to the PGBT College, Bhopal and joined NCERT to look after extension service centres in the country he visited most of the colleges of education and obtained valuable insights into the potential and achievement of inservice education". He also joined the National NGO Association of Principals of Training Colleges, founded by Smt. Hansa Mehta and Professor Menon.

In 1962, NCERT promoted the concept of a four-year, integrated teacher education programme, perhaps the most significant breakthrough in the long history of teacher education in the country. When teams of American experts from the Teacher's College of Columbia University and The Ohio State University arrived in New Delhi. Dr. Chaurasia was assigned along with selected teacher educators from across the country, the new job of working out the details for launching the four Regional Colleges of Education. Through a national selection board, four principals were selected for these colleges: Dr. Atmanand Mishra for Bhopal, Dr. R.C. Das for Bhubaneswar, Dr. J.N. Kaul for Ajmer and Dr. G. Chaurasia for Mysore.

The Regional Colleges of Education were designed, as unique institutions of Professional preparation of teachers of vocational subjects. Multipurpose secondary school was their primary mission. Toward this end, departments of agriculture, commerce, home science and technology were established and four-year integrated programmes were introduced in commerce and technology. The department of Education provided the connection link and a sense of purpose and direction. Experts in subject areas were selected through open national recruitment and groomed for their role as teacher educators. American experts played a key role in this process. Physical and financial resources were provided in abundance. A demonstration school was attached to each college to serve as a laboratory for prospective teachers. For the first time in its history, it seemed teacher education was beginning to receive national attention and prestige that was long overdue.

Dr. G. Chaurasia rated his experience as Principal of the Regional College of Education at Mysore as the real climax of his professional career. In recognition of his commitment to the programme he was promoted and assigned the responsibility of overseeing the four regional colleges as Officer on Special Duty at the NCERT. He developed some permanent friends and coworkers who shared visions of quality teacher education programmes and of professional growth of teachers. The urgency of international cooperation in education was also brought home during this period.

His total service as teacher and administrator at State and national levels during 1952-1980 can be distinctly divided into four periods : First, as Professor of Education and Regional Joint Director of Education in Madhya Pradesh, Second, as Principal of the Post Graduate Basic Training College at Bhopal, Third, on deputation with NCERT as Field Advisor, Principal RCE and Officer on Special Duty and Fourth back to M.P. as Principal, Joint Director and Additional Director of Public Instruction. Each era was exciting and enjoyable in its own way, each contributed to his development and deepened his commitment to education. What he learnt most through all of these experiences is that team work, respect for all colleagues regardless of their status in the hierarchy, appreciation of human dignity and a democratic way of life, determination to practice what we preach and developing loyalty and commitment to high standards of professional conduct are some of his attributes of effective performance in leadership positions.

### 5. Professional Organisations: Bringing Out the Best in him

He was at his best during his association with two national professional bodies- the All India Federation of Educational Associations (AIFEA) founded in 1925 at Kanpur (two times its Presidents). Association of Principals of Training Colleges founded in 1950 at Baroda. The latter body subsequently opened its doors to all teacher educators and was renamed Indian Association of Teacher Educators (IATE), largely due to his intervention to do away with the "caste system" that separated principals from teachers. IATE held its first national conference at the Regional College of Education, Mysore that was attended by several hundred-teacher educators. Soon thereafter, Professor T.K.N. Menon joined UNESCO and handed over to him IATE. Dr. Gulab Chaurasia was elected Secretary General of IATE and inspired several colleagues in the regional colleges and other teacher training institutions across the country to

become life members. In 1969 he was elected National President and was responsible for the publication of Teacher Education Journal and scores of pamphlets dealing with curriculum, innovations and State plans of teacher education. A high point of his Presidency was the First Asian Conference of Teacher Education in 1971 at Bangalore University in collaboration with the International Council on Education for Teaching, (ICET) and the American Association of Colleges of Teacher Education (AACTE). Thirty American professors and several from Asian countries participated in the conference. Proceedings of the conference a 224 page document were published under the title "Teacher Education and Social Change."

Dr. R.P. Singh, Principal, Regional College of Education, Bhopal organised the Second Asian Conference of Teacher Education in 1989 along with the Silver Jubilee of his college.

On August 4, 1986 a group of committed teacher educators established another national NGO-the Council for Teacher Education at Dr. Hari Singh Gour University, Sagar CTE was registered at Bhopal under the M.P. Societies Registration Act. CTE has about 500 life members, including several institutional members. It has held 22 annual conferences and the several nationally known teacher educators are in leadership positions.

A quarterly journal the CTE Newsletter is being produced regularly since 1991, first of all under the editorship of Dr. Padmakar M. Sapre, Professor Emeritus, New York University. The Newsletter has attracted widespread attention for quality and regularity and has been a powerful instrument in strengthening the organisation. His co-workers and followers did valuable work at International, National and State level under his guidance, in WCCI, AIEFA, IATE, CTE, other professional organisations. NGOs and departments.

#### 6. Journey Without a Destination :-

This is a story that is indeed a journey without a destination. The most gratifying result of a full and satisfying career has been the smooth transition from employment to retirement. In fact, truly dedicated professionals retire only from employment, not from activity, much less from life. He has not had a dull moment all these 87 years and new ideas and aspirations never cease to emerge. On 75 birthday he said "Every morning the breeze whispers in my ears, the best is yet to be".

After 87 years end of this journey came on 3<sup>rd</sup> Oct. 2009 at 4 A.M. . For more than six decades, each & every day of his life he spent for the cause of education and teachers. Only On 30<sup>th</sup> Sept. 2009 at 7.30 P.M. I went to meet him. As usual he was sitting on a chair, writing something. He gave me some journals & an invitation letter of Gaziabad. On 2<sup>nd</sup> Oct. 2009 I wanted to meet him in the afternoon. I came to know that he is busy in purchasing gifts for participants of coming peace conference at Bhopal.

Surendra Nath Dubey was closely associated with Dr. Gulab Chaurasia for more than 5 decades

अमृत महोत्सव

on 75<sup>th</sup> Birthday 26 January 2010

## Shri Mahendranath Dubey

### A BRIEF BIOGRAPHICAL SKETCH

*Born at Mungaoli, distt. Guna in Madhya Pradesh, Shri M.N. Dubey obtained Masters Degree in Economics in 1960, and Degree in Law in 1964 securing First Division with distinction in Labour Laws. He later received Diploma in Social Work (Labour Welfare) from Calcutta University in the year 1965 and Specialized Training in Techniques of Enforcement of Labour Laws and Conciliation at the Central Institute of Industrial Relations, New Delhi and Labour Administration and Labour Welfare from the National Labour Institute, Noida.*

*Shri Dubey has over 30 years of experience and expertise in the Enforcement of Labour Laws, Administrator of Labour Welfare Schemes, Conciliation in Labour Capital Conflicts and Training of service officers. Having joined All India Labour Service through UPSC in the year 1967, he served in different parts of the country in various responsible positions, leaving his distinct impression in labour field. He drafted*

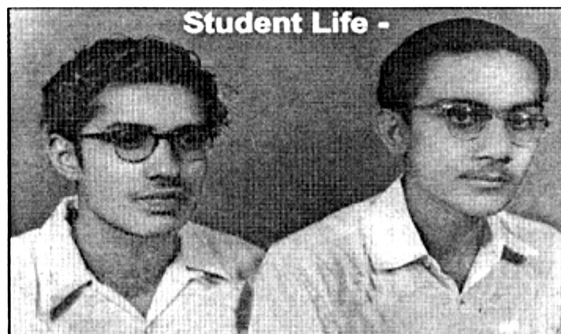


*and edited Six Volumes of Departmental Manuals during his tenure in the Ministry of Labour at New Delhi. These Manuals form a basis of functioning of the department and serve as guidelines to the Officers of the Central Industrial Relations Machinery.*

*As Regional Labour Commissioner, he headed States of Madhya Pradesh, Orissa and Uttar Pradesh etc. looking into the labour problems, conciliation, mediation, industrial*

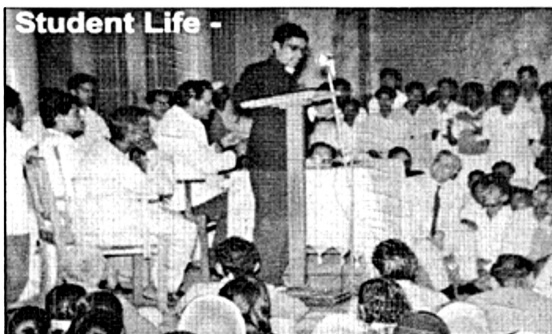
*relations and enforcement of labour laws in thousands of establishments in Mines, Railways, Post and Telegraph, Banks, Insurance, Air Transport, Ports and Docks, Power etc. and played a crucial role in averting major strikes in public and private sector undertakings.*

*Bestowed with an attractive personality, Shri Dubey brings in him a combine of a first rate administrator, effective judicial authority and expert of Labour Laws having a deep insight and understanding in labour problems and industrial relations.*



**Student Life -**

**Mahendra with Madhu kiran P. Keniya**  
shree keniya became justice (Adm) Allahabad Highcourt



**Student Life -**

**Shree Prathviraj Kapoor Inagurated students union, (1955)**  
It's President Mahendra Dubey welcoming the guests



## मेरे प्रेरक श्री रूसिया जी.....

-सुरेन्द्रनाथ दुबे



पाश्चात्य देशों में नॉन फार्मल एज्युकेशन शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से एडल्ट एज्युकेशन के लिये किया जाता है, किन्तु भारत में इसे प्रारम्भिक शिक्षा के लोकव्यापीकरण के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सहायक विकल्प के रूप में प्रयोग किया गया। वे बच्चे जो काम-काजी हैं और अपना काम छोड़कर शाला नहीं आ सकते थे वे बच्चे जो जिन्हें किसी कारण से बीच में पढ़ाई छोड़नी पड़ती थी, उनको कैसे शिक्षा दी जाए? कब दी जाए? कौन देगा? कहाँ देगा? क्योंकि संविधान के अनुच्छेद 45 के आदर्श को पूर्ण करना हमारा प्रथम लक्ष्य था, तब सबसे पहले बी.टी.आई. कुण्डेश्वर के तत्कालीन प्राचार्य श्री पी.एन. रूसिया ने ही इस पर गंभीर चिंतन-मनन और प्रयोग किए। बाद में जब वे छतरपुर के जिला शिक्षा अधिकारी बने तब अंशकालीन शिक्षा के नाम से एक पुस्तिका प्रकाशित हुई वह भारतीय संदर्भ में औपचारिकतर शिक्षा प्रणाली का प्रथम बीजारोपण ही थी। भारत में औपचारिकतर शिक्षा जिन अर्थों में प्रयोग की गई उसके जनक श्री पी.एन. रूसिया ही थे।

श्री सत्यम, तत्कालीन लोकशिक्षण संचालक ने श्री पी.एन. रूसिया को औपचारिकतर शिक्षा का मध्यप्रदेश मॉडल विकसित करने में सहायता की और जब श्री सत्यम भारत सरकार के शिक्षा विभाग में संयुक्त सचिव बने, औपचारिकतर शिक्षा म.प्र. मॉडल ही सारे देश के लिए औपचारिकतर शिक्षा के आदर्श मॉडल के रूप में स्वीकार किया गया। एन.सी.ई.आर.टी. के प्राध्यापकों और देश के प्रतिष्ठित शिक्षाशास्त्रियों ने थोड़े-बहुत संशोधनों के साथ म.प्र. मॉडल को ही सारे देश में स्वीकार करने के लिए अपने विचार व्यक्त किए थे। इस तरह प्रारम्भिक शिक्षा के लोकव्यापीकरण के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक औपचारिकतर शिक्षा की कल्पना सारे देश में साकार रूप ले पाई जिसका प्रारंभ म.प्र. में हुआ।

बिहार में श्री लालूप्रसाद यादव द्वारा चरवाहा विद्यालय की चर्चा सारे देश में बड़े जोर-शोर से चली थी और तथाकथित बुद्धिजीवियों ने इसकी जमकर आलोचना भी की थी जबकि सच्चाई यह थी कि चरवाहा विद्यालय म.प्र. के 'भैंस की पीठ पर पाठशाला' का ही सुधरा नाम था। म.प्र. का 'भैंस की पीठ पर पाठशाला' का नारा जहाँ शिक्षाशास्त्रियों में विख्यात हुआ वहीं तथाकथित बुद्धिजीवियों, विशेषकर अखबार के अधकचरे बुद्धिजीवियों में मजाक का विषय बनकर रह गया।

बी.टी.आई. कुण्डेश्वर (वर्तमान में डाइट) को शिक्षक प्रशिक्षण क्षेत्र में कई नए प्रयोगों के लिए जाना जाता है। प्रो. अदालती के साथ-ही-साथ अन्य लोगों के साथ भी काम करने के लिए प्रो. पी.एन. रूसिया का नाम प्रमुखता से लिया जाता रहा है। प्रो. अदालती और डॉ. गुलाब चौरसिया के आशीर्वाद से अनेक सफल प्रयोग प्रो. पी. एन. रूसिया ने प्रारम्भिक शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्र में किए थे।

म.प्र. की 'पढ़ो-कमाओ योजना' की प्रशंसा भारत में ही नहीं वरन यूनेस्को और यूनीसेफ ने भी की थी। 'पढ़ो-कमाओ योजना' के जनक प्रो. पी.एन. रूसिया ही थे। डॉ. गुलाब चौरसिया, श्री अशोक वाजपेयी एवं श्री वाई. एन. चतुर्वेदी से शिक्षा के मामले में जब भी चर्चा हुई उन्होंने हमेशा यह माना कि औपचारिकतर शिक्षा और पढ़ो-कमाओ योजना को प्रस्तावित करने का श्रेय प्रो. रूसिया को ही है। मध्यप्रदेश एस.सी.ई.आर.टी. भोपाल में प्राचार्यों के प्रशिक्षण में श्री रूसिया जी चार पीरियड औपचारिकतर शिक्षा और पढ़ो-कमाओ योजना के बारे में लिया करते थे। तब मुझे ज्ञात हुआ कि वे केवल एक शिक्षाशास्त्री ही नहीं अपितु उच्च कोटि के शिक्षक प्रशिक्षक भी थे। शिक्षा के क्षेत्र में कुछ करने, लिखने और समझने की जो प्रेरणा सन् 1978 से मुझे श्री रूसिया जी से मिलती रही उसके लिए मैं सदैव उनका ऋणी रहूँगा। (प्रकृति और पुरुष पुस्तक से 1998)

शिक्षा अधिकार कानून होने के बाद अपेक्षा है कि सरकार कुछ अलग ढंग से कार्य कर पाएगी।

### श्री शरदचंद्र बेहार की एक शिक्षक के प्रति सहृदयता

—सुरेन्द्र नाथ दुबे

मैं लंबे समय तक शासकीय सेवा एवं प्रशासनिक अधिकारियों के साथ काम करने के अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि वरिष्ठ अधिकारियों विशेषकर आय.ए.एस. अधिकारियों की कार्यशैली में प्रशासनिक कठोरता का आधिक्य होता है। सामान्यतः वे नियमों के या परम्परा से बाहर जाकर कोई निर्णय या आदेश जारी करने से बचते हैं पर बहुत से अधिकारी नियमों की जड़ता की अपेक्षा उद्देश्य की पवित्रता और जनहित को प्राथमिकता देते हुए लीक से हटकर निर्णय लेने में संकोच नहीं करते, वरन् ऐसे निर्णय लेकर एक मिशाल पेश करते हैं। एक ऐसा ही मार्मिक संस्मरण प्रदेश के ख्यातिनाम आय.ए.एस. अधिकारी एवं शिक्षाविद् शरद चंद्र बेहार से जुड़ा है।

सागर में एक व्याख्याता श्री आर.डी.चौबे गंभीर रूप से बीमार थे। मैं उन्हें देखने गया। मुझे ज्ञात हुआ कि वे दो वर्ष से कैंसर से पीड़ित हैं। तमाम इलाज के बावजूद उनका कैंसर ठीक नहीं हुआ था। डाक्टर भी जबाब दे चुके थे। उन्होंने बताया कि उनकी बीमारी पर लगभग दो लाख रुपये खर्च हो चुके हैं। उस समय इतनी बड़ी राशि की व्यवस्था करना एक शिक्षक के लिये बहुत बड़ी चुनौती थी। इलाज के लिए उनकी पत्नी ने सारी जमा पूँजी लगा दी थी पर ईश्वर को कुछ और ही मंजूर था और उनकी सारी कोशिशें नाकामयाब हो चुकी थी। चौबे जी ने सारा किस्सा सुनाते हुए मुझसे करुण स्वर में कहा अब तो मेरी पत्नी के पास उपयुक्त कपड़े खरीदने के लिए भी पैसे नहीं हैं। उनकी इस असहाय परिस्थिति को जानकार मुझे काफी वेदना हुई। मैंने उनसे मेरे लायक कोई काम पूछा तो उन्होंने कहा कि इलाज में जो रकम खर्च हुई है उसका तो बहुत कम अंश ही मिल पायेगा। हाँ! मेरे इलाज के लिये (मुंबई) आने जाने की यात्रा व्यय के लगभग 13500.00 रुपये के बिल स्कूल प्राचार्य के पास पड़े हैं। उसमें संचालक चिकित्सा शिक्षा सेवा की पुनः अनुमति प्राप्त करना जरूरी है क्योंकि नियमानुसार प्रत्येक यात्रा के लिये संचालक चिकित्सा शिक्षा सेवा की कार्योत्तर स्वीकृति लेना होती है। अतः अगर आप (लेखक) यह काम करा दें तो मेरी बड़ी मदद हो जायेगी। इस बीमारी का परिणाम मैं जानता हूँ। मैं ज्यादा दिन नहीं टिकूँगा। घर के हालात ऐसे हैं कि मेरे क्रियाकर्म और तेरहवीं के लिए भी एक पैसा नहीं है अगर यह राशि मुझे मिल जाए तो मैं चैन से मर सकूँगा। उनकी वेदना ने मुझे अंदर तक हिला दिया। मैं उनके कागज लेकर सिविल सर्जन सागर के पास पहुँचा। उन्होंने बड़ी सहृदयता के साथ यात्रा के सभी आवेदन अग्रेषित कर दिये साथ ही कहा कि श्री चौबे जी की हालत अत्यन्त गंभीर है इन पर आप स्वयं भोपाल जाकर डी.एम.ई. की स्वीकृति प्राप्त करा लें क्योंकि व्यक्ति के देहावसान के बाद टी.ए.डी.ए. का पेमेंट कठिन होता है।

मैं उनके कागजात लेकर भोपाल आया तो उसी दिन मुझे ज्ञात हुआ कि दो दिन पहले ही श्री शरद चन्द्र बेहार ने प्रमुख सचिव स्कूल शिक्षा का पदभार ग्रहण कर लिया है। श्री बेहार साहब लम्बे अर्से तक हमारे एस.सी.ई.आर.टी. के डायरेक्टर रह चुके थे। इस अवधि में अनेकों प्रकरणों में मुझे उनके साथ काम करने का सुयोग मिल चुका था। विलंब हो जाने के कारण उस दिन मैं संचालक चिकित्सा सेवा के पास न जाकर सीधा श्री बेहार साहब से मिलने जा पहुँचा। श्री बेहार साहब से कुछ देर अन्य चर्चा के बाद मैंने अपने परिचित सागर के व्याख्याता श्री आर.डी. चौबे का प्रकरण और परिस्थिति बताकर निवेदन किया कि अगर आप संचालक चिकित्सा शिक्षा को फोन कर दें तो यह कार्य शीघ्रता पूर्वक हो जायेगा। श्री बेहार साहब एक मिनिट कुछ सोचते रहे फिर बोले मेरे फोन करने से यह मामला शीघ्र निपट जायेगा, यह संभावना कम है। फिर जैसा आपने श्री चौबे जी की स्थिति बताई है उससे लगता है इसमें देरी सारे किए कराए पर पानी फेर देगी। क्या आप नहीं जानते कि राज्य से बाहर यात्रा की अनुमति विभागाध्यक्ष देता है। प्रमुख सचिव स्कूल शिक्षा होने के नाते मैं

स्वयं यह अनुमति दे सकता हूँ। आखिरकार श्री आर.डी.चौबे स्कूल शिक्षा विभाग के अंतर्गत मेरे अधीनस्थ हैं। सिविल सर्जन ने अपनी अनुशंसा के साथ आवेदन अग्रेषित किया है और इलाज हेतु बंबई जाने की अनुमति पूर्व में ली जा चुकी है। केवल निश्चित यात्राओं की कार्योत्तर स्वीकृति ही देना है सो मैं ही राज्य से बाहर यात्रा की स्वीकृति जारी किए देता हूँ जिससे व्यर्थ में देर न हो। इतना कहकर उन्होंने तत्काल सिविल सर्जन द्वारा अग्रेषित कागजों पर सीधे उप सचिव शिक्षा को यह आदेश अंकित किया श्री आर.डी.चौबे को बंबई जाने की इजाजत के लिए निम्नांकित तिथियों में यात्रा की कार्योत्तर स्वीकृति प्रदान की जाती है। आज ही आदेश जारी करें।

उन्होंने कहा यह टीप लेकर जाइए। इसी के साथ ही उन्होंने संयुक्त संचालक सागर को फोन पर बात कर, सारी जानकारी प्राप्त की तथा उनको निर्देश दिया कि वे जहाँ भी आवश्यक बजट उपलब्ध हो वहाँ से 15000.00 रुपये का बजट श्री चौबे के विद्यालय को स्थानांतरित करें क्योंकि इसका अधिकार संयुक्त संचालक को है। इस पर तत्कालीन संयुक्त संचालक लोक शिक्षण सागर, श्री एम.एम. पुरोहित ने बताया कि जिला शिक्षा अधिकारी, सागर के पास टी.ए.डी.ए. का बजट उपलब्ध है। जिसमें आवश्यक राशि श्री चौबे जी के विद्यालय के प्राचार्य को हस्तांतरित करने का आदेश भी वे तत्काल दे रहे हैं। उप सचिव से आवश्यक आदेश भी उसी दिन जारी करवाकर यात्रा अनुमति के कागजात, सागर से भोपाल आए एक लिपिक के द्वारा सागर भिजवाने की व्यवस्था भी संयोग से उसी दिन हो गई। उप सचिव द्वारा इस प्रक्रिया को नियमानुसार न होने की आपत्ति पर श्री बेहार साहब ने अमान्य कर दिया और कहा कि यदि आवश्यक ही है तो आदेश की प्रतिलिपि भेजकर संचालक चिकित्सा शिक्षा से औपचारिक कार्योत्तर स्वीकृति भी प्राप्त कर लें।

कागजात सागर पहुँचते ही संयुक्त संचालक सागर ने एक दो दिन में ही श्री चौबे के टी.ए.डी.ए. के भुगतान की व्यवस्था करवा दी। जैसे ही टी.ए. की राशि का चैक मृत्यु शैय्या पर पड़े श्री चौबे जी के पास पहुँचा तो उन्होंने उस पर हस्ताक्षर कर उसे अपनी पत्नी के नाम भुगतान करने के लिये लिख दिया। चैक पर हस्ताक्षर करने के ठीक पाँच मिनट बाद ही श्री चौबे का देहावसान हो गया। जैसे कि इसी क्षण के इंतजार तक वे अपनी साँसों की रोके हुए थे। इस पूरे प्रसंग का निहितार्थ इतना ही है कि यदि अधिकारी चाहे तो परंपरा से हटकर परिस्थिति अनुसार जनहित में लीक से हटकर निर्णय लिए जा सकते हैं, और पीड़ित व्यक्ति की मदद की जा सकती है।

इस प्रसंग में एक बात और ध्यान देने योग्य यह है कि पता नहीं कैसे, श्री बेहार साहब को इस बात का आभास हो गया कि इस प्रकरण में तत्काल कार्यवाही की जरूरत है। उन्होंने सारे काम छोड़कर इस कार्य के लिये न केवल लिखा वरन् उसके फालोअप के लिये भी सक्रिय रहे तथा सारी औपचारिकताएँ पूरी करवाई। मैं श्री बेहार साहब की बौद्धिकता का कायल पहले से ही था इस प्रसंग का स्मरण होते ही उनकी सहृदयता के प्रति आज भी नतमस्तक हो जाता हूँ। यदि वे चाहते तो मेरे अनुरोध किये जाने पर संचालक चिकित्सा शिक्षा सेवा को फोन कर के इस प्रसंग से अपने को अलग कर सकते थे पर उन्होंने ऐसा नहीं किया बल्कि पूरी करुणा और तत्परता के साथ इस प्रकरण का समाधान कर एक व्यक्ति की अंतिम क्षणों की पीड़ा को कम करने में अपना पूरा सहयोग किया। जहाँ यह जानते हुये कि आदेश करना केवल औपचारिकता है नियमों को परिभाषित करने के अलग-अलग तरीके हो सकते हैं। मदद करने की वास्तविक इच्छा हो तो नियम तो कभी भी आड़े नहीं आते।

संपादक स्कूल शिक्षा

1002, सी वेमबले स्टेट रोजबुड सिटी-2, गुडगाव-18 (हरियाणा) मो0 09818612417 E-mail -

[schoolshiksha@gmail.com](mailto:schoolshiksha@gmail.com)

मई 2010 के 'स्कूल शिक्षा' के अंक से

## जग्गू चौधरी का चबूतरा

- रमेश दवे

भोपाल आंकड़ों का शहर है। यहाँ के बस स्टॉप नम्बरों में जाने जाते हैं और घर संख्या से। इसी तरह का एक बस स्टॉप है जिसे भोपाल की भाषा में छह नंबर स्टॉप कहते हैं। बस के अगले चप्पे के करीब वह पेड़ है, जो शायद राजधानी बनने के कुछ साल बाद किन्हीं अज्ञात हाथों ने लगाया होगा। उस पेड़ पर टंगी है एक तख्ती जिस पर लिखा है स्व. जग्गू लाल की स्मृति में। इसी पेड़ के नीचे लगातार 8 वर्षों तक धूप, वर्षा, जाड़े में बैठकर चौधरी जग्गूलाल ने लोगों के जूतों की मरम्मत, मेहनत और ईमानदारी से की। उनका निधन 05 मार्च 1979 को हुआ।

वैसे तो जब भी इस तरफ से गुजरता था, इस तख्ती को ठीक इस तरह पार करता चला जाता था जैसे काम न करने के इरादे पर दफ्तर का कोई अहलकार या अफसर कागज को नजरअंदाज कर जाता है। भोपाल में रहते-रहते यदि किसी नए संस्कार ने मुझे रहने लायक बनाया है तो वह कागज का संस्कार है। लोग लिफाफा देखकर मजमून भांपते हैं, मैं कोरा कागज देखकर भी कह सकता हूँ कि इस पर क्या लिखा जाने वाला है।

पास ही सुरेन्द्र का घर है। कभी-कभार चाय पीने की तलब से सुरेन्द्र को उतारता हुआ इस स्टॉप पर ठहर जाता हूँ। सुरेन्द्र ने एक दिन अचानक ही इस पेड़ पर टंगी तख्ती पर जरा ज्यादा गौर से देखने को कहा। तख्ती के नीचे सीमेंट का पक्का चारफुटी चबूतरा है, जो न कब किसी पीर या औलिया की, न स्मारक किसी संत या राजनेता का और न ही मौहल्ले के किसी बाअसर आदमी की समाधि का चबूतरा, फकत एक चबूतरा जग्गू चौधरी का। सुरेन्द्र ने कहा कि बोर्ड को गौर से पढ़ो यार। उसके दो शब्द एकदम आँख में अटक गए। चश्मा उतारकर साफ किया और फिर पढ़ा दोनों शब्द सुरेन्द्र के चश्मे से मेरे चश्मे तक बार-बार चकाचौंध मचा रहे थे मेहनत और ईमानदारी। मैंने अपने जहन को तैयार करते हुए खुद से सवाल किया— क्या ये शब्द आज के हिन्दुस्तान के लिए संदर्भवान या सार्थक हैं? क्या मेहनत के साथ ईमानदारी का कोई ऐसा रिश्ता है। जिसे मैं खून के रिश्ते की तरह साबित कर सकूँ। फिर मुझे अपनी ही सोच पर तरस आया या यूँ कहिए कि मैंने अपनी ही अकल पर रहम खाया। मैंने सुरेन्द्र से कहा! क्यों यार तुमने जग्गू चौधरी की मेहनत और ईमानदारी को इस तख्ती में घसीटा। यह भी कोई शक्सियत थी। फिर तुम्हें ये क्या मजाक सूझा जो एक साधारण जूता सिलने वाले के नाम का बोर्ड टाँग दिया।

4 अप्रैल 1982 दैनिक भास्कर



"जद्यपि जग दारुण दुख नाना, सबतें कठिन जाति अवमाना। तुलसी के इस सारकथ्य को गांधी ने व्यवहार में जाना।।



सुरेन्द्र ने एक संवेदनशील भावुक कवि की तरह अपना चेहरा बनाते हुए कहा कि यार! मैं चाहता हूँ तुम इस बोर्ड के पीछे की भावना को समझो। हर उस छोटे इंसान के अंदर मौजूद उसकी इंसानियत और बड़प्पन को समझो, मगर तुम हो कि मेहनत और ईमानदारी में ही उलझे हो।

मैंने सुरेन्द्र से कहा कि इतना बड़ा शहर जहाँ इतने सारे पढ़े-लिखे बुद्धिजीवी, कवि, लेखक, विचारक, नेता और किसी में भी आपको इंसानियत माता के दर्शन नहीं हुए? आप भी खूब हैं इंसानियत की खोज भी की तो एक जूता सिलने वाले के एक मामूली काम में? भोपाल के इतने सारे सार्वजनिक पार्क, कम्प्यूनिटी भवन और रंग शालाओं में आपको कहीं इंसानियत नजर नहीं आयी। यदि भोपाल में होने वाले नाटक ही देख लेते तो वहा इंसानियत थोक में मिल जाती। हर डायलाग में इंसानियत सुनते तो भूल जाते अपने जग्गू दादा को और उनके बारहफुटे पेड़ को।

सुरेन्द्र ने कहा यार! तुम मुद्दे से हटकर बात कर रहे हो। मैं एक साधारण, बहुत शालीन और गरीब आदमी की उस आत्मसंतोषी संस्कृति की बात कर रहा हूँ जो हमारे जग्गू दादा जैसे आम आदमी में ही पाई जाती है। सुरेन्द्र के इस वाक्य ने तो मेरा पौरुष जगा दिया। किसी साहित्य लिखने वाले आदमी को एक साथ साधारण, गरीब संस्कृति या आम आदमी जैसे शब्द उपलब्ध हो जाएं और फिर भी उसके अंदर कोई आर्टिकल लिखने या पर्चा पढ़ने जैसी भावना न जागे तो उसका मध्यप्रदेश की राजधानी में रहना ही बेकार है। मैंने कहा, यार सुरेन्द्र! तुम क्या कभी राम मनोहर लोहिया की जमात में रहे थे? सुरेन्द्र ने आँखे फैलायी तो मुझे लगा कि कोई न कोई समाजवादी गुरु इस पर अपना मंत्र जरूर चढ़ा गया है। मैंने कहा, यार! तुम्हारे अंदर शत-प्रतिशत गुण एक बड़े नेता होने के हैं। गरीब, शोषित, साधारण, आत्म-संतोष और आम आदमी, यह भारत के बुद्धिजीवी वर्ग का पहला सूत्र है। तुम इसे पकड़कर देश के भावी कर्णधार कहला सकते हो। सुरेन्द्र ने थोड़ी झिपियाई मुस्कान छोड़कर कहा, यार! तुम फिर मुद्दे से भटक गये हो। तुम उस आदमी की लोकप्रियता को नहीं समझते जिसने जाड़े, गर्मी, बारिश सभी मौसमों में खुले आसमान के नीचे बैठकर अपनी रोजी-रोटी का ईमान कमाया। वह बात करता था तो लगता था अपने परिवार का कोई बड़ा अपने से बात कर रहा है कोई फटास को किस तरह ठीक करवाना चाहता है, इसका एक समूचा मनोविज्ञान था जग्गू दादा के पास। अच्छे-अच्छे अफसरों की बीबीयों की चप्पल और और अच्छे-अच्छे साहबों के जूतों के तले कहाँ से टूटते हैं और उनमें किसी तरह का चमड़ा ज्यादा कम हो सकता है, इसका जितना नॉलेज जग्गू दादा के सदे हाथ और अनुभवी आँखों को था उतना किसी बाटा कंपनी के जनरल मैनेजर को भी नहीं होगा। यदि किसी ग्राहक को खड़े-खड़े देर हो जाती है तो जग्गू दादा पूछते कि साहब खड़े-खड़े थक गये हो चाय लेंगे? अगर ग्राहक नंगे पैर खड़ा होता तो जग्गू दादा ग्राहक के चरण कमल के नीचे अपनी चप्पल या टायर का टुकड़ा रखकर उसके चरण कमलों की हिफाजत करते। जग्गू दादा कभी ज्यादा पैसे नहीं लेते, कभी लालच नहीं करते, कभी तुनककर बात नहीं करते। सादगी और सीधेपन में गौदान का होरी उनके आगे कहीं नहीं लगता।

जिसके लिये स्वप्न देखा था बापू ने उस समय यही। कष्ट बड़े से बड़े सहेंगे, अपमान जाति का कभी नहीं।।

सुरेन्द्र को इस तरह धाराप्रवाह में बोलते देख मुझे लगा, काश! इस वक्त एक टेपरिकार्डर होता। कितना संवेदनशील बुद्धिजीवी है। मैं तो कविता या लेख में संवेदनशील होता हूँ। यह तो सचमुच का संवेदनशील है। मैंने कहा! मान गये गुरु अगर विनोबाजी अपने तमाम कार्यक्रमों से मुक्ति पा लें तो तुम अब चरणदान आंदोलन चलाकर देश के तमाम चौधरियों की रोजी-रोटी की पूरे ईमान से हिफाजत कर सकते हो। सुरेन्द्र ने फिर थोड़ा रूख कड़ा करते हुए कहा कि यार! तुम मुझे कुछ नहीं समझते तो मत समझो, मैं कहाँ क्लेम कर रहा हूँ, अपने नेता होने या बुद्धिजीवी होने का? मैं तो एक मोहल्ले का मामूली नागरिक हूँ। तुम मुझ पर जबरन नेतागिरी लाद रहे हो।

सुरेन्द्र की झल्लाहट ने मुझे दिनकरजी के पाठ 'नेता नहीं नागरिक चाहिए' की याद दिला दी। मैंने कहा— शाबास मेरे प्यारे नागरिक, तुमने अपने लिए सही रोल चुना है। दादा धर्माधिकारी कहते हैं कि यह देश या तो नेताओं का है या भीड़ का। यहाँ नागरिक नहीं है। सुरेन्द्र तुम जाओ और दादा को समझाओ कि अपना बयान वापस लें। तुम नागरिक हो तो एक आदर्श नागरिक वह भी ऐसे शहर और मोहल्ले का नागरिक जहाँ नगर पालिक निगम जैसे नागरिक के होते हुए शहर सफाई की चिंता से मुक्त है।

सुरेन्द्र फिर उफन पड़े। कहने लगे कि तुम फिर मुद्दे से भटक गये हो। मैंने कहा! यार, भटका हुआ आदमी अच्छा माना जाता है। आजकल अटका हुआ तो अटका ही रह जाता है। देखो, तुमने एक बोर्ड क्या लगवा दिया है तुम अटक गए एक ही मुकाम पर। अगर तुम्हारी जगह मैं होता तो इधर गली-चौराहों पर बोर्ड क्या लगा देता और तुम्हारा बोर्ड जो तुम्हें तीन साल में जो नाम नहीं दे पाया। उसे मैं चार पोस्टर चिपकवाकर चौधरियों का इतना बड़ा नेता होता कि मेरे आगे जगजीवन राम और पासवान भी पानी भरते। खैर, तुमने एक बात तो अच्छी की यार, कम से कम एक सच्चे नागरिक का दायित्व उसी तरह निभाया जिस तरह मेहनत और ईमानदारी से जग्गू चौधरी अपना दायित्व निभाते थे।

अब सुरेन्द्र ने मन की बात आगे रखी, सुनो यार! यह विचार तो जरूर मेरे मन में उस दिन कोंधा था, जब मैं बीमार जग्गू दादा को देखने उनके घर गया और उन्होंने मुझे अपनी झोपड़ी में प्यार से बैठाकर खाना खिलाया। मैंने कोशिश की, कि जग्गू दादा कुछ दिन और हमारे मोहल्ले के पेड़ को अनाथ न होने दें मगर जग्गू दादा तो सड़क के आदमी थे न।

जग्गू चौधरी ने मरने से पहले चमड़ी, कील, हथोड़ी और पालिश की पेटी या यूँ कहे चमड़े का ईमान सुपुर्द किया अपने वारिस को।

इस बार सुरेन्द्र की बात ने मुझे थोड़ा गंभीर बनाया और मैंने सोचा, काश! जग्गू दादा की तरह हर आदमी चमड़ी के प्रति ईमानदार हो जाए और जितना जुल्म इस संसार में चमड़ी को लेकर हुआ, उतना और किसी बात को लेकर नहीं।

साभार: दैनिक भास्कर 04 अप्रैल, 1982

और सभी स्तम्भों को मिल, नूतन राष्ट्र बनाना था। केवल दिल्ली राष्ट्र नहीं है यह सबको समझाना था।।

## संकल्प – एक सत्याधारित कहानी

— रामगोपाल रायकवार

दरवाजे पर शहनाई के सुर गूँज रहे थे। विदाई की घड़ी में शहनाई का गला भी भर आया था। शादी का सारा उल्लास विदाई के क्षणों में एक अवसाद में बदल गया था। सभी चुपचाप धीरे-धीरे अपना-अपना काम करते हुए दिखाई दे रहे थे। सुरेन्द्रनाथ जी कुछ थके, अनमने-से शामियाने के एक कोने में बैठे कुछ सोच रहे थे। आज छोटी बिटिया भी विदा हो जाएगी। सीने में बार-बार एक हूक-सी उठती। अंजू के जाने के बाद घर सूना-सूना हो जाएगा। कई सालों पहले लिया एक संकल्प तो आज पूरा हो गया था। उस संकल्प की याद करके उसके पीछे की एक घटना के बारे में सोचने लगे।

पुरानी बात थी। जिसने भी सुना था, उसने ही दाँतों तले अँगुली दबा ली थी। एक स्कूल मास्टर, नायब तहसीलदार की नौकरी को लात मार दें, यह कोई छोटी बात न थी। कुछ लोग इसे हिम्मत की बात बताकर आश्चर्य व्यक्त कर रहे थे तो कुछ इसे हिम्मत नहीं हिमाकत बता रहे थे। भला कोई ऐसी अच्छी नौकरी भी छोड़ता है? सुरेन्द्र की अकल पर तो जैसे पाला पड़ गया है। सुरेन्द्रनाथ ने सभी की प्रतिक्रियाएँ चुपचाप सुनी थीं। नायब तहसीलदार की नौकरी न करने का निर्णय लेते समय उनके मन में भी कई सवाल उठे थे। स्कूल मास्टरी के पद पर रहते घर वालों के साथ मिलकर गृहस्थी चला लेने की कोई बड़ी समस्या नहीं थी पर फिर भी कठिनाई तो थी ही। जमाना तो यही मानता था कि मास्टरी में क्या रखा है? बहुत हुआ तो रिटायरमेंट तक एकाध प्रमोशन मिल गया वरना अधिकांश शिक्षक तो जिस पद पर नियुक्त हुए उसी पद पर रिटायर हो गए।

इस निर्णय में उनके पिताजी ने पूरा साथ दिया था। पिताजी के समर्थन से सुरेन्द्रनाथ को सहारा तो मिला था पर दूसरे परिचितों और रिश्तेदारों को नायब तहसीलदार जैसा मलाईदार और आई.ए.एस. तक पहुँच पाने का सीधा पद छोड़ने का फैसला रास नहीं आया। कुछ ने इशारों-इशारों में तो कुछ ने खुले शब्दों में कहा था— ये क्या कर रहे हो? ये भी नहीं सोचते कि बच्चियों के बाप हो, आखिर उनकी शादी भी करनी है कि नहीं? कहाँ से लाओगे इतना पैसा?

अपना नहीं तो कम से कम बेटियों के बारे में तो सोचो। देखते नहीं हो कि लड़के वालों के मुँह कितने फैल गए हैं? पढ़े-लिखे सरकारी नौकरी वाले लड़कों के माँ-बाप लाखों से नीचे की बात नहीं करते। कैसे उठाओगे इन लड़कियों का बोझ?

सुरेन्द्रनाथजी पर इन सब बातों का कोई असर नहीं पड़ा था, बल्कि उनकी सोचने की दिशा दूसरी ओर मुड़ गई। आखिर हमारे समाज को क्या हो गया है? “यत्र नारी पूजयन्ते” की संस्कृति वाले भारत में बेटी बोझ क्यों बन गई है? माँ बनकर संतति को जन्म देकर मनुष्य जाति को बनाए रखने वाली बेटी स्वयं संतान के रूप में इतनी उपेक्षित क्यों है? बेटे और बेटी में भेदभाव क्यों है? बेटे की शादी के समय अधिकांश बाप दहेज दानव के



इन बातों से किसको मतलब, जाति गरीब तो दुखयारी। कैसे चूल्हा जले आज का, यह चिन्ता जिसको भारी।।

रूप में कैसे बदल जाते हैं? सास जो स्वयं नारी है बहू को दहेज में लाई गई रकम और सामान के साथ क्यों तौलती है?

सुरेन्द्रनाथजी मानते थे, लड़की को बोझ मानने की सामाजिक मान्यता के पीछे दहेज जैसी कुप्रथा है पर उनकी अंतरात्मा इस बात को जरा भी स्वीकार नहीं कर रही थी कि “बेटियां बोझ होती हैं”। सुरेन्द्रनाथ को समझ में नहीं आ रहा था कि वे दहेज की पहाड़ जैसी सच्चाई को कैसे नकारें, कैसे उसका मुकाबला करें पर वे दहेज जुटाने के लिए कुछ भी करने को तैयार नहीं थे। वे समझते थे कि समाज में व्याप्त और दिन-प्रतिदिन बढ़ रहे भ्रष्टाचार के पीछे जहाँ लोगों की अनियंत्रित और अवांछित आवश्यकताएँ हैं, वहीं बेटियों के लिए दहेज जुटाने की विवशता या मानसिकता भी कम जिम्मेदार नहीं है। गाँधीवादी विचारक भाई एस.एन.सुब्बारावजी के विचारों से प्रभावित सुरेन्द्रनाथजी उनकी प्रेरणा से अंततः एक निर्णय पर पहुँचने में सफल हुए।

एक दिन उन्होंने अपनी पत्नी सरोज के सामने अपने सारे अंतर्द्वन्द्वरखते हुए अपना फैसला बता दिया था कि वे अपनी बेटियों की शादी में लड़के वालों को “सवा रुपए के नेग” के अलावा कोई नकद राशि नहीं देंगे। सरोज इस फैसले से चौंकी नहीं थीं। वे सुरेन्द्रनाथ के विचारों को पहले से ही जानती थीं। उन्होंने सिर्फ इतना ही कहा था कि आप एक बार फिर सोच लें। मैं आपकी किसी बात का विरोध नहीं करूँगी पर दुनियादारी को भी देखना है, उससे कैसे निपटोगे?

सुरेन्द्रनाथ ने दृढ़तापूर्वक कहा था— मैंने अच्छी तरह सोच—समझकर ही यह फैसला लिया है यह सिर्फ फैसला नहीं, बल्कि मेरा संकल्प भी है, मेरा व्रत भी है। भाई सुब्बाराव जी कहते हैं कि किसी भी आदर्श का निर्वाह बिना संकल्पित हुए नहीं किया जा सकता। मैं उनकी इस बात से सहमत हूँ।

सुरेन्द्रनाथ जी ने अपने इस संकल्प की जानकारी अपनी दोनों बेटियों को भी अपने तरीके से दी थी। तीसरी बेटी तो अभी माँ की गोद में थी। सुरेन्द्रनाथ अपनी पत्नी और पुत्रियों का आश्वासन पाकर एक चिन्ता से मुक्त हुए थे पर दूसरी चिन्ता में घिर गए थे। आखिर वे अपना संकल्प पूरा कैसे कर पाएँगे? बहुत सोचने के बाद ही वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि अपने पाँवों पर खड़ी बेटी ही दहेज दानव का मुकाबला कर सकती है। इसके लिए जरूरी था कि बेटियों को अच्छी शिक्षा देकर इस योग्य बनाया जाए कि वे आत्मनिर्भर बन सकें।

घर के शिक्षा के माहौल का प्रभाव सुरेन्द्रनाथ के अपने बच्चों पर भी पड़ा। बच्चियाँ बड़ी हो रही थीं। इधर, सुरेन्द्रनाथ स्कूल शिक्षा में ही व्याख्याता हो गये थे। बड़ी बेटी रेणु ने अपनी योग्यता से बी.एस.सी. एवं एम. एस.सी. में प्रथम स्थान प्राप्त करके 20 माह में पी.एच.डी. उपाधि प्राप्त कर इतिहास रच दिया था। उस दिन उन्हें लगा कि उनके संकल्प का एक छोटा हिस्सा तो पूरा हुआ। आगे क्या होगा भविष्य के गर्त में था।

उस दिन सुरेन्द्रनाथ जी को सुखद आश्चर्य हुआ था, जब उनके पिताजी के पूर्व परिचित श्री महेशदत्त मिश्रा ने अचानक ही कहा कि सुरेन्द्रनाथ तुम्हारी बेटी की पी.एच.डी. हो गई, डॉक्टर बन गई है अब उसकी शादी भी कर डालो। सुरेन्द्रनाथ ने कहा था — शादी तो आज कर दूँ पर आप तो मेरे संकल्प के बारे अच्छी तरह जानते हैं। मिश्राजी ने हँसकर कहा था — हाँ भाई मुझे तुम्हारे संकल्प का पता है तुम्हारे सवा रुपए का नेग मंजूर है। सुरेन्द्रनाथ चौंक गए थे उन्होंने पूछा था — आपका मतलब? मिश्राजी बोले — मेरा मतलब स्पष्ट है, मेरा बेटा अच्छा वकील है, दोनों की जोड़ी अच्छी रहेगी। हम लोग अच्छी तरह एक-दूसरे को जानते हैं, तुम्हें मालूम है भगवान की दया से मुझे कोई कमी नहीं है तो बताओ क्या कहते हो? सुरेन्द्रनाथ ने संकोचपूर्वक कहा था — ये तो आपका बड़प्पन है, भला मुझे क्या आपत्ति हो सकती है? रेणु और अजय दोनों शादी के बंधन में बंध

वर्षा शीत ग्रीष्म ऋतुएं हो, यह जीवन सदा बराबर है। मेहनतकश जाति का होता, नित अपमान सरासर है।।



गए। सुरेन्द्रनाथ का संकल्प इतनी आसानी से पूरा होगा स्वयं उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था।

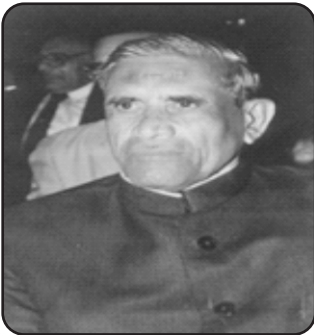
दूसरी बेटी रूपम का चयन पी.एम.टी. में होने के बाद वह एम.बी.बी.एस. करके डॉक्टर बन गई थी। डॉ. रूपम की शादी भी सुरेन्द्रनाथजी के संकल्प के अनुसार ही इंदौर के एक अच्छे परिवार में इंजीनियर श्री लोकेश से हुयी।

अंजू भी बड़ी हो चुकी थी। दोनों बहिनों की अपेक्षा उसने अपना मार्ग कुछ अलग ही चुना था। एल.एल.एम. और पी.एचडी. करने के बाद अंजू सिविल जज की परीक्षा उत्तीर्ण कर जज बन गई थी। सारे परिवार की प्रसन्नता का पारावार न रहा था। जैसे स्वयं भगवान आगे बढ़कर उनके संकल्प की रक्षा कर रहे थे। पाँच वर्ष तक जज रहने के बाद उसकी शादी एक मेधावी डॉक्टर हितेश से हो गई थी।

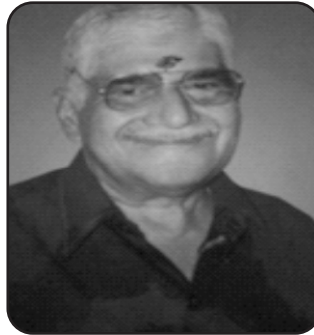
अचानक किसी ने सुरेन्द्रनाथजी के कंधे को हिलाया। आँखें खोलकर देखा तो उनकी पत्नी सरोज खड़ी थीं – “क्या सोच रहे हो, अंजू को विदा नहीं करना है? यह कहते-कहते सरोज की आँखों से टप-टप आँसू बहने लगे। सुरेन्द्रनाथजी ने बहुत कोशिश की पर वे भी अपनी डबडबाई आँखें छिपा न सके।

तखा मजरा, झाँसी रोड, टीकमगढ़ (म.प्र.)

मो 08085153778



स्व. श्री महेश दत्त मिश्रा



स्व. श्री जयंती शंकर शर्मा



श्री अवधेश कुमार वाजपेयी

नहीं देखने वह जाते हैं – तुम क्या खाते पीते हो। उनको क्या मतलब तुम कैसे, निजी जिन्दगी जीते हो।।

## रूपये गिर जाने का सुख

—रामगोपाल रैकवार

“अजी, सुन रहे हो?” सरोज जी ने हमेशा की तरह सुरेन्द्र जी को आवाज दी। सुबह-सुबह बरामदे में अखबार पढ़ रहे सुरेन्द्र जी ने भी चिर-परिचित अंदाज में जवाब दिया—“अरे भागवान! आज तक सिर्फ तुम्हारी सुन ही तो रहा हूँ। मुझे तुम बोलने ही कब देती हो?” सरोज जी झल्लाकर बोलीं—“मजाक मत कीजिए। कोई सुनेगा तो क्या कहेगा? मैं कह रही हूँ, अखबार छोड़िए, कुछ घर का काम-काज भी देखिए। अभी कोई मिलने-जुलनेवाला आ गया तो दिन गप्पबाजी में निकल जाएगा। पिछले इतवार की तरह।” सुरेन्द्र जी उसी मूड में बोले—“क्या काम है देवी जी? कहकर तो देखो अभी हुक्म बजाकर लाता हूँ।” सरोज जी ने भी व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ कहा—“हाँ-हाँ, मैं सब जानती हूँ, आप कितने हुक्मबरदार हैं? एक महीने से कह रही हूँ कि लॉन और बरामदे के लिए कुछ गमले ला दो पर आप कल-परसों कहकर टाल देते हैं। ऊपर से अभी हुक्म बजा लाता हूँ कहकर मेरा मजाक उड़ा रहे हैं।” सुरेन्द्र जी बोले—“अरे-अरे! तुम तो सचमुच नाराज हो गई, मैं तो बस यूँ ही...। बस एक कप चाय और पिला दो, मैं आज ही, नहीं-नहीं अभी गमले लाकर देता हूँ। अब तो हँस दो, भागवान!” सरोज जी ने अपनी हँसी दबाकर कहा—“आप कपड़े बदलिए, मैं चाय बनाती हूँ।

सेवानिवृत्ति के बाद सुरेन्द्र जी को बाग मुगलिया में अपने नए मकान में आए अभी कुछ ही दिन हुए थे। लॉन की क्यारियों में उन दोनों ने फूलों के काफी पौधे लगा लिए थे। सरोज जी का विचार था कि कुछ पौधे गमलों में लगाए जाएँ। कई बार कहने के बाद भी वे गमले नहीं ला सके थे। उनके ड्राइवर राजू को पता था कि ग्यारह नंबर स्टाप पर एक गमलेवाला अच्छी डिजाइन के मजबूत गमले बेचता है। चाय पीकर सुरेन्द्र जी अपनी कार से ग्यारह नंबर स्टाप पर पहुँच गए। फुटपाथ पर गमलेवाला एक हाथठेले पर गमले रखे था, कुछ गमले नीचे भी रखे थे। सुरेन्द्र जी ने दस गमले पसंद किए और गमलेवाले से कहा कि वह ड्राइवर की मदद लेकर गमले कार में अच्छी तरह से रखवा दे। यह कहकर वे बगल में एक फलवाले की दुकान से फल खरीदने लगे। इतनी देर में गमलेवाले ने गमले रखवा दिए थे। सुरेन्द्र जी फल खरीदकर उसके पास आए और बोले—“हाँ भाई! कितने पैसे हुए? गमलेवाले ने बताया—“जी, होते तो चार सौ रुपए हैं पर आप साढ़े तीन सौ दे दीजिए।” सुरेन्द्र जी की आदत थी कि वे मेहनतकश लोगों से मोल-भाव नहीं करते थे। उन्होंने जेब से निकालकर साढ़े तीन सौ रुपए गमलेवाले को दिए और पूछा—“गमले ठीक से रखवा दिए न, ऐसा न हो रास्ते में ही टूट जाएँ।” गमलेवाला बोला—“नहीं साहब, गमले बहुत मजबूत हैं और अच्छी तरह जमाकर रखवा दिए हैं, आप खुद देख लीजिए। सुरेन्द्र जी ने सिर्फ सर हिलाया और मुड़कर ड्राइवर से चलने को कहा। घर पहुँचकर और गमले लॉन में रखवाकर श्रीमती जी को आवाज दी—“कहाँ हो भई? ये लो अपने गमले। अब मत कहना कि मैं आपका हुक्म बजाने में देर करता हूँ।” सरोज जी ने बाहर आकर गमलों को देखा और संतुष्ट होकर सर हिलाया। सुरेन्द्र जी ने भी चैन की साँस ली। उन्हें डर था कि कहीं श्रीमती जी गमलों को रिजेक्ट न कर दें।

तभी ड्राइवर ने कहा—“सर जी, कुछ पैसे दे दीजिए। आज गाड़ी की सर्विसिंग करानी है।” सुरेन्द्र जी बोले—“ओह! हाँ।” इतना कहकर उन्होंने खादी की बनियान की जेब में हाथ डाला। वे सन्न रह गए। जेब में रुपये नहीं थे। उन्होंने सभी जेबें टटोली पर पैसे नहीं मिले। उन्हें कुछ परेशान देखकर सरोज जी ने पूछा—“क्या बात है? आप कुछ परेशान-से लग रहे हैं।” सुरेन्द्र जी ने बताया—“रुपये नहीं मिल रहे हैं। हजार-बारह सौ रुपए थे। एक हजार से ज्यादा रुपए थे, यह सुनकर सरोज जी भी कुछ चिंतित हो गई। सुरेन्द्र जी ने कहा—“तुम चिंता न करो। मैं वापस जाकर देखता हूँ। लगता है गमलेवाले के हाथठेले पर छूट गये, शायद मिल जाएँ।

सुरेन्द्र जी वापस ग्यारह नंबर स्टाप पहुँचे। गमलेवाला वहाँ नहीं था। हाँ उसका हाथठेला जरूर एक बरसाती से ढँका था। सामने की दुकानवाले से उसके बारे में पूछा। उसने कहा कि गमले वाले ने आपके जाने

के बाद आपके बारे में पूछा था शायद आपकी कोई चीज उसके पास रह गई थी या गिर गई थी। थोड़ी देर बाद मेरी दुकान पर ही उसके भाई का फोन आया था कि उसकी माँ बीमार थी उसे अचानक जाना पड़ा। दुकानवाले ने कहा— साहब रामप्रकाश अच्छा आदमी है। आप अपना पता और फोन नंबर छोड़ जाइए, जैसे ही रामप्रकाश लौटेगा मैं उसे आपके घर भेज दूँगा या फोन कर दूँगा।

सुरेन्द्र जी काफी निराश थे। वे अपना नाम—पता और फोन नंबर दुकानवाले को देकर घर लौट आए। इतनी रकम खो जाने से सरोज जी भी बहुत दुखी थीं पर उन्होंने कहा—“अब छोड़िए भी, पैसा हाथ का मैल है। चिंता मत कीजिए। सुरेन्द्र जी भी अपने मन को समझाकर दूसरे काम में लग गए। इस घटना को हुए पन्द्रह—बीस दिन हो गए थे। एक बार वे खुद रामप्रकाश को देखने गए पर वह इस बीच नहीं लौटा था। सुरेन्द्र जी सब्र कर चुके थे।

हमेशा की तरह सुरेन्द्र जी आज भी बरामदे में बैठे अखबार पढ़ रहे थे। तभी एक आदमी सर में गमछा बाँधे सामने खड़ा हो गया। उसका सर घुटा हुआ लग रहा था। सुरेन्द्र जी ने सवालिया नज़रों से उसे देखा। वह आदमी बोला—“साहब, शायद आपने मुझे पहचाना नहीं, मैं हूँ रामप्रकाश, गमलेवाला। कुछ दिन पहले आपने मुझसे गमले खरीदे थे और जल्दी में अपने रुपये टेले पर गिरा गए थे। मैंने वे रुपये रख लिये थे, तभी मेरे गाँव से एक आदमी मेरी माँ की बीमारी की खबर लेकर आया सामने की दुकान पर फोन भी आया। मैं तुरंत गाँव चला गया था। मेरे पास उस दिन आपके दिए रुपये के अलावा और पैसे नहीं थे। मजबूरी में आपके रुपए भी ले जाने पड़े। माँ बहुत बीमार थी। होश में भी

नहीं थी। मैंने उन्हीं रुपयों से उसका इलाज कराया। इलाज से वह होश में आई। शायद मेरा मुँह देखने को ही उसकी साँसें अटकी थीं। दो—तीन दिन ही जी पाई। मैंने बताया कि पैसे आपके थे तो आपके लिए भगवान से दुआ माँगती रही। मुझसे बोली कि भले ही उसकी तेरहवीं न करूँ पर आपके पैसे जरूर लौटा दूँ। साहब जी, आपके रुपए न होते तो शायद ही माँ मुझे देख पाती। मैं भी कुछ कह—सुन नहीं पाता। माँ नहीं रही पर संतोष है कि अंतकाल में दो—तीन दिन उसकी सेवा कर सका।” इतना कहकर वह रोने लगा। सुरेन्द्र जी ने उसे समझाया और धीरज बँधाया। वह शांत होकर बोला—“साहब, आपके पैसों का वक्त दे दीजिए। सुरेन्द्र जी का भी दिल भर आया था। रुपए सड़क पर गिर जाते तो कौन लौटाता? माँ के खोने का सुख है। भगवान तुम्हारी माँ की आत्मा को

तभी उनकी निगाह दरवाजे पर खड़ी सरोज जी पर पड़ी। वे चुपचाप सारी बात सुन चुकीं थीं। उनकी डबडबाई आँखों में भी रुपए खोने का सुख साफ चमक रहा था। उन्होंने उसे ज़िद करके रामप्रकाश को जलपान कराया। कुछ पैसे उसकी जेब में डाले और कहा कि अब पैसे वापिस करने की बात कभी नहीं करना। किसी माँ के इलाज में पैसे खर्च हुए हैं। रुपए गिर जाने का इससे बड़ा सुख हो ही नहीं सकता।

प्रहलादपुरम, तखा-मजरा, झाँसी रोड  
टीकमगढ़ म.प्र. पिन-472001  
मो.नं.- 08085153778

ਦੈ.ਨਿਰਦਲੀਯ ਸੇ ਸਾਭਾਰ

--- एक सत्य आधारित कहानी  
रुपये गिर जाने का सु

[illegible]

प्रहलादपुरम, तखा-मजरा, झाँसी रोड  
टीकमगढ़ म.प्र. पिन-472001  
मो.नं.- 08085153778

---

## ALL INDIA FORUM OF AWARDEE TEACHERS

# AWARD OF EXCELLENCE

Where as

**Shri SURENDRA NATH DUBEY**

Seceretary General of all India Federation of Educational Associations, (AIFEA - Founded in 1925) at the age of Sixty one years, is a senior teacher leader and teacher educator of National Repute.

**This AWARD OF EXCELLENCE** is presented to him on

**Teachers-Day, 5th Sept. 1999, at Constitution Club of India, New-Delhi.**

Where as

Shri SURENDRA NATH DUBEY has been a popular teacher, leader in the long struggle of teacher's in Madhya-Pradesh. He moved effectively to organise the un-organised teachers, to secure improved service conditions of the teachers working in the various parts of the country mainly in the remote villages. Led delegations before the VIII, IX and X Finance Commissions, Chattopadhyya Commission and various other commissions and committies and successfully pleaded for the problems of elementary Education. In this connection he also met the late Prime Minister Smt. Indira Gandhi three times and submitted concrete proposals for universalization of elementary education programmes. As an expert of Elementary Education, he has written number of articles on problems of elementary education.

Where as

Shri Surendra Nath Dubey is a sincere and honest follower of the philosophy of Mahatma Gandhi since his student career, and is a close associate and follower of great Gandhian Shri S. N. Subba Raoji.

Where as

Shri Dubey has been deputed in National Foundation for Teacher's Welfare, Govt. of India, MHRD, New-Delhi. He has been a champion for the welfare and professional growth of teachers. He has devoted himself wholeheartedly to the welfare of the teachers.

Where as

It is our conviction that illustrious example of Shri SURENDRA NATH DUBEY has projected a worthy and dignified image of a teacher- leader and teacher- educator. He left the Administrative service to serve the teaching community. The entire teaching community is indebted to him for his selfless service.

**On behalf of The Awardee Teacher's of India we feel honoured and recognising his valuable service to Community as teacher of Outstanding Merit.**

**Dr. Guleb Chaurasia**

**PRESIDENT**

**ALL INDIA FEDERATION OF  
EDUCATIONAL ASSOCIATIONS**

**Vice-PRESIDENT**

**ALL INDIA FORUM OF  
AWARDEE TEACHERS**



## A DEDICATED TEACHER....

**Shri Surendra Nath Dubey** born at Gangajali Mungaoli – Distt. Guna, Madhya Pradesh on 26th January, 1939. After completing his elementary education at Mungaoli, he came to Bhilsa (Now named as Vidisha) for his secondary education. He was blessed by Babu Takhtmalji and Seth Laxmi Chand Jainji during his studies in SSL Jain College Vidisha. Shri S. N. Dubey is a close associate and follower of great Gandhian Shri S. N. Subba Raoji, and came in his contact at Vidisha. Late Shri Madhu Kiran P. Kenia (Justice of Bombay & Allahabad High Courts) was a Senior student at Vidisha College and he was a friend and guide of Mr. Dubey.

Shri Surendra Dubey is a sincere and honest follower of the philosophy of Mahatma Gandhi since his student career, an educationist and holding first class scholars position, a teacher-educator, and a teacher leader of national repute. He moved effectively to organise the un-organised teachers and brought them under the Banner of Shikshak Congress, All India Federation of Educational Association, Lecturers Association, National Forum of School Teachers and is founder of Education India. Moved from pillar to the post to secure improved service conditions of the teachers working in the various parts of the country mainly in the remote villages.

Represented Teachers' organizations as a leader of delegation before the VIII, IX and X Finance Commissions, Chattopadhyaya Commission and various other commissions and committees and successfully pleaded for the grants for Elementary and Secondary education.

Without any agitational and destructive approach he secured the benefits to the various categories of the teachers such as enhancement of retiring age of teachers to 60 years, gazetted status to the secondary lecturers, enhancement in the pay scales and facilities to the elementary and rural teachers. Thus the entire teaching community is indebted to him for his selfless service.

Shri S. N. Dubey left the State Administrative (Subordinate) Service to serve the teaching community.

He strived for the welfare of teachers. In this connection he met the late Prime Minister Smt. Indira Gandhi three times and submitted concrete proposals for universalization of elementary education programmes.

As an expert of elementary Education, he has written number of articles on problems of Elementary Education which have been regularly published in the Magazines and Journals. He has also written number of articles on the problems of teachers. Through his articles he flashes the problems of the teachers and students. His suggestions to improve the fate of teachers and the future destiny of the country have been recognized. He has guided, directed and written students Model Parliaments. Being effective in the Socio-political field he has developed personal contacts during the span of last 30 years with teachers/lecturers/employees and other sections of the Society.

He is having an effective role in the academic field. He was the first man to come out with concrete proposals on new education policy.

His Gandhian approach to resolve the various problems of the Bhopal area to which he belongs is well known to public. His personality, sincerity and honesty has further elevated his image and status in the eyes of residents of Bhopal and among the teaching community of the state.

His demand for a new National Policy on Education was accepted by Shri Rajiv Gandhi on 23rd July, 1983 in a teachers gathering at Bhopal.

He has devoted himself wholeheartedly to the welfare of the teachers. This is high time to utilise his talents and expertise for the execution of new education policy.

Shri S. N. Dubey visited U.S.S.R. (An educational Tour) in July, 1987 (Taskent, Moscow, Leningrad, Minsk and Kiev).

He was awarded National Travel fellowship by NCERT to study various early childhood projects of the country.

Participated in about 80 National Seminars, Workshops and Conferences. Acted as Chair person in seventeen of them.

**Dr. Gulab Chaurasia**

5th Sept 1997

रामचरित मानस सम्मेलन समिति अरेरा कॉलोनी, भोपाल  
13वें मानस सम्मेलन के अवसर पर, समिति के प्रथम एवं संस्थापक अध्यक्ष  
संत स्वरूप पं. श्री बैजनाथ प्रसाद जी दुबे  
को प्रस्तुत अभिनन्दन पत्र

श्रीमद अखिलेश्वरानन्द जी महाराज (कपिल देवजी),- (आद्य शंकराचार्य पीठ, आँकारेश्वर धाम) के कर कमलों द्वारा हमारे महर्षि, संत और विद्वान रामय-समय पर अपने दीर्घकालीन साधनाभ्यास से प्राप्त अनुभवों को जनता जनार्दन तक प्रस्तुत करने का पूर्ण प्रयास करते हैं और जनता जनार्दन की संतुष्ट चित्त भूमि को अमूल्य उपदेशों से आप्लावित करके उनके उत्तम सुप्त संस्कारों का उद्बोधन कर, उनको कर्तव्यनिष्ठा, सेवा, परोपकार, सहिष्णुता, दया, सत्यनिष्ठा, धर्माचरण और नीरोगता आदि आलौकिक भद्र भावों की ओर प्रवृत्त करते हैं। ब्रह्मानुभूति होने के कारण उनमें मैत्री, करुणा, मुदिता, दया, प्रेम आदि दिव्यभावों की वृद्धि स्वयमेव होती है। इसका प्राणि मात्र के मनोमण्डल पर अचिन्तनीय सूक्ष्म, प्रभाव अवश्य होता है। इन महर्षियों द्वारा उपदिष्ट ज्ञान का प्रभाव शासक और प्रजा पर समान रूप से होता है। शासन से लेकर जनसाधारण का मनोबल उनकी ओर उसी प्रकार आकर्षित होता है जिस प्रकार चुम्बक के प्रति लोहे का आकर्षण होता है। भारत वर्ष तो सदा से ही ऐसे महापुरुषों की निधि रहा है यह वह निधि है, जो कभी पराभूत नहीं होती है और जिसे किसी भी विप्लवकारी शक्ति का भय नहीं होता है। आधुनिक समय में इन महर्षियों की संख्या बहुत कम हो गयी है किंतु ईश्वर की कृपा से यत्र-तत्र इनकी उपस्थिति तो बनी हुई है।



मानस सम्मेलन के प्रथम एवं संस्थापक अध्यक्ष पंडित बैजनाथ प्रसाद जी दुबे ने, उक्त तथ्य को भली प्रकार समझा उन्होंने अविनाशी ब्रह्म तत्व की अनुभूति करने के लिए, शारीरिक और मानसिक दोषों के शोधक, असाध्य किन्तु ब्रह्मर्षि मुनियों द्वारा अनुमोदित कठिन व्रतों का पालन किया है। संतों के सानिध्य में, उनके आदर्शों से प्रेरणा प्राप्त करके, उनके जीवन से सेवा के तथा युवाशक्ति के भावों को, जनता जनार्दन तक पहुँचाने के लिये, मानस सम्मेलन के आयोजनों के माध्यम से प्रयास किया।



अनुभूत ज्ञान को केवल अपने अन्तःकरण तक सीमित रखना, अन्यत्र उसका प्रचार व प्रसार न करना यह भाव अत्यन्त निन्दनीय है, अतएव दुबे जी ने प्रारंभ से सत्यानुभवों को नयी पीढ़ी तक पहुँचाने का कार्य करने के लिये इन महर्षियों और संतों को भोपाल आमंत्रित किया। कर्म और ज्ञान का समन्वय करके मानस सम्मेलनों के माध्यम से जनकल्याण का मार्ग चुनने वाले, इस व्यक्तित्व को अपने ध्येय में भारी सफलता प्राप्त हुई है।

श्री दुबे जी ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्होंने मानस सम्मेलन को एक नया स्वरूप प्रदान किया है। बालको एवं युवाओं में सहज रूप से घुल मिल जाने के कारण, आपको विशिष्ट ख्याति प्राप्ति हुई है। आपने बालको, युवाओं एवं प्रौढ़ों को समान रूप से प्रभावित किया है। मानस सम्मेलन आयोजित करने में जब कभी मन में निराशा होती है तब श्री बैजनाथ प्रसाद दुबे जी हमारे लिए आशा की एक किरण के रूप में दिखाई देते हैं और विश्वास होने लगता है कि जब तक इन जैसा व्यक्ति मौजूद है, हमें निराशा होने की आवश्यकता नहीं है तथा हमारी संस्था का भविष्य उज्ज्वल है।

आज मानस सम्मेलन समिति के माध्यम से अरेरा कॉलोनी एवं नेहरू नगर के हम सभी नागरिकगण, उनका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। ८८ वर्ष की आयु में भी उनका साहस अदम्य है। वे हमारी प्रेरणा के स्रोत बने रहें, ईश्वर से हमारी यही प्रार्थना है।

श्री दुबेजी को सम्मानित कर मायास्य समिति बौद्धवाचित है।

शैलेन्द्र प्रधान, (अध्यक्ष)

कैलाश चन्द्र पंत (संरक्षक)

नाथूराम सोनी "सतमंगलम" (सचिव)

विशेष उपस्थिति

मुकेश नायक (पू. शिक्षा मंत्री), पी. सी. शर्मा (विधायक), आचार्य पं. कृष्ण गोपाल शुक्ला, डा. श्याम सुंदर त्रिपाठी

रामचरित मानस सम्मेलन समिति, अरेरा कॉलोनी, भोपाल

स्थान : साई सेवा समिति प्रांगण नेहरू नगर, भोपाल

दिनांक : 29 मई 1999

# हमारे पितृ-पुरुष श्रदेय श्री पंडित बैजनाथ प्रसाद दुबे



ब्राह्मण समाज के गौरव हम सब के परम श्रदेय पं. बैजनाथ दुबे जो कि एक संततज्ञा संग्राम सेनानी थे। राष्ट्र प्रेम और समाज-सेवा के लिए अपना सर्वज्ञ समर्पित करने वाले पं. श्री जो कि भोपाल क्षेत्र में जिझीरिया ब्राह्मण समाज के प्रथम संस्थापक सदस्यों में से एक हैं। जिनके अथक प्रयासों का ही परिणाम है कि आज 'जिझीरिया (ब्राह्मण) कल्याण परिषद्' भोपाल ही नहीं अपितु पूरे प्रदेश में एक संगठन के रूप में समाज हित में कार्य कर रही है।

जैसा कि उल्लेखनीय है जिझीरिया (ब्राह्मण) समाज की उत्पत्ति क्षेत्र बुंदेलखण्ड माना जाता है और यही बुंदेलखण्डी संस्कृति और संस्कारों से सुसज्जित समाज के सज्जनिय बंधु आज समूचे विश्व में अपनी पहचान बना रहे हैं। उन्हीं में से एक हमारे ब्राह्मण रत्न पुरुष श्री पं. बैजनाथ प्रसाद दुबे भी एक हैं। जिनका रामचरित मान समिति, अरेरा कॉलोनी, भोपाल द्वारा 13वें मानस सम्मेलन के अवसर पर समिति के प्रथम एवं संस्थापक अध्यक्ष के रूप में सम्मानित किया गया। जिसका अभिर्नंदन पत्र इस पत्रिका में प्रकाशित है। इस विशेष प्रकाशन का उद्देश्य मात्र इतना है कि हमारी युव पीढ़ी ऐसे त्यागी, तपस्वी, योगी, समाज-सेवी महापुरुष से प्रेरणा लेकर आगे बढ़े और राष्ट्र में एक आदर्श समाज का प्रारूप प्रस्तुत करे।

पं. श्री बैजनाथ जी दुबे रामचरित मानस सम्मेलन समिति, अरेरा कॉलोनी के संस्थापक सदस्य थे उन्होंने समिति के माध्यम से क्षेत्र के लोगों को उत्तम संस्कार, कर्तव्यनिष्ठा, सेवा परोपकार, सहिष्णुता, दया, सत्य-निष्ठा, धर्माचरण और निरोगता आदि अलौकिक भद्र-भावों को प्रचारित करते हुए लोगों को सेवा-भाव करने की प्रेरणा देते रहे।

विट्ठल मार्केट में रामचरित मानस के द्वारा 14 वर्षों तक अरेरा कॉलोनी क्षेत्र में मार्केट स्थापित हो उसके लिए प्रयासरत रहे। उनके इस अनुकरणीय कार्य को देखते हुए 22/10/2009 को नगर-निगम परिषद् भोपाल ने विट्ठल मार्केट का नाम पं. श्री बैजनाथ प्रसाद जी दुबे करने का प्रस्ताव पास किया एवं अरेरा कॉलोनी वासियों की मींग पर मध्यप्रदेश शासन द्वारा तय मार्ग कम-नाम पं. श्री बैजनाथ दुबे के नाम पर रखा गया।

पं. श्री बैजनाथ जी द्वारा होशंगाबाद रोड स्थित श्री दुर्गा मंदिर, नारायण नगर में नवग्रह मंदिर का निर्माण कराया और समाज को धर्म आध्यात्म से जोड़ने की प्रेरणा प्रदान की। मध्यप्रदेश में इस तरह का मंदिर केवल उज्जैन में क्षिप्रा-तट पर स्थित है। पं. श्री दुबे का यह प्रयास समाज के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करता है तथा आने वाली कई पीढ़ियों पंडित श्री के इन प्रयासों को सदैव याद करती रहेंगी और एक अच्छे आदर्शवादी समाजसेवी नागरिक होने का प्रमाण प्रस्तुत करती रहेंगी।

ब्राह्मण समाज ही नहीं अन्य समाज के प्रभु और बुद्धिजीवी व्यक्तिगत तौर से भी पं. श्री के सहायनीय कार्यों की प्रशंसा की है।

## विश्व विख्यात गांधीवादी चिंतक एवं समाजसेवी एस.एन. सुब्बाराव के शब्दों में

पंडित बैजनाथ प्रसाद दुबे कोई राजनैतिक नेता नहीं थे, न कोई उद्योगपति और ना ही कोई मराधिपति फिर भी भोपाल के नगर निगम और जनता ने उचित सम्मान और पंडित बैजनाथ दुबे जी के नाम से मुख्य मार्ग और एक मुख्य बाजार का नाम (उनके नाम से) रखा। भोपाल नगर निगम और जनता ने सरकारी ओहदे से बढ़कर कार्यनिष्ठा, देश प्रेम और प्रमाणिकता को महत्व दिया, इसके लिये वे प्रशंसा के पात्र हैं, और मैं उनको कहां देता हूँ।

दुनिया में भारत का नाम कई कारणों से चमक रहा है। अमेरिका के राष्ट्रपति ओबामा के, स्पेस सेंटर ब्यूह में कई भारतीय कार्यरत हैं। और सभी क्षेत्रों में भारतीय युवक-युवतियों ने नाम किया है। एक क्षेत्र है, जिसमें भारत का नाम होना है, वह है 'प्रमाणिकता'।

समाज जब दुबे जी जैसे व्यक्तियों का आदर करना सीखेगा तभी कुछ आशा जगती है।

मुझे इस बात का गर्व है कि पं. बैजनाथ दुबे जी के पुत्र + पुत्रियाँ उच्च मूल्य और आदर्शों का पालन कर रहे हैं।



दृढहृदयस्वहृदय सद्गुरुः। यः यः\* दृढ-सदा दया दया। दयादृढ



### एक अनौपचारिक शिक्षिका हमारी माँ जानकी देवी दुबे

—महेन्द्र नाथ दुबे

मैं नहीं जानता कि दुनिया की सारी माताएँ किस प्रकार की अनौपचारिक शिक्षिकाएँ होती हैं? किंतु मैंने इतना तो जरूर जाना है कि मेरी माँ तो जीवन के अंतिम क्षणों (12 फरवरी, 1997— वसंत पंचमी) तक किसी न किसी प्रकार से अपने ज्ञान और अनुभव से हमें कुछ न कुछ सीख और शिक्षा अवश्य देती रही, यद्यपि वे किसी स्कूल में औपचारिक शिक्षक नहीं रहीं। किंतु मेरे छोटे से कस्बे मुंगावली के मिडिल स्कूल में हमारी माँ ने (जानकी देवी उर्फ नंदरानी) के रूप में एक विदुषी महिला एवं पढ़ी-लिखी माँ के रूप में विशेष प्रतिष्ठा अर्जित की थी। उन दिनों परदे का रिवाज अधिक था तब भी अपने नौ बच्चों एवं परिवार के अन्य बच्चों के माध्यम से स्कूल के शिक्षकों/शिक्षिकाओं को भी हमारी माँ के गणित और भाषा के ज्ञान के बारे में पूरी जानकारी थी।



महेन्द्र नाथ दुबे अपनी माँ के साथ

उन दिनों में हमारे स्कूल में कक्षा तीसरी से आठवीं तक चक्रवर्ती अंक गणित से पढ़ाई होती थी। मुझे जहाँ तक स्मरण है कि हमें उसका 35वां संस्करण उपलब्ध था, किंतु हमारे पिताजी ने बताया कि उनके जमाने में उन्होंने भी उसी चक्रवर्ती अंकगणित से पढ़ा था। मेरी माँ तो उत्तरप्रदेश से हिन्दी मिडिल और उर्दू मिडिल कर चुकी थी और उनके यहाँ कोई दूसरा ही अंकगणित था। किंतु अपने बच्चों को घर पर पढ़ाते रहने के कारण मेरी माँ को उस मोटे से चक्रवर्ती गणित का प्रत्येक प्रश्न हिब्ज था। सभी शिक्षक कठिन से कठिन उत्तरों के लिये कहते कि महेन्द्र की माँ इसे अच्छी तरह हल कर लेंगी।

उर्दू मिडिल होने के कारण उन्होंने हमें कई उर्दू की नज्में भी सिखायी थीं, अनेक तो हमें (सभी पुत्र/पुत्रियों को) आज भी याद हैं। मेरे छोटे चाचा बद्रीनाथ तो बड़े मजे से हमारी माँ की सिखायी नज्म-गुनगुनाते रहते हैं —

जो मयस्सर है पहनने को पहनता हूँ वही, करता हूँ न अच्छे बुरे की तख्सीस कभी,

याद जब आयेगी मसस्स्त की ये घड़ियां, दिल से वे साख्ता एक आह तो निकलेगी।

अभावों और कठिनाइयों में भी उन्होंने अपने बच्चों का जिस प्रकार लालन/पालन किया और शिक्षण दिया उसी की वजह से आज हमारे दो चाचा एवं हम नौ भाई-बहन सुख-समृद्धि और उच्च सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त कर सके। चि. सुरेन्द्र को कक्षा चार में डबल प्रमोशन मिला था उसका श्रेय हमारी माँ को ही जाता है।

भारत सरकार (केन्द्र) के श्रम आयुक्त के पद से सेवानिवृत्त होने के बाद मुझे लगातार माँ की छत्रछाया में रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ। एक प्रकरण याद आता है — मेरी माँ में आदमी को पहचानने की अद्भुत क्षमता थी। एक बार मेरी पोस्टिंग के समय एक व्यक्ति मुझसे मिलने आया। मेरी माँ से भी उसकी बात हुई। मेरी माँ ने बाद में मुझसे सहज बुंदेलखंडी में चेतावनी देते हुये कहा कि 'भैया जो लड़का बोलत तो मीठो है, परंतु हमें चालाक लगत है ईसे बचके रहियो'। मैंने माँ की बात अनसुनी कर दी या भूल गया, किंतु बाद में उस व्यक्ति की आपराधिक प्रवृत्ति ने मुझे भी जो कष्ट दिया उससे सिहरन हो जाती है और अपनी माँ की



व्यक्ति को पहचानने की विलक्षण प्रतिभा का हमेशा स्मरण हो आता है।

अपनी सेवानिवृत्ति के पूर्व भारत सरकार के श्रम मंत्रालय में कार्य करते हुये मुझे बारह लेवर मेनुउल्स बनाने/बनवाने का कार्य करना पड़ा। उनमें भी मेरी माँ द्वारा समय समय पर बतायी और समझायी गई शिक्षा मेरे काम आयी। मेरा तो स्कूल शिक्षकों एवं पाठकों से आग्रह है कि माँ के अनुभव और आशीर्वाद को जीवन की शिक्षा के रूप में ग्रहण करना चाहिये। उस समय हमारे गाँव में केवल मिडिल तक ही स्कूल था। मुझे कक्षा 9 में अगला अध्ययन करने के लिये अपने मामा के यहाँ ललितपुर जाना पड़ा। मैं दो साल तक वहाँ पढ़ा। मेरी माँ को पत्र लिखने की आदत थी और वे मुझे चार से छह पृष्ठ तक का पत्र लिखती थीं। मेरी नानी जो टीचर्स ट्रेनिंग स्कूल की प्रधानाध्यापिका थी, मेरी माँ के मुझे लिखे पत्रों को पढ़कर कहा करती थी कि जानकी (मेरी माँ) के पत्र तो सभी बच्चों और विद्यार्थियों के पढ़ने लायक होते हैं। मेरी माँ जब पत्रों में अपने घर की स्थिति, प्रत्येक बच्चे, चाचा एवं भाई-बहनों तथा गायों तक के बारे में उल्लेख करती थीं तो मेरे पिताजी कहा करते थे कि जानकी के पत्रों से तो सारे घर के हाल-चाल चित्रों की भाँति दिखायी देते हैं।

हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हममें भी अपनी माँ की तरह प्रतिभा विकसित हो पाए जिससे हम अपनी भावी पीढ़ियों को शिक्षित कर पाएँ। 26 जनवरी, 1997 को जब मेरा साठवाँ जन्म दिन मनाया जा रहा था तो मैंने तो कभी कल्पना भी नहीं की थी कि वे इतनी जल्दी हमारा साथ छोड़ देंगी। हमारी माँ का निधन 12 फरवरी 1997 को वसंत पंचमी के दिन सांय 6.05 बजे सुरेंद्र की गोद में हुआ। सबसे पहले 5.55 पर पहुँचे और वो जीना चढ़ रहे थे तब माँ को अस्पताल ले जाने के लिए नीचे लाया जा रहा था। उसके बाद आटो में चि. सुरेंद्र ने उनका सिर अपनी गोद में रख लिया तो उन्होंने सुरेंद्र को देखा और प्राण त्याग किए।

यद्यपि वे आज प्रत्यक्ष रूप में हमारे साथ नहीं हैं किंतु चाचा (हम उम्र) एवं नौ भाई-बहनों (सुरेंद्र भी)के सुख-समृद्धि और सामाजिक प्रतिष्ठा में हमारी माँ का आशीर्वाद एवं उनकी दी हुयी शिक्षा हमारे साथ है। हम सदैव उनकी प्रेरणा एवं शिक्षा को न भूलें तथा हमारी भावी पीढ़ी भी (उनकी इच्छानुसार) उत्तोरत्तर सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करते हुये समाज कल्याण में भी भागीदार बनें रहें, यह परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है।

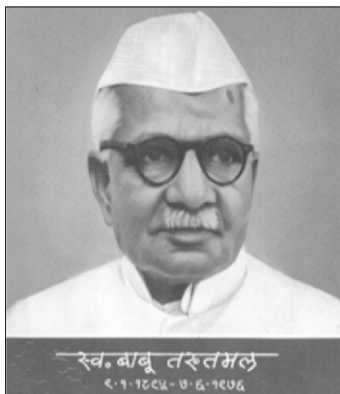
से.नि. श्रम आयुक्त (भारत सरकार)



मां श्रीमती जानकी देवी दुबे को पुत्रों द्वारा अंतिम प्रणाम - 12 फरवरी 1997 (वसंत पंचमी)

## भारतीय राजनीतिक कूटनीति का एक प्रसंग

- वीरेन्द्र जैन



कूटनीतिक राजनीति की एक घटना बाबू तख्तमलजी के साथ हुई। 1962 में जब डॉ. कैलाशनाथ काटजू जावरा से चुनाव हार गए तब बाबूजी कुरवाई से चुनाव जीत गए। उस समय कांग्रेस हाई कमान सभी राज्यों में गुटबंदी रोकने के लिये विधायक दल के नेता का चुनाव सर्वसम्मति से चाहता था। मध्यप्रदेश में गुटबाजी चरम पर थी। डॉ. कैलाश नाथ काटजू एवं बाबू तख्तमल जी ऊंचे आदर्शों के नेता थे, फिर भी इन दोनों के नाम से गुटों को माना गया। वास्तविकता यह है कि श्री भगवंत राव मण्डलोई एवं श्री मूलचंद्र देशलहरा के नेतृत्व में दो अलग-अलग गुट काम कर रहे थे। एक ओर तो डॉ. काटजू चुनाव हारे, उसी समय चुनाव जीतने के बाद बाबूजी भी विदिशा में बहुत अधिक बीमार हो गए थे। हाई कमान की इस इच्छा का लोगों को पता लग गया था नेता

पद के चुनाव की स्थिति में बाबू तख्तमलजी को ही मुख्यमंत्री बना दिया जायेगा। तभी केंद्रीय पर्यवेक्षक श्री यू.एन. ढेवर ने भी पहले विदिशा रुककर भोपाल आने का कार्यक्रम बनाया था।

मजेदार प्रसंग देखिये इसी बीच देशलहराजी ने श्री भगवंत राव मण्डलोई को कमजोर मानकर समझौता कर लिया और उन्हें सर्वसम्मति से मुख्यमंत्री चुनने का प्रस्ताव रखकर अपनी मर्जी का मंत्रिमंडल बनवा लिया, चूंकि देशलहरा यह जानते थे कि बाबूजी उनके गुट के प्रधान होकर भी सैद्धांतिक और बहुत ताकतवर थे यदि तख्तमल जी मुख्यमंत्री बनते तो देशलहराजी को उतना महत्व नहीं मिलता जितना कि मण्डलोई के नेतृत्व में। देशलहराजी ने समझौता करके जो कुछ चाहा वह पा लिया उनके लिए तो इतना ही काफी था। कांग्रेस हाईकमान ऐसे समझौते को देखकर हतप्रभ रह गया। फिर एक ओर मण्डलोई से समझौता करके तथा दूसरी ओर अपने पसंद का अध्यक्ष चुनवाकर देशलहराजी ने राजनीति में कूटनीति का एक ऐसा खेल खेला था जिससे वे भारत में एक अन्य प्रकार की समझौतों की कूटनीतिक राजनीति के प्रथम पुरुष बने। बाद में कामरान योजना में मंडलोई जी के स्थान पर डी.पी. मिश्रा मुख्यमंत्री बने।

राजनीति में पं. द्वारिकाप्रसाद मिश्र, देशलहराजी के बहुत बड़े विरोधी थे और देशलहराजी के विरोध में उन्होंने जो कार्यवाही की थी वह भी जगजाहिर थी। किंतु राष्ट्रीय राजनीति में पं. नेहरू के निधन के बाद मध्यप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री द्वारिकाप्रसाद मिश्र ने भी समझौतों की राजनीति के नाम और कूटनीति करके एक सैद्धांतिक और प्रभावशाली मोरारजी देसाई के साथ दो बार वही किया जो देशलहराजी ने तख्तमल जी के साथ किया था। इस तरह समझौते कराके शास्त्रीजी और इंदिरा जी को कमजोर समझकर प्रधानमंत्री बनवाने का श्रेय भी मिश्राजी को भी जाता है। इसमें समझौतावादी लोगों ने तो मनचाहा लाभ भी प्राप्त किया था।

91, इंदिरा कॉम्पलेक्स, एलआईसी के सामने नीमताल विदिशा

गाँधी का आलोक लोक से, मानो अब परलोक गया। बापू के सपनों का भारत हतकंडो से छला गया।।

**घटना चक्र- जो सभी के जीवन को प्रभावित करते हैं**

## **लोकसभा 1952 से अब तक**

**(लोकतंत्र के 67 वर्षों की एक झलक)**

### **पहली लोकसभा- 1952**

1952 के पहले लोकसभा चुनाव के बाद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 'कांग्रेस' 364 सीटों के साथ सत्ता में आई। पार्टी ने कुल पड़े वोटों का 45 प्रतिशत हिस्सा हासिल किया था। पंडित जवाहर लाल नेहरू देश के पहले निर्वाचित प्रधानमंत्री बने। स्वतंत्र भारत में चुनाव होने के पूर्व ही नेहरू के दो पूर्व कैबिनेट सहयोगियों ने कांग्रेस के वर्चस्व को चुनौती देने के लिए अलग राजनीतिक दलों की स्थापना कर ली थी। श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने एक ओर जहां अक्टूबर 1951 में जनसंघ की स्थापना की, वहीं दूसरी ओर दलित नेता डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने अनुसूचित जाति 'महासंघ' जिसे बाद में रिपब्लिकन पार्टी का नाम दिया गया को पुनर्जीवित किया।

अन्य दल भी उस समय सामने आए थे, जिनमें आचार्य कृपलानी की किसान मजदूर प्रजा परिषद, राम मनोहर लोहिया एवं जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व वाली समाजवादी पार्टी और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी शामिल हैं। जवाहरलाल जी ने तो भोपाल (लाल परेड ग्राउंड) की सभा में चुनावी भाषण देते हुए कहा था कि "हिन्दू महासभा का नाम लेने से मेरा मुंह कड़वा हो जाता है।" इन सभी दलों की पराजय हुयी।

### **दूसरी लोकसभा -1957**

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पहली लोकसभा यानी 1952 की अपनी सफलता की कहानी 1957 में हुए दूसरे लोकसभा चुनाव में भी दोहराने में कामयाब रही, कांग्रेस के 490 उम्मीदवारों में से 371 जीतने में कामयाब रहे। पंडित जवाहर लाल नेहरू सत्ता में वापस लौटे, कांग्रेस के सदस्य फिरोज गांधी का उदय भी इस चुनाव में देखा गया, उन्होंने उत्तर प्रदेश के रायबरेली निर्वाचन क्षेत्र में अपने निकटतम प्रतिद्वंदी नंदकिशोर को 29,000 से अधिक मतों के अंतर से हराया। इस चुनाव में पं. नेहरू जी की एकमात्र संतान श्रीमती इंदिरा गांधी का प्रभाव बहुत तेजी से बढ़ा और अनेक कांग्रेसी नेताओं ने तो उन्हें नेहरू जी का उत्तराधिकारी मान लिया था। नेहरू जी ने अन्य कई विरोधी दलों से तो समन्वय स्थापित करना चाहा, लेकिन उन्होंने केवल आरएसएस के खिलाफ ही विशेष मोर्चा खोला और भविष्य के लिए उन्हें ही अपना विरोधी विकल्प बताया। 1957 के इस चुनाव में ग्वालियर की महारानी विजयाराजे सिंधिया को कांग्रेस में लाकर लगभग 150 से अधिक सामंतों और पारिवारिक तथा जातिवादी पृष्ठभूमि के लोगों को कांग्रेस के माध्यम से लोकसभा में पहुंचने का अवसर मिला।

### **तीसरी लोकसभा -1962**

2 अप्रैल, 1962 को तीसरी लोकसभा का गठन हुआ। नेहरू जी फिर से प्रधानमंत्री बने। दो वर्ष बाद ही नेहरू जी को दिल का दौरा पड़ने से 27 मई, 1964 को उनका निधन हो गया, तब 2 सप्ताह के लिए सबसे वरिष्ठ गुलजारी लाल नंदा ने शपथ ली। कांग्रेस द्वारा मोरारजी देसाई की बजाय आनंद भवन के प्रिय श्री लाल बहादुर शास्त्री को नया नेता चुना गया। शास्त्री जी के देहांत के बाद नेहरूजी की बेटी इंदिरा गांधी को प्रधानमंत्री बनाया गया। मोरारजी देसाई की बजाय नेहरू जी की पुत्री इंदिरा गांधी को नेता चुना गया और 24 जनवरी, 1966 को प्रधानमंत्री बनीं।

### **चौथी लोकसभा -1967**

1967 में पहली बार कांग्रेस ने निचले सदन में करीब 60 सीटें खो दीं, राजमाता सिंधिया एवं अनेक लोग कांग्रेस से त्यागपत्र देकर अलग हो गये। उसे केवल 283 सीटों पर जीत हासिल हुई। कांग्रेस को एक बड़ा झटका सहना पड़ा, क्योंकि बिहार, केरल, उड़ीसा, मद्रास, पंजाब एवं पश्चिम बंगाल में गैर कांग्रेस

सरकारें बनीं, इंदिरा गांधी को 13 मार्च को प्रधानमंत्री के रूप में शपथ दिलाई गई। असंतुष्ट आवाजें शांत रखने के लिए उन्हें, मोरारजी देसाई को भारत का उप प्रधानमंत्री एवं वित्त मंत्री नियुक्त करना पड़ा। दो वर्ष बाद मोरारजी भाई ने मंत्री परिषद से त्यागपत्र दिया। बाद में उन्होंने अपनी आत्मकथा में उपप्रधानमंत्री पद को स्वीकार करना अपनी सबसे बड़ी गलती मानी। कांग्रेस का विभाजन हुआ अब संगठन कांग्रेस और इंदिरा कांग्रेस अलग हो गई। इंदिरा कांग्रेस ने संगठन कांग्रेस समाजवादियों एवं अन्य सभी विरोधियों पर सांप्रदायिक शक्तियों से मिलकर काम करने का आरोप लगाया।

### पांचवी लोकसभा -1971

1971 में इंदिरा गांधी ने गरीबी हटाओं के चुनावी नारे के साथ 352 सीटों पर जीत दर्ज की। किन्तु, ग्वालियर की राजमाता और उनके पुत्र माधवराव सिंधिया 1971 में ही जनसंघ में शामिल होकर लोकसभा में पहुंच चुके थे और उन्होंने आर.एस.एस परिवार एवं जनसंघ को मजबूत बनाने में ऐतिहासिक सहयोग दिया। बाद में भारत पाकिस्तान युद्ध में आई बड़ी आर्थिक लागत, दुनिया में तेल की कीमतों में वृद्धि और औद्योगिक उत्पादन में गिरावट ने आर्थिक कठिनाइयां बढ़ा दी थीं। 12 जून, 1975 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने चुनावी भ्रष्टाचार के आधार पर इंदिरा गांधी के 1971 के चुनाव को अवैध ठहरा दिया। 1973-74 में जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में एक बड़ी विरोधी लहर चल रही थी। तभी इस्तीफा देने की बजाय इंदिरा गांधी ने देश में आपातकाल की घोषणा की और पूरे विपक्ष को जेल में डाल दिया।

### छठवी लोकसभा -1977

कांग्रेस सरकार द्वारा आपातकाल की घोषणा 1977 के चुनाव में मुख्य मुद्दा थी। 23 जनवरी को इंदिरा गांधी ने मार्च में चुनाव कराने की घोषणा की और सभी राजनीतिक कैदियों को रिहा कर दिया, चार विपक्षी दलों संगठन कांग्रेस, जनसंघ, भारतीय लोकदल और समाजवादी पार्टी ने जनता पार्टी के रूप में मिलकर चुनाव लड़ने का फैसला किया। इंदिरा कांग्रेस को स्वतंत्र भारत में पहली बार चुनाव में हार का सामना करना पड़ा और जनता पार्टी में मोरारजी भाई देसाई 24 मार्च को भारत के पहले गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्री बने। कांग्रेस की बड़ी हार हुई, इंदिरा गांधी और उनके बेटे संजय गांधी भी चुनाव हार गए। 1978 में जय प्रकाश नारायण गंभीर रूप से अस्वस्थ हुए जो जनता पार्टी का मार्गदर्शन कर रहे थे। जनता पार्टी में आपस में झगड़े बढ़े। राजनारायण, चौधरी चरणसिंह, जगजीवन राम, समाजवादी इत्यादि अपना-अपना राग अलापने लगे। समाजवादियों ने तो आर.एस.एस के खिलाफ झंडा उठा लिया। वे चाहते थे कि जनता पार्टी में शामिल आर.एस.एस से आये लोगों को आर.एस.एस की दोहरी सदस्यता छोड़ना चाहिए जिसे जनता पार्टी में शामिल आर.एस.एस के लोगों ने मंजूर नहीं किया। इंदिरा गांधी को फिर आर.एस.एस का विरोध करने का बड़ा हथियार मिल गया। मोरारजी देसाई को प्रधानमंत्री पद से हटना पड़ा।

### सातवी लोकसभा -1980

चरण सिंह और जगजीवन राम प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई से खुश नहीं थे, 1969 में कांग्रेस विभाजित हुयी थी। अब जनता पार्टी 1979 में विभाजित हो गई। अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी ने पार्टी छोड़ दी और जनसंघ एवं कुछ लोगों ने भी सरकार से समर्थन वापस ले लिया, देसाई ने विश्वास मत खोने के बाद इस्तीफा दे दिया। चरण सिंह ने प्रधानमंत्री के रूप में जून 1979 में शपथ ली। कांग्रेस ने समर्थन का वादा किया, लेकिन बाद में पीछे हट गई।

जनवरी 1980 में चुनाव की घोषणा हुई, इंदिरा जी के नेतृत्व में कांग्रेस ने लोकसभा में 351 सीटें जीतीं और जनता पार्टी या बचे हुए, गठबंधन खत्म हो गया।

### आठवी लोकसभा -1984-89

31 अक्टूबर, 1984 को प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के बाद राजीव गांधी ने अंतरिम प्रधानमंत्री के



रूप में शपथ ली, नवंबर 1984 में चुनाव की घोषणा कर दी गई। कांग्रेस ने भारी बहुमत से जीत हासिल की, उसने 409 लोकसभा सीटें जीत कर और कुल मतों का 50 फीसद अपने नाम किया। इस चुनाव में इंदिरा गांधी की हत्या की सहानुभूति की लहर में कांग्रेस उन स्थानों से भी जीती जहां वे कभी नहीं जीतती थी। तेलुगुदेशम पार्टी 30 सीटों के साथ संसद में दूसरी सबसे बड़ी पार्टी बन गई। यह भारतीय संसद के इतिहास के उन दुर्लभ रिकॉर्डों में से एक है, जिसमें कोई क्षेत्रीय पार्टी मुख्य विपक्षी दल के रूप में उभरी।

### नौवीं लोकसभा - 1989

9वीं लोकसभा का चुनाव भारतीय चुनावी राजनीति में कई मायनों में ऐतिहासिक घटना रहा। इस चुनाव ने राजनेताओं के वोट मांगने का तरीका बदल लिया, उस वक्त जाति और धर्म के आधार पर भी वोट मांगना केंद्र बिंदु बन गया था। विश्वनाथ प्रताप सिंह राजीव गांधी के सबसे बड़े आलोचक थे, उन्हें शीघ्र ही मंत्रिमंडल से बर्खास्त कर दिया गया था। उन्होंने अरुण नेहरू और आरिफमोहम्मद खान के साथ जनमोर्चा का गठन किया। 11 अक्टूबर, 1989 को जनमोर्चा, जनता पार्टी, लोकदल और कांग्रेस के विलय से जनता दल की स्थापना हुई, द्रमुक, तेदेपा और अगप सहित कई क्षेत्रीय दल जनता दल से मिल गए और नेशनल फ्रंट की स्थापना की गई। 525 सीटों के लिए यह चुनाव 22 नवंबर एवं 26 नवंबर, 1989 को 2 चरणों में संपन्न हुआ। नेशनल फ्रंट के लिए लोकसभा में बहुमत हासिल हुआ, राष्ट्रीय मोर्चे के सबसे बड़े घटक जनता दल ने 143 सीटें जीतीं और उसने वाममोर्चे और भारतीय जनता पार्टी के बाहरी समर्थन से सरकार बनाई। विश्वनाथ प्रताप सिंह भारत के 10वें प्रधानमंत्री बने और देवीलाल उप प्रधानमंत्री, उन्होंने 2 दिसम्बर 1989 से 10 नवंबर, 1990 तक कार्यभार संभाला। लालकृष्ण आडवाणी द्वारा राम जन्मभूमि बाबरी मस्जिद मुद्दे पर रथयात्रा शुरू करने और मुख्यमंत्री लालू यादव द्वारा बिहार में आडवाणी को गिरफ्तार किए जाने के बाद भाजपा ने वीपी सिंह सरकार से समर्थन वापस ले लिया, सिंह ने विश्वास मत हारने के बाद इस्तीफा दे दिया। चंद्रशेखर 64 सांसदों के साथ जनता दल से अलग हो गए और उन्होंने समाजवादी जनता पार्टी बनाई, उन्हें बाहर से कांग्रेस का समर्थन मिला और वह भारत के 11 वें प्रधानमंत्री बने।

आखिरकार उन्होंने भी 6 मार्च, 1991 को इस्तीफा दे दिया, जब कांग्रेस ने आरोप लगाया कि सरकार राजीव गांधी की जासूसी करा रही है।

### दसवीं लोकसभा - 1991

10वीं लोकसभा का चुनाव मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू करने और राम जन्मभूमि बाबरी मस्जिद विवाद के चलते मंडल मंदिर चुनाव भी कहा जाता है। मतदान के पहले दौर के एक दिन बाद यानी 20 मई, 1991 को तमिल ईलम लिबरेशन आइगर्स द्वारा श्री पेरुंबुदूर तमिलनाडु में चुनाव प्रचार के दौरान पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्या कर दी गई, जिन सीटों पर चुनाव शेष रह गया था। वहां सब जगह सहानुभूति की लहर में कांग्रेस को सफलता मिली। इस चुनाव में महज 53 प्रतिशत मतदान हुआ। एक त्रिशंकु संसद बनी, जिसमें 232 सीटों के साथ कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी और 120 सीटों के साथ भाजपा दूसरे स्थान पर रही। जनता दल सिर्फ 59 सीटों के साथ तीसरे स्थान पर रहा। 21 जून को कांग्रेस के पीवी नरसिम्हाराव ने प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली और कार्यकाल पूरा किया।

### ग्यारहवीं लोकसभा - 1996

11वीं लोकसभा के लिए हुए चुनाव परिणामों से एक बार फिर त्रिशंकु संसद बनी और 2 वर्ष तक राजनीति अस्थिरता रही। इस दौरान देश के 3 प्रधानमंत्री बने, भाजपा को 161 सीटें और कांग्रेस को 140 सीटें मिलीं, अटलबिहारी वाजपेयी ने 16 मई को प्रधानमंत्री के रूप में पदभार संभाला, लेकिन 13 दिनों के बाद इस्तीफा दे दिया। जनता दल के नेता देवेगौड़ा ने एक जून को संयुक्त मोर्चा गठबंधन सरकार बनाई, जो 18 महीने चली। इसके बाद देवेगौड़ा के विदेश मंत्री इंद्रकुमार गुजराल ने अप्रैल 1997 में प्रधानमंत्री के रूप में पदभार संभाला।

### बारहवीं लोकसभा - 1998

इस चुनाव ने भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन को 265 सीटों का कार्यकारी बहुमत प्रदान किया। इस संदर्भ में 15 मार्च को राष्ट्रपति के आर. नारायणन ने अटलबिहारी वाजपेयी को अगली सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया। 19 मार्च को वाजपेयी ने दूसरी बार प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली। 17 अप्रैल, 1999 को वाजपेयी लोकसभा में विश्वास मत हार गए, फलस्वरूप उनकी गठबंधन सरकार ने इस्तीफा दे दिया। पिछले चुनाव 1996 और 1998 में हुए थे।

### तेरहवीं लोकसभा - 1999

1999 के चुनाव 40 महीने में तीसरी बार हो रहे थे। 6 अक्टूबर को आए परिणामों में राजग को 298 सीटें मिली और कांग्रेस एवं उसके सहयोगियों को 136 सीटों पर विजय प्राप्त हुई। अटल बिहारी वाजपेयी ने 13 अक्टूबर को तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली। सब लोगों साथ लेकर चले। उदारता का परिचय दिया उनके नेतृत्व में उनके मंत्री मंडल के साथियों तो अच्छा कार्य किया।

### चौदहवीं लोकसभा - 2004

किंतु निचले स्तर के एवं आर.एस.एस के कार्यकर्ताओं के अधिक हस्तक्षेप के कारण जनता भारतीय जनता पार्टी से नाराज हो गई और इसका परिणाम चुनाव पर पड़ा। 20 अप्रैल से 10 मई 2004 के बीच 4 चरणों में आम चुनाव हुए, कांग्रेस ने अपने सहयोगियों की मदद से 335 सदस्यों, बसपा, सपा, एमडीएमके और वाममोर्चा के बाहरी समर्थन सहित का बहुमत प्राप्त करने में सफल रही, चुनाव के बाद हुए इस गठबंधन को संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन यूपीए कहा गया। पूर्व वित्त मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह देश के प्रधानमंत्री बने। विकास के बावजूद महंगाई बहुत तेजी से बढ़ी - 2013 में महंगाई से जनता बहुत त्रस्त हुई।

### पंद्रहवीं लोकसभा - 2009

श्रीमती सोनिया गांधी एवं डॉ. मनमोहन सिंह के नेतृत्व में 15वीं लोकसभा के चुनाव एक बार फिर कांग्रेस के लिए लाभकारी साबित हुए। मई 2009 में 15 वीं लोकसभा के चुनाव परिणाम घोषित हुए और कांग्रेस के नेतृत्व वाले संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन 'यूपीए' ने लोकसभा का नेतृत्व करने का जनादेश हासिल किया। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को दोबारा देश का नेतृत्व करने का अवसर मिला।

### सोलहवीं लोकसभा - 2014

मई 2014 में भाजपा 16 वें लोकसभा चुनाव में मतों के बड़े अंतर के साथ दिल्ली एवं देश भर सीटें जीतीं भाजपा के पीएम पद उम्मीदवार नरेंद्र मोदी ने 26 मई 2014 को भारत के 16वें प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ग्रहण की है।

### चुनाव 2014 एक विश्लेषण -

जनता वहीं है, वोटर वही हैं, अधिकांश कार्यकर्ताओं एवं प्रारंभिक स्तर के नेतृत्व ने जो अभी तक कांग्रेस एवं अन्य पार्टियों को समर्थन करते रहा था, अपने आप को बदलकर नरेन्द्र मोदी के करिश्माई नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी में विश्वास व्यक्त किया। यह कांग्रेस के खिलाफ घोर असंतोष और महंगाई की वजह से भी हुआ। जनता बहुत दुःखी और नाराज थी। भारतीय जनता पार्टी की विजय में सबसे बड़ा श्रय फ्लोटिंग वोटर्स और कार्यकर्ताओं को है। अमेरिका और ब्रिटेन के लोकतंत्र में सर्वाधिक सम्मान इन फ्लोटिंग वोटर्स को भी प्राप्त होता है। पहले जनसंघ और उसके बाद भारतीय जनता पार्टी का शीर्ष नेतृत्व तो इसे सदा मान्य भी करता रहा, किंतु मध्य स्तर और निचले स्तर के कार्यकर्ता इसे केवल अपनी जीत समझते रहे थे, अब उनसे समझदारी और त्याग की अपेक्षा है, उन्हें अमेरिका और ब्रिटेन के लोकतंत्र से सीखना होगा। अब निचले स्तर के उन कार्यकर्ताओं से त्याग की अपेक्षा है। जनता की भलाई के लिए तो योग्यता, क्षमता एवं ईमानदारी ही अपेक्षित है और सक्षम लोगों के सहयोग और सहभागिता के बिना जनकल्याण की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

**लोकतंत्र** - 1957 से ही श्रीमती इंदिरा गांधी ने कांग्रेस नेतृत्व पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली थी कांग्रेस ने आर.एस.एस. परिवार का हौवा खड़ा करके केवल जनसंघ एवं भाजपा को अपना विकल्प समझकर परिवारवादी एवं सामंतवादी लोगों का भी सहारा लिया। किन्तु कांग्रेस ने समाजवादी, गरीबी हटाओ, राष्ट्रीयकरण इत्यादि लोकलुभावन नारों से तथा कथित प्रगतिशील ताकतों से समझौते करके अपनी सत्ता कायम रखी। प्रदेशों में भी लोगों ने क्षेत्रीयता का नारा देकर जनता को भ्रमित किया और यहां भी संघीय एवं परिवारवादी ताकतें ही मजबूत हुयीं। 2014 के चुनावों के पूर्व ही आरएसएस परिवार ने कठोर निर्णय लेकर गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री पद का प्रत्याशी घोषित किया। नरेन्द्र मोदी ने करिश्माई ढंग से चुनाव प्रचार कर कमान हाथ में लेकर भाजपा को भारी जीत दिलायी। इंदिरा गांधी कांग्रेस परिवार को पहली बार इतनी बड़ी पराजय हुयी। मंहगाई से त्रस्त जनता ने मोदी का साथ दिया।

संयम विम्ब एवं अन्य पत्रिकाओं से —साभार

**मेरे सपनों का भारत** - मैं ऐसे भारत के लिए कोशिश करूंगा, जिसमें गरीब लोग भी यह महसूस रेंगे कि वह उनका देश है— जिसके निर्माण में उनकी आवाज का महत्व है। मैं ऐसे भारत के लिए कोशिश करूंगा, जिसमें उच्च और निम्न वर्गों का भेद नहीं होगा और जिसमें विविध सम्प्रदायों में पूरा मेलजोल होगा। ऐसे भारत में अस्पृश्यता या शराब और दूसरी नशीली चीजों के अभिशाप के लिये कोई स्थान नहीं हो सकता। उसमें स्त्रियों को वहीं अधिकार होंगे जो पुरुषों को होंगे। शेष सारी दुनिया के साथ हमारा संबंध शांति का होगा।

मोहनदास करमचंद गांधी

**हिन्दू धर्म के बारे में स्वामी विवेकानंद कहते हैं-** “धरती पर कोई भी धर्म मानवता के सम्मान में इतने व्यापक रूप से शिक्षा नहीं देता जितना कि हिन्दू धर्म, पर धरती पर ऐसा कोई धर्म नहीं है, जो गरीबों और निचले तबकों के लोगों की इतनी अवहेलना करता है। भगवान ने मुझे दिखाया है कि धर्म गलत नहीं है, बल्कि हिंदूवाद के पाखण्डी और ढोंगी लोग हैं, जिन्होंने मिलकर परमार्थिक और व्यवहारिक रूप से सभी तरह के अत्याचारों को खोज निकाला है। —स्वामी विवेकानन्द

— चैरेवति भोपाल से साभार

**वास्तविक स्वतंत्रता...**— कार्य करने की वास्तविक स्वतंत्रता केवल वहीं पर होती है, जहाँ शोषण का समूल नाश कर दिया है। जहाँ एक वर्ग द्वारा दूसरे वर्ग पर अत्याचार नहीं किया जाता, वहाँ गरीबी नहीं है, जहाँ किसी व्यक्ति को अपने धंधे के हाथ से निकल जाने का भय नहीं है, अपने कार्यों के परिणाम स्वरूप जहाँ व्यक्ति अपने धंधे की हानि, घर की हानि तथा रोजी-रोटी की हानि के भय से मुक्त हैं।

— डॉ. भीमराव अंबेडकर

**90 फीसदी भारतीय मूल्य: मार्कंडेय काटजू** - भारतीय प्रेस परिषद के अध्यक्ष मार्कंडेय काटजू ने कहा “90 प्रतिशत भारतीय मूल्य हैं जिन्हें आसानी से फुसलाया जा सकता है। उन्होंने कहा 1857 से पहले शून्य प्रतिशत सांप्रदायिकता थी। आज 80 प्रतिशत हिंदू और 80 प्रतिशत मुसलमान सांप्रदायिक हैं। यह एक कठोर और कड़वा सच है।” प्रेस परिषद के अध्यक्ष काटजू ने कहा कि “शिक्षित लोग भी चुनावों में जाति और पंथ के आधार पर मतदान करते हैं जिससे पता चलता है कि लोग कितने पिछड़े हैं।”

—साभार: राष्ट्रीय सहारा, 9/12/12



एक लेखक के रूप में सुरेन्द्र नाथ दुबे



## स्व. श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा



जुलाई 1955 में जब मैं भोपाल आया, तब कॉलेज में तो बहुत से साथी थे किंतु संबधियो और परिचितों में भी जो लोग थे, उनसे मिलना स्वाभाविक ही था। रामनारायणजी एवं उनके छोटे भाई लक्ष्मीनारायण शर्मा व शिवनारायण शर्मा (शंभू जी) से हमारा पूर्व परिचय था।

लक्ष्मीनारायणजी मुझसे बहुत पहले शिक्षक बन गए थे। संयोग देखिए कि अक्टूबर 1958 में मैं भी शिक्षक हो गया था और एक दिन ऐसा आया कि जुलाई 1960 में मेरा और लक्ष्मीनारायणजी का चयन बीएड करने के लिए हो गया और हम दोनों सहपाठी बनकर पीजीवीटी कॉलेज भोपाल के विद्यार्थी बने। एक वर्ष तक हम दोनों को एक साथ रहने का अच्छा अवसर मिला। मैं अपने तिलक सदन की मैगजीन का संपादक था और मैंने

लक्ष्मीनारायणजी की एक कविता जो उस समय प्रकाशित की थी आज भी बहुत अच्छी मानकर इस लेख के साथ पुस्तक में पुनः प्रकाशित कर रहा हूँ।

एक और प्रकरण है। बीएड के कुछ विद्यार्थी पूर्वी भारत की यात्रा पर भेजे गये थे, तब लक्ष्मीनारायणजी और मैं एक साथ यात्रा में गए। मैं छोटा तो था ही, फिजीकली भी लक्ष्मीनारायणजी से कमजोर था। (वे तो कॉलेज में भी सारे विद्यार्थियों की पीटी कराते थे)। उन्होंने इस यात्रा में जो मेरी सहायता की और मुझे जो सुख मिला, उसे मैं कभी नहीं भूल पाता हूँ। लक्ष्मीनारायणजी बचपन से ही सेवाभावी रहे और जीवनभर दूसरों के सुख-दुख का ध्यान रखते रहे।

लक्ष्मीनारायणजी युवावस्था में ही आरएसएस से जुड़े हुए थे इसके अलावा वे बैरसिया क्षेत्र में लोगों के घनिष्ठ थे। लोग उन्हें बहुत प्यार करते थे। तत्कालीन जनसंघ पार्टी को चुनाव में प्रत्याशियों की आवश्यकता थी। लक्ष्मीनारायणजी पर जोर डालकर नौकरी छुड़वायी गई और उन्हें बैरसिया से विधायक के रूप में चुनाव लड़ने और जीत जाने का भी अवसर मिला। 1967 में भी उन्हें बैरसिया से चुनाव लड़ने और जीतने का अवसर मिला। 1968 में दलबदल के बाद मध्यप्रदेश में जब संविद सरकार बनी तो श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा को उप राजस्व मंत्री बनने का अवसर मिला। उस समय मैं बीएचईएल, भोपाल के हायरसेकण्डरी स्कूल में व्याख्याता था। एक दिन लक्ष्मीनारायणजी को शिक्षकों के एक

सम्मेलन में बाड़ी बरेली जाना था। उनको मेरी याद आई और उन्होंने पिपलानी में मेरे घर आकर उनके साथ

### श्री शफीक भाई से परिचय

भोपाल आने पर एक दिन लक्ष्मीनारायण जी मुझे श्री शफीक भाई के यहाँ भी ले गए, जिनकी बस भोपाल से बैरसिया चलती थी और लक्ष्मीनारायण जी को उसी बस से अपने गाँव एवं बैरसिया जाना होता था। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि श्री शफीक भाई भोपाल के मुख्यमंत्री डॉ. शंकरदयाल शर्मा के घनिष्ठ मित्र माने जाते थे क्योंकि डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने 1952 का चुनाव बैरसिया से ही लड़ा था और उनको जिताने में शफीक भाई का बहुत बड़ा हाथ था। शर्मा बन्धु भी गुनगा (बैरसिया क्षेत्र) के ही थे, इसलिए डॉ. शंकरदयाल शर्मा लक्ष्मीनारायणजी को भी पहचानते थे तथा इनके चाचा डॉ. शर्मा के बाल सहपाठी थे।

**स्व. श्री शफीक भाई से मेरा पहला परिचय**  
शर्मा बन्धुओं ने ही कराया था बाद में उन्हीं शफीक भाई से तो मेरा भी घनिष्ठ संपर्क उनके जीवन पर्यन्त रहा। मैं श्री शफीक भाई की विनम्रता से प्रभावित हुआ। मुझे उनका जो स्नेह मिला वह स्मरणीय है।

चलने का आग्रह किया। उस समय मेरे पिताजी और बड़े भाईसाहब भी घर पर थे। इन लोगों की काफी चर्चाएँ हुई। इसी संदर्भ में एक अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू यह है कि मेरे बड़े भाईसाहब महेन्द्रनाथ दुबे उस समय बीएचईएल में कर्मचारियों की गृहनिर्माण सहकारी समिति के अध्यक्ष भी थे, तब उन्होंने कर्मचारियों के लिए जमीन दिलाने की बात लक्ष्मीनारायणजी से कही। लक्ष्मीनारायण जानते थे कि बीएचईएल के पास अपने उपयोग के अलावा सैकड़ों एकड़ जमीन खाली पड़ी थी। उनके साथ जब हम लोग बरेली जा रहे थे तो रास्ते में लक्ष्मीनारायणजी ने उन सब जमीनों को भी देखा, जो खाली पड़ी थीं, क्योंकि हम लोगों का रास्ता वहीं से था। हमें तो कुछ याद भी नहीं रहा लेकिन बरेली से वापिस आकर वो घर छोड़ने आए तब दूसरे रास्ते से निकलकर उन्होंने देखा कि वहाँ भी बीएचईएल के आधिपत्य की बहुत सी जमीन बेकार पड़ी है। वाह रे, शर्माजी उन्होंने सारी जमीनों के बारे में अपने मंत्री, मुख्यमंत्री एवं अन्य अधिकारियों से चर्चा की तथा कर्मचारियों की सोसायटी को भी जमीन देने की सिफारिश की। इस बात का उल्लेख इसलिए कर रहा हूँ कि बीएचईएल में हड़कंप मच गया था कि राज्य सरकार खाली और बेकार पड़ी जमीनों का सदुपयोग करना चाहती है। तत्काल हबीबगंज क्षेत्र में अस्पताल बनाना प्रस्तावित हुआ तथा अपने कर्मचारियों के लिए शैक्षिक संस्थाओं इत्यादि के लिए भी जमीन आवंटित की गई। एक बस्ती भी कर्मचारियों के लिए बनाई गई। इसके बाद भी इतनी जमीन खाली पड़ी थी कि बीएचईएल गृह निर्माण सोसायटी को जमीन आवंटित करने के लिए बीएचईएल ने अनुमति दी। शेष बची जमीनें बीडीए और हाउसिंग बोर्ड को भी आवंटित हुई और आज के शक्ति नगर, साकेत नगर, अलकापुरी एवं अन्य स्थानों पर बीएचईएल से जमीनें वापस लेकर मध्यप्रदेश सरकार ने अपनी योजनाएँ चलाई। ये था लक्ष्मीनारायणजी के मंत्री के रूप में काम करने का तरीका।

1977 में लक्ष्मीनारायणजी पुनः राजस्व एवं सहकारिता मंत्री बने तथा उन्हें वही बंगला आवंटित हुआ, जिसमें डॉ. शंकरदयाल शर्मा भोपाल के मुख्यमंत्री के रूप में रहा करते थे। एक दिन अचानक वे अपनी मोटरसाइकिल से मेरे सरकारी निवास स्थान शिवाजी नगर में आए। मैंने कहा—भैया तुम्हारे पास तो इतनी सरकारी गाड़ियाँ हैं तुम मोटरसाइकिल से क्यों आये हो। मुझे उन्होंने हँसकर जवाब दिया कि 'तुम जैसे मित्रों के पास कभी तो मोटरसाइकिल से भी आना चाहिए। अपन तो मास्टर लोग रहे हैं, इसे भूलना तो नहीं चाहिए।' तीसरी बार जब वे 1990 में मंत्री बने तो उन्होंने श्री कुकरेती को अपना विशेष सहायक बनाया। मैंने हास्य-व्यंग्य में कहा कि **“man is judged by the company he keeps”**। मित्र तुम्हें मान गए कि तुमने कुकरेतीजी को अपना विशेष सहायक बनाकर बहुत अच्छा काम किया है। लक्ष्मीनारायणजी ने भी स्वीकार किया कि दुबेजी वास्तव में कुकरेती एक बहुत ही योग्य व्यक्ति हैं।

श्री अर्जुन सिंह का त्याग पत्र

जैसा कि मेरे और अर्जुन सिंह के संबंधों के बारे में लिखा गया है, यहाँ मैं एक प्रकरण अलग से उल्लेखित करना चाहूँगा। मैं फरवरी 1993 से मानव संसाधन मंत्रालय में अर्जुन सिंहजी के ही कारण राष्ट्रीय शिक्षण कल्याण प्रतिष्ठान का कार्य कर रहा था तथा मध्यप्रदेश भवन में मुझे एक अच्छा कमरा आवंटित था। दिसम्बर 1994 के तीसरे सप्ताह में लक्ष्मीनारायणजी अपने इलाज के संबंध में दिल्ली आए और मेरे कमरे में ही ठहरे, वे एक सप्ताह तक मेरे ही कमरे में साथ रहे। दिन में बड़े भाईसाहब महेंद्र दुबे के साथ ऑल इंडिया मेडिकल इस्टीट्यूट में चेकअप के लिए जाते थे। एक दिन मुझे श्री अर्जुन सिंह जी के घर जाना पड़ा, क्योंकि शिक्षक कल्याण की महत्वपूर्ण फाइलें उनके पास थीं। एक सप्ताह पहले अर्जुन सिंहजी की माँ का देहांत चुरहट में हो गया था तथा मुझे दोपहर में कार्यालय में मालूम हुआ कि गाँव में दाह संस्कार इत्यादि करने के बाद तथा इलाहाबाद

होकर वे केवल एक या दो दिन के लिए दिल्ली आए हैं इसलिए मैंने सोचा कि अपनी फाइलों की स्थिति देख लूँ और उनसे मिल भी लूँगा। मैं उनसे मिला तथा स्टॉफ ने मुझे बताया कि सारी फाइलें हस्ताक्षर हो गई हैं और कल ऑफिस पहुँच जाएँगी। मैं वापस अपने कमरे में आया, वहाँ टेलीविजन भी था और लक्ष्मीनारायणजी टीवी देख रहे थे। लक्ष्मीनारायणजी ने उसी समय कहा कि भैया दुबेजी, तुम्हारे अर्जुन सिंहजी ने तो मानव संसाधन मंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया है। अर्जुन सिंहजी के घर से मध्यप्रदेश भवन तक आने में यह घटना घटी। हाँ, उस समाचार से मैं विचलित तो हुआ। हम दोनों एक सप्ताह तक एक साथ रहे और जब तक उनका पूरा चेकअप नहीं हो गया तब तक हम और वो साथ ही रहे। यदि वे चाहते तो उन्हें एक अलग कमरा आवंटित हो सकता था परंतु उन्होंने मेरे साथ रहना ज्यादा उचित समझा।

2005 में लक्ष्मीनारायण जी राज्यसभा के सदस्य बन गये थे, तभी मेरे बेटे अरविंद जो अमेरिकन एक्सप्रेस में दिल्ली में काम करता था ने एक मकान खरीदा था, जिसमें उस समय थोड़ा सा काम बचा था, जो चल रहा था और हम उसी में रहते थे। एक दिन उनका अचानक फोन आया कि आज मेरे पास गाड़ी है और मैं फुरसत में हूँ इसलिए तुम्हारे पास आना चाहता हूँ। मेरे नये आवास में आए और न जाने क्यों लगभग तीन घंटे से अधिक मेरे घर पर ही रुके रहे। हम लोगों की खूब चर्चाएँ हुई, हमारे बच्चों से खूब बातें हुई। तब मैं सोच भी नहीं सकता था कि जल्दी ही एक दिन लक्ष्मीनारायणजी शर्मा (राज्यसभा के सदस्य) रहते हुए इस दुनिया से ही विदा हो जाएँगे। आज भी जब मैं उनकी बातों का स्मरण करता हूँ तो मुझे बरबस ही उनकी बहुत याद आती है। एक मास्टर से मिनिस्टर और फिर एम पी बन जाने के बाद भी उन्होंने अपनी सज्जनता और दोस्ती कभी नहीं त्यागी। अब तो मैं उनके प्रति केवल अपनी श्रद्धा व्यक्त कर सकता हूँ।

— सुरेन्द्रनाथ दुबे

### मैं हर फूल खिलाऊंगा

नीर न लाओ मां आंखों में,  
मैं हर फूल खिलाऊंगा।  
ये मौसम पलभर जो आया  
मैं बाहर को आऊंगा।।

मांग वही है आज समय की,  
अपना जीवन दान करो।  
फूल कहे यौवन खेतों में,  
श्रम से यों संग्राम करो।।

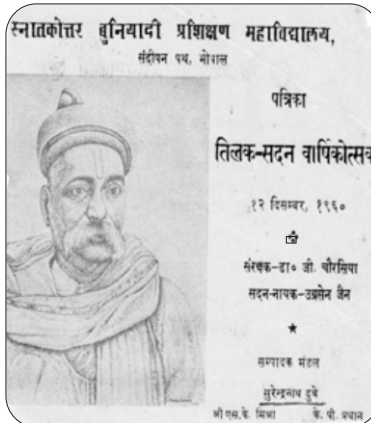
प्यासी धरती महक उठेगी,  
पीकर स्वेद बूंद प्याला।  
मुख सौरभ की फसल उगेगी,  
फल लायेगी श्रम वाला।।

टूटे मेरे हाथ अगर मैं,  
श्रम से इन्हें बचाऊंगा।  
नीर न लाओ मां आंखों में  
मैं हर फूल खिलाऊंगा।।

लक्ष्मी नारायण शर्मा, बी.एड

1960-61

सुरेन्द्र नाथ दुबे,  
स्व. ब्रजमोहन बिदुआ  
स्व. लक्ष्मी नारायण शर्मा  
किशोर अवस्था के साथी



स्व. लक्ष्मी नारायण शर्मा एवं उनके छोटे भाई शिव नारायण शर्मा

## श्री नारायण प्रसाद गुप्ता (नानाजी) को श्रद्धांजलि

स्कूल शिक्षा पत्रिका से साभार

विगत 17 अगस्त, 2012 को नारायण प्रसाद गुप्ता (नानाजी) से मेरी अंतिम मुलाकात वृद्धाश्रम, शाहजहाँनाबाद, भोपाल में आयोजित एक कार्यक्रम में हुई थी। उन्होंने आश्रम के अध्यक्ष श्री सुब्बारावजी के बारे में मुझसे चर्चा की (यहाँ उल्लेखनीय है कि मैं सुविख्यात गाँधीवादी श्री सुब्बारावजी से 1954 से ही निकट रूप से जुड़ा हूँ)। मेरा परिचय नानाजी से स्व. लक्ष्मीनारायण शर्मा एवं स्व. गंगाप्रसाद गुप्ता के माध्यम से 1960-61 से ही था। वे मुझे सदैव ही एक गाँधीवादी के रूप में जानते थे। उस दिन नानाजी से लम्बी चर्चा हुई। उन्होंने स्वीकार किया कि 1925 के बाद बड़े परिवर्तन हुए हैं। आजादी के आंदोलन में तथा स्वाधीनता के बाद अलग ढंग से इतिहास बना है और तकनीकी ज्ञान भी बढ़ा है, हमें भी तो उसी के अनुसार बदलना होगा। उन्होंने कहा, कि हम जिस स्वदेशी की चर्चा कर रहे हैं वह तो पूरी तरह से गाँधीजी से प्रभावित है। उन्होंने कहा कि पिछले दिनों उन्होंने गाँधी जी की 'हिन्द स्वराज' पुस्तक को बार-बार पढ़ा है। उन्होंने स्वीकार किया कि अब हमें अपने सुराज को चलाने के लिये 'हिंद स्वराज' में कही गयी बहुत-सी बातों को स्वीकार करना होगा।

नानाजी ने माना कि आज सादगी से रहने तथा राजनीति में उच्च आदर्शों को ग्रहण करने के लिए गाँधी मार्ग पर चलने की प्रेरणा नई पीढ़ी को देना चाहिए, उस मुलाकात में, मैंने नानाजी को अपने पहले परिचय का स्मरण कराया था। '1961 में' एक दिन जब मैं और श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा (तब हम दोनों बीएड में सहपाठी थे) साथ में कालेज छूटने के बाद सोमवारा गये। **लक्ष्मीनारायणजी, श्री कुशाभाऊ ठाकरे से मिलना चाहते थे। दूसरी मंजिल पर कार्यालयीन सहायक श्री कैलाश सारंग ने उन तक संदेश भेजा। तीसरी मंजिल पर ठहरे हुये ठाकरेजी ने हमें बुला लिया। वहाँ बैठे हुए श्री कुशाभाऊ ठाकरे, श्री नानाजी तथा डॉ. कन्हैया द्विवेदी से एक साथ मिलना हुआ। मालूम हुआ कि वे तीनों घनिष्ठ साथी रहे थे।** लक्ष्मीनारायण शर्मा को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि श्री कैलाश सारंग तो मेरे हिन्दी लेख को स्वयं ही टाइप कर रहे थे।

नानाजी ने अंतिम मुलाकात के दिन भी कहा था कि "डॉ. कन्हैया द्विवेदी हमारे बड़े भाई हैं और मैं सदैव ही उनके चरण स्पर्श कर उनका आशीर्वाद लेता रहा हूँ। आप मेरा संदेश उन तक पहुँचाना।" मैंने डा. कन्हैया द्विवेदी जी तक नानाजी का संदेश उसी दिन पहुँचाया था। डॉ. कन्हैया द्विवेदी उच्च आदर्शों के शिक्षक रहे हैं। हमारी 'स्कूल शिक्षा' पत्रिका प्राप्त होने पर नाना मेरी बेटी अंजू से फोन पर चर्चा कर उसे सदैव अपनी प्रतिक्रिया तथा आशीर्वाद देते।

—सुरेन्द्रनाथ दुबे

सुरेन्द्रनाथ दुबे और हमारे साथ जान बाफले नामकी एक सहपाठी छात्रा थी। दुबेजी उसे अपनी बहिन मानते थे। उनकी मां भोपाल की ख्याति नाम महिला चिकित्सक थीं, वे भोपाल के एक मात्र सुलतानिया जनाना अस्पताल की प्रधान और अधीक्षक रहीं थी। वे सुरेन्द्र को पुत्रवत् स्नेह करती रहीं।

के.एस.साहू के लेख से



## मौलाना तरजी मशरिकी

मौलाना तरजी मशरिकी तत्कालीन भोपाल राज्य और बाद में मध्यप्रदेश राज्य में मंत्री रहे। मौलाना तरजी बड़े मजाकिया स्वभाव के थे और बड़े ही गहरे तंज (व्यंग्य) किया करते थे। उन्हें हिन्दी और अंग्रेजी का ज्ञान नहीं था पर उर्दू फारसी के विद्वान थे। उन्होंने उर्दू की सबसे बड़ी डिग्री 'आलिम फजिल' हासिल की थी। डॉ. शंकरदयाल शर्मा (पूर्व राष्ट्रपति-भारत) उस समय भोपाल जो उस समय सी-ग्रेड स्टेट थी, के मुख्यमंत्री थे। उनके मात्र दो मंत्रियों में से एक मंत्री हमारे कथानायक मौलाना तरजी मशरिकी साहब भी थे। मौलाना तरजी भी अपने क्षेत्र में डॉ. शंकरदयाल शर्मा के समान ही विद्वान थे। जहाँ डॉ. शर्मा अपने शुद्ध अंग्रेजी उच्चारण के लिए ही प्रसिद्ध थे तो वहीं मौलाना तरजी उर्दू जुबान और अरबी के जानकार थे। हमारी औपनिवेशिक मानसिकता (गुलामी) हमें केवल अंग्रेजी पढ़े-लिखे को ही योग्य समझने की मानसिकता से उबरने नहीं देती।

नया मध्यप्रदेश बनने के बाद, सेठीजी ने भी उन्हें अपने मंत्रिमंडल में मंत्री बनाया उनके तंज उस समय भी वे यतीमखाने के दो साधारण-से कमरों में रहा करते थे, उन्ही दिनों की बात है, मौलाना को मंत्री बने दो-तीन दिन ही हुए थे, मैं तो उनसे अच्छी तरह परिचित था और उनकी विद्वता और सादगी का कायल था, उनके पास बैठा था। शहर के और भी तथा कथित बड़े आदमी उनसे मिलने आए थे, कुर्सियाँ कुछ अधिक नहीं थीं। कुछ लोग बाहर ही खड़े थे और कमरे में आ रही धूप से बचने के लिये अपनी कुर्सी खिसका रहे थे। उनके चेहरे से साफ झलक रहा था कि वे मौलाना तरजी के इस फकीराना अंदाज से खुद परेशान-से थे और कुछ फुसफुसाकर उनकी नुक्ताचीनी करने में लगे थे। इस बात को मौलाना तरजी ने भी भाँप लिया था। तभी तत्कालीन मुख्य सचिव नरोन्हा साहब का फोन आया। उन्होंने मौलाना साहब से कहा कि मौलाना साहब आप जो काशाना बंगला चाहते हैं फिलहाल वह खाली नहीं है, क्या करूँ? मौलाना ने बड़ी बेफिक्री से जवाब दिया—कोई बात नहीं, मैं तब तक इसी यतीमखाने में रहूँगा। हाँ, एक काम जरूर कर दो, दो-तीन दिन से मेरे कमरों में कुछ ज्यादा धूप आने लगी है। किसी इंजीनियर से कह देना कि कुछ चिकें (परदे) लगवा दें और हाँ, कुछ कुर्सियाँ भी भिजवा देना, क्योंकि फर्नीचर भी अब कुछ टूटा-फूटा लगने लगा है। कुछ देर बाद जब मौलाना किसी काम से अंदर के कमरे में गए तो मेरे बगल में बैठे एक नवाबी अंदाज रखने वाले सज्जन बोले, यार मौलाना आज भी कितने भोले हैं। बताइए कमरों में चिक और फर्नीचर के लिए चीफ सेक्रेटरी से कह रहे हैं। मैं चुप रहा, क्योंकि मैं मौलाना का मतलब अच्छी तरह समझ गया था। जब सब चले गए तो मौलाना ने मुझसे कहा भी, यार दुबे तुम समझ रहे हो, मैंने चीफ सेक्रेटरी से फोन पर यह सब क्यों कहा था, दरअसल मैं यहाँ बैठे इन मतलबी नाजुक मिजाज रईसजादों और नवाबजादों पर तंज (व्यंग्य) कस रहा था। ये कभी तो यहाँ आते नहीं थे आज मंत्री बन गया हूँ, इसीलिए आए हैं और इन्हें थोड़ीसी धूप भी सहन नहीं हो रही। मैं तो जिंदगी इसी यतीमखाने में गुजारता हूँ।

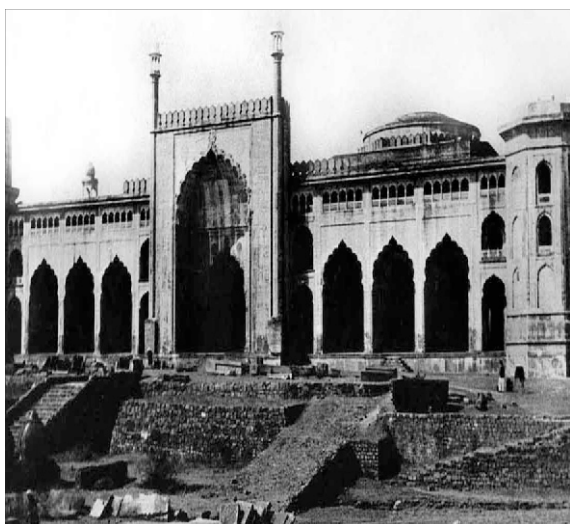
मुझे आश्चर्य तो तब हुआ जब थोड़ी देर बाद ही नरोन्हा साहब गाड़ी से उतरते हुए दिखाई दिए। दोनों गले मिले। मौलाना तरजी ने उनसे भी कहा कि यार नरोन्हा तुम तो हमेशा इस गरीबखाने (यतीमखाने) पर आते रहते हो, तुम्हें कभी धूप नहीं लगी। नरोन्हा साहब ने कहा कि मौलाना साहब मैं तभी समझ गया था कि आप किन्ही रईसजादों पर तंज कर रहे हैं। लोगबाग अपने छोटे-छोटे कामों के लिए अब आपको तंग करने लग गए होंगे। मौलाना ने कहा कि तुमने ठीक समझा यही तो मैं दुबे से कह रहा था, ये दुबे तो मेरा यार है, सब समझता है।

नरोन्हा साहब और मौलाना तरजी, दोनों ही बड़े फक्कड़ स्वभाव के थे इसीलिए दोनों में गहरी दोस्ती थी। नरोन्हाजी के बारे में प्रसिद्ध था कि वे किसी मंत्री, यहाँ तक कि मुख्यमंत्री के बंगले पर भी नहीं जाते थे। मौलाना तरजी तो मतलबी लोगों से दूर रहते थे। उन्हें चापलूसी तो एकदम नापसंद थी। वे ऐसे लोगों से दूर रहते थे, गाड़ी में जगह होने के बावजूद वे लोगों को साथ नहीं बैठाते थे और बड़े ही मजाकिया अंदाज में उन्होंने एक बार एक पत्रकार से कहा था कि मेरी गाड़ी में तीन लोगों का पेट्रोल है चौथा आदमी नहीं बैठाऊँगा। जब वे स्वास्थ्य मंत्री थे तो एक ऑपरेशन थिएटर का उद्घाटन करने गए तो उन्होंने मजाक में 'आम आदमी की समझ के थियेटर' का जिक्र भी किया और कहा क्या इस थिएटर में मरीजों को सिनेमा देखने का लालच भी दिया जाएगा?

### फकीराना अंदाज में लिए पर मरे शाही अंदाज में

जिस समय डॉ. शंकरदयाल शर्मा कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष थे उसी समय राष्ट्रपति महामहिम फखरुद्दीन अली अहमद भोपाल पधारे। डॉ. शर्मा उन्हें एशिया की सबसे बड़ी जामा मस्जिद, ताजुल मस्जिद दिखाना चाहते थे। डॉ. शर्मा के दोस्त जनाब शफीक भाई के बेटे का निकाह ताजुल मस्जिद में ही हो रहा था और डॉ. शर्मा एवं श्री फखरुद्दीन अली अहमद साहब को भी उसमें शरीक होना था। मौलाना तरजी साहब पास में लगे अपने निवास, यतीमखाने से निकाह में शामिल होने आए थे। वे मस्जिद की सीढ़ियां जो बहुत अधिक हैं, चढ़कर आए और जहाँ महामहिम राष्ट्रपति और डॉ. शंकरदयाल शर्मा विराजमान थे, उन्होंने मौलाना को अपने पास ही बैठा लिया। निकाह की रस्म अदा होने के तत्काल बाद ही मौलाना को अचानक मैसिव हार्ट अटैक आया, वे वहीं गिर पड़े। संयोग ऐसा कि उन्हें उठाने वालों में खुद राष्ट्रपतिजी थे। गांधी मेडिकल कॉलेज अस्पताल पहुँचने पर डॉक्टर ने कहा कि शायद उनका इंतकाल तो उसी समय हो गया है, किंतु फिर भी उन्हें एंबुलेंस में डाला गया। पद की गरिमा के कारण राष्ट्रपति किसी जनाजे में नहीं जाते पर वहाँ तो मौलाना तरजी को उनके आखिरी लम्हों में राष्ट्रपति की गोदी नसीब हुई। इस तरह वे अपनी मौत को भी यादगार बना गए।

— सुरेन्द्रनाथ दुबे



ताजुल मस्जिद



गांधी मेडिकल कॉलेज

## मेरे दूल्हाभाई (बहनोई) आरिफ कुरैशी

बीए प्रीवियस एवं फाइनल में मैं और आरिफ कुरैशी एक साथ पढ़ते थे। कभी-कभी हम घर पर भी कम्बाईड स्टडी किया करते थे। हमारे साथ एक परवीन नाम की लड़की भी थी। कुछ विशेष संबंधों के कारण मैंने उसे अपनी बहन माना था। मैं और आरिफ कुरैशी एमए में एक साथ थे, तब एक दिन आरिफ ने मुझे बताया कि उसकी शादी परवीन से तय हो गई है। मेरे मुँह से तभी निकला कि अरे यार अब तो तुम मेरे दूल्हा भाई बन गये हो। आरिफ ने तुरंत कहा, अब तुम मेरे साले भी हो।

संयोग देखिए आरिफ कुरैशी, मौलाना आजाद टेक्निकल कॉलेज (एमएसीटी) में मानविकी के व्याख्याता बने और प्रमोशन होते-होते वे वहाँ प्रोफेसर भी हो गये। किंतु हमारी दोस्ती लगातार बनी रही है। मेरी पहली तीन पुत्रियाँ हैं और सबसे छोटा बेटा अरविंद है। अरविंद बहुत ही मेधावी छात्र रहा है, उसका चयन इंजीनियरिंग में होकर काउंसिलिंग के माध्यम से एमएसीटी में उसका प्रवेश हुआ। उस दिन सुबह आरिफ कॉलेज नहीं आए थे किंतु मैं आरिफ के कमरे में ही लगातार बैठा रहा। आरिफ के स्टाफ ने बताया कि वे जरूर ही यहाँ आएँगे, इसलिए मैं अरविंद का एडमिशन कॉलेज में कराने के बाद आरिफ का इंतजार कर रहा था। मैंने उन्हें बताया कि मेरे बेटे अरविंद का यानि तुम्हारे भतीजे का एमएसीटी अर्थात् तुम्हारे कॉलेज में एडमिशन हो गया है और मैंने उसकी फीस भी भर दी है।

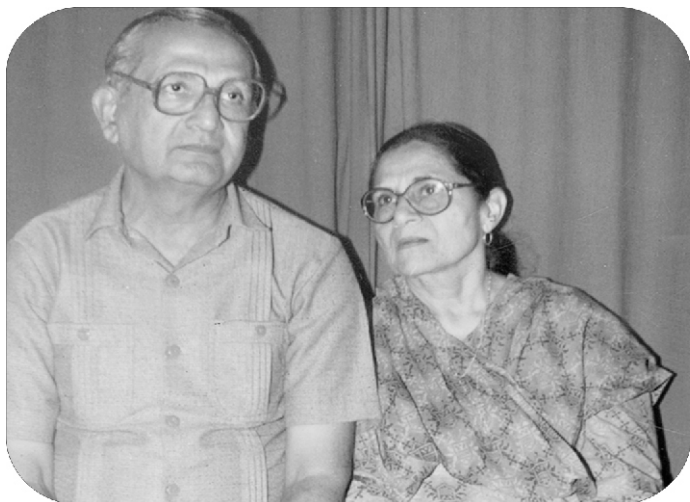
आरिफ ने पूछा, कि क्या इसका एडमिशन कंप्यूटर में नहीं हुआ। मैंने कहा, एमएसीटी में नहीं गवर्नमेंट इंजीनियरिंग कॉलेज, भोपाल में इसे कंप्यूटर मिल रहा है। अब आरिफ का गुस्सा देखने लायक था और संबंधों का अजब संयोग देखिए। आरिफ ने मुझसे कहा कि साले तुम बहुत समझदार बनते हो। तुमने मेरी वजह से अरविंद का एडमिशन यहाँ करा दिया। तुम्हें समझ में नहीं आता कि अब भविष्य कंप्यूटर का है, आरिफ ने मुझसे फीस की रसीद माँगी और गुस्से में उसे फाड़ दिया। चूँकि काउंसिलिंग की दूसरी बैठक शुरू हो चुकी थी और आरिफ को उसमें बैठना था, आरिफ ने तुरंत अरविंद का एडमिशन बदलवाकर गवर्नमेंट इंजीनियरिंग कॉलेज में कंप्यूटर में कराया। तब तक मैं कमरे में इंतजार कर रहा था। ये काउंसिलिंग में से बीच में उठकर आए और इन्होंने मुझे केवल आदेशात्मक भाषा में सूचित किया कि अरविंद मेरे यहाँ नहीं गवर्नमेंट इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ेगा। आरिफ ने अपने कॉलेज के अकाउंटेंट को बुलाया और कहा कि तुमने जो फीस ली है उसको कैंसिल करो और मेरे दस्तखत करा लो। उन्होंने फटी रसीद का कागज भी अकाउंटेंट को दिया और कहा इसको चिपका लेना और इस तरह मेरी फीस भी वापिस करा दी और कहा कि कल गवर्नमेंट इंजीनियरिंग कॉलेज में जाकर अरविंद की फीस जमा कर देना। जब मैं घर में अपनी बहन परवीन से मिला तो परवीन ने कहा कि भाई आरिफ तो तुम्हारे दूल्हा भाई हैं, कैसा मजा आया तुम्हें इन संबंधों का।

एक तथ्य और उल्लेखनीय है। परवीन सुल्तानिया स्कूल में व्याख्याता थीं तथा मैं पास के ही मॉडल स्कूल में व्याख्याता था। एक दिन न जाने कैसे परवीन बेहोश हो गई। सारे शिक्षकों एवं प्राचार्य को चिंता हुई, प्राचार्या मुझे पहचानती थीं, उन्होंने तुरंत कहा कि परवीन के भाई सुरेन्द्रनाथ दुबे पास के स्कूल में हैं उन्हें तुरंत बुला लो। मैं एकदम भागकर आया और अपनी बहन परवीन को हाथों में उठाकर एम्बुलेंस में रखा और पास में

## जय जगत

ही हमीदिया अस्पताल ले गया। भाग्य से मेरा छोटा भाई डॉ. त्रिभुवन दुबे अस्पताल में ही था, उसने तुरंत परवीन को आईसीसीयू में भर्ती कर लिया। जब परवीन को होश आ गया तब ही मैंने आरिफ को सूचना दी। चूँकि अजीज कुरैशी भी उस समय मंत्री थे और हम सब लोग सहपाठी थे, इसलिए मैंने उन्हें भी फोन पर बताया। अजीज कुरैशी ने कहा कि यार चिंता की क्या बात है तुम्हारा योग्य भाई टी.एन.भाई वहाँ डॉक्टर है और तुम जैसा भाई भी तो अपनी बहन परवीन के साथ है। हाँलाँकि बाद में आरिफ कुरैशी और अजीज कुरैशी हमीदिया अस्पताल पहुँच गये थे। इस घटना का उल्लेख तो मैंने एक भाई—बहन के रिश्ते और दूसरे स्कूल के शिक्षकों और प्राचार्य को भाई—बहनों के रिश्तों की जानकारी हो इसलिए किया है, वैसे आज के ऐसे माहौल में इस तरह के रिश्ते बनाना और उन्हें निभाया जाना मुश्किल है।

— एस. एन. द्रवे



आरिफ कुरैशी एवं परवीन कुरैशी।



अरविंद दुबे।



मौलाना आजाद कॉलेज ऑफ टेक्नालाजी, जिसमें श्री आरिफ प्रोफेसर रहे।



स्कूल शिक्षा— अक्टूबर 2014 सम्पादकीय

## बच्चों की शिक्षा गांधी जी की बुनियादी शिक्षा के अनुसार हो

मैं अपने जीवन के घटनाक्रम से इसे प्रारंभ करना चाहता हूँ। बीएड प्रशिक्षण के बाद, भोपाल संभाग के शिक्षकों को अन्य संभागों में प्रधान अध्यापक बनाकर भेजा जा रहा था। मुझे भी निमाड़ जिला खरगौन की एक प्रतिष्ठित माध्यमिक शाला ठिवगांव में प्रधान अध्यापक बनाकर भेजने का आदेश हुआ। मैंने 12 दिसम्बर 1961 को खरगौन के बिल्कुल पास के गांव की उस शाला में अपनी उपस्थिति दी।

जब मैं शाला में पहुंचा तो मेरा सभी शिक्षकों ने अत्यंत स्नेहपूर्वक स्वागत किया और ज्वाइन कर लेने का आग्रह किया। मैं चूंकि खरगौन होकर आया था और उस गांव की विशेषता के बारे में तथा लंबे उस शाला के कार्यकारी प्रधान अध्यापक के बारे में जान चुका था। वे खादी के कपड़े पहिने थे। मैं नहीं जानता कि जिनसे मुझे प्रधान अध्यापक का चार्ज लेना था और उन्हें मेरे अधीनस्थ रहकर कार्य करना था, वे अत्यंत अधेड़ और मैं बिल्कुल नौजवान लड़का था। मुझे बड़ा अटपटा लगा। आधा घंटे बाद दो-चार लड़कों ने आकर मुझे गुलदस्ता भेंट किया। गांव इतना छोटा था मैंने सोचा स्कूल का चतुर्थ श्रेणी भाई कहीं से खरीदकर गुलदस्ता ले आया होगा। मुझे बताया गया कि श्रीमान यहां गांव की शालाओं में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी होते ही नहीं हैं। मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा था। इतना साफ, सुंदर बगीचों एवं फूलों से सजा हुआ, स्कूल। बिना चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के चलाया जा रहा है।

कुछ बच्चों ने आकर हम सबको पानी पिलाया और सेवा इत्यादि के बारे में पूछा। तब मैंने कहा कि बिना प्यून के यह सब कैसे हो पाता है? सफाई कैसे होती है? पानी इत्यादि कैसे आता है? बगीचा में पौधे इत्यादि कौन लगाता है? कौन, उनका रक्षण करता है। मैं तो हैरान रह गया। मुझे मालूम पड़ा कि यह सब अध्यापकों के निर्देशन में बच्चे ही करते हैं। थोड़ी देर में घंटी बजी। कुछ अध्यापक कक्षाओं से दूसरी कक्षाओं में गये। कुछ उन वरिष्ठ प्रधान अध्यापक से पूछने भी आये। तब उन्होंने परिचय कराया कि यह हमारे नये प्रधान अध्यापक हैं। फिर भी वह नमस्कार करने के बाद अपनी कक्षाओं में चले गये। स्कूल में पूरी तरह शांति थी। हां, एक कक्षा के लड़के पानी इत्यादि पिलाने, लाने एवं बगीचे में काम कर रहे थे। पैतालिस मिनट बाद फिर घंटी बजी। तब मैंने अपनी घड़ी देखी और पूछा कि यह घंटी कौन बजाता है। मुझे बताया गया कि यह सब काम विद्यार्थी ही करते हैं। मैंने जिज्ञासाश पूछा — स्कूल इतना साफ—सुथरा है, यह सब कौन करता है? तब मुझे बताया गया कि यह सब बच्चे ही करते हैं। मैंने तो अभी तक कक्षा में प्रथम एवं द्वितीय या अच्छे अंक पाने की प्रतिस्पर्धा देखी थी। मुझे बताया गया कि प्रतिदिन एक—एक कक्षा की ड्यूटी इन सब कामों के लिए लगाई जाती है और प्रतिस्पर्धा के कारण बच्चे अत्यंत मनोयोग से उत्साहपूर्वक यह कार्य करते हैं। मुझे यह भी बताया गया कि गांधी जी के बताये गये शिक्षा—सिद्धांतों के अनुसार ही इस बुनियादी शाला में कार्य करते—करते और खेल के माध्यम से शिक्षा दी जाती है। मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई। कक्षा आठवीं की बोर्ड परीक्षा में तो यहां का परीक्षा परिणाम भी गत वर्ष शत प्रतिशत रहा था और अधिकांश बच्चे प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए थे, जबकि वहीं पुराने ढंग की शिक्षा पद्धति के अनुसार मध्य भारत बोर्ड (उस समय भी मध्य प्रदेश बोर्ड नहीं कहलाता था) केवल ज्ञान की परीक्षा ली जाती थी। खेल की स्पर्धाओं, गतिविधियों के अध्ययन और रचनात्मक कार्यों के लिए कोई स्थान नहीं था, इसके बावजूद बच्चे तथा कथित ज्ञान के साथ—साथ खेल, गतिविधि कार्य एवं अन्य कार्यों में प्रवीण और दक्ष थे, जिसकी कोई परीक्षा नहीं होती थी।

देश में एक शिक्षकीय शालाएं अब दो शिक्षकीय की गई हैं और तीसरे की तैयारी है, फिर प्यून कहा से आयेगा? इसके बावजूद जो मैंने उस स्कूल में देखा मुझे विश्वास है कि सभी स्कूल उसी प्रकार चल रहे होंगे। चलना भी चाहिए। तभी तो यह देश बचा हुआ है। जो हमारे अन्न दाता हैं, जो हमारे दूध दाता हैं, उनके बच्चे शायद देश के लिए अधिक सेवा कर रहे हैं। इसलिए गांधी जी ने और अन्य लोगों ने कहा कि भारत गांवों में बसता है और मैं तो जोर देकर कहता हूँ कि भारत इन्हीं गांवों के कारण बचा हुआ है।

गत वर्ष गुड़गांव में दोपहर को मैं टेलीविजन पर कुछ कार्यक्रम देख रहा था। दो या तीन चैनल लगातार एक केंद्रीय विद्यालय के छात्रों द्वारा एक कमरे से दूसरे कमरे में फर्नीचर शिफ्ट करने का लाइव वीडियो दिखा रहे थे और अनेक पालकों के इन्टरव्यू भी प्रसारित कर रहे थे। जो प्राचार्य का लड़कों से काम लेने पर खूब विरोध कर रहे थे। मैं उस सबको देखकर खूब दुखी हुआ कि हे, भगवान मुझे इस बुढ़ापे में कैसे मूर्ख और ना समझ संवाददाताओं की कटाक्ष और प्राचार्य के खिलाफ उनके द्वारा किये जा रहे दोषारोपण को देखकर दुःखी होना पड़ रहा है। क्या यह गांधी का वहीं देश है जिसमें सारी शिक्षा खेल के माध्यम से गतिविधि के माध्यम से अपनी सफाई, शाला की सफाई एवं शाला के सभी कार्यों में बच्चों की सहभागिता में कार्य करने में ही अधिक पवित्रता मानी जाती थी। यहीं सच्ची शिक्षा थी। वाह रे, टीवी वालो, वाह रे पालकों क्या आपको यह भी नहीं मालूम कि बच्चों को स्वयं श्रम करके, गतिविधि से सिखाना सर्वश्रेष्ठ शिक्षा का माध्यम है। यह इस देश का दुर्भाग्य है कि आज के तथाकथित पढ़े-लिखे लोग, बच्चों के श्रम करने को अपराध मानते हैं और उन प्रधान अध्यापक, अध्यापक एवं प्राचार्य इत्यादि के प्रति अपनी नाराजगी प्रकट करते हैं। क्या आप यह नहीं चाहते कि बच्चे श्रम करें, अपने स्वास्थ्य को बनाये, स्वयं सफाई करना सीखें। खेल खेलें।

हमारे अधिकांश नेता (और अब तो नये प्रधानमंत्री जी भी) दो वर्षों में ही स्वच्छ भारत के निर्माण की कल्पना कर रहे हैं। दूसरी तरफ ये टीवी वाले, ये पत्रकार एवं ये माता-पिता केवल एक कक्ष से दूसरे कक्ष में बच्चों के फर्नीचर उठाने पर आपत्ति जता रहे हैं। तब मैं अपने पुराने बुनियादी स्कूल जिसमें मैं दिसम्बर 1961 एवं 1962 में रहा। मेरा आज भी यह दृढ़विश्वास है कि बिना प्यून के भी वह स्कूल अधिक स्वच्छ, अधिक शांत एवं अधिक अनुशासित था। उस शाला के विद्यार्थी ऊंचे अंक पाकर उत्तीर्ण होते थे। हमें एक बार फिर गांधी की बुनियादी शिक्षा को अपनाने पर विचार करना चाहिए। प्रधानमंत्री जी को तथा कथित अनौपचारिक शिक्षकों की धेय दृष्टि से सभी अच्छे कार्यों को बचाना होगा।

### ‘गांधीवाद’ क्या है?

एक बार जब महात्मा गाँधी वर्धा आश्रम में रहने लगे थे और बिनोवा भावे भी उनके साथ थे तब एक प्रतिष्ठित विदेशी मेहमान बापू से मिलने आये और एक मिनट की मुलाकात के बाद उन्होंने महात्मा गांधी से ‘गांधीवाद’ के बारे में कुछ जानना चाहा, तो बापू ने कहा गांधीवाद के बारे में बिनोवा भावे आपको अच्छी तरह से बता सकेंगे। उस समय बिनोवा भावे अपनी आसंदी (सीट) पर नहीं थे, उनके सहायक ने बताया कि वे एक घंटे बाद ही मिल पायेंगे। विदेशी मेहमान को कुर्सी डालकर मैदान में बिठा दिया गया। वह विदेशी मेहमान देख रहा था कि एक व्यक्ति केवल तौलिया (लुंगी) पहने शौचालयों और मैदान को साफ कर रहा था, वह नहाने के बाद वापस आया और बिनोवा भावे की आसंदी (सीट) पर बैठ गया, तब उस विदेशी मेहमान ने आश्चर्य से देखा कि वही सफाई करने वाला व्यक्ति ही बिनोवा भावे है। तब उस विदेशी मेहमान ने कहा कि मैं समझ गया हूँ कि ‘गांधीवाद’ क्या है।

— सुरेंद्रनाथ दुबे

## सेवा संगठनों के स्वयंसेवकों से अपेक्षाएं

भारत 15 अगस्त 1947 को स्वाधीन तो हुआ और बहुत सारे राजनैतिक परिवर्तन हुए। एक लोकतांत्रिक सरकार की व्यवस्था हुई। आर्थिक क्षेत्र में और राजनैतिक क्षेत्र में बड़े परिवर्तन भी हुए, किंतु सामाजिक और सांस्कृतिक विकास की धारा को सही दिशा नहीं मिली। अब सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्था में परिवर्तन से ही सही स्वाधीनता संभव है।

एक ब्रिटिश राजनेता ने 1964 में कहा था, “इन भारतवासियों को हमने 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र कर दिया था। ‘स्वदेशी’ का नारा देकर आजादी पाने का एक नये ढंग का प्रयोग जन सहयोग देखकर गांधी ने किया तथा हमें भारत छोड़ने पर मजबूर किया “लेकिन ये हिन्दुस्तानी अपनी उपभोग की गलत प्रवृत्ति के कारण अब तेल उत्पादक देशों के भी गुलाम बन गये हैं।”

जब सचरित्र स्वयंसेवक अपने कार्यों, आदर्श जीवन एवं सेवाभाव से कार्य करेंगे, तभी तो सच्ची आजादी आयेगी।

1. तेल उत्पादक देशों की गुलामी से उबारने का सबसे पहला काम सूर्य पर निर्भरता बढ़ाना हो। यदि हम केवल सूर्य अराधना करते रहें, लेकिन अपने सांस्कृतिक व्यवहार में सूर्य की शक्ति का सच्चा और व्यावहारिक उपयोग नहीं करें तो यह उचित उपासना नहीं होगा।
2. मृतक को केवल सूर्योदय के बाद तथा सूर्यास्त के पूर्व शव दाह करने की परंपरा है। सूर्य पर निर्भरता भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र है, जो हमें इस बड़ी गुलामी से बचा सकता है।
3. प्राचीन भारत में एक अच्छी परंपरा थी कि ‘सूर्योदय के बाद विवाह प्रारंभ करके गौधूली बेला में उसी दिन शाम को सूर्यास्त के पूर्व बेटी की विदा हो जाना चाहिए।’ इसी एक मामले में हमने सारा व्यवहार उल्टी दिशा में मोड़ दिया है।
4. कन्या भ्रूण हत्या की जड़ में तो हम जाना ही नहीं चाहते हम इसे शायद केवल दहेज का मामला समझ लेते हैं, पर ऐसा है नहीं, जिस तरह से विवाह खर्चीले हो गये हैं। उनका स्वरूप अत्यंत ही वीभत्स हो गया है, क्या विवाह संस्कार सुबह से प्रारंभ करके, सूर्यास्त से पूर्व संपूर्ण विवाह करने की परंपरा नहीं अपनाई जा सकती है। सामूहिक रात्रि भोज तो समाप्त किया ही जा सकता है।
5. आजादी के पहले से ही तथा उसके बाद में भी हमने दुकान एवं स्थापना अधिनियम लागू किया था, जिसके अनुसार सूर्यास्त के साथ ही अधिकांश दुकाने व्यापारिक संस्थान बंद हो जाना चाहिए। लेकिन कानून को भी तोड़कर भी आज अधिकांश दुकाने और बाजार रात में ही अपना कारोबार करते हैं। क्या यह खुला भ्रष्टाचार नहीं है। इसमें कितनी बिजली और आने-जाने में कितना पेट्रोल व्यय होता होगा? क्या हम इसे नहीं बचा सकते थे?
6. सारे संसार ने विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में जो प्रगति की है। क्या उसका एक प्रतिशत भी अपने उपभोग की सामग्री बनाने के वैज्ञानिक अनुसंधान हम कर पाये। अधिकांश वैज्ञानिक खोज एवं तकनीकी खोज में हम बहुत पीछे हैं। सारे संसार में सौर ऊर्जा उत्पादन के तरह-तरह के उपकरण विकसित कर लिए हैं, हम सौर ऊर्जा का सदुपयोग ही नहीं कर सके।
7. केवल हम गौ रक्षा की बात करते हैं किंतु यदि हम लगभग 10 लाख गोबर गैस प्लांट बनाते (जिसकी तकनीकी का अविष्कार तो हमने नहीं किया) किंतु हम इस तकनीक को अपना तो सकते थे, जो हम नहीं कर पाये। ऊर्जा प्राप्ति का यह भी एक बड़ा स्रोत है।
8. गांवों में जो विकास हुआ भी है उसके साथ ही जो सामाजिक और सांस्कृतिक पतन हमारा हो रहा है, वह अत्यंत ही दुःखद है। हमारा संपूर्ण जीवन व्यवहार आर्थिक प्रगति के साथ और भी बदल गया है आज गरीब आदमी अमीरों के मुकाबले अधिक अपमानित हो रहा है। पहले जाति और छूआछूत के नाम पर लोगों का

अपमान होता था, अब पैसे वाले और विशेष रूप से गलत ढंग से पैसा कमाने वाले तो गरीबों का अधिक अपमान कर रहे हैं।

9. हमारे यहां पूर्व में (हास्य व्यंग में ही सही) इतिहास रहा है कि रात्रि में चलने-फिरने वालों को निशाचर कहा जाता था। कम से कम सामूहिक रात्रि भोज, रात्रि के प्रदर्शन, रात्रि के जुलूस इत्यादि सभी प्रकार के उत्सवधर्मी कार्यों को आज भी निशाचरी कार्य तो मानना चाहिए। कम से कम स्वयंसेवक ही इन प्रवृत्तियों से दूर रहें तो एक बहुत बड़ी क्रांति हो सकती है। यहां रात्रि में अध्ययन-अध्यापन करने जरूरी बैठकें, निजी कार्य इत्यादि करने का विरोध नहीं केवल उत्सवधर्मी कार्यों को रात्रि में करने का विरोध की बात है।

ऐसी अनेक समस्याएं और प्रकरण हैं जिनका हल अनुशासन के लिए बनाये गये नियमों और स्वयंसेवी संगठनों को से पहले के मुकाबले यह आज ज्यादा अच्छी तरह करना संभव है।

### स्वयंसेवी संगठनों के स्वयंसेवकों से अपेक्षाएं

1. किसी भी स्थिति में भी शव दाह सूर्योदय के बाद तथा सूर्यास्त के पूर्व किया जाना है, स्वयंसेवक स्वयं इसका सख्ती से पालन कराने का प्रयास करें।

क. स्वयं सेवक पंच लकड़ी देते समय एक पेड़ लगाने का प्रण करें और सुविधानुसार एक पेड़ लगाकर याद रखें कि मैंने किसी का शवदाह संस्कार करते समय यह वचन दिया था एवं किसी भी प्रकार से संवेदना के नाम पर घर वालों को परेशान करना अनुचित है, स्वयंसेवक, स्वयं न करें तथा दूसरों को ऐसा न करने दें।

ख. स्वयं सेवक मृतक के घर जाकर जल, भोजन की व्यवस्था से जो भी सहयोग कर सकता है करे।

ग. मृतक की सूचना ने भी आमंत्रण का रूप ले लिया है। इसे अपमान माना जाये। केवल हस्त लिखित दो पोस्टकार्ड इत्यादि पर वाक्यों में सूचना देना पर्याप्त हो।

2. स्वयंसेवक को यह समझना और समझाना चाहिए कि कम से कम वैज्ञानिक तकनीक का उपयोग शवदाह संस्कार में तो हो। स्वयंसेवक यह प्रयास करें कि सौर ऊर्जा से संचालित शवदाह गृह तो तुरंत ही बनाये जायें। यह सभी जानते हैं कि सौर ऊर्जा से प्राप्त विद्युत में शवदाह करना, लकड़ी में शवदाह करने से भी ज्यादा पवित्र होगा। कास पढ़े-लिखे स्वयंसेवक इस सेवा का व्रत लें, सबको समझाने से यह संभव है।

क. स्वयंसेवक मृतक के घर पर किसी प्रकार के त्रयोदशी, दसगात्र या अन्य क्रियाकर्म के बाद भोजन करने की दूषित प्रणाली से अपने आपको दूर रखें। स्वयं सेवक मृतक के घर पर कोई अन्न इत्यादि ग्रहण नहीं करें। यह अपवित्रता की वजह से नहीं अपितु त्रयोदशी आदि में भोजन कराने की वीभत्स परंपराओं को समाप्त करने के उद्देश्य से कह रहा हूँ।

ख. स्वयं सेवक नये विकास के साथ शवों को शवदाह गृह में पहुँचाने के लिए ऐसे प्रयास करें कि जिससे शव वाहन तो तुरंत ही उपलब्ध हों पायें, वह स्वयं सहायता करें।

3. प्रत्येक स्वयं सेवक सूर्यास्त के बाद अधिकांश दुकानों में स्वयं किसी प्रकार का कोई क्रय-विक्रय करे और कानून का उलंघन न हो, उसे रोकने का प्रयास स्वयं सेवक ही करे।

क. स्वयंसेवक रात्रि के सामूहिक भोज में स्वयं शामिल न हो। (वह अपना रात्रि भोजन स्वयं ही कर सकता है) लेकिन विवाह, जन्मोत्सव या किसी प्रकार के भी रात्रि में दिये गये सामूहिक भोज में शामिल नहीं हो।

ख. स्वयंसेवक सूर्यास्त के बाद किसी वैवाहिक चल समारोह में शामिल न हो, न स्वयं अपना विवाह करे और न ही किसी भी विवाह में सूर्यास्त के बाद शामिल हो। केवल यदि एक संगठन के स्वयंसेवक इस अनुशासन का पालन स्वयं करें, करायें तो लाखों लीटर पेट्रोल, डीजल इत्यादि की खपत कम हो जायेगी।

4. स्वयंसेवक संविधान की धारा 21 ए शिक्षा के मौलिक अधिकार के परिपालन के लिए स्वयं कक्षा 8 तक पढ़ाई जरूर करे अपने बच्चों को पढ़ाए, दूसरे बच्चों को पढ़ने में मदद करे तथा अपनी पूरी ताकत से कक्षा 8वीं



दिसंबर 2002 को संविधान में संशोधन करके अनिवार्य शिक्षा मौलिक अधिकार दिया गया था। तो क्या स्वयं सेवक भी इसमें सहायता करने में सहभागी नहीं बनेंगे।

5. स्वयंसेवक 'स्वदेशी के पालन' का हर संभव प्रयास करें।
6. स्वयंसेवक अपने स्वयं के लाभ के लिए या अपनी यशोगाथा के लिए शासकीय साधनों का दुरुपयोग ना करें। सरकार का पैसा किसी एक व्यक्ति की प्रशंसा या प्रचार ना करें तथा उसके चित्र छापने में सरकारी खर्च करना तो खुला भ्रष्टाचार है।
7. प्रत्येक स्वयंसेवक स्वयं भी कन्या भ्रूण हत्या या अन्य भ्रूण हत्या रोकने के प्रयास में मदद करें।
8. प्रत्येक स्वयंसेवक विवाह में दहेज न लेने और दहेज न देने का वचन दें। कम से कम कोई संगठन तो अपने स्वयं सेवकों को ऐसा निर्देश दें सकता है।
9. हमारी की बहुत सी कमियों में एक बड़ी कमी यह हो गई है कि लोग अपना जन्मदिन या अपने स्वागत सम्मान के लिए बड़े-बड़े बेनर लगवाते हैं और यह पूरी तरह व्यवस्था का दुरुपयोग है। स्वयंसेवक इसे समझें कि यदि दूसरे लोग उसके बड़े-बड़े बेनर इत्यादि लगाते हैं तो वह इसे चाटुकारिता माने, रोके।  
क. सभी संगठन स्वयंसेवकों को यह निर्देश दें कि वे सभी तरह की चाटुकारिता की परंपरा को समाप्त करने में पूरा-पूरा सहयोग दें और स्वयं भी चाटुकारिता में न करें।  
ख. स्वयंसेवक भी तो सत्ता में आने के बाद अपने चित्रों का तथा अपने बारे में सरकारी पैसे से विज्ञापन कराने के अभ्यस्त हो गये हैं इसे भ्रष्टाचार की श्रेणी में ही लिया ही जायेगा। क्या हम अपने स्वयंसेवकों को यह निर्देश देंगे की वे सरकार के और जनता के पैसे से दुरुपयोग करके अपना विज्ञापन न करवायें। कम से कम सरकारी विज्ञापनों में अपनी स्वयं की तस्वीरें न छपवायें।
10. आजादी के बाद हमने पर्यावरण को जो नुकसान पहुंचाया है वह असहनीय है क्या स्वयंसेवकों को यह निर्देश होंगे कि वे स्वयं अपने विवाह के अवसर पर कम से कम एक वृक्ष लगायेंगे और उसका पालन पोषण अपनी संतान की तरह करेंगे।
11. स्वयंसेवक स्वयं जंगली जीवों की हत्या ना करें व दूसरों को न करने दें। वन्य जीवों के नष्ट होने से वन भी नष्ट होते हैं, यह एक सामान्य सिद्धांत है।
12. स्वयं सेवक "सादा जीवन और उच्च विचार" के सिद्धांत के पालन करें। त्याग और सादगी सम्मानित हो।
13. यदि स्वयं ट्रेफिक नियमों का सही-सही पालन करेंगे तो ट्रेफिक की कई समस्याएं हल हो सकती हैं।
14. आजादी के बाद चाहे जहां सरकारी जमीन पर कब्जा करने, चाहे जहां मकान बना लेने, सड़कों पर अवरोध खड़े कर देने, चाहे जहाँ सरकारी जमीन पर धार्मिक स्थल बना लेने, बिना अनुमति के चाहे जैसे भवन निर्माण कर लेने इत्यादि की तो जैसे पूरी स्वच्छंदता मिल ही गई है। इन 60 वर्षों में अवैध निर्माण, अवैध कब्जे की तो भरमार हो गई है। स्वयंसेवकों इससे दूर रहें। देश को इस अपराध से बचायें, स्वयं अपराधी न बने।
15. इस देश की 56 करोड़ आबादी के लोग जाड़े, वर्षा, धूप, एवं गहन अंधेरी रात में शौच के लिए बाहर निकलने के लिए बाध्य होते हैं। 87 वर्ष की बीमार बूढ़ी माँ तथा दो वर्ष की बालिका को भी शौच के लिए बाहर ले जाने की बाध्यता होती है। स्वयंसेवक इस समस्या का हल निकालने में प्रयास तो कर सकते हैं।
16. केवल सरकारी शराब के ठेके देने के आकड़े देखकर स्तब्ध रह जायेंगे। बाजार की एक शराब की दुकान जो पहले एक साल के लिए एक लाख रु. से कम में नीलामी होती थी वहीं दुकान और उसी स्थान पर 5 करोड़ में नीलाम हुई। सभी जानते हैं कि आजादी के बाद इस देश में नशा एवं शराब का प्रयोग बहुत अधिक बढ़ गया है। स्वयंसेवक और खासतौर से स्वयंसेवी महिलाएं साहसपूर्वक पिकेटिंग करके शराब की दुकाने बंद करवाने का प्रयास करें।

17. आजादी के बाद का एक मनोरंजक तथ्य तो देखिएं पहले प्लास्टिक का उपयोग ही नहीं होता था और कूड़ा-करकट आसानी से जला तो दिया जाता था, लेकिन अब पूरे भारत का शायद ही कोई गांव-शहर ऐसा होगा जहां प्लास्टिक, पॉलिथिन इत्यादि के ढेर लगे न मिलते होंगी ये सब भी तो नये विकास के बाद की गंदगी है। अब कानून बनाकर तो इसे बंद या कम किया जा रहा है। क्या स्वयंसेवक यह प्रण कर सकते हैं कि वे स्वयं भी पॉलिथिन का उपयोग कम करेंगे। दूसरों को भी उपयोग करने से रोकेंगे।
18. स्वयंसेवक शब्द में ही सेवा कार्य निहित है। क्या स्वयंसेवक वह सोचेगा कि वह स्वच्छता के लिए तथा अन्य प्रकार से समाज की क्या सेवा करता है, उसे क्या सेवा करना चाहिए?
19. देश में सैकड़ों स्वयंसेवी संगठन बन गये हैं और सेवा के नाम पर वे अपना स्वहित कर रहे हैं कुछ संगठनों के नाम में तो स्वयंसेवा शब्द ही है। क्या संगठन स्वयंसेवकों से उनके द्वारा की जा रही सेवा की जानकारी प्राप्त करेगा उसे सार्वजनिक करेगा।
20. कुछ संगठनों में स्वास्थ्य और खेल इत्यादि पर ध्यान देने की अच्छी और विशेष परंपरा है। क्या प्रत्येक स्वयं सेवक को यह निर्देश होंगे की वह स्वयं प्राणायाम, योग तथा अन्य ढंग से स्वयं के स्वास्थ्य की रक्षा करें, आने वाली पीढ़ी को भी स्वास्थ्य रक्षा के लिए प्रेरित करें, स्वयं भी उन्हें योग एवं खेल इत्यादि सिखाएं।
21. प्रत्येक स्वयं सेवक अपने लिये तथा अपने आसपास के लोगों के लिए स्वच्छ पीने के पानी की व्यवस्था का प्रयास करें।
22. स्वयंसेवक स्वयं शाकाहारी बनने का प्रयास करें और दूसरों को भी शाकाहार ही करने के लिए प्रेरित करें।
23. भारत की प्रजातांत्रिक व्यवस्था में सबसे अधिक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति फूलों के गुलदस्ते एवं फूलों के हार का अत्यंत वीभत्स उपयोग होने से हुई है। यह दुःखद है कि शिक्षा विद्यालयों तक में आधा आधा घंटे तक लगातार बच्चे फूलों के हारों के माध्यम से सादर-सत्कार में लगा दिये जाते हैं। समय की जितनी बरबादी फूलों के हारों और पुष्प गुच्छ के माध्यम से सादर-सत्कार में हो रही है उससे चाटुकारिता का एक नया स्वरूप सामने आ गया है। छोटे-छोटे विभागों और संस्थाओं के बजट में लाखों रु. का व्यय स्वागत सत्कार के लिए क्य किये गये इन फूलों पर दिखाया जाता है। अब होना तो यह चाहिए कि स्वागत-सत्कार की परंपरा फूलों के हारों से रोक दी जाये। हां फूलों का उपयोग देवालयों, मृतक की अर्धी एवं समाधी पर उपयोग किया जाये तो अच्छा है। लेकिन हमारे प्रजातंत्र में तो इनका उपयोग करके घोर चाटुकारिता समय बर्बादी और पैसे की बर्बादी ने प्रजातंत्र को कलुसित कर दिया है। जब एक राजनेता ने फूलों के हार पहिनने से मना कर दिया और अन्य सभी लोगों को भी फूलों के हार और गुलदस्तों के इस तरह स्वागत करने के लिए मना किया, दुःख तो तब होता है जब प्रकरण को बिना समझे हुए उस राजनेता पर यह आरोप लगा कि उसने अपने से कनिष्ठ का अपमान किया था, जबकि यह कार्य केवल फूलों के दुरुपयोग समय की बर्बादी तथा चाटुकारिता रोकने के बारे में था।
24. प्रजातंत्र का सबसे बड़ा दोष कार्यक्रमों में चाटुकारिता से होता है, न जाने क्यों विगत छः दशकों में हमने अपना बहुमूल्य समय बजाय काम की बात शुरू करने के स्वागत-सत्कार की बात करने में ही गवां देते हैं। क्या स्वयं सेवकों को निर्देश होंगे कि जब वह किसी भी सभा इत्यादि में जाये तो केवल एक या दो शब्द में संबोधन करके काम की बात शुरू कर दें। वे स्वयं भी न तो व्यर्थ में स्वागत भाषण देने में समय गवायें और न ही स्वयं अपने स्वयं के स्वागत में दूसरों लोगों को समय गवाने का अवसर दें। यदि हमारे स्वयंसेवक इतना परिवर्तन करने के लिए तैयार हो जायेंगे तो हम पायेंगे की ऐसा करने से चाटुकार लोग स्वयं ही मैदान से हट जायेंगे और बहुत अधिक समय केवल काम की बात करने के लिये मिलेगा।
25. स्वयं सेवक कुछ समय अनाथ बच्चों की सेवा में भी दें जिससे उन बच्चों को लगे कि वह

अनाथ होने के बावजूद स्वयंसेवकों के संरक्षण में माता-पिता का प्यार पा रहे हैं।

26. स्वयंसेवक निराश्रित और विधवा महिलाओं के लिए अपना कुछ समय देकर इसे पवित्र सेवा कार्य माने और अपने जीवन में कम से कम एक विधवा मां की सेवा करके उसका हितसंवर्धन कर पायें। इसी प्रकार प्रत्येक स्वयंसेवक निराश्रित वृद्धजनों की भी सेवा करें। स्वयंसेवक अपने जीवन में गुरु ऋण चुकाने का प्रयास करें तथा अपने जीवन में कुछ थोड़ा समय निकालकर बच्चों को शिक्षित करने और सिखलाने का कार्य करें।

27. स्वयं सेवक किसी दुर्घटना के समय उस स्थान से पलायन न करें अपितु दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति की हर तरह से मदद करने का प्रयास करें जैसे पुलिस को सूचित करना, एम्बुलेंस की व्यवस्था करना, स्वयं चिकित्सालय पहुंचाना अथवा वे प्राथमिक उपचार स्वयं कर सकें।

28. स्वयंसेवक बीमार व्यक्तियों की सहायता के लिए तुरंत आगे आएं बीमार की सेवा करे एवं उसे चिकित्सकीय सेवा प्रदान कराने में मदद करें। स्वयंसेवक समय निकालकर अस्पताल/औषधालय/ चिकित्सालय में पहुंचकर असहाय मरीजों की सेवा में कुछ समय दें और मरीज की सहायता करें।

29. भारतवर्ष में जितनी अस्वच्छता पाई जाती है वह शायद ही दुनिया के अन्य देशों में होगी। 24 घंटे में से कम से कम आधा घंटा तो सामाजिक स्वच्छता के लिए कार्य करें।

30. एक स्वयंसेवक कम से कम 24 घंटे में से आधा घंटा तो सामाजिक श्रमदान में ही लगाये।

31. हमारे देश में स्त्री सुरक्षा एक बड़ी समस्या बन गई है। सचरित्र एवं संस्कारी स्वयंसेवक नारी सुरक्षा के लिए पूरा-पूरा प्रयास करें जिससे समाज में नारी को सुरक्षा प्राप्त हो सके।

32. स्वयंसेवक इतने सचरित्र हो कि वे अपनी संपत्ति एवं आय-व्यय का स्पष्ट ब्यौरा रखे और आवश्यकता अनुसार उसे प्रकाशित-प्रसारित करने में पूरा सहयोग प्रदान करें।

33. स्वयंसेवक का जीवन तार्किक हो और वह विज्ञान सम्मत जीवन स्वयं जी सके, दूसरों को प्रेरित करे।

34. स्वयंसेवक आवश्यकता पड़ने पर अपनी गवाही से पुलिस तंत्र एवं न्याय व्यवस्था की सहायता करें जिससे अपराधी दंडित हों और निरापराधी को बचाया जाये।

35. स्वयंसेवक अपने दैनंदनीय कार्यों में एवं जनसंपर्क के कार्यों में केवल क्षेत्रीय भाषा का ही प्रयोग करें, जिसे सामान्य आदमी समझ तो सके। भाषा को व्यापार बनाने से रोके।

36. स्वयंसेवक औपचारिक शिक्षक न होते हुए भी अनौपचारिक शिक्षक हैं और इस तरह वह अपने जीवन आदर्श कार्यों एवं जीवन आदर्श इत्यादि से समाज को प्रभावित करें, अनौपचारिक रूप से शिक्षित करें।

37. उपहार लेने-देने और रिटर्न गिफ्ट देने जैसी परम्पराओं का रूप कुबिसत हो गया है। इसने अब भ्रष्टाचार का रूप धारण कर लिया है। स्वयं सेवकों को निर्देश हो कि वे इन बुरी परम्पराओं का अपने जीवन में त्याग करें दूसरों को निषेध करें। दूसरों से वे यह कहना सीखे – 'कृपया गिफ्ट दे, लेकर अपमान न करें न करायें।

38. स्वयंसेवक हमारे प्राचीन ग्रंथों की 'वसुधैव कुटुंबकम्' की धारणा को स्वयं जीवन में धारण करें और समाज को भी इसके लिए प्रेरित करें। 'जय-जगत' एवं 'एक विश्व व्यवस्था' के बारे में भी स्वयंसेवक खुलेमन से विचार करना शुरू करें।

— सुरेन्द्रनाथ दुबे

## बच्चों को सीख

## भय का भूत...

मुझे बचपन की जो स्मृतियाँ हैं, उसमें मेरे पितामह पं. पन्नालाल जी दुबे जिन्हें सारा परिवार बाबूजी कहता था, के निधन के बारे में हैं और यह स्वाभाविक भी है कि ऐसी ही कठिन स्मृतियाँ बचपन की याद रह जाती हैं।

मेरे दादाजी का निधन 11 जनवरी, 1944 को सायंकाल में हुआ था। पोस्ट ऑफिस में केवल टिकटिक मशीन से समाचार भेजे जाते थे। फोन की व्यवस्था भी नहीं थी और सायंकाल होने से पोस्ट ऑफिस भी बंद हो चुका था। मेरे पिताजी उस समय घर पर नहीं थे, वे अपनी ड्यूटी पर गुना में थे और बाबूजी का निधन मुंगावली में हुआ था। परिवार के वरिष्ठ रिश्तेदारों ने तुरंत रेलवे स्टेशन पहुँचकर रेलवे के फोन से गुना पिताजी को सूचना भिजवाई थी। मेरे पिताजी कस्टम में अधिकारी थे तथा रेलवे और कस्टम विभाग का घनिष्ठ संबंध था ही, इसलिए मेरे पिताजी को गुना में सूचना मिल सकी। पैसंजर गाड़ी निकल चुकी थी, केवल रात में एक मालगाड़ी गुना से बीना जाने वाली थी। रेलवे वालों के सहयोग से पिताजी को उस मालगाड़ी से गुना से मुंगावली भेजा गया। जब वे रेलवे स्टेशन पर उतरे तो रात के लगभग तीन बजे थे। हमारा घर एवं गाँव रेलवे स्टेशन से लगभग ढाई किलोमीटर दूरी पर हैं। उस समय, उस सड़क पर अधिकांश सुनसान ही रहता था, फिर भी मेरे पिताजी रात में ही अकेले पैदल घर की ओर चल दिए। रास्ते में एक बड़े पेड़ पर आग जल रही थी। मेरे पिताजी ने समझ लिया कि पेड़ पर जरूर कोई भूत है, नहीं तो इतनी रात में पेड़ पर आग कैसे हो सकती है? फिर भी चूँकि उनके पिता का निधन हो गया था और घर में मेरी माँ के अलावा सब छोटे-छोटे बच्चे थे इसलिए पिताजी को घर पहुँचना ही था। ऐसी कठिन परिस्थिति में डर को त्याग कर वे चलते रहे। पेड़ के ऊपर से एक आवाज आई। कौन बैजनाथ, बेटा डरना नहीं मैं फक्कड़ बाबा हूँ, तेरे पिताजी नहीं रहे हैं तू निकल जा। तब पिताजी को मालूम पड़ा कि यह कोई भूत नहीं गाँव के फक्कड़ बाबा थे जो रात में पेड़ पर बैठकर चिलम पी रहे थे तथा उसकी चिंगारी जलती आग सी दिखाई दे रही थी। बहुत समय बाद मेरे पिताजी ने बताया कि यदि मैं साहस नहीं करता तो भूत समझकर डर जाता या भाग लेता। लेकिन सच्चाई तो कुछ और थी, इसलिए पिताजी बताते थे कि कई प्रकरणों के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि भूत वगैरह कुछ नहीं होता यह भय के कारण ही हम समझने लगते हैं।

मेरे पिताजी ने इसी प्रकार का एक और किस्सा बच्चों को सुनाया। उस जमाने में (आज से 70 साल पहले) साइकिल ही यातायात का सबसे महत्वपूर्ण साधन थी। वे एक बार अपने शासकीय कार्य से हमारे गाँव से लगभग 15 किलोमीटर दूर सहराई गाँव गये थे। वहाँ से लौटते समय अंधेरा हो गया। उस समय की आवश्यकताओं के अनुसार साइकिल पर हमेशा पानी भरने का बड़ा लोटा और उसमें एक पतली रस्सी (डोर) रहती थी, जिससे आवश्यकतानुसार कुएँ से पीने का पानी खींचा जा सके। सहराई से आते समय अंधेरा हो चुका था और पिताजी एक मरघट के पास से निकले। वहाँ उनकी साइकिल अचानक ही बहुत भारी हो गई और साइकिल खींचना मुश्किल हो रहा था। जैसा कि सामान्य रूप से समझा जाता था कि मरघट के पास भूत होते हैं, पिताजी ने समझा कि आज तो मेरी साइकिल किसी भूत ने पकड़ ली है। उन्होंने साइकिल तेज गति से चलाई और उसे गाँव के किनारे आने तक चलाते रहे। कुछ लोगों ने जब वे गाँव के पास आ गये तो जोर से चिल्लाकर कहा... 'ऐ भैया, तुम्हारी साइकिल के पीछे एक बहुत बड़ा जरेटा (काटों का एक बहुत बड़ा झाड़) फँस गया है।' तब पिताजी की जान में जान आई और उन्होंने उतरकर देखा कि उनके लोटे की डोर खुल गई थी



और उसमें काटों का एक बहुत बड़ा झाड़ जो खेत की बागड़ लगाने के काम आता है, फँस गया था। पिताजी ने उसको अलग किया और तब इस प्रकार की अनेक घटनाओं के साथ उन्होंने बताया कि **‘भूत इत्यादि कोई चीज नहीं होती, हम केवल भय के कारण ही उसे भूत मान बैठते हैं’**।

मैं अपने बचपन की इन सुनी हुई घटनाओं के आधार पर आज 70 साल बाद बच्चों को यह कहने का साहस करता हूँ कि मुझे जीवन में बहुत लोगों ने बताया कि केवल ‘भय’ में ही भूत होता है, वास्तव में भूत इत्यादि ऐसी चीज होती नहीं है। इसलिए मैं भावी पीढ़ी के बच्चों से कहना चाहता हूँ कि इस प्रकार की कोरी कल्पनाओं से उन्हें बचना चाहिए और भूत इत्यादि पर किसी प्रकार विश्वास नहीं करना चाहिए।

— सुरेन्द्र नाथ दुबे

### डॉ. अजीम और छोटा भाई डॉ. त्रिभुवन

अपने छोटे भाई—बहिनों के प्रसव से जुड़ी एक और घटना अविस्मरणीय है, जिसमें मेरी माँ की हालत चिंताजनक हो गयी थी। यह घटना मेरे सबसे छोटे भाई त्रिभुवन नाथ दुबे के जन्म के समय की है। पिताजी तो हमेशा की तरह अपनी ड्यूटी पर थे। उन दिनों परिवार नियोजन के बारे में ज्यादा प्रचार—प्रसार नहीं था और अधिक संतान का होना सौभाग्य की बात समझी जाती थी। छोटे भाई त्रिभुवन के जन्म के समय (6 जुलाई, 1955) की घटना है। माँ का नौवाँ प्रसव था। त्रिभुवन के प्रसव के पहले ही माँ की हालत बहुत बिगड़ गई। घर में न बड़े चाचा, न बड़े भाई और ना ही पिताजी। मैं उन दिनों इंटर मीडियट में पढ़ता था। मुंगावली के एक मात्र सरकारी अस्पताल में एक ही डॉक्टर थे, डॉ. अजीम। उज्जैन वाले डॉ. अजीम पिताजी के अच्छे दोस्तों में से थे। माँ की तबीयत खराब होने पर मैं उन्हें लेकर नर्सिंग होम (अस्पताल से संबद्ध) पहुँचा। डॉ. अजीम ने सबसे पहले पिताजी के बारे में पूछा। फिर बोले क्या करें उसकी नौकरी ही ऐसी है। माँ की हालत सचमुच बहुत खराब थी, यह मैं खुद महसूस कर रहा था। मैंने डॉ. अजीम के पैर पकड़ लिए और कहा चाचाजी माँ को बचा लो वरना हम सब अनाथ हो जाएँगे। डॉ. अजीम ने कहा भगवान पर भरोसा रखो और उन्होंने एक इंजेक्शन लाने का कहा। इंजेक्शन की कीमत उस समय 12 रूपए थी, जो काफी महँगा माना जाता था। मैं दौड़ते हुए दवाई की दुकान से इंजेक्शन लाया। ईश्वर की कृपा एवं डॉ. अजीम एवं उनके साथ काम करने वाली नर्स और दाइयों की मदद से माँ बच गई। 12 फरवरी, 1997 तक हमारी माँ का वरदहस्त हमारे ऊपर रहा।

छोटे भाई चि. त्रिभुवन, डी. एम. न्यूरोलॉजी करने के बाद एक न्यूरोलॉजी विशेषज्ञ हैं। आज हमारा सारा परिवार चि. त्रिभुवन (डॉ. टीएन दुबे) की प्रतिष्ठा, उनके अपने व्यवसाय के प्रति लगन, सारे परिवार एवं रिश्तेदारों के लिए उसके समर्पण पर अत्यंत गर्व महसूस करते हैं। मैं तो इसलिए भी इस बात का जिक्र करना चाहूँगा कि मैं सदैव स्कूल शिक्षा से संबंधित रहा इसलिए मैंने प्रारंभ से ही चि. त्रिभुवन को निर्देश दिया था कि वह स्कूल शिक्षक से कभी फीस न ले और उनको अधिक महत्व दे। मुझे खुशी है कि चि. त्रिभुवन आज भी इसका पालन करता है, जिसके सुखद परिणाम मेरे जीवन में आज भी मिले, जिनका अपना एक अलग ही इतिहास है। मेरे बहनोई (स्व. श्री भगवत रावत) एक प्रतिष्ठित कवि और साहित्यकार रहे हैं। चि. त्रिभुवन की एक आदत और है कि यह साहित्यकारों का भी बहुत ध्यान रखते हैं और उनसे किसी प्रकार की फीस इत्यादि नहीं लेते। इतना ही नहीं हमारे परिवार के किसी भी सदस्य का नाम लेकर या हमारे कस्बा मुंगावली से तथा मामा के घर ललितपुर से यदि कोई त्रिभुवन के पास जाता है तो वह भलीभाँति उस मरीज की सहायता करते हैं।

एक प्रकरण और जो सारे देश के लोगों को समझना चाहिए। जब चि. त्रिभुवन मेडिकल फर्स्ट ईयर में पढ़ते थे, तब उसको हरपीज जोस्टर नाम की बीमारी हो गई। मैं उसको लेकर मेडिकल के अत्यंत मेधावी और मध्यप्रदेश के प्रतिष्ठित चिकित्सक जो भोपाल के गांधी मेडिकल कॉलेज में मेडीसिन विभाग के विभागाध्यक्ष भी थे डॉ. एन.पी. मिश्रा के पास ले गया। उन्होंने अत्यंत मानवीय होते हुए भी कहा कि आज तो मैं घर पर किसी को देख ही नहीं सकता, क्योंकि मध्यप्रदेश शासन ने तो प्राइवेट चिकित्सा करने से नाराज होकर घर पर मरीजों को देखने पर प्रतिबंध लगा दिया है। मुझसे कहने लगे कि दुबेजी आप ही बताओ अब मैं आपके छोटे भाई को कैसे देखूँ। आप तो राजनेताओं के बड़े करीब हैं जरा उनसे जाकर भी तो पूँछ लें। हास्य-विनोद में मैं भी एक मित्र राजनेता के पास गया और मैंने कहा कि तुम मेरे भाई को देख लो। उन्होंने कहा कि मैं कोई डॉक्टर हूँ क्या? तब उनकी समझ में आया कि शासन द्वारा लिये गये निर्णय कभी-कभी कितने हास्यास्पद होते हैं। बाद में सरकार को ये निर्णय वापिस लेना पड़ा था।

यह सच है कि कुछ थोड़े से डॉक्टर्स अपने व्यवसाय के साथ उतना न्याय नहीं कर पा रहे होंगे, जो उन्हें करना चाहिए, लेकिन दूसरी ओर यह भी सच है कि मैं इस 75 वर्ष की आयु में ऐसे सहस्रों लोगों के बारे में जानता हूँ जो बिना कोई सेवा किए हुए और बिना किसी आदर्श के पालन किए व्यापार में टैक्स चोरी, मुनाफाखोरी, अतिक्रमण, अवैध निर्माण और अवैध धंधे से ही धनपति बन गए हैं, बन रहे हैं। मेरा निश्चित मत है कि आज भी चिकित्सक और शिक्षक दूसरे अनेक लोगों के मुकाबले अपने व्यवसाय के प्रति समर्पित होकर कार्य कर रहे हैं, व्यर्थ के आरोप लगाने से प्रतिष्ठित और सेवाभावी चिकित्सकों और शिक्षकों का जो मनोबल गिर रहा है, उससे आज सभी ईमानदार लोग चिंतित और परेशान हैं।

—सुरेंद्र नाथ दुबे

## आचरण की पवित्रता से ही हमारे गाँव बचे हुये है।

### रक्षा बंधन, भाईदूज एवं, भाई-बहनों के पवित्र संबंध- एक सुखद प्रसंग

आज जगह-जगह से बलात्कार एवं नारियों के प्रति अत्याचार के समाचार रोज ही मिल जाते हैं और शायद यही तो मीडिया तथा सिनेमा के लिए आय के माध्यम हैं। यदि समाज में हिंसा, अपराध और इस प्रकार के कार्य न हो तो शायद इन सिनेमा वालों का और मीडिया वालों को तो जिंदगी ही बेकार लगेगी। आखिर यही लोग तो इंतजार करते रहते हैं इस प्रकार की घटनाओं का। ये तो केवल शहरों की बातें हैं, देश के प्रत्येक गाँव में महिलाएँ, बहनें, बेटियाँ एवं शिक्षिकाएँ कैसे अपनी सुरक्षा कर पा रही हैं। इस रचनात्मकता पर तो इनका ध्यान ही नहीं जाता है।

यहाँ एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण घटना का उल्लेख करना चाहूँगा। 80 के दशक में मुझे शैक्षिक एवं संगठन के कार्यों से मंडला जाने का अवसर मिला। तीन दिन तक जिला शिक्षा संस्थान मंडला में एवं एक स्कूल में शैक्षिक कार्यों को पूरा करने के बाद मैं मंडला के जिला शिक्षा अधिकारी से औपचारिकतावश मिलने गया। वहाँ मैंने जो दृश्य देखा वह अत्यंत करुणाजनक था। एक नौजवान शिक्षक दहाड़ मार-मारकर रो रहा था और जिला शिक्षा अधिकारी से निवेदन कर रहा था कि मेरा स्थानांतरण वर्तमान स्थान से कहीं अन्य कर दिया जाए। घटना यह थी कि उसकी पत्नी एक नवयौवना एवं सुंदर थी और गाँव वालों के लिए एक आकर्षण का केंद्र भी थी। गाँव के मनचले एवं ताकतवर नौजवानों ने उस बेचारे नये शिक्षक और उसकी पत्नी को इतना तंग किया कि उसकी पत्नी ने कहा 'यदि आप इस गाँव से मुझे

बाहर नहीं ले जायेंगे तो मैं आत्महत्या कर लूँगी।' जिला शिक्षा अधिकारी भी चिंतित लगे, लेकिन वे उस शिक्षक का स्थानांतरण अन्यत्र करने में असमर्थ थे। उन्होंने बताया कि इस समय तबादलों पर रोक लगी हुई है तथा कलेक्टर महोदय को सभी शक्तियाँ प्राप्त हैं। उन्होंने मुझे कहा कि दुबेजी क्या आप इस शिक्षक की कुछ मदद कर सकते हैं। मैंने वहीं निश्चय किया कि मैं आज कलेक्टर से मिलकर कुछ प्रयास करूँगा। वहाँ से सीधा मैं मंडला के कलेक्टर से मिलने पहुँच गया। तब श्री मानदाहिमा वहाँ के कलेक्टर थे। उन्होंने मुझे बैठाया और अन्य चर्चाओं के साथ मेरी शिक्षक को स्थानांतरित करने वाली बात भी सुनी। वाह रे कलेक्टर, उन्होंने मुझे दो दिन तक मंडला में रुकने का आग्रह किया और उन्होंने कहा कि मैं आपकी समस्या का समाधान दूसरी तरह से निकालूँगा। उन्होंने उसी समय जिले के पुलिस अधीक्षक को बुलाया और कहा कि दुबेजी चाहते हैं कि मैं उस शिक्षक का ट्रांसफर कर दूँ, किंतु मैं चाहता हूँ कि अकेले उस शिक्षक की नहीं जिले भर की समस्या का समाधान निकालूँ। दाहिमाजी ने देर तक पुलिस अधीक्षक से बात की और एक योजना पर काम किया। उन्होंने पुलिस फोर्स भेजकर सारे गाँव के वयस्क नौजवानों को बुला लिया और फिर क्या व्यवहार हुआ मुझे नहीं मालूम, लेकिन गाँव के सारे नौजवान रातभर पुलिस संरक्षण में रहे। सुबह कलेक्टर, पुलिस अधीक्षक एवं अन्य अधिकारी गाँव में पहुँचे और उन्होंने सभी नौजवानों को इस नये शिक्षक की नवयौवना पत्नी से राखी (रक्षासूत्र) बंधवाने का आग्रह किया और सार्वजनिक रूप से उस महिला ने अपनी ओर से सबको राखी बाँधी, सबसे कसम ली गई कि वह अब आगे से अपनी इस बहन की रक्षा करेंगे। कमाल देखिये, इस पूरे देश में आज भी ऐसे त्यौहारों का वास्तविक अर्थ निकलता है। उस शिक्षक को सारे गाँव ने आश्वासन दिया कि आज से आप हमारे दामाद हैं और आपकी पत्नि सारे गाँव की बेटी है।

### वाह दाहिमा वाह!

पाठक विश्वास करें कि उन कलेक्टर ने सलाह दी कि आप पुनः उस गाँव में जाएँ और देखें। मैंने समय निकालकर जो परिवर्तन उस शिक्षक, उसकी पत्नी और गाँव में देखा, वो आश्चर्यजनक था। शिक्षक कह रहा था, दुबेजी अब मैं इस गाँव से कभी नहीं जाना चाहता और मैं अकेला नहीं हूँ। श्री मानदाहिमा ने सारे जिले में एक क्रांति करवा दी है। इस जिले में दूरस्थ से आने वाली सुंदर, नवयौवना शिक्षिकाएँ बहनों के रूप में प्रतिष्ठित की जाती हैं और उन्हें गाँव का पूरा सम्मान और प्यार मिलता है। अब कोई भी शिक्षक—शिक्षिकाएँ इस कारण तो अपना ट्रांसफर नहीं चाहते हैं, वह शिक्षक भी पूरी तरह खुश था।

लेकिन मैं तो पूरे देश में समस्या का यही हल चाहता हूँ। मैं जानता हूँ कि गाँव के लोग यह करेंगे, अधिकारी, कर्मचारी भी यह करा सकेंगे। लेकिन मैं नहीं जानता कि राजनेता, सिनेमा वाले और मीडिया वाले इसे कितना समझेंगे और इसमें कितना सहयोग देंगे। एक बार मुझे ग्रामीण आवास योजना की राष्ट्रीय सेमिनार में भाग लेने का अवसर मिला, वहाँ मैंने ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षकों विशेष रूप से महिला शिक्षिकाओं के लिये आदर्श आवास बनाने का विस्तृत ज्ञापन दिया तथा मुझे विस्तार से अपनी बात कहने का अवसर मिला। इस सेमिनार में श्रीमान दाहिमा मप्र शासन के प्रतिनिधि थे। उन्होंने मेरी मांग का बहुत जोरदार समर्थन किया। उनका कहना था सबसे पहिले आवास शिक्षिकाओं—शिक्षकों को, बाद में अन्य वंचित वर्गों को। यदि हमारे बच्चों को पढ़ाने वालो को आवास नहीं मिलेंगे तो बच्चों की उचित शिक्षा कैसे मिलेगी!

—सुरेंद्र नाथ दुबे

### बस में बहिनें

बात 1959 की है। भोपाल में अधिकांश आवागमन के साधन सिटी बसें थीं। उस जमाने में टैक्सी या ताँगा मिलते थे, आटो नहीं थे। टेम्पो नहीं थे। स्कूटर एवं मोटरसाइकिलें नाममात्र को थीं। भोपाल कभी भी देश के अन्य शहरों की तरह साइकिलों का शहर नहीं रहा है। (पहाड़ी नगर होने के कारण) इसलिये हम सब सिटी बसों का उपयोग करते थे। उस समय मैं नौजवान था, लेकिन जब अधिकांश नवयुवक लड़कियों एवं विशेषकर उस समय भोपाल की अधिकांश बुर्काधारी बहिनों/महिलाओं के साथ धक्का-मुक्की करते तो मुझे अफसोस होता था। मैं आदर्श की बात क्यों करूँ, मेरी अपनी भी चार बहिनें हैं। उनमें से दो बहिनें कॉलेज में पढ़ रही थीं, जो रोज बसों में ही आती-जाती थीं, लेकिन उनमें दो बड़ी बहिनों को कभी-कभी सिटी बसों में ही जाना होता था। एक दिन मैं बस में पीछे था, एक लड़की भी बस में थी। मैं गलतफहमी में भीड़ में विचार कर बैठा कि आगे मेरे से दो वर्ष छोटी बहिन चन्दा जा रही है, मैंने जोर से कहा चन्दा! तब किसी ने भी मेरी आवाज पर ध्यान न दिया जब वह महिला उतरने लगी तो मैंने पाया कि वह मेरी बहिन नहीं कोई और है। मैंने गलती से उसी अपनी बहिन चन्दा समझ लिया है। उसी दिन मैंने सोच लिया कि कभी न कभी मेरी बहिनें भी इसी तरह की भीड़ भरी बसों में चलती होंगी, तब मैंने सुब्बाराव का परम शिष्य होने के नाते यह निश्चय किया कि बस में चलने वाली हर स्त्री, लड़की मेरी बहिन ही है। और उस दिन के बाद से आज तक पराई स्त्री को अपनी बहिन बेटी के समान मानने और संबोधित करने की प्रतिज्ञा कर चुका हूँ।

अन्य महत्वपूर्ण प्रकरण फरवरी 1993 में, मैं प्रतिनियुक्ति पर मानव संसाधन विभाग शास्त्री भवन, दिल्ली में शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान में पदस्थ किया गया था। वहाँ मैं दो वर्ष तीन माह तक रहा हूँ। मध्यप्रदेश शासन के तत्कालीन नियमों के अनुसार मुझे मध्यप्रदेश भवन में रहने का निवास मिला हुआ था। मेरा कार्यालय समय 10.00 बजे था इसलिये मैं मध्यप्रदेश भवन के बाहर चाणक्यपुरी से शास्त्री भवन तक के लिये सिटी बस से आता-जाता था। ऑफिस टाइम के पीक आवर होने के कारण बसों में ठीक 9.00 बजे बहुत भीड़ होती थी। मैं लगभग सुबह 9.00 बजे की बस से जाता था। भीड़ भरी बस में महिलाओं की स्थिति अत्यन्त दयनीय होती थी। मैं अपनी पूर्व प्रतिज्ञानुसार महिलाओं को बहिनजी ही कहता था। तब दिल्ली की बसों में लगभग सभी लोग लड़कियों या महिलाओं को मैडम के नाम से सम्बोधित करते थे, इसलिये वे सभी लोग तथा महिलाएँ बहिनजी के सम्बोधन पर ध्यान से मेरी ओर देखती थीं। दिल्ली में महिलाओं की सीट अलग होती है। मुझे भली प्रकार याद है कि कई बार महिलाओं की दो सीटों में से केवल एक सीट पर बैठी महिला यह कहती थी, भाई साहब आप यहाँ बैठ जाइए। तब लोग देखकर चौंकते थे। आखिर मेरा उनसे परिचय भी हो गया, तब मैंने कहा कि मेरी अपनी बहिनें भी तो इसी प्रकार बसों में यात्रा करती हैं। नतीजा यह हुआ कि तीन या चार महिलाओं ने मुझे अपना भाई मान लिया। रक्षाबंधन के दो दिन पूर्व तो एक बहिन ने मुझे ढूँढ़कर कहा मेरे भाई साहब आप मेरे घर नहीं आ सकते। भाईजी मैं चाहती हूँ कि आप मेरे घर आएँ, मैं, आप में अपने भाई के दर्शन करती हूँ तथा आपको राखी बाँधना चाहती हूँ। एक दिन मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा उन चार बहिनों ने मेरे कमरे शास्त्री भवन के सी ब्लॉक में मेरे कक्ष में आकर मुझे राखी बाँधी।

इस प्रकार आज भी जब मैं लड़कियों को बेटी या अन्य महिलाओं को बहिन या बहिनजी के नाम से सम्बोधित कर दिल से उन्हें बहिन-बेटी स्वीकार करता हूँ तो मुझे तो शान्ति मिलती ही है, मैडम से सम्बोधन से परेशान बहिनों के मुखमण्डल पर बहिनजी का नाम सुनकर जो प्रसन्नता दिखाई देती है, उसे बस अनुभव ही किया जा सकता है। मेरा तो पाठकों से अनुरोध है कि मैडम के स्थान पर बहिनजी संबोधित करके तो देखो। एक सुखद अनुभव होगा और जीवन में अकल्पनीय एवं चमत्कारी लाभ भी मिलेगा।

— सुरेन्द्रनाथ दुबे



### मेरी कमजोरियां

#### अनिश्चय का बंदी

मेरे बारे में आलोचना मुझे सुनने को मिली है कि कई बार मैं एक निश्चयात्मक निर्णय नहीं ले पाता हूँ, इस कारण मुझे अनेक बार असफल भी होना पड़ा है। एक सफल मनुष्य को दृढ़निश्चयी होना चाहिये किंतु यह मेरी बड़ी कमजोरी रही है। अनेक प्रकरणों में स्वयं निर्णय लेने की अपेक्षा दूसरों पर छोड़ देता हूँ। दूसरों के निर्णय जब मुझे अच्छे नहीं लगते तब मुझे बार-बार कोई भी निर्णय लेने में देरी होती है।

हां जीवन में मैंने ईमानदारी और सिद्धांतों से समझौता प्रायः नहीं किया है। किंतु मेरे कुछ सैद्धांतिक निश्चय ऐसे भी होते हैं कि जिनसे मुझे तकलीफ भी हुई परेशानी भी उठाना पड़ती है।

#### स्वास्थ्य

#### हृदय रोग

27 जनवरी 2000 को अपोलो अस्पताल मद्रास (चेन्नई) में बायपास सर्जरी हुयी। 11 मार्च 2007 को फोर्टिस अस्पताल नोएडा में एन्जियो प्लास्टी हुई। पुनः 19 अगस्त 2009 को आर्टीमिस अस्पताल गुडगांव में एन्जियो प्लास्टी हुई। मैं आज भी हृदय रोग से पीड़ित हूँ मुझे कभी-कभी एनजाईना की भी शिकायत होने लगी है।

#### गाउट

लम्बे अर्से बाद 1986 में ही पता चल पाया कि गाउट की बीमारी (यूरिक एसिड बढ़ जाना) से पीड़ित रहता हूँ। मैदा (विशेष रूप से डबल रोटी) फूलगोभी तथा प्रोटीन की अधिकता से इसका अटेक हुआ यह माना गया। अपुष्ट खोजों के आधार पर यह भी देखा गया कि यह बीमारी विशेष मानसिक सोच (लाउड थिंकिंग) के कारण भी होती है।

#### सिनेमा

सिनेमा के बारे में अपनी कमजोरी और कमी के कारण मुझे आज की व्यवस्था बहुत अपमानित होना पड़ता है। बचपन में मैं जिस वातावरण में पला और बड़ा हुआ उसमें मुझे सिनेमा के बारे में कुछ धारणाएं मन में बैठा दी गई थी मुझे सिनेमा के नायक नायिकाओं के बारे में, (भेलसा में रहते हुए एक परिवार के मुखिया) तो उनको भांड और गणिकाओं के नाम से संबोधित करते थे। उनके मन में सिनेमा के प्रति घृणा के भाव मैंने देखे थे।

जिस वर्ष मैं कक्षा नौवीं का छात्र था, उन दिनों मेरे पिताजी कुछ दिनों के लिये भेलसा में एक्साइज इन्सपेक्टर के रूप में पदस्थ थे और सिनेमा में मनोरंजन कर एक्साइज विभाग से संबंधित था, मेरे पिताजी तो जीवन भर अपने सिद्धांतों पर दृढ़ रहे, वे नहीं चाहते थे कि उनके बच्चे उनके नाम पर फ्री सिनेमा देखें, नतीजा यह हुआ कि ना तो हम लोग पैसे देकर और नाही कभी फ्री में सिनेमा घर में सिनेमा देख सके। मेरी चालीस वर्ष की आयु तक तो टेलीविजन था ही नहीं। भोपाल में भी मुझे टॉकीज में सिनेमा देखने का अवसर बहुत कम मिल पाया। मेरे एक मित्र प्रत्येक फिल्म चार आने की सबसे आगे की बेंच पर बैठकर देखते थे। उन्हें सभी साथी चवन्नी छाप कहकर चिढ़ाते थे। इसलिये मैं कभी उस तरह से सिनेमा नहीं देख पाया। मध्यप्रदेश बन चुका था। पिताजी के एक साथी भोपाल में एक्साइज इन्सपेक्टर थे, उन्होंने चार पांच बार बॉक्स में बिठाकर सिनेमा दिखा दिया था, बाद में पिताजी के सिद्धांतों के डर से हम कभी फ्री में सिनेमा नहीं देख सके। अब चवन्नी छाप तो बनना नहीं था। ऊपर के क्लास में पैसे खर्च करना उन परिस्थितियों में संभव नहीं था, नतीजा यह रहा कि सिनेमा हाल में तीन घंटे बैठकर सिनेमा नहीं देख पाया आज 75 वर्ष की आयु पूर्ण करने के बाद में सोचता हूँ कि शायद मैंने पूरे जीवन में सिनेमा हाल में बैठकर बहुत कम सिनेमा देखा होगा। हां गणेश उत्सव एवं नवदुर्गा में चौराहों पर

दिखायी जाने वाली धार्मिक एवं अच्छी फिल्में मैंने देखी हैं। पिपलानी एवं शिवाजी नगर (स्टाप नं. 6), भोपाल के आवासों में मैंने चालीस वर्ष से अधिक का समय गुजारा है और स्कूल शिक्षक रहने के कारण मेरे विद्यार्थी इन उत्सवों में मेरे बैठने की व्यवस्था तो कर ही देते थे।

मेरी एक बहुत बड़ी कमी आज भी है मैं सिनेमा के बड़े से बड़े नायक-नायिकाओं को पहिचान नहीं पाता हूँ— मेरे विवाह को 51 वर्ष हो चुके हैं और मैं टीवी पर खूब फिल्में देख लेता हूँ लेकिन ना जाने क्यों एक्टर एक्ट्रेस को पहिचान ही नहीं पाता हूँ इससे पत्नी का कोप भाजन तो बनता ही रहा हूँ। आज मेरी पोती जो केवल पांच वर्ष की है जब एक बड़े एक्टर का नाम ले रही थी तो मैं सचमुच में उसे पहिचान नहीं पाया, हां नाम खूब सुना था। सारे जीवन में एक दो एक्टर एक्ट्रेस को छोड़कर किसी भी एक्टर को आज भी पहिचान नहीं पाता हूँ। इससे अपमानित भी महसूस करता हूँ तथा मजाक का पात्र तो बनता ही हूँ। इसी प्रकार गाने सुनता हूँ—शास्त्रीय संगीत में रुचि है पर गायक को न पहिचान पाना मेरे जीवन की एक बड़ी कमजोरी है। इसके विपरीत 1947-48 से आज तक की सैकड़ों राजनैतिक घटनाएँ एवं भाषण मेरे मानसपटल पर अंकित हैं उन्हें मैं ज्यों का त्यों सुना देता हूँ। हां, हमारी सामाजिक व्यवस्था में इनका नाम होता है सम्मान नहीं। मेरे द्वारा अनौपचारिक शिक्षकों नाम खुले पत्रों को पढ़े बिना कमियों को ठीक से समझना कठिन होगा।

### जल्दी बोलने की आदत

मेरे मित्र श्री रामगोपाल रायकवार ने अपने व्यंग में लिखा है कि मुझे बहुत जल्दी-जल्दी बोलने की आदत है। इससे कई बार मेरी पूरी बात लोगों के समझ में नहीं आती। उन्होंने यह भी लिखा है कि जब मैं फोन पर लम्बी बात करता हूँ तो वे मुझे टोककर कहते हैं कि सर दो बार में बात करेंगे। मुझे अधिक बात करने की भी आदत है जो कभी भी अच्छा नहीं माना जाता और मैं अपनी इस कमजोरी से बहुत दुखी हूँ। हालांकि मां के प्रभाव के कारण हमने जीवन भर गांव के वातावरण की गंदी गालियां नहीं सीखी और ना ही अपशब्दों का प्रयोग किया।

### क्रिकेट के खिलाड़ी

मेरे मन में क्रिकेट के खिलाड़ियों एवं क्रिकेट के प्रति सम्मान है किंतु पिछले सप्ताह एक विज्ञापन में एक बड़े खिलाड़ी थे, मैं पहिचान ही नहीं पाया और परिवार वालों को कोप भाजन बना। क्रिकेट का खेल देखता रहा हूँ। पर क्रिकेट के तथा कथित भगवानोंको मैंने कभी पहिचानना नहीं। गांवों की 80 प्रतिशत महिलाएँ तो क्रिकेट शब्द का उच्चारण नहीं कर सकती हैं 90 प्रति. से अधिक लोग भी क्रिकेट के बारे में कुछ भी नहीं जानते समझते हैं। यह केवल मीडिया का भगवान है।

### ढूँढते रह जाओगे

मेरे पास कागजों का ढेर रहता है, जिसमें मेरे कागज प्रायः खो जाते हैं और मैं अपने काम के कागजों को ढूँढता ही रहता हूँ। परेशान हो जाता हूँ। थक जाता हूँ और अपनी पत्नि, बच्चों की मदद मांगता हूँ। इसलिए तो व्यंग में मेरी पत्नि ने मेरा नाम 'ढूँढते रह जाओगे भी रख दिया है।' मेरे कागज नहीं मिलते हैं शायद मेरी पत्नि का यह व्यंग सही ठहरता है।

### भूलने की आदत

मेरा छोटा भाई चि. त्रिभुवन दुबे न्यूरोलॉजी का विशेषज्ञ है और उसने अल्जाइमर रोग पर विशेष कार्य किया है। उसकी पुस्तक भी है। मैंने जब इस रोग की विशेष जानकारी समझी तो मुझे लगा मुझे अल्जाइमर रोग (भूल जाने की आदत) हो गया है। मैंने उससे कई बार कहा कि इसका इलाज क्या है ? उसने बताया कि इसका एकमात्र इलाज सभी लोग मरीज पर दया करें यही है। तब मैं हास्य व्यंग्य में कभी-कभी अपनी पत्नि और बच्चों से यह कहता हूँ कि भई मेरी बीमारी का इलाज आपकी

दया पर निर्भर करता है। लेकिन तब मेरा छोटा भाई त्रिभुवन कहता है कि आप जरा हमारे पितामह की मृत्यु का विवरण तो सुनाईये तब मैं उसे और ऐसी सैकड़ों घटनाओं को अच्छी तरह सुना सकता हूँ। इसलिए उसका कहना है कि भैया आप व्यर्थ व्यंग करते हो आपको अल्जाईमर है ही नहीं। आप तो सब अच्छी बातें याद रखते हैं और बुरी बातों को भूल जाना चाहते हैं। 1952 से 2014 तक की राजनीति एवं चुनावों की सैकड़ों घटनाएं मेरे मन पर चित्रित हैं और मैं उन्हें नहीं भूलता हूँ। मैं शब्द निर्माताओं के चित्र देखकर उन्हें पहिचान सकता हूँ, उनके कथनों को याद रखता हूँ। जब लगभग साढ़े वर्ष की मेरी आयु थी तब मेरे पितामह के निधन के समय की घटनाक्रम आज भी मुझे याद हैं। मेरा छोटा भाई चि. त्रिलोकी जब पैदा हुआ तथा उस समय की घटना जब माँ बीमार थीं तब मेरे पिताजी एक पैर पर खड़े होकर भगवान की प्रार्थना कर रहे थे – ऐसी सैकड़ों स्मृतियों चित्र की तरह मेरे मानस पटल पर आज भी अंकित है। मैं यह नहीं जान पाया कि यह कौन सा मनोविज्ञान है।

### गांवों में रात नहीं गुजार पाता

मैं हमेशा गांधी, गांव और गरीब की बात करता हूँ। मैंने सैकड़ों बार गांव के बारे में लिखा है, मेरा हमेशा मानना है कि 67 वर्ष की आजादी में सभी सरकारों ने, सभी नेताओं ने, गांव की बुरी हालत की है। गांधीजी कहते थे देश गांव में बसता है और यह सभी नेता गांव से वोट तो लेते रहे लेकिन सच्चे ढंग से यह गांव में काम नहीं कर पाये क्योंकि यह स्वयं शहरी थे। मैं लगातार गांव की बात करता हूँ और कहता रहता हूँ कि गांव में सबसे पहले स्वच्छ और सुलभ शौचालय बनने चाहिये। गांव को सड़कों से जोड़ा जाना चाहिये। गांव में स्कूल बनने चाहिये, उनमें लड़के लड़कियों के अलग शौचालय हो। शिक्षक-शिक्षिकाओं के आवास सबसे पहले बनने चाहिये। लेकिन मेरा स्वयं का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि मैं एक रात भी किसी गांव में नहीं गुजार सकता। मेरे घुटनों में बहुत अधिक दर्द रहने के कारण मैं देशी शौचालय में जा ही नहीं सकता। और गांव में पाश्चात्य शैली के शौचालय मिलते ही नहीं। इसलिए मैं दूसरों को दोष क्या दूँ। मेरी स्वयं की कथनी और करनी में अंतर आ गया है। मैं अपने गिरे स्वास्थ्य के कारण गांव के जीवन में रह नहीं सकता लेकिन गांव की बात करता रहता हूँ।

एक बार तो 7 फरवरी 2002 को मैं धर्मस्थल में था और मुझे देशी ढंग के शौचालय का उपयोग करना पड़ा था। नतीजा यह हुआ कि मैं शाम को खड़ा भी नहीं हो पा रहा था और मेरे घुटनों में बहुत अधिक दर्द था तब वहां मौजूद मेरे परम हितैषी श्री शरदचंद्र वेहार ने मुझे सलाह दी कि यदि मुझे अच्छी तरह जीवित रहना है, तो मुझे देशी शौचालय का प्रयोग कभी नहीं करना चाहिये और मैं आज उनकी बात को सही मानता हूँ। इसलिए गांव की बात तो करता हूँ लेकिन स्वयं गांव में रह नहीं पाता।

### दिमाग घुटने में

हम सब भाई-बहनों को घुटनों के दर्द की बीमारी शायद विरासत में मिली है। मेरी माँ जीवन के अंतिम दशक में घुटनों के दर्द से बहुत परेशान रहीं। मेरे बड़े भाई श्री महेन्द्र नाथ दुबे और मेरी बहन चंद्रकांता रावत ने तो घुटने बदलवा भी लिये। किंतु उन्हें विशेष आराम नहीं मिला। जब मुझे घुटनों का दर्द होता है तो मैं अपने घरवालों तथा बाहर के लोगों से भी कि मित्र मुझसे कोई अपेक्षा मत करो, मैं कुछ सोच भी नहीं पाऊंगा क्योंकि आज घुटनों में दर्द है। मेरे चाचा बद्रीनाथ दुबे जो मेरे बराबर ही है, हास्य व्यंग में मुझसे पूछते हैं क्यों, सुरेन्द्र तुम्हारा दिमाग आज घुटनों में तो नहीं है, हालांकि मेरे बहुत सीधे चाचा हैं और मुझे बहुत प्यार करते हैं। हां मेरी डाक्टर पुत्रवधू के पिता श्री माधवाचार्य जी विगत छह वर्षों से आयुर्वेदिक दवा हुबली(कर्नाटक) से भेज रहे हैं और उसी दवा की वजह से मैं घुटना के दर्द से मुक्त रहा हूँ।

सुरेन्द्र नाथ दुबे

## दुबेजी रद्दी और सेकण्ड हैण्ड सामान नहीं बेचते हैं या उसका पैसा स्वयं उपयोग नहीं करते...

– नीलेश वर्मा

भैया अरविंद (श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे के पुत्र) ने एक दिन मुझे बताया था कि पापा के सिद्धांत पर मुझे भी चलना पड़ता है, क्योंकि पापा का सिद्धांत है कि वे कभी अखबारों की रद्दी या अन्य सेकण्ड हैण्ड सामान बेचते नहीं हैं और यदि वह बिकता भी है तो वे अपने हाथ में पैसा नहीं लेते और घर में किसी काम करने वाले कर्मचारी को या किसी विद्यार्थी को पैसे दिला देते हैं। इसके पीछे एक छोटी सी घटना है – दुबे जी के स्व. श्री शफीक भाई से बहुत ही घनिष्ठ और पारिवारिक संबंध थे। शफीक भाई भोपाल के एक प्रतिष्ठित राजनेता थे और सभी उनका बहुत सम्मान करते थे। दैनिक भास्कर के संस्थापक एवं मालिक श्री द्वारिकाप्रसाद अग्रवाल से भी उनके बहुत अच्छे संबंध थे। 1963 या 1964 का प्रकरण है, श्री द्वारिकाप्रसाद अग्रवाल, शफीक भाई के यहाँ अपने अखबार दैनिक भास्कर की प्रति, कॉम्पलीमेंट्री के रूप में भेजते थे। एक दिन शफीक भाई ने श्री द्वारिकाप्रसाद अग्रवाल से कहा कि भैया मैं हिन्दी अच्छी तरह नहीं पढ़ता हूँ और मेरे यहाँ उर्दू के सभी अखबार आते हैं, आप चाहे तो मेरे अत्यंत घनिष्ठ मित्र सुरेन्द्रनाथजी को दैनिक भास्कर की कॉम्पलीमेंट्री कॉपी भेज दिया करें। उन्होंने वहीं बैठे अपने भतीजे श्री जहीर से दुबेजी का पूरा पता लिखकर अग्रवाल जी को देने को कहा। दूसरे दिन से ही सुरेन्द्रनाथ जी दुबे के घर दैनिक भास्कर भोपाल की काम्पलीमेंट्री प्रति आने लगी और यह लम्बे अरसे तक चलता रहा द्वारिका प्रसाद अग्रवाल, (भाई साहब) दुबेजी को भलीभंति जानते थे उनके पुत्र श्री रमेश अग्रवाल तो दुबे जी के अच्छे मित्र हैं। जब उनके पुत्र श्री रमेश अग्रवाल ने दुबेजी का नाम देखा तो उस पर उसे लगातार चालू रखने का निर्देश दिया और इस तरह 1995 तक दैनिक भास्कर की कॉपी की प्रति दुबेजी के घर पर लगातार प्राप्त होती रही। श्री रमेशचंद्र अग्रवाल व्यस्त रहते थे और उत्तराधिकार की वजह से भी इनके द्वितीय पुत्र के पास समय-समय पर कॉम्पलीमेंट्री कॉपीज चेक करने का काम था, उन्होंने बिना किसी बुराई के सामान्य रूप में ही यह प्रति भेजना निरस्त करवा दिया। अब एक दिन दुबेजी ने भास्कर के जनरल मैनेजर श्री दत्ता से पूछा, कि भाई मेरी कॉम्पलीमेंट्री कॉपी बंद कैसे हो गयी। तब दत्ता ने वहाँ से निकल रहे रमेश जी के दूसरे चिरंजीव की तरफ इशारा करते हुए बताया कि इन भैया के पास यह काम है। दुबेजी ने उसी समय उस बच्चे के कंधे पर हाथ रखकर कहा कि 'बेटा तेरे' पापा श्री रमेश ने तो अपने पिता श्री द्वारिकाप्रसाद जी के द्वारा भेजे जा रहे अखबार को बंद नहीं किया, लेकिन तुम साहसी पुत्र निकले, जिसने यह काम कर दिखाया। वह बच्चा बहुत घबरा गया और उसने कहा कि अंकल आप बैठिये आपकी प्रति कल से जरूर पहुँचेगी। यह प्रकरण जब श्री रमेश जी को मालूम पड़ा तो उन्होंने कहा कि 'दुबेजी आप जैसे ही मित्र होने चाहिए।' दुबेजी ने कहा कि भाई रमेश मैं तो तुम्हें बधाई देना चाहता हूँ कि तुम्हारे बच्चे सबका सम्मान करना जानते हैं।

चूँकि इन्हें भास्कर की प्रति मुफ्त 2003 तक भोपाल में रहते हुये मिलती थी, इसलिए दुबेजी ने निर्णय किया था कि मैं अखबार की रद्दी के पैसे कभी अपने हाथ में नहीं लूँगा। इनके पुत्र अरविंद ने बताया कि मेरी सारी किताबें, कॉपियाँ तथा मेरे द्वारा खरीदे गये अखबारों अन्य सामान के पैसे भी पापा दूसरों को या घर के किसी कर्मचारी को दिला दिया करते हैं।

ई-2, अरेरा कॉलोनी,

पं. दीनदयाल परिसर, भोपाल



## मेरे पति श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे के कुछ प्रसंग

### मोरारजी देसाई के परम प्रशंसक

मेरे विवाह के बाद से ही मैंने यह देखा है कि मेरे पति राजनेताओं में से मोरारजी देसाई के सबसे अधिक प्रशंसक रहे हैं, इनका कहना है कि श्री मोरारजी देसाई ने मुंबई राज्य के गृहमंत्री रहते हुए शराब बंदी प्रदेश में करा दी थी और इस तरह गाँधीजी की इच्छा का कार्य को सबसे पहले मोरारजी ने ही किया था।

इनका मानना है कि पं. नेहरू की मृत्यु के बाद यदि मोरारजी प्रधानमंत्री बनते और कांग्रेस पूरी दृढ़ता से उनका समर्थन करती तो आज देश की स्थिति कुछ और होती। 10 अप्रैल, 1995 को मोरारजी भाई का 99 वर्ष की आयु में निधन हुआ। उस समय उनके निधन पर 'नवभारत टाइम्स' में कुमार प्रशांत ने लिखा था कि "मोरारजी के जाने से भारतीय राजनीति के उस अध्याय का आखिरी पन्ना पलट गया, जिस अध्याय पर गाँधी के या गाँधी युग के हस्ताक्षर थे। राजनैतिक जीवन में ईमानदारी, सच्चाई व साफगोई की निश्चित जगह है, इसे मोरारजी मानते व पालते थे। राजनीति ने आज यह सारे मूल्य गंदे कपड़ों की भांति उतार फेंके हैं, इसलिए मोरारजी की मृत्यु का एहसास गहराया से होता है। **अपनी बनाई चारदीवारी में, अपनी शर्तों पर काम करने वाले राजनीतिज्ञों में मोरारजी भाई आखिरी साबित हों तो आश्चर्य नहीं।**"

कुमार प्रशांत के उपरोक्त कथन को मेरे पति बिल्कुल सही मानते हैं। आदरणीय लालकृष्ण आडवाणी ने अपनी पुस्तक मेरा देश मेरा जीवन में मोरारजी देसाई के बारे में लिखा है मेरे पति उससे पूरी तरह सहमत हैं— जो इस तरह है।

### मोरारजी देसाई के बारे में श्री लालकृष्ण आडवाणी ने भी लिखा है

"जनता पार्टी के तीन शीर्ष नेता, जिनके साथ मैंने निकटता से कार्य किया है, उनमें मोरारजी देसाई संपूर्ण व्यक्तित्व के लिहाज से चरण सिंह और जगजीवनराम से मीलों आगे थे उन्होंने राष्ट्रीय कद और शासन में अनुभव के मामले में सबको पीछे छोड़ दिया।

मोरारजी देसाई के साथ मेरे संबंध बहुत अच्छे थे, एक सिद्धांतवादी व्यक्ति को इनका सम्मान और सहायता करनी चाहिए। मैं उनका सम्मान, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और साहस के लिए करता था।

मैं मोरारजी देसाई के संपर्क में लगातार रहा। समुद्र के सामने उनके घर में उनका जीवन अत्यंत सादगीपूर्ण और गौरवपूर्ण था। जहां 10 अप्रैल 1995 को उन्होंने अंतिम सांस ली। वे 99वें वर्ष की उम्र में भी मानसिक रूप से चुस्त थे, चूंकि उनकी सरल, अनुशासित और समर्पित जीवन का साक्ष्य था।"

— लालकृष्ण आडवाणी

मैं और मेरे पति जनवरी के पहिले पखवाड़े में दूसरे डॉक्टर वेरी रूपके यहां प्रवास पर थे। एक प्रतिष्ठित गुजराती भाई ने कहा था "गुजरात दुनिया एक ऐसा क्षेत्र है जहां पूर्ण शराब बंदी है और इसका संपूर्ण श्रेय महान गांधीवादी श्री मोरारजी देसाई को है।

### एक से नौ तक के अंक

अंकों के मामले में इनके पिताजी एवं इनके बहुत सारे दोस्त आज भी इनसे कभी सहमत नहीं रहे हैं। जब ये कक्षा सातवीं में पढ़ते थे तब तथा कथित हिन्दी के २ एवं ९ के अंक दो तरह से लिखने के कारण इनको काफी परेशानी हुयी थी। जो लोग यह कहते हैं कि सारी दुनिया को दशमिक प्रणाली

हमने दी है। उनसे इनका कहना है कि जवाब एक से नौ तक के अंकों के मामले में एक होकर कहिए कि इनका स्वरूप भी हमारा भारतीय स्वरूप सारी दुनिया के समान ही है। अरे, किसी एक जगह तो सारे भारत और सारी दुनिया को एक समान होने दीजिए। मराठी, गुजराती एवं अन्य क्षेत्रों में इन्होंने जो परेशानी उठायी, उसके कारण कक्षा 9वीं में ही इन्होंने यह तय कर लिया था कि अंकों का स्वरूप 1-2-3-4-5-6-7-8-9 एवं 0 हमारे अंकों का स्वरूप सही अंक हैं और इस मामले में सारी दुनिया हमारे साथ है। एक छोटी सी एकता को भी स्वीकार न कर पाना, उचित नहीं है। अकाउण्ट्स के लिए भारत सरकार एवं राज्य सरकारों ने भी इसी स्वरूप को ही स्वीकृति दी है। व्यावहारिक रूप से तो हम अंकों के अन्तरराष्ट्रीय स्वरूप का ही उपयोग करते हैं। फिर व्यर्थ में बच्चों को क्यों परेशान होने दें।

### तिथियाँ/तारीखें

त्योहारों को मनाने के मामले में हमारे पति पूरे पंडित हैं। रक्षाबंधन, दीपावली, होली, बसंत पंचमी, शादी-विवाह, नवरात्रि ही नहीं अमावस्या एवं पूर्णिमा तक भी ये हिन्दू पंचांग के अनुसार ही मानते हैं। किन्तु इनका मानना है कि पूरे देश में शायद एक भी भारतीय ऐसा नहीं मिलेगा, जो व्यावहारिक जीवन में ग्रेगेरियन कैलेंडर के जनवरी से दिसम्बर तक माह-सप्ताह के सातों दिन एवं अंतरराष्ट्रीय तारीखों के बिना काम करता हो। इनका कहना है व्यावहारिक जीवन में सारी दुनिया सभी कार्य अंतराष्ट्रीय कैलेंडर के हिसाब से ही करते हैं। इनका कहना है कि मकर संक्रांति 14 जनवरी को ही क्यों आती है? हम भी वही करते हैं (ग्रेगेरियन, कैलेंडर मानने का) जो सारी दुनिया करती है—किंतु इसका केवल विरोध करते हैं।

### ये केवल हिन्दी में ही हस्ताक्षर करते हैं

जब ये कक्षा पाँचवी में पड़ते थे तब आंदोलन चला था कि सबको अपनी मातृभाषा में ही हस्ताक्षर करना चाहिये, इसलिये बचपन से ही ये केवल हिन्दी में हस्ताक्षर करते हैं और प्रायः पूरे नाम का हस्ताक्षर करते हैं जो स्पष्ट समझ में आ जाता है। हाँ, ये छोटे हस्ताक्षर भी करते हैं। इनका दावा है कि इन्होंने अपने सारे जीवन में इन दो प्रकार के हिन्दी हस्ताक्षरों के अलावा कोई हस्ताक्षर नहीं किये। यह बात तो मैं इसलिये लिख रही हूँ कि केवल एकबार हिन्दी के अलावा अंग्रेजी में हस्ताक्षर करा लेने की एक दिलचस्प घटना हुई, इनके हाईस्कूल के एक साथी श्री नरेन्द्र जोशी एक बैंक की ब्रांच में मैनेजर बनकर आये जो मेरे घर के पास ही थी। इसी ब्रांच में लेन देन का काम इन्हें बहुत ही कम करना पड़ा। चूँकि जल्दी ही हमारा आवास भी बदल गया था इसलिये उस ब्रांच में अकाउंट बंद करने की आवश्यकता पड़ी (किंतु इनके मित्र ने तो जिद करके इनके हस्ताक्षर अंग्रेजी में ही करा लिये थे) जब ये और मैं एक साथ थे, तब अंग्रेजी के हस्ताक्षर मिले ही नहीं। इन्होंने कई प्रकार से हस्ताक्षर बनाए, लेकिन तत्कालीन मैनेजर ने बताया कि आपके हस्ताक्षर मिलते ही नहीं हैं और वे इनके किए गए हस्ताक्षर दिखाना नहीं चाहते थे जो कि एक नियम है, जनाब नरेन्द्र जोशी तो प्रमोशन पाकर रीजनल ऑफिस में एक बड़े अधिकारी बन गये थे। इन्होंने नरेन्द्र को फोन करके बैंक में ही बुलवाया, लेकिन उस दिन वो उपलब्ध नहीं थे। एक अन्य दिन वे अपनी कार लेकर आये और इन्हें साथ लेकर ब्रांच गए। उनके वेरीफिकेशन के बाद ही पूरा पेमेंट मिला और अकाउंट बंद हुआ। यह घटना तो मैं इसलिये बता रही हूँ कि मित्र की जिद के कारण केवल एक बार अंग्रेजी में हस्ताक्षर करने से, पहले तो ये परेशान हुये, बाद में इनके मित्र इनसे ज्यादा परेशान हुए और उन्होंने माफी माँगी।

### मेरे बेटे चि. अरविंद का इंजीनियरिंग में एडमीशन

मेरे पति के भांजे चि. अनूप चतुर्वेदी (इनकी बहन ऊषा, जो इनके मामा की बेटी हैं, का पुत्र है)

एमएसीटी, भोपाल में इंजीनियरिंग का मेधावी छात्र रहा। मेरे एकमात्र पुत्र चि. अरविंद को 12वीं की परीक्षा के लिए समय-समय पर गाइड किया। अरविंद के 12वीं पास करने के बाद उसकी भी इच्छा थी कि अरविंद भी इंजीनियर बने। **उस समय अनूप के कॉलेज के दो सहपाठी श्री हिमांशु जोशी एवं श्री अमित शुक्ला इंजीनियर होने के बावजूद कोचिंग क्लासेस चला रहे थे।** अनूप ने दोनों से आग्रह किया कि वे अरविंद को कोचिंग दे सकें तो अच्छा होगा। अनूप ने यह भी कहा कि मेरे मामा जी मूल रूप से स्कूल शिक्षक हैं और वह कोचिंग के लिए इतना व्यय नहीं कर पाएंगे। अनूप के इस आग्रह को दोनों नहीं टाल सके और उन दोनों ने अलग-अलग समय में अरविंद को फ्री कोचिंग दी। प्रकरण अपने आप में मनोरंजक था, इतनी अच्छी कोचिंग शायद वे पैसे लेकर भी नहीं दे पाते। जब अरविंद का चयन इंजीनियरिंग कॉलेज में कम्प्यूटर साइंस में हो गया तो श्री हिमांशु जोशी ने एक बड़ी पार्टी का आयोजन बच्चों के चयनित होने की खुशी के लिए किया, जिसमें मैं और मेरे पति भी शामिल हुए। हम नहीं जानते कि हिमांशुजी ने इतना पैसा व्यय क्यों किया? किंतु अंत में जब उन्होंने यह कहा कि यह पार्टी मुख्य रूप से अरविंद के इंजीनियरिंग में चयनित होने के उपलक्ष्य में है। तब मैं आश्चर्यचकित हुई। हालांकि अब कोचिंग एक व्यापार बन गई, **किन्तु फिर भी अन्य धंधे वालों के मुकाबले अधिकांश कोचिंग पढ़ाने वाले अध्यापक योग्य और सेवाभावी हैं। वे महनत करते हैं।**

### रेडियो से समाचार सुनने की आदत

मेरे विवाह (4 जून, 1963) के बाद मेरे पति की एक आदत का उल्लेख करना चाहती हूँ। ये सदैव सुबह छह बजे और रात 11 बजे के रेडियो समाचार तो जरूर सुनते हैं। इनके गुरु और लाखों लोगों के आदर्श श्री एस.एन. सुब्बारावजी तो रेडियो पर ही समाचार जरूर सुनते हैं। खादी पहनने वाले तथा पूर्ण स्वदेशी श्री सुब्बारावजी जब 1957 में विदेश गए थे, तब भी वे एक छोटा रेडियो समाचार सुनने के लिए प्राप्त करना चाहते थे। हाँ, 1965 में जब उनके पास दो छोटे रेडियो हो गए थे तो उन्होंने एक छोटा रेडियो सुरेन्द्रजी (एजी) को भेंट कर दिया था। 11 जनवरी, 1966 को सुबह छह बजे इन्होंने श्री लालबहादुर शास्त्री के निधन का समाचार रेडियो पर सुनकर ही मेरे ससुर (पं. वैजनाथ प्रसादजी दुबे) एवं परिवार के लोगों को सुनाया था। आज भी ये नियम से मोबाइल में समाचार सुनते हैं। सुबह 6 बजे, 8 से 8.30 बजे तथा रात के 11 बजे के बुलेटिन तो मोबाइल पर नियमित रूप से सुनते हैं।

### अपने लिये एक भी ईट नहीं लगायी

मेरी सासू मां ने हास्य व्यंग में एक बार मेरे ससुर पं. वैजनाथ प्रसाद जी दुबे से कहा कि आपने अपने जीवन में एक ईट भी नहीं लगायी (यानी कोई नया मकान नहीं बनाया) तब पिताजी ने भी हास्य व्यंग में सदैव की तरह ही कहा कि मैंने 11 बिल्डिंगें बनायी हैं। यानी नौ बच्चों (भाई-बहिनों) एवं इनके दो चाचाओ, उन्हें अच्छी शिक्षा-दीक्षा दिलाकर जिन उंचाइयों पर पहुंचाया वह बिल्डिंगों के निर्माण से कम नहीं है। हां पिताजी ने उन बिल्डिंगों के निर्माण में मेरी सासु मां, बड़े पुत्र एवं सुरेन्द्र जी के विशिष्ट योगदान को भी स्वीकार किया।

पिताजी ने व्यंग में सासु मां से कहा कि ‘मेरा एक बेटा सुरेन्द्र तो सच्चा सपूत निकला इसने भी कोई ईट भी नहीं लगायी’। हां बिल्डिंगें को बनाने के काम तो सुरेन्द्र ने मुझे खूब सहयोग दिया ही, अपने चार बच्चों के रूप में भव्य भवनों का निर्माण तो किया है, लेकिन स्वयं अपना कोई ईट का मकान नहीं बनाया।

— श्रीमती सरोज दुबे

## गुरुजी शिक्षा के सच को समझो

मेरे पिता सुरेंद्र नाथ दुबे प्रारंभिक शिक्षा के विशेषज्ञ हैं। उनका सारा जीवन प्रारंभिक शिक्षाओं की समस्याओं पर चिंतन करते बीता है। उन्होंने भी प्रारंभिक कक्षा के शिक्षक से कुछ जानना चाहा है।

1. गुरुजी, जब तक बालक अक्षर पूरे नहीं सीख लेता क्या उसे मात्राएँ सिखाना चाहेंगे? शायद नहीं और यदि आपको यह नहीं मालूम कि प्रत्येक बच्चे ने पूरे अक्षर सीख लिये हैं, तब भी यदि आप उसको मात्रा सिखाना चाहेंगे। तो आप शिक्षा नहीं दे रहे शिक्षा का मजाक उड़ा रहे हैं।

2. गुरुजी, जब तक बालक एक से दस तक की पूरी गिनती नहीं जानता आप उसे ग्यारह से सौ अंकों तक की गिनती कैसे सिखा पाएंगे?

3. गुरुजी, क्या आप 3 महीने बाद, 6 महीने बाद या 5 वर्ष के बाद उससे पूछना चाहेंगे कि उसने पूरे अक्षर या अंक सीखे या नहीं?

4. अरे गुरुजी, इकाई योजना का मतलब समझिये, इकाई मूल्यांकन का अर्थ समझिये। यही तो सतत् मूल्यांकन और शिक्षा योजना है और यह पूरी तरह वैज्ञानिक और आवश्यक है। बच्चा जब पहली इकाई नहीं जानता तो उसकी जानकारी की हर आगे की इकाई पीछे की इकाईयों से जुड़ी हुई है। गुरुजी, समझ में नहीं आ रहा कि फिर आप क्या चाहते हैं। परीक्षा से आप क्या सिखाना चाहते हैं?

5. गुरुजी, क्या एक बच्चे को अक्षर या अंक सीखने की इकाई में शत-प्रतिशत से कम अंक दिये भी जा सकते हैं, सोचे भी जा सकते हैं। अरे, बच्चा 10 तक के पूरे अंक नहीं सीखेगा तो अगले अंक कैसे सीखेगा? शत-प्रतिशत से कम अंक देना पूरी तरह अवैज्ञानिक है। यह बच्चे के प्रति अन्याय और शिक्षक के ज्ञान का घोर अपमान है। बच्चा जब तक पूरे अक्षर नहीं सीख लेता है आप उसे मात्रा ज्ञान नहीं देना चाहेंगे।

6. गुरुजी, आपने केवल कक्षा 10वीं ही नहीं, उससे भी अधिक पढ़ाई की है। सतत् मूल्यांकन एवं इकाई के अनुसार अध्यापन की बात कक्षा 1 में ही नहीं, उच्च स्तर तक की शिक्षा में लागू होती है। अरे गुरुजी, यदि बच्चा चुंबकत्व (मैग्नेटिज्म) नहीं सीखेगा तो उसे आप विद्युत (इलेक्ट्रीसिटी) का ज्ञान दे ही नहीं सकते। सभी ज्ञान की सीढ़ी एक-दूसरे से जुड़ी होती है, इसीलिए प्रत्येक इकाई के स्तर पर सतत् रूप से उसके सीखने की परीक्षा लेनी होगी। अरे गुरुजी, ये त्रैमासिक परीक्षा, अर्द्धवार्षिक परीक्षा, वार्षिक परीक्षा एवं 5वें, 8वें या 10वें स्तर से लिये जाने के संबंध में आपकी नहीं कुछ अलग ही प्रणाली अपनानी होगी। अभी तक तो हम सारा मूल्यांकन अवैज्ञानिक ढंग से ही करते रहे हैं। यह प्रणाली गुलामी है।

7. अरे गुरुजी। एबीएल (एक्टिविटी बेस्ड लर्निंग) क्या कोई नई चीज है? अरे गुरुजी, सामान्य रूप से प्रत्येक मनुष्य के हाथ में जब 10 अंगुलियाँ होती हैं और सारे संसार में दशमिक प्रणाली ही अंकों की प्रणाली है। अरे गुरुजी, यह तो हमें प्रकृति से ही प्राप्त हुई है। चलिए आपकी बात माने कि सारी सृष्टि को ब्रह्मा ने बनाया है, तो लाखों वर्ष पहले मनुष्य को भी तो बनाया है। उसके हाथों की दस अंगुलियाँ भी तो बनाई हैं, यदि हम बच्चे को अंगुलियों के आधार पर गिनना सिखाते हैं, तो यही तो एक्टिविटी बेस्ड लर्निंग है। अरे गाँधीजी ने तो जब बुनियादी तालीम में हाथ के काम करने के साथ सीखना, पढ़ना, सिखाने की बात की थी, तो उन्होंने तो स्वयं स्वीकार किया था कि यह सब मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति पर आधारित है, फिर आप बुनियादी शिक्षा और एबीएल में क्या कुछ अंतर समझ रहे हैं। अरे गुरुजी, जरा-सा भी अंतर नहीं है। आप नये नामों से घबरा क्यों जाते हैं, ये तो तथाकथित शिक्षाविदों, अधिकारियों एवं राजनेताओं की अपनी योजनाएँ होती हैं और इनसे आप भ्रमित भी हो जाते हैं। सैंकड़ों साल पहले भी सभी शिक्षक और बड़े-बड़े विद्वान खेल-खेल में शिक्षा, प्रकृति से शिक्षा, वातावरण से शिक्षा, गतिविधि (काम करके सीखने से) शिक्षा, एवं देखकर सीखने से शिक्षा के बारे में कहते रहे हैं। सही शिक्षा केवल किताब से नहीं, उसकी व्यावहारिक समझ से ही दी जा सकती है। प्रत्येक प्राणी जब जल पीता है, भोजन करता है, अन्य शारीरिक क्रियाओं में संलग्न रहता है, तो क्या हम किसी प्रकार की लर्निंग बिना एक्टिविटी के करा सकते हैं?

प्रस्तुति-डॉ. रूपम शर्मा, अहमदाबाद



RTI के माध्यम से प्राप्त उत्तर  
INDIAN EDUCATION SERVICE  
भारतीय शिक्षा सेवा के संबंध में प्राप्त पत्र  
सं. 17-34 / 2005-पी.एन.-1

भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, उच्चतर शिक्षा विभाग, पी.एन.-1 अनुभाग

दिनांक 16 सितम्बर 2008

श्री सुरेन्द्र नाथ दुबे

गुड़गाँव -122018

विषय : सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 के तहत सूचना प्राप्त करने के संबंध में।

महोदय,

मुझे सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 के तहत आपके आवेदन दिनांक 13 अगस्त 2008, जो सीपीआईओ/सचिव, शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली को संबोधित था, के संदर्भ में यह कहने का निर्देश हुआ है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 (यथासंशोधित 1992) के पैरा 10.3 में बताया गया है कि “शिक्षा क्षेत्र में प्रबंध संरचना, भारतीय शिक्षा सेवा को अखिल भारतीय सेवा के रूप में स्थापना करेगी।” इससे शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र को राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य मिलेगा। शिक्षा-सेवा क्षेत्र में भर्ती के मूलभूत सिद्धान्त, कार्य तथा प्रविधियों के विषय में राज्य सरकारों के परामर्श से विचार किया जाएगा। कार्य योजना, 1992 के पैरा 23.8.3 में परिकल्पना की गई है कि भारतीय शिक्षा सेवा की स्थापना शिक्षा के संबंध में राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य के संवर्धन की दिशा में एक आवश्यक कदम होगा। भर्ती के मूलभूत सिद्धान्त, कार्य तथा प्रविधियों की जाँच राज्य सरकारों के परामर्श से की जाएगी।

भारतीय शिक्षा सेवा के गठन का प्रस्ताव अभी विकासशील स्थिति में है तथा राज्य सरकारों के भिन्न विचारों के कारण इसको अंतिम रूप दिए जाने में कुछ समय लग सकता है। भारतीय शिक्षा सेवा संबंधी मामले पर केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड की आगामी बैठक में विचार किया जाएगा। “भारतीय शिक्षा सेवा के गठन” के संबंध में आपके द्वारा उठाए गए विभिन्न मुद्दों की संक्षिप्त पृष्ठभूमि दी गई है। यह भी बताया जाता है कि डॉ. जी.चौरसिया, अध्यक्ष, भारत में अध्यापक संघ की राष्ट्रीय कार्यसमिति, भोपाल द्वारा प्रस्तुत ज्ञापन जिसे जुलाई 1998 में प्रधानमंत्री कार्यालय के माध्यम से प्राप्त किया गया था, की इस मंत्रालय में जाँच की गई तथा यह भी माना गया कि सभी राज्य सरकारों से अनुरोध किया गया कि वे भारतीय शिक्षा सेवा के गठन के संबंध में अपने विचार प्रस्तुत करें। उत्तरोत्तर स्थिति को पृष्ठभूमि नोट में दर्शाया गया है।

मैं आशा करता हूँ कि पृष्ठभूमि सामग्री जो आपको भेजी जा रही है, आपकी अपेक्षाओं को पूरा करेगी। यदि आप नोट की प्रमाणित फोटो प्रतियाँ प्राप्त करना चाहते हैं तो मैं आपको सलाह दूँगा कि आप सुविधानुसार किसी भी दिन इस मंत्रालय में आकर सूचना का अधिकार अधिनियम में उल्लिखित अपेक्षित शुल्क के भुगतान के बाद अपेक्षित सामग्री की फोटो-प्रतियाँ प्राप्त कर सकते हैं।

भवदीय

(बी. आनंद), निदेशक (पी.एन.) और सीपीआईओ,

दूरभाष संख्या : 23381695

संलग्नक : उपर्युक्तानुसार

## (Note of Government of India)

**BACKGROUND NOTE ON INDIAN EDUCATION SERVICE**

1. Para 10.3 of the National Policy on Education, 1986 (as modified in 1992), states, “A proper management structure in education will entail the establishment of the Indian Education Service as an All India Service. It will bring a national perspective to this vital sector. The basic principles, functions and procedures of recruitment to the service will be decided in consultation with the State Governments.” The Programme of Action (POA), 1992 vide para 23.8.3 envisages that the establishment of an Indian Education Service will be an essential step towards promoting a national perspective on management of education. Basic principles, functions and procedures for recruitment will require to be worked out in consultation with the State Governments.

2. A proposal for creation of Indian Education Service (IES) as an All India Service has been under consideration for quite sometime. Earlier, the Cabinet in its meeting held on 2<sup>nd</sup> November, 1965 approved the proposal to introduce a legislation in the Parliament for the creation of new All India Service including the IES. The then Ministry of Home Affairs accordingly circulated a draft outline of the structure of the proposed Service to the States in 1965. The response of the State Governments to the draft outline was mixed, although all of them had earlier agreed in principle, to the creation of the IES. A Bill to amend the All India Service Act, 1951 was introduced in the Lok Sabha in November, 1965 but could not be passed during the tenure of the Third Lok Sabha. The question of reintroduction of the same Bill was considered again in 1967. The Cabinet in the meeting held on 28.5.1968 considered the matter and decided that “no further amendment of the All India Service Act to create IES need by undertaken at present.”

3. In Order to obtain the views/comments of the various State Government/UTs on the proposal for constitution of Indian Education Service, letters have been sent from this Ministry to the Education secretaries of all States/UTs in May, 1994. Thereafter, former HRM had also written in September, 2001 to the Chief Ministers of the then newly created States of Uttaranchal, Chhattisgarh and Jharkhand as also certain other State Governments from whom no response was received. As per available records, the views of the various State Governments are indicated below :-

i) States/UTs who favoured the proposal are Andhra Pradesh, Bihar, Goa, Haryana, Madhya Pradesh, Maharashtra, Mizoram, Nagaland, Rajasthan, Sikkim, Uttar Pradesh, Andaman & Nikobar Islands, Chandigarh, Dadra & Nagarhaveli, Lakshadweep and Pondicherry (16 States/UTs)

ii) States who did not favour the proposal are Assam, Karnataka, Kerala, Punjab, Tamil Nadu and West Bengal (6 States)

iii) The rest of the States/UTs who were consulted did not communicate their final views.

4. The National University of Educational Planning and Administration (NUEPA) (then NIEPA) was separately requested to prepare a detailed proposal for the constitution of Indian Education Service. In a meeting of the Sub-Group held under the chairmanship of then Special Secretary on 3.8.2001, it was, inter-alia, suggested that NUEPA should coordinate the efforts and hold consultations with all the stakeholders across the education spectrum and prepare a detailed paper indicating a detailed structure of the constitution of Indian Education Service. Accordingly, Prof. B.P.Khandelwal, Director, NUEPA Vide letter No. 115/PSD/NIEPA/2K dated 14<sup>th</sup> March, 2002 had informed Sh. C. Balakrishnan,

Joint Secretary (Planning) that a copy of their proposal on the constitution of Indian Education Service is being sent to all the Chief secretaries of the concerned State Governments who have agreed in principle for the formation and to various related educational institutions including Central Universities for their suggestions. Thereafter, NUEPA had requested this Ministry to take up the matter directly with the State Governments, with whom they did not directly interact, for their views, after the final report was ready. Subsequently, NUEPA had requested us to take up the matter with State Governments, for their comments on a prescribed Questionnaire.

5. The proposal for constitution of Indian Education Service was further discussed in an ICG meeting held on 25.5.2002, wherein former Secretary (S&HE) had observed that the rationale for constituting the Service was by no means convincing and desired that the matter be examined in detail taking all aspects into consideration.

6. Subsequently, in August, 2002, NUEPA had reported that out of 41 institutions/eminant educationists consulted, feedback was received from 20 of them. There is no consensus of opinion about the range and extent of assimilation of educational personnel into the frame of Indian Education Service. Director, NUEPA was vide this Ministry's letter dated 23.9.2002 and subsequent reminder dated 29.10.2002 was requested to obtain comments from the stakeholders from whom these are awaited and to furnish a draft proposal based on the inputs received. It was also mentioned that this Ministry would like to consult the State Government for their views/comments after receipt of the draft proposal from NUEPA. In response to the Ministry's letters Director, NUEPA vide their letter dated January 29, 2003 had brought to notice of this Ministry that they had requested 20 autonomous institutions to send them their comments on the proposal of IES as they might not have had sufficient time for reacting to NUPEA draft proposal earlier. Since then, NUEPA have received comments from only six institutions so far. All the IITs have taken the position that the encadrement in IES of the faculty and officers of these institutions would be detrimental to the growth of these institutions and might also come in the way of the continuity of administration in these organizations. Therefore, all the IITs are not in favour of encadrement of their institutions in Indian Education Service. The only institution which has favoured the proposal is the North-Eastern Hill University, Shillong, but that is limited to their non-academic staff and officers (Deputy Registrars & below) to the IES. Consequently, it may be seen that NUEPA's proposal sent earlier on August 20, 2002 does not require any change in the status of NUPEA's proposal. Thereafter, vide the MHRD's letters dated 2.6.2003, and subsequent reminders dated 3.9.2003, 9.3.2003 and 17.5.2004 Director, NUEPA was, request to take up the matter with all the stakeholders to have the feedback/comments from majority of them to enable this Ministry to take a view in the matter. Thereafter, no further report has been received from NUEPA so far.

7. It is proposed to discuss the issue on establishment of Indian Education Service once again in the 55<sup>th</sup> CAGE meeting and arrive at a decision according to the opinion /views of the most of all States/UTs as well as various related educational institution/organization. However, at this moment, the issue of constituting the Indian Education Service is not materializing as there is no consensus among stakeholders.

## अब्राहम लिंकन का पत्र अध्यापक के नाम

प्रिय अध्यापक ।

मैं जानता हूँ और मानता हूँ कि न तो हर आदमी सही होता है और न ही सच्चा, पर आपको सिखाना होगा कि कौन बुरा है और कौन अच्छा ।

दुष्ट व्यक्तियों के साथ—साथ आदर्श प्रणेता भी होते हैं, स्वार्थी राजनीतिज्ञों के साथ समर्पित नेता भी होते हैं; दुश्मनों के साथ—साथ मित्र भी होते हैं, हर विरूपता के साथ सुंदर चित्र भी होते हैं ।

समय भले ही लग जाए, पर यदि सिखा सको तो उसे सिखाना कि पाए हुए पांच रुपए से ज्यादा कीमती खुद का एक रुपए कमाना है ।

पाई हुई हार को कैसे झेलें, उसे यह भी सिखाना और साथ ही सिखाना, जीत की खुशियां मनाना ।

यदि हो सके तो ईर्ष्या या द्वेष से परे हटाना और जीवन में छिपी मौन मुस्कान का पाठ पढ़ाना ।

जितनी जल्दी हो सके, उसे जानने देना कि दूसरों को आतंकित करने वाला खुद कमजोर होता है ।

वह भयभीत व चिंतित है, क्योंकि उसके मन में स्वयं चोर छिपा होता है ।

उसे दिखा सको तो दिखाना किताबों में छिपा खजाना । और उसे वक्त देना चिंता करने के लिए...

कि आकाश के परे उड़ते पंछियों का आल्हाद, सूर्य के प्रकाश में मधुमक्खियों का निनाद,

हरी—भरी पहाड़ियों से झांकते फूलों का संवाद, कितना विलक्षण होता है — अविस्मरणीय...अगाध... ।

उसे यह भी सिखाना कि धोखे से सफलता पाने से असफल होना सम्माननीय है । और अपने विचारों पर भरोसा

रखना अधिक विश्वसनीय है । चाहें अन्य सभी उनको गलत ठहराएँ ।

पर खुद पर अपनी आस्था बनी रहे, यह भी विचारणीय है ।

उसे यह भी सिखाना कि वह सहृदय के साथ सहृदय हो किंतु कठोर के साथ हो कठोर ।

और लकीर का फकीर बनकर उस भीड़ के पीछे न भागे जो करती हो निरर्थक शोर ।

उसे सिखाना कि वह सबकी सुनते हुए अपने मन की भी सुन सके । हर तथ्य को सत्य की कसौटी पर कस कर गुन सके ।

यदि सिखा सको तो सिखाना कि वह दुख में भी मुस्कुरा सके, घनी वेदना से आहत हो, पर खुशी के गीत गा सके ।

उसे यह भी सिखाना कि आंसू बहते हों तो बहने दें, इसमें कोई शर्म नहीं, कोई कुछ भी कहता हो... कहने दो ।

उसे सिखाना— वह सनकियों को कनखियों से हंसकर टाल सके पर अत्यंत मृदुभाषी से बचने का ख्याल रखे ।

वह अपने बाहुबल व बुद्धिबल का अधिकतम मोल पहचान पाए परंतु अपने हृदय व आत्मा की बोली न लगवाए ।

वह भीड़ के शोर में भी अपने कान बंद कर सके और स्वतः की अंतरात्मा की यही आवाज सुन सके;

उसे सहानुभूति से समझाना, पर प्यार के अतिरेक से मत बहलाना । क्योंकि तप—तप कर ही लोहा खरा बनता है,

ताप पाकर ही सोना निखरता है ।

उसे साहस देना ताकि वह वक्त पड़ने पर अधीर बने सहनशील बनाना ताकि वह वीर बने ।

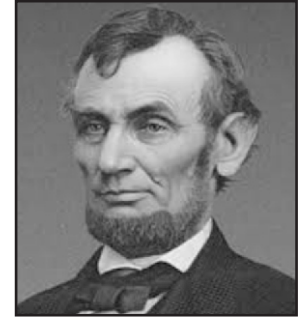
उसे सिखाना कि वह स्वयं पर असीम विश्वास करे, ताकि समस्त मानव जाति पर भरोसा व आस धरे ।

यह एक बड़ा—सा लंबा—चौड़ा अनुरोध है पर आप कर सकते हो, क्या इसका आपको बोध है?

मेरे और आपके... दोनों के साथ उसका रिश्ता है, सच मानो, मेरा बेटा एक प्यारा—सा नन्हा—सा फरिश्ता है ।

—अब्राहम लिंकन

यह पत्र अमेरिका के 16वें राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने अपने बेटे के अध्यापक को लिखा था । पत्र में उन्होंने अध्यापक से गुजारिश की है कि वे उनके बेटे को एक जिम्मेदार नागरिक बनाएं और किसी भी किस्म के विशिष्टताबोध से उसको बचाएं । इस पत्र ने दुनिया भर के राष्ट्रनायकों के साथ शिक्षकों को भी रोशनी दिखाई है । संयुक्त राज्य अमेरिका की एक बड़ी विशेषता यह भी है कि जार्ज वाशिंगटन से लेकर बराक ओबामा तक बच्चों की अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा पर ध्यान दिया है ।





### सुरेन्द्र नाथ दुबे के पाँच खुले पत्र - अनौपचारिक शिक्षकों के नाम

मैं विगत 30 वर्षों से औपचारिक शिक्षकों के नाम खुले पत्र लिखता रहा हूँ ।  
किंतु अब पाँच अनौपचारिक शिक्षकों के नाम खुले पत्र लिख रहा हूँ।

पहला पत्र -

#### विश्व के करोड़ों बच्चों की माताओं के नाम खुला पत्र

माँ तुझे प्रणाम,

भारत माँ को संबोधित एक गीत की ये पंक्तियाँ मैं विश्व के करोड़ों बच्चों की माँओं में से एक आपके लिए भी प्रयुक्त करना चाहूँगा। मेरी तरह आप भी शिक्षक हैं। आपने सुना होगा कि बच्चे की पहली पाठशाला उसका घर और पहली शिक्षिका उसकी माँ होती है। आपका काम मुझ जैसे औपचारिक शिक्षकों से कहीं अधिक महान है। आप ही तो हैं जो बच्चे को इंसान बनाती हैं। आप ही तो बच्चे को अपने पैरों पर खड़ा होना तथा चलना सिखाती हैं।

मनुष्य और पशु में एक बड़ा अंतर यह है कि मनुष्य को लज्जा का भान होता है। आप बच्चे को कपड़े पहनाकर अपनी लज्जा ढँकना सिखाती हैं। माँ एक अनौपचारिक शिक्षक के रूप में हमारे काम को सरल कर देती है। बच्चों को प्रारंभिक भाषा पाठशाला में शिक्षक नहीं सिखाता वह तो पहले ही अपनी माँ से यह सीख चुका होता है। इसीलिए तो बच्चे की पहली भाषा को मातृभाषा कहते हैं। हम बच्चे को व्याकरण के नियम सिखाते हैं पर उससे पहले सैकड़ों शब्द और वाक्य माँ आप बोलना सिखा चुकी होती है। यही बात गणित पर लागू होती है। हम शिक्षक शाला में गणित के छोटे-बड़े प्रश्न हल करना सिखाते हैं। गणितीय नियम और सूत्र सिखाते हैं पर कम से कम दस तक गिनना तो माँ पहले ही सिखा चुकी होती है, केवल अपने हाथ की अंगुलियों के सहारे। मुझे तो लगता है कि विश्व को दार्शनिक प्रणाली का ज्ञान किसी गणितज्ञ को उसकी माँ ने ही कराया होगा क्योंकि प्रकृति माँ से प्राप्त यह उंगलियाँ जो गिनने का प्रमुख एवं प्रथम आधार हैं, इनका उपयोग सबसे पहले माँ ही सिखाती है। सबसे पहले माँ ही तो बच्चों को तुलसी के माध्यम से पेड़-पौधों, पर्यावरण के संरक्षण का भाव जगाती है। पर्यावरण के प्रति चेतना जाग्रत करने का काम माँ से अच्छा और सरलतापूर्वक कोई नहीं कर सकता।

माँ बच्चों के मन में करुणा का भाव जगाती है। अगर आप ऐसा न करतीं तो संसार में करुणा नहीं होती संसार में करुणा और अहिंसा है तो वह माँ के कारण ही है इसलिए माँ तुम बच्चों में करुणा जगाती रहना।

शिक्षा का उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण विकास होता है। दुनिया भर में की गई अनेक खोजों (शोधों) से पता चला है कि जिस शिशु को माँ अपना दूध पिलाती है वह जीवन भर स्वस्थ रहता है क्योंकि उसके शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है तो माँ के रूप में आप अपना यह दायित्व भली-भाँति निभाएँ।

दूसरी बात यह कहना चाहता हूँ कि यदि आप अपने बच्चों को बचपन से ही दूसरों की, चाहे वे छोटे हों या बड़े या घर के नौकर ही क्यों न हों, की ओर विशेष रूप से महिलाओं की इज्जत (सम्मान) करना सिखाएंगी तो यह एक बहुत बड़ा काम होगा। इससे वे आपकी जीवन भर इज्जत करेंगे, साथ ही वे संपूर्ण नारी जाति का सम्मान करना सीखेंगे। इस दिशा में अवश्य ही कुछ कमी आई है, अन्यथा नारी के प्रति इतने अन्याय और अत्याचार की घटनाओं में बढ़ोत्तरी नहीं होती, माँ, दूसरों का विशेषकर नारी का सम्मान सिखाने का काम बखूबी करना ताकि कोई भी बेटा बड़ा होकर नारी के प्रति कोई दूषित भाव न रखे।

आप इसके अतिरिक्त भी बहुत कुछ करती हो, आपके कामों और व्यक्तित्व निर्माण के योगदान को किन्हीं सीमाओं में नहीं बाँधा जा सकता। अंत में इतना ही कहना चाहूँगा कि माँ के रूप में आप अपना काम सही करेंगी तो हम शिक्षकों का काम आसान हो जाएगा और ये दुनिया बहुत सुंदर होगी।

आपका भाई  
सुरेन्द्र नाथ दुबे

दूसरा पत्र -

## विश्व के करोड़ों बच्चों के पिताओं के नाम खुला पत्र

मेरे अनौपचारिक शिक्षक भाई, बच्चे के पिताजी  
सादर प्रणाम!

आप शायद चकित हो रहे होंगे, क्योंकि हो सकता है आप शिक्षक न होकर डॉक्टर, इंजीनियर, अधिकारी, कर्मचारी, श्रमिक, व्यापारी—व्यवसायी या कोई और दूसरा काम करने वाले हो सकते हैं पर मेरे लिए आप यह सब होते हुए भी शिक्षक हैं, भले ही यह बात आपको पता हो या न हो। शास्त्रों में गुरु को माता—पिता और माता—पिता को गुरु तुल्य माना गया है। इसीलिए मैंने आपको अनौपचारिक शिक्षक कहा है। वस्तुतः आपकी शिक्षकीय भूमिका हम औपचारिक (विद्यालय में पढ़ाने वाले) शिक्षकों से अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि बच्चा स्कूल से अधिक आपके संपर्क और प्रभाव में रहता है। वह हमसे अधिक आपसे सीखता है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि जीवन के व्यावहारिक पक्ष बच्चे अपने पिता से ही सीखते हैं।

आप पिता के रूप में हमसे बहुत—सी अपेक्षाएँ करते हैं, स्वाभाविक भी है। आप चाहते हैं कि हम आपके बच्चों को ईमानदार, सुशिक्षित, ज्ञानवान, योग्य एवं आदर्श नागरिक के रूप में गढ़कर दें। बहुत से विद्यालयों के मुख्य द्वार पर लिखा भी रहता है “तुम मुझे अपने बच्चे सौंप दो, मैं तुम्हें राष्ट्र बनाके दूंगा।” क्या विद्यालय या शिक्षक अपने इस वचन या संकल्प को पूरा कर पा रहे हैं!

कम से कम एक शिक्षक होने के नाते मैं यह कहने को विवश हूँ कि हम इस अपेक्षा को पूरा करने की कसौटी पर खरे नहीं उतरे हैं। आज समस्त विश्व में जिस तरह भ्रष्टाचार का वातावरण है, वह हमारी इस स्वीकारोक्ति की पुष्टि करता है। लगता नहीं है कुछ अपवाद छोड़कर हम शेष बच्चों को ईमानदार एवं आदर्श नागरिक बनने की शिक्षा दे सके हैं।

निश्चित रूप से कहीं न कहीं इसके लिए हम उत्तरदायी हैं पर अकेले नहीं। हर बच्चे का एक आदर्श (हीरो) होता है और अधिकतर वह आदर्श उसका पिता होता है। घर से बाहर की दुनिया उसे पिता ही दिखाता है, पिता उसकी आवश्यकताओं को पूरा करता है, वह बचपन में सिर्फ तीन व्यक्तियों की बातों को आँखें मूंदकर स्वीकार करता है। वे तीन हैं—माता, पिता और शिक्षक। पिता न केवल बच्चों की आँखों में सपना जगाता है, बल्कि उस सपने को पूरा करने के साधन भी जुटाता है। यहीं से पिता की भी शिक्षकीय भूमिका आरंभ हो जाती है। बच्चे जब अपनी प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त कर रहे होते हैं तो उस समय तक वे बहुत कुछ समझने लगते हैं। सोचिए जब आप उन्हें अपनी सामर्थ्य से अधिक महंगे कपड़े और खिलौने लाकर देते हैं, जब आप उन्हें अपने वेतन से आधे वेतन के बराबर फीस लेने वाले विद्यालय में पढ़ाते हैं तो वह आपसे क्या सीखता है?

बच्चे को गढ़ने में स्कूल ही नहीं, घर के वातावरण का भी मुख्य हिस्सा रहता है। कोई भी स्कूल बच्चों को गाली देना नहीं सिखाता। सोचिये, बच्चे ने गाली देना कहाँ से सीखा था? यह भी ध्यान दीजिए, बच्चे हमारा यानि शिक्षकों का सच्चा सम्मान तभी करेंगे, जब वे पिता और घर के दूसरे बड़े—बूढ़े का सम्मान करना जानते होंगे। बुढ़ापे में अपने माता—पिता की सही देखभाल और सम्मान वही बच्चे करेंगे, जिनके माता—पिता अपने माता—पिता अर्थात् बच्चों के दादा—दादी का उचित सम्मान और देखभाल करते होंगे। अपनी आँखों के सामने माँ को अपमानित और प्रताड़ित करने वाले पिता का सम्मान उसकी संतान कभी नहीं करती है।

अगर आप चाहते हैं कि हम आपके बच्चे को आदर्श नागरिक के रूप में ढाल सकें तो आपको भी अपने बच्चे को यह सिखाना होगा कि अनीतिपूर्वक सफलता पाने की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफल होना अच्छा है। अगर आप अनीतिपूर्वक सफलता पाने वालों की सराहना करेंगे तो निश्चित ही अपने बच्चों के लिए अनीति का मार्ग प्रशस्त करेंगे। अंत में एक कठोर बात और जिसके लिए क्षमाप्रार्थी भी हूँ। वह यह कि यदि आप गलत तरीके से पैसा कमाकर बच्चों की आवश्यकता पूरी करना चाहोगे तो हम भला कैसे आपके बच्चे को ईमानदार बनने की शिक्षा दे पाएँगे। अनीति, भ्रष्टाचार, दहेज, आडंबर का कुचक्र तोड़ने के लिए आप हमारी मदद कीजिए। बच्चों को वह मत सिखाइए, जिसे स्कूल में कभी नहीं सिखाया जाता।

आपका भाई  
सुरेंद्रनाथ दुबे

### अभिनेता-अभिनेत्रियों के नाम खुला पत्र

मेरे अनौपचारिक रजतपटीय शिक्षक-शिक्षिकाओ !

नमस्कार!

कुछ न चाहते हुए और साथ ही यह जानते हुए भी कि आप इसे पढ़ना गवारा नहीं करेंगे, यह पत्र इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि मैं आप लोगों को भी समाज के उन औपचारिक शिक्षकों में सम्मिलित मानता हूँ, जो समाज को दिशा देने या शिक्षा देने का काम करते हैं। इस श्रेणी में आपका स्थान बहुत ऊँचा है। आप लोग करोड़ों बच्चों और युवाओं को ही नहीं, बड़ों को भी (कु) शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।

कहा जाता है कि भगवान दत्तात्रेय के 24 गुरु थे। गुरु अर्थात् शिक्षक। यह तो पौराणिक कथा है। आज तो हर बच्चा बाल दत्तात्रेय के समान है, जो चारों ओर से कथित गुरुओं या शिक्षकों से घिरा हुआ, उनसे शिक्षा प्राप्त करने को बाध्य है। यह संभव हुआ है दृश्य संचार माध्यम के कारण। फिल्मों, दूरदर्शन के (अनगिनत चैनल), इंटरनेट, चमत्कारिक खूबियों वाले मोबाइल फोन इन सबके माध्यम से आप लोग हर घर में प्रवेश कर चुके हो। घर में ही क्यों घर के बाहर भी हर जगह और हर समय। बच्चा हम औपचारिक शिक्षकों और माता-पिता जैसे कुछ अनौपचारिक शिक्षकों से भी अधिक जिन अनौपचारिक शिक्षकों से प्रभावित है, उनमें आप रजतपटीय शिक्षक-शिक्षिकाएं (अभिनेता एवं अभिनेत्रियाँ) शीर्ष पर हैं।

आप अन्धता न लें पर यह कठोर सच है कि बच्चे आपसे जो सीखते हैं, वह सकारात्मक कम नकारात्मक अधिक है। आपको भी पता है कि आप युवा पीढ़ी को सबसे अधिक प्रभावित करते हैं, उनपर आपका वास्तविक एवं फिल्मी जीवन दोनों का प्रभाव पड़ता है। आपकी एक झलक पाने को बेताब लोगों की भीड़ आपकी अस्थायी लोकप्रियता को प्रदर्शित करती है।

आप जिस मायावी (कृत्रिम) दुनिया का निर्माण करते हैं, वह लोगों को यथार्थ से भटका देती है। जब युवा पीढ़ी आपको गाँव या छोटे से कस्बे से भागकर-महानगर में पहुँचते ही रातों-रात लखपति बनने या कामयाबी पाते देखती है तो हजारों युवा इस मृग मरीचिका के चक्कर में अपना घरबार छोड़कर फुटपाथों के अंधेरों में अपना जीवन बरबाद कर देते हैं। इनमें से अधिकांश नशे और अपराध के दुश्चक्र में फँस जाते हैं और सामने घटित होती हैं 'दामिनी' जैसी हृदय विदारक घटनाएँ।

जब कोई मासूम लड़की फिल्मी परदे पर गरीब हीरोइन को अमीर हीरो के साथ प्यार की पींगे बढ़ाती देखती है तो फिर अनजाने में ही अमीरजादों की हवस का शिकार बन जाती है।

अपनी थोड़ी सी कमाई को फैशनबल कपड़ों और शृंगार सामग्री पर खर्च करने वाले युवाओं को देखकर उन पर तरस और आप सब पर गुस्सा आता है जो उनके सामने सौंदर्यता के नए-नए प्रतिमान जड़ते हैं। आपने अनगिनत बच्चों को शराब, सिगरेट पीने तथा गुटखा और पान-मसाला खाने की शिक्षा दी है।

आप यह कह सकते हैं कि हम तो अपना काम करते हैं। अभिनय हमारा व्यवसाय है, हमारा काम तो मनोरंजन करना है, पर यह सब तर्क थोथे हैं। कार्य का औचित्य तर्क नहीं, परिणाम सिद्ध करते हैं। आपके द्वारा दृश्य साधनों के माध्यम से परोसी जा रही नग्नता और कामोत्तेजक वस्त्र प्रदर्शन कहीं न कहीं मासूम बच्चियों, असुरक्षित किशोरियों एवं निर्बल महिलाओं पर अत्याचार के उद्दीपन का काम करते हैं। इस तथ्य से क्या आप अनजान हैं? नहीं!

आप एक कामगार नहीं हैं, आप एक सेलिब्रिटी हैं, आप अपने सामाजिक सरोकारों को भूल नहीं सकते, उनसे उदासीन नहीं हो सकते। आपमें से कुछ ने अपनी सामाजिक भूमिका या दायित्व को प्रभावी तरीके से निभाया है। मैं उसकी सराहना करता हूँ, साथ ही आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप अपनी हर भूमिका को यह ध्यान में रखकर निभाएं कि वह बच्चों पर सकारात्मक प्रभाव छोड़े। आप कठपुतली नहीं हैं, एक चेतनावान, ऊर्जावान, बुद्धिमान और भावना प्रधान कलाकार हैं। परदे के पीछे, परदे पर और परदे के सामने अर्थात् निर्माता-निर्देशक, कहानीकार, गीतकार और संगीतकार आदि/अभिनय करने वाले और तीसरे दर्शक एक ऐसा त्रिभुज हैं, जो चाहे तो विकृत बनाकर समाज को पतन की ओर धकेल सकता है और चाहे तो सुकृत रूप देकर समाज को संस्कारित कर सकता है। दुर्भाग्य से अभी तो कला का विकृत रूप ही प्रधान हो गया है। यह निश्चित ही राष्ट्र और समाज के लिए अत्यंत घातक है।

मेरे रजतपटीय शिक्षक-शिक्षिकाओ, आप प्रत्यक्ष या परोक्ष अपनी ऐसी छवि प्रस्तुत न करें, जो दर्शकों में विशेषकर बच्चों में नकारात्मक सोच उत्पन्न करती हो।

आपका भाई

सुरेंद्रनाथ दुबे

चौथा पत्र -

## साधु-संतों, प्रवचनकारों एवं उपदेशकों के नाम खुला पत्र।

समाज की श्रद्धा के पात्र व प्रेरक धर्मबंधु एवं बहनों!

प्रणाम!

समाज को अनौपचारिक शिक्षा प्रदान करने वाली शिक्षक कड़ी में आपका महत्वपूर्ण स्थान है। मैं इस पत्र के माध्यम से आपको उपदेश देने नहीं जा रहा हूँ, अपितु आपसे आग्रह करने जा रहा हूँ। ईश्वर ने आपको असाधारण सामर्थ्य दी है, जिसमें से एक है आपकी वक्तव्य कला। आपका ज्ञान, चिंतन, तपस्या, त्याग, सादगी, वेशभूषा और वाणी मिलकर एक ऐसी शक्ति उत्पन्न करते हैं जिससे आकर्षित होकर लाखों व्यक्ति आपकी ओर खिंचे चले आते हैं। 10-20 हजार की भीड़ जुटाने के लिए जहाँ राजनेताओं को धनबल, बाहुबल और राजबल का प्रयोग करना पड़ता है, वहीं आप लोगों को सुनने को इससे कई गुना जनता-जनार्दन स्वेच्छा से ही उमड़ पड़ती है। यह धर्मज्ञान के प्रति जनपिपासा का द्योतक है। टीवी पर विभिन्न धार्मिक चैनल एवं देश में जगह-जगह आए दिन होने वाले संत समागम, कथावाचन, प्रवचन कार्यक्रम में उमड़े जनसागर को देखकर लगता है कि हमारे देश में सदाचार की गंगा बह रही है पर क्या वास्तव में ऐसा ही है? 60-70 लाख कथित साधु-संतों, पीरों-फकीरों को छोड़ भी दें तो कम से कम 100-150 कथावाचकों, प्रवचनकर्ताओं और संतों की मंडलियाँ देश में विद्यमान हैं, जिनके हजारों-लाखों शिष्य हैं और जिन्हें लाखों लोग सुनते हैं। आप भी इनमें से एक हैं पर क्या हृदय पर हाथ रखकर पूरे विश्वास के साथ यह कह सकते हैं कि आपके ये अनुयायी और श्रोता उन सब बातों पर अमल करते हैं, जो आप उन्हें बताते हैं। क्या इस 'भीड़' में धर्मभीरु, आशीर्वाद लालायित, तनावग्रस्त, कृपालोभी, स्वयं को धार्मिक प्रदर्शित करने वाले महिला-पुरुषों की संख्या ही अधिक नहीं है?

लगता है जैसे इन आयोजनों का लक्ष्य श्रोताओं की, श्रद्धालुओं की उपस्थिति का कीर्तिगान बनाना रह गया है। इन आयोजनों में सम्मिलित जन केवल नैतिकता का व्याकरण सीख रहे हैं, आचरण का पाठ नहीं। इसमें कौन दोषी है? उपदेशक या श्रोता या दोनों ही या कोई नहीं।

शिष्यों की संख्या बढ़े किंतु गुरुओं की सीख नेपथ्य में चली जाए, ऐसी गुरु-शिष्य परंपरा का क्या लाभ है? आप समाज के शिक्षक और गुरु हैं। इस विसंगति को दूर कैसे करेंगे, यह आप लोगों के सोचने का विषय है। समाज को दिशा और शिक्षा देने में आपका योगदान उल्लेखनीय है। पर अभी इस क्षेत्र में परिवर्तन की आवश्यकता है ताकि आपकी इस क्षमता का उपयोग नागरिकों विशेषकर बच्चों एवं युवाओं के चरित्र निर्माण में किया जा सके।

आपका ही  
सुरेंद्रनाथ दुबे





### मीडिया के अनौपचारिक शिक्षक भाई-बहिनों के नाम खुला पत्र

मेरे मीडिया बंधुओं,

नमस्कार!

अपने औपचारिक शिक्षक के रूप में मीडिया के अनौपचारिक शिक्षक साथियों को लिखे जा रहे पत्रों की कड़ी में यह पाँचवाँ पत्र आपको लिखने जा रहा हूँ। सब यह अच्छी तरह जानते हैं कि मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ है। लोकतंत्र की सफलता के लिए स्वतंत्र एवं निष्पक्ष मीडिया का होना नितांत आवश्यक है। जनमत का निर्माण और उसकी अभिव्यक्ति मीडिया ही करती है। आधुनिक आविष्कारों (संचार साधनों) के कारण मीडिया की पहुँच हर व्यक्ति तक हो गई है। अपनी व्यापक पहुँच के कारण मीडिया के दुरुपयोग की संभावना अब वास्तविकता का रूप धारण कर चुकी है।

मित्रो! अब आपकी कलम और माइक्रोफोन तलवार से भी अधिक घातक बन जाते हैं। आप अपना 'शिक्षक-धर्म' भूल चुके हैं। आपकी निष्पक्षता संदिग्ध हो रही है। आपके समाचार प्रचार बन गए हैं। भ्रामक, दूषित और उत्तेजक विज्ञापनों के द्वारा आप बच्चों, युवाओं सहित जनसाधारण को क्या संदेश देना चाहते हैं? सनसनीखेज, अपराधिक समाचारों के मकड़जाल में सकारात्मक और रचनात्मक समाचार उलझकर रह गए हैं। यह देश तो केवल सकारात्मक कार्यों एवं रचनात्मक कार्य करने वालों की वजह से बचा हुआ है, उनके बारे में मीडिया की जानकारी लगभग नगण्य है। कई बार तो ऐसा प्रतीत होता है कि मीडिया नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है। क्रिकेट के अलावा आपको शायद ही कोई दूसरा खेल दिखाई देता है। सिनेमा और सिने नायक-नायिकाएँ तथा महानगर में हो रहे अपराध आपकी प्राथमिकता हैं। काश! आपने छोटे-छोटे कस्बों में रहनेवाली लड़कियों, दूर-दराज गाँव-देहात के सूने रास्तों से गुजरनेवाली लाखों शिक्षिकाओं और सूने खेतों में काम करनेवाली महिलाओं की सुरक्षा का मुद्दा भी इतने ही जोर-शोर से उठाया होता? आप केवल महानगरों तक सीमित हो चुके हैं। भारत के गाँव तो आपसे पूरी तरह उपेक्षित हैं।

व्यक्ति-विशेषों की प्रशंसा-निंदा के प्रति आपका व्यवहार प्रायोजित लगने लगा है। तिल को ताड़ और राई को पहाड़ बनाना तो कोई आपसे सीखे। मीडिया की बहसों को देखकर यही लगता है कि इनके आयोजन के प्रकट उद्देश्य कुछ और तथा गुप्त उद्देश्य कुछ और हैं। हाँ, केवल एक या दो समाचार-पत्र एवं चैनल ही अपवाद हैं।

यह तो न्यूज़-चैनल्स की बात है, कथित पारिवारिक कार्यक्रम दिखानेवाले धारावाहिक समाज के सामने क्या परोस रहे हैं? इन्हें देखकर तो लगता है कि हमारे परिवार शायद छल-फरेब, स्वार्थ, झूठ, दुष्टता और षडयंत्र के केन्द्र के अतिरिक्त कुछ हैं ही नहीं। मर-मरकर बार-बार जी उठनेवाले और चार-चार, छह-छह बार शादी करनेवाले पात्रों को देखकर तो तिलिस्मी उपन्यास पढ़ने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती। आप परिवारों में ईर्ष्या-कलह के बीज बो रहे इन कार्यक्रमों से आपकी कमाई भले ही चौगुनी बढ़ रही हो पर हमारी सांस्कृतिक संपदा का जो ह्रास हो रहा है उसकी पूर्ति नहीं हो पाएगी। मीडिया का उद्देश्य विज्ञापनों से या अन्य प्रकार से केवल धन अर्जित करना रह गया है।

मित्रो! मेरा आशय मात्र आलोचना या निंदा करना नहीं है, वैसे भी आपकी शक्ति-सामर्थ्य के समक्ष अब औपचारिक शिक्षकों की बिसात ही क्या है पर सच सामने रखने की धृष्टता किसी को तो करनी ही होगी और सच कड़वा होता है। मीडिया की ताकत बहुत बड़ी है। मीडिया के झूठ को भी जनता सच मानती है। झूठ से तो बचा भी जा सकता है पर विकृत सच बहुत हानिकारक होता है। मीडिया केवल नंगा सच दिखाने का माध्यम या व्यवसाय नहीं है यह कोई 'लव-गुरु' नहीं, 'सामाजिक-गुरु' है। औपचारिक शिक्षकों की भाँति अनौपचारिक शिक्षक के रूप में मीडिया को भी श्रेष्ठ नागरिक या राष्ट्र का निर्माण करना चाहिए। कर्तव्यच्युत थोड़े से गुरुओं की तरह मीडिया भी एक-दो व्यक्तियों को नहीं, पूरी पीढ़ी को नष्ट कर सकता है। मीडिया की ताकत, उपलब्धियों और योगदान को नकारा नहीं जा सकता है। बस, पटरी से उतरे गाड़ी के कुछ डिब्बों को फिर पटरी पर लाने की आवश्यकता है। मीडिया अगर जनमानस को बदल सकता है तो जाग्रत जनमानस एवं अब लगभग एक करोड़ औपचारिक शिक्षकों को भी मीडिया पर दबाव बनाना होगा। यह पत्र इस जागरण अभियान की एक छोटी-सी कड़ी है। क्षमा प्रार्थना के साथ।

आपका भाई  
सुरेन्द्रनाथ दुबे

# Open letter to 55 million teachers on World Teacher's Day

*Dear Brothers & Sisters,*

As Secretary General of All-India Federation of Educational Associations (AIFEA), I take this opportunity of writing an open letter to you on the occasion of the 8th World Teacher's Day. AIFEA was established in 1925 and is the founder member of Education International (EI), the single largest confederation of education personnel with a membership of 25 million through 296 organisations in 155 countries. EI and UNESCO are working together to give the world's teachers the recognition they deserve.

**The number of teachers all over the world exceed 55 million (nearly one per cent of total global population). You hold in your hands the future of our children, our prosperity, even of our very planet itself.**

A declaration entitled Status of Teachers was approved in an inter-governmental conference organised by UNESCO at Paris on October 5, 1966. Only seven years back UNESCO decided to celebrate the World Teacher's Day every year on October 5, since then education ministers of all countries of world are also invited to attend celebration at UNESCO headquarters each year on this day when the Declaration (Status of Teachers) was adopted in 1966.

As a fellow member of the large family of 55 million teachers, my major concern is for the most important area of Universal Elementary Education, which remains neglected, specially in under developed countries.

Dear Friends, the achievement of the target, Education for All - by the year 2000, remained unfulfilled. More than 40 per cent population in poor countries remained without elementary education. About 30 per cent people are still illiterate, two third of them are women, while everyday hundreds of children suffer from malnutrition and ill-treatment.

Teachers have been rendered disinterested and uncommitted by the ruthless imposition of the administrative control. Administrators occupying the loftiest position in educational management and planning conveniently set aside all academically sound, but administratively inconvenient considerations. Teachers are paid official tributes on Teacher's Day and treated with absolute mistrust, callous indifference and humiliation during the rest of the year. The teachers have little control over, or voice in, what concerns the future generation most directly. This has resulted in a painful loss of identity and initiative in the teaching community. Unfortunately the vital instruments of education have fallen into the hands of urban elitists, who are committed to the exclusive interests of urban privileged. At the highest level of policy formulation and decision making there is lack of active involvement, participation and advice of teachers and experts of elementary education.

The frustrating scenario now calls for but one power to push out chaos and bring in order, sense and

purpose in it. That power beyond doubt is you, the teachers. I ventured to approach you, dear friends, with an appeal to do something in the matter and reverse the deadly process of social decay. We should affirm our solidarity for the cause of our children. We have work to do, we have a promise to keep and we have a world to transform. If we know anything we know that togetherness will strengthen our hands. The ideal that unites us is far more important than the differences that divide us. We must remember, now and forever that when the issue is the liberation and education of children, we all stand together, our stand is that when the issue is the cause of future generation. We must speak and act as one and make it plain to all that we are united in our commitments.

Let us not forget all those who fought for the cause of downtrodden. Let us not forget those who taught us to stand in the society with dignity and respect and let us remember those who gave to the cause of the education their full and lasting devotion, let us remember their courage, let us continue their work. We cannot be silent while our forest are being wiped out, trees are cut mercilessly. Casteism and racism is being spread.

Let us use this force of 55 million teachers to say to all, that we regard the denial of right to education to one as the denial to all. Sufferings of our children are the sufferings of all the teachers that we shall never remain passive when the justice is denied to our children and to the teachers in any part of the

world. Let us say to all that we are determined that the children and their teachers shall be free from violence, free from exploitation free from fear and free from intimidation. Let us stand together and strive for the respectful working conditions and the status we deserve as teachers. Let us demonstrate that we shall not be silenced and we shall not be ignored and we shall never retreat especially from the struggle for economic, social and political justice for every single person. All of this has become necessary and all of this is possible if we are united. Only students who are liberated can these students will be prepared to carry us towards the day when peace on the land, social harmony and social justice can be successfully achieved.

I am proud to be asked to be a teacher. I am happy to serve the teaching community, happy to represent teachers, happy to represent the cause as a teacher leader, determined to prove worthy of trust and prepared to work energetically and steadfastly with your cooperation only.

**You must use the power to create and mould a collective consciousness, a strong public opinion to work towards the protection of human rights. Now you have to come forward to save our future generation from violence and discrimination.**

I congratulate you on World Teacher's Day.

**Surendra Nath Dubey**  
Secretary-General,  
All-India Federation of  
Educational Associations

FRIDAY, OCTOBER 5, 2001

**FREE PRESS**  
FOR FREE FLOW OF TRUTH

Indore, 5 October, 2001

सुरेन्द्र नाथ दुबे विगत 32 वर्षों से शिक्षकों के नाम खुले पत्र लिखते रहे हैं - उदाहरण के लिए पूर्व में औचारिक शिक्षकों द्वारा लिखे गये दो खुले पत्र दिये जा रहे हैं

बुधवार, 19 सितम्बर से 25 सितम्बर, 2012

सा. राज आस्था

4



# TEACHER'S DAY

## AN OPEN LETTER TO 7 MILLION TEACHERS OF INDIA

Dear Brother and Sister,

*I Congratulate you, on the Teacher's Day.*

I take this Opportunity of addressing an open letter to you through Awardee Teachers and Press. On the occasion of Teachers day, as president of All India Federation of Educational Associations (AIFEA). This association was established in 1925 and is the Founder member of the biggest world body of teachers known as Education International (EI). that represents more than 70 million Teachers in the world. The AIFE so far had 66 All India Education Conferences Most Eminent educationists, Scientists, Journalist, leaders, social reformers and other eminent personalities have been associated with it, Dr. S Radhakrishnan (Former president of India) presided over 3 of its annual conferences in 1930, 1939 and 1947 while he was only a teacher.

As Humble member of the strong family of 7 million formal teachers of India my concern is for the unfortunate neglect of promise made under Article 21 A of the constitution "Elementary Education for All Seems to be difficult. Strangely enough we have been identifying highly motivated exercise of deciding percentage of reservations in higher education and jobs for the deprived class and communities, but more than 75% Population in these communities remained even without elementary education during these past 65 year. Two third of them are women while every day hundreds of children in these communities suffer from malnutrition and ill-treatment.

About 7 million teachers of India remained disinterested and uncommitted by the ruthless imposition of the administrative control. Administrators occupying the loftiest position in educational management and planning conveniently set aside all academically sound but administratively inconvenient considerations. Teachers are paid official tributes on the teacher's day but have little control over, or what concerns them most directly. This has resulted in a painful loss of identity and initiative in the teaching community. At the highest level of policy formation and decision making in shastri Bhavan and state secretariats, there is lack of advice, active involvement and participation of Experts and Teachers of Elementary Education. Cinema electronic media and press have become the vital instruments of informal education. Unfortunately they have become source of earning money and influencing political power. Their real power remains in the hand of urban elite. The frustrating scenario in the country now calls for one power to push out chaos and order, sense and purpose in our idles. That power beyond is in the hands of the formal teachers. We should affirm our solidarity for the cause of our children. We have work to do. We have a promise to keep. We have a nation to build and world to transform, if we know anything we know that togetherness will strengthen our hands. we must remember now and forever that when issue is the liberation and education of our children, we all stands together. Our stands is that when the issue is the case of our future generation. we must speak an act as one and make it plane to all that we all united in our commitments. Let us forget Ghandiji ji, Dr. Bhim Rao Ambedkar and all those who fought for the cause of downtrodden, Let us not forget those who taught us to stand in the society with dignity and respect, and let us remember those who gave to the cause of elementary education. their full and lasting devotion. let us remember their courage and continue their work. Let us use this force of 7 million teachers to say to all. that we have regard the denial of right to education to one as the denial to all sufferings of our children are also suffering of all the teachers. we shall never remain passive when the justice is denied to our children in any part of this country, all of this has become necessary and all of this is possible if we are united, only students who are liberated can assume a world just more free and secure, only then these students will be prepared to carry towards the Hind Swaraj of Mahatma Gandhi social harmony and social justice can be successfully achieved.

Your Brother

Surendra Nath Dubey



## भारत के सत्तर लाख शिक्षकों के नाम खुला पत्र (पुरस्कृत शिक्षकों एवं मीडिया के अनौपचारिक शिक्षकों के माध्यम से)

शिक्षक समुदाय के मेरे भाईयों और बहिनो,

हमारी व्यवस्था के शीर्ष स्तरों पर उस नगरीय अभिजात्यवर्ग ने अधिकार कर लिया है, जिनकी सम्पूर्ण सोच अभिजात्य की आवश्यकताओं और सुखें तक सीमित है। सम्पूर्ण व्यवस्था में प्रारंभिक शिक्षा के बारे में चिंतन की एक कालिमा है, जो एक संसदीय प्रजातंत्र व्यवस्था का चरित्र नहीं करी जा सकती। सत्ता में जो प्रशासक हैं, बच्चे के पालक हैं, उनके पास शिक्षा के बारे में सही सोच और संवेदनशीलता ही नहीं है तो प्रारंभिक शिक्षा के लोकव्यापीकरण के लक्ष्य कैसे पूरे होते? आवश्यकजनक और दुखद तो यह है कि दलित और वंचित वर्गों के लिये केवल सरकारी नौकरियों के आरक्षण की बात की जाती है, किन्तु पिछले 6 दशक में इन्हीं वर्गों की 75 प्रतिशत से अधिक आबादी न्यूनतम स्तर तक की शिक्षा पाने से ही वंचित रही है। इस प्रकार केवल श्री मिलेवरके लोग इसका वास्तविक लाभ प्राप्त कर पाये हैं।

प्रिय साथियों, वर्तमान परिदृश्य को देखते हुये यह असंभव ही लगता है कि हम प्रारंभिक शिक्षा को सर्वमुलम बनाने के लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे शीर्ष स्तर पर प्रारंभिक शिक्षा के विशेषज्ञों एवं शिक्षकों की सहभागिता के बिना लिये गये निर्णयों के कारण यह कठिनाई रही है। शिक्षा शास्त्री के शब्दों में "शिक्षा में सोच का शास्त्रीय मन से जो झरना फूटता है वह शीर्ष स्तर के प्रशासकों के माध्यम से पूरी तरह कुरुप होकर राज्यों की राजधानी तक पहुंच पाता है। सही नितियों की सही समझ तो शीर्ष स्तर के गैरशिक्षकीय प्रशासकों एवं राज्यों के मंत्रालयों के गैर शिक्षकीय अधिकारियों में रह नहीं पाती यह विकृत होकर बाहर निकली है।"

शिक्षा में हमारी प्राथमिकतायें राजनीतिक नारों से शुरू होती हैं और कागजों की कार्यालयीन व्यवस्थाओं में दम तोड़ देती हैं 'कोठारी कमीशन' 'चट्टोउपाध्याय आयोग' राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986 तथा राममूर्ति आयोग की अनुशंसाओं के बाद 1992 में स्वीकृत शिक्षा नीति की कार्ययोजना पर जिस ढंग से अमल होना चाहिए था वह नहीं हो पाया। सिनेमा टेलीवीजन और समाचार पत्र अब संपत्ति और सत्ता अर्जित करने के साधन बन गये हैं राजनीति और राज नेता, अपराध और अपराधी, अभिजात्य वर्ग के खेल और खिलाड़ी जबकि ये अनौपचारिक शिक्षा के महत्वपूर्ण साधन हैं। प्यारे भाईयों और बहिनो राष्ट्रीय परिदृश्य को बदलने के लिये आज आवश्यकता है शिक्षकों के समर्थित होने की जो निसंदेह समाज की इस व्यवस्था को सुचारु और सुव्यवस्थित बनाने के लिये बाध्य कर सकते हैं। आपसे निवेदन करने का मेरा यह आशय इसलिये भी है कि इस क्षेत्र में हम सामूहिक रूप से ऐसे प्रभावशाली कदम उठाये जिससे सामाजिक पतन की इस नकारात्मक धारा को सकारात्मक उद्धान की ओर मोड़ा जा सके। आने वाले नोनियालों की पीढ़ी के लिये हमें कुछ न कुछ करना ही होगा। हमें ही अब यह देखना है कि स्वधीनता संग्राम के दिनों में महात्मा गांधी ने गांव एवं गरीबों के लिये हिन्द स्वराज की अफ्सा की थी वह पूरी करनी होगी। शिक्षकों के वर्ग को ही अब एक नई गांधीवादी व्यवस्था के लिये नये सिरे से रूपांतर करना होगा। व्यवस्थापिका, कार्यपालिका प्रशासन एवं न्याय पालिका में कार्य कर रहे पूर्व छात्र अनुपासित रहकर जन सेवा करें तथा गरीब जो सही और त्वरित न्याय दिलायें, उनसे ऐसी अफ्सा, उनका शिक्षक नहीं करेगा तो और कौन करेगा? 'ओ शो कहेते हैं " आज शिक्षक विद्रोही नहीं हैं और मेरी दृष्टी में जो शिक्षक विद्रोही नहीं हैं वह शिक्षक ही नहीं हैं उसने शिक्षक होने का भी अधिकार खो दिया है भारत के शिक्षक अगर यह निश्चय कर लें एवं पुरानी लोक से हट कर नये रास्तों से, समाज को मुक्त करेंगे, नई पीढ़ी को मुक्त करेंगे तभी भारत में नई आत्मा का जन्म हो सकेगा अन्यथा नहीं शिक्षक जिस दिन कार्टिकारी दृष्टिकोण अपना लेंगे, भारत में एक नई आत्मका का जन्म हो सकेगा अन्यथा नहीं, शिक्षक जिस दिन कार्टिकारी दृष्टि कोण अपना लेंगे, उसी दिन समाज रूपांतरित होगा, नया समाज पैदा हो सकेगा, शिक्षक का कार्टिकारी होना पूरे समाज को बदलने जाने का प्रमुख कारण हो सकेगा। शिक्षक जब तक सड़ी गली समाज व्यवस्था का एजेन्ट बना रहेगा तब तक समाज को एक अच्छी दिशा नहीं दे पायेगा। शिक्षक ने अभी तक अपनी सामूहिक शक्ति को पहचाना ही नहीं है। हमारे पास अच्छे शिक्षक हैं लेकिन वे सोहे हुये हैं। हमारे पास निष्ठावान एवं योग्य शिक्षकों की भी कमी नहीं है किन्तु आज शिक्षक समाज का एक उषकरण बनकर रह गये हैं क्योंकि वे लोग जानते हैं कि शिक्षक अगर पूरी जिन्दगी के बारे में सोचने लगेंगे, तो शिक्षक के हाथ में इतनी बड़ी ताकत आ जायेगी कि वह सारे समाज को रूपांतरित कर देंगे। 'शिक्षकों का पूरा समूह जो सबसे ज्यादा सबल और सबसे अधिक शक्तिशाली समूह है के पास नई पीढ़ी का (भारत की आबादी का 60 प्रतिशत) मस्तिष्क और आत्मा है उसकी सबसे बड़ी ताकत ही यह है कि आने वाली पीढ़ी उसके हाथ में है यही उसे दिशा दे सकता है शिक्षक यदि जिन्दगी को बदलने का सूत्र अपने हाथ में ले लें तो उससे पूरे देश की दशा बदली जा सकती है। दुख तो इस बात का है कि आज शिक्षक व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से भी सारी दुखद परिस्थितियों को झुपचाप देख रहा है, सह रहा है आज तो शिक्षक की सामूहिक शक्ति ही देश को वर्तमान दुखद परिस्थितियों को उबारने का कार्य कर सकती है।

"हम ऐसी स्थिति में घुप क्यों रहें जब हमारे जंगलों का निर्दयता का पूर्वक सफाया किया गया हो। देश में जातिवादी राजनीति का जहर तीव्रता से फैलाया गया हो लगभग 30 करोड़ से अधिक लोगों को आठवीं तक की शिक्षा का अवसर ही नहीं मिल पाया हो। इसमें भी दो तिहाई संख्या तो महिलाओं की हैं। लाखों बच्चे कुपोषण और शोषण का शिकार हैं करोड़ों बच्चे महिलायें एवं असहाय एवं बूढ़े लोग धनी अंधरी रात में कड़कड़ाती ठंड एवं भीषण बारिश में शीघ्र जैसी जरूरी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये भी घर से बाहर निकलने के लिये बाध्य होते हैं हम 7 दशक में भी इन महत्वपूर्ण समस्याओं का हल नहीं निकाल पाये हैं।"

आपको समाज में सामूहिक चेतना जागृत करनी होगी लोकमत का निर्माण करना होगा। तथा मानव अधिकार की सुरक्षा के प्रयासों के लिये समाज को प्रेरित करना होगा।

अब 70 लाख शिक्षकों को ही गांधी जी का हिन्द-स्वराज पाने के लिये और इसकी रक्षा करने के लिये समर्थित और दृढ़ प्रतिज्ञा होकर कार्य करना होगा।

आपका भाई - सुरेन्द्रनाथ दुबे

सौजन्य से : राष्ट्रीय पुरस्कृत शिक्षक मंच, शुभकामनाओं के साथ।



## मैं द्रोणाचार्य नहीं हूँ

– संजीव जायसवाल 'संजय'

“मक्कार कहीं का, मैंने तुझे काम करने भेजा था और तू यहाँ बैठा लकीरे खींच रहा है”, सुखराम की कर्कश आवाज आवाज सुनायी पड़ी।

सुखराम, गोपाल को बुरी तरह पीट रहा था। वो रो-रोकर कहे जा रहा था, “बापू मत मारो मुझे। मैं अभी सारा काम करे डालता हूँ।”

उन दोनों के चिल्लाने की आवाज सुन मास्टर दीनानाथ झल्लाते हुये उठ बैठे। यह रोज-रोज का तमाशा था। सुखराम उनकी प्राइमरी पाठशाला में पिछले 20 वर्षों से झाडू लगा रहा था। पिछले दो वर्षों से वो बीमार रहने लगा था, इसलिये अपने बेटे गोपाल को काम पर भेजने लगा था।

किंतु गोपाल बहुत मक्कार था। झाडू लगाने के बजाय इधर-उधर बैठा रहता। इसलिये सुखराम अक्सर उसकी पिटाई कर देता था। मास्टर दीनानाथ का क्वार्टर पाठशाला के भीतर ही था, इसलिये बाप-बेटों के चीखने-चिल्लाने की आवाजें उनके कानों तक पहुँच जाती थी। इससे उन्हें बहुत उलझन होती थी। धीरे-धीरे वे भी गोपाल से चिढ़ने लगे थे। पिछले महीने की बात है। वे कक्षा 4 में गणित पढ़ा रहे थे। तभी उन्हें लगा कि खिड़की के पीछे कोई खड़ा है। उन्होंने कड़कते हुये पूछा, “कौन है वहाँ?”

यह सुनते ही खिड़की के पीछे खड़ी आकृति भागी। उन्होंने कक्षा के बच्चों से चिल्लाते हुये कहा, “पकड़ो उसे, भागने न पाये।”

कई लड़के एक साथ दौड़ पड़े। थोड़ी ही देर में वे गोपाल को घसीटते हुये ले आये। लगता था कि वो गिर पड़ा था क्योंकि उसकी कुहनियाँ छिल गयी थीं और उनसे हल्का-हल्का खून बह रहा था।

उसे देखते ही मास्टर दीनानाथ ने डपटते हुये पूछा, “खिड़की के पीछे क्या कर रहा था?”

गोपाल ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसका मौन देख मास्टर दीनानाथ का पारा चढ़ गया। उन्होंने चिल्लाते हुये कहा, “जल्दी बता, वहाँ क्या कर रहा था वरना हाथ पैर तोड़ दूँगा।”

“कुछ नहीं कर रहा था”, गोपाल ने सहमते हुये मुँह खोला।

“कुछ नहीं के बच्चे। मैं जानता हूँ चोरी करने के लिये बच्चों का सामान ताक रहा होगा”, मास्टर दीनानाथ फट पड़े।

यह सुन गोपाल की आँखें छलछला आयीं और वो भर्राये स्वर में बोला, “मास्टर जी, मैं चोर नहीं हूँ।” इससे पहले कि वे कुछ कह पाते गोपाल ने जोर का झटका दिया और वहाँ से भाग लिया। कई बच्चे उसके पीछे दौड़े लेकिन उसे पकड़ नहीं पाये।

मास्टर दीनानाथ का मन खिन्न हो गया था। उस दिन वे ठीक से पढ़ा नहीं पाये। इसके बाद उन्होंने कई बार गोपाल को खिड़की के पीछे खड़ा देखा। उसे पकड़ने के लिये उन्होंने कई बार बच्चों को दौड़ाया लेकिन हमेशा असफलता हाथ लगती। इससे उनकी खीझ बढ़ती जा रही थी।

परेशान होकर तीन दिन पहले उन्होंने सुखराम से कहा गोपाल को लेकर आओ वरना वे उसे स्कूल में काम

नहीं करने देंगे। आशंकित सुखराम स्कूल के बाद गोपाल को घसीटते हुये उनके पास ले आया। उन्होंने कई बार पूछा कि वो खिड़की के पीछे क्यों खड़ा होता है। किन्तु गोपाल ने कोई उत्तर नहीं दिया इससे उनका पारा चढ़ गया।

उन्होंने उसे झन्नाटेदार झापड़ जड़ते हुये धमकी दी, “अगर आज के बाद कक्षा के आस-पास भी दिखाये पड़े तो तुम बाप-बेटे स्कूल में काम नहीं कर पाओगे।”

धमकी काम कर गयी। सुखराम ने उन्हीं के सामने गोपाल की खूब पिटाई की। अगले दो दिन वो खिड़की के आस-पास नजर नहीं आया। मास्टर दीनानाथ ने राहत की सांस ली। किन्तु आज सुबह-सुबह फिर वही चीख-चिल्लाहट। आज तो वे आर-पार का फैसला कर के ही रहेंगे। वे तमतमाते हुये अपने क्वार्टर से बाहर निकले। एक कक्षा के सामने बैठा गोपाल सिसक रहा था। उसकी बगल में खड़ा सुखराम हाँफ रहा था। आज उसकी तबियत कुछ ज्यादा खराब मालूम पड़ रही थी।

“सुबह-सुबह क्या तमाशा बना रखा है तुम लोगों ने”, मास्टर दीनानाथ उन्हें देखते फट पड़े।

“क्या बताऊँ मास्टर साहब, मेरी तो किस्मत ही फूटी है। एक ही लड़का है, सोचता था कि काम में हाथ बतायेगा। लेकिन ये नालायक यहाँ बैठा कागज पर लकीरें खींच रहा है”, कहते हुये सुखराम ने एक कागज उनकी ओर बढ़ा दिया।

मास्टर दीनानाथ ने कागज देखा तो चौंक पड़े। कल उन्होंने बच्चों को रेखागणित पढ़ाते समय ब्लैक-बोर्ड पर कुछ रेखाचित्र बनाये थे। हुबहू वही रेखाचित्र उस कागज पर बने हुये थे।

“किसने बनाया है इन्हें”, मास्टर दीनानाथ ने अपनी आँखों पर चढ़े चश्मे को ठीक करते हुये पूछा।

गोपाल ने कोई उत्तर नहीं दिया तो सुखराम ने डपटा, “अबे चुप क्यों है? बताता क्यों नहीं, कि ये फालतू का काम तूने किया है।” “ये गोपाल ने बनाया है”, मास्टर दीनानाथ एकदम से चौंक पड़े।

“हाँ मास्टर साहब, झाड़ू लगाने के बजाय ये यहाँ बैठा समय बर्बाद कर रहा था। इसे माफ कर दीजिये। मैं अभी फटाफट पूरे स्कूल की सफाई किये दे रहा हूँ, सुखराम हाथ जोड़ते हुये बोला। उसके मन में काम छूट जाने का भय समा गया था।

बात मास्टर दीनानाथ की समझ में आने लगी थी। उन्होंने गंभीर स्वर में कहा, “सुखराम, ये फालतू का काम नहीं है। ये तो वो काम है जो कक्षा के ज्यादातर बच्चे नहीं कर पाते हैं। तुम्हारे बेटे ने तो कमाल कर दिया है लेकिन समझ में नहीं आता कि इसने किया कैसे।”

सुखराम की समझ में नहीं आया कि हमेशा डांटने-फटकारने वाले मास्टर जी इतने शांत कैसे हो गये हैं। वो बस आँखे फाड़े उनके चेहरे की ओर देखता रहा।

मास्टर दीनानाथ गोपाल के करीब पहुँचे और उसके सिर पर हाथ फेरते हुये बोले, “एक दिन में कोई इतने अच्छे रेखाचित्र बनाना नहीं सीख सकता। सच-सच बताओ तुमने ये कैसे सीखा है।”

स्नेह की छाया मिलते ही गोपाल का दर्द आँसू बन बाहर निकल पड़ा। वो सिसकते हुये बोला, “मास्टर जी, जब आप बच्चों को पढ़ाते हैं तो मैं खिड़की के पीछे छुपकर सुनता रहता हूँ। उसी से थोड़ा बहुत लिखना-पढ़ना सीख गया हूँ।”

मास्टर दीनानाथ को लगा जैसे वे आसमान से गिर पड़े हों। गोपाल आज तक एकलव्य की तरह विद्या की साधना करता रहा और वे द्रोणाचार्य की तरह उसे दंडित करते रहे। उसे अपमानित करते रहे। कितना महान है वो और कितने छोटे हैं वे। उनका मन आत्मग्लानि ने भर उठा।

उन्होंने गंभीर स्वर में कहा, “बेटा, तुमने आज तक मुझे बताया क्यों नहीं।”

“मैं सफाई वाले का बेटा हूँ। डरता था कि आप कहीं डांट न दें”, गोपाल ने हिचकी भर उनके चेहरे की ओर देखते हुये बताया।

मास्टर दीनानाथ के अंदर इतना साहस न था कि वे गोपाल की आँखों की ओर देख सकें। उन्होंने सुखराम की ओर मुड़ते हुये पूछा, “तुमने आज तक अपने बेटे को पढ़ने के लिये क्यों नहीं भेजा?”

“पढ़ लिख कर क्या करेगा। सफाई वाले का बेटा है, बड़ा होकर झाड़ू ही लगाना है। अगर थोड़ी बहुत कलम पकड़ना सीख गया तो फिर ढंग से झाड़ू नहीं पकड़ पायेगा”, सुखराम ने सांस भरते हुये कहा।

मास्टर दीनानाथ ने चंद क्षणों तक उसके चेहरे की ओर देखा फिर बोले, “तुमने बहुत बड़ी गलती की। आज जमाना बदल गया है। कोई जरूरी नहीं कि सफाईवाले का बेटा सफाईवाला ही बने। वो अफसर भी बन सकता है। उसे स्कूल न भेज कर तुमने गलती की है और उससे भी बड़ी गलती मैंने उसका अपमान करके की है। हम दोनों को अपनी गलती सुधारनी होगी। इसका एक ही उपाय है कि गोपाल को लिखा-पढ़ा कर बड़ा आदमी बनाया जाए।”

“मास्टर जी, आप कहीं मजाक तो नहीं कर रहे”, सुखराम की आँखें आश्चर्य से फैल गयीं। उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

“सुखराम, तुम्हारा बेटा अपमानित होकर भी अपनी साधना करता रहा है। वह एकलव्य की तरह महान है, लेकिन मैं द्रोणाचार्य की तरह अंगुली काट कर उसकी साधना भंग नहीं करना चाहता। मैंने आज तक उसका बहुत अपमान किया है, अब उसका प्रायश्चित्त करना चाहता हूँ। गोपाल में प्रतिभा और लगन है। तुम बस हामी भर दो। आज से उसकी फीस और किताबों का खर्चा मैं उठाऊँगा। देखना, एक दिन वो बहुत बड़ा आदमी बनेगा”, मास्टर दीनानाथ ने भावुक स्वर में कहा।

यह सुन गोपाल की आँखें प्रसन्नता से खिल उठीं। उनमें अनेकों दीप एक साथ जगमगा उठे। अपने आँसू पोछ, वो मास्टर दीनानाथ के चरणों की ओर झुक पड़ा, लेकिन उन्होंने उसे बीच में ही रोक कर अपने सीने से लिपटा लिया। सुखराम की आँखों से खुशी के आँसू गिरने लगे थे। — स्कूल शिक्षा से साभार

### द्रोणाचार्य नगर – गुड़गांव-गुरुगांव

शिक्षा के जंजाल में, द्रोणार्जुन प्रतिदर्श। दूनी प्रगति कर रहा, गुरुगाँव प्रतिवर्ष॥

जहाँ सुदामा पढ़ सके, श्रीकृष्ण के साथ। सांदीपनि आश्रम कहाँ, झुके जहाँ पर माथ॥

कौरवों का वर्चस्व है, स्थापित हैं द्रोण। बिना शुल्क एकलव्य को, शिक्षा देगा कौन॥

पक्ष सदा राजवंश का, यही द्रोण आदर्श। पतन एकलव्य का किया, राजपुत्र—उत्कर्ष॥

प्रतिभा आज भी दमित है, काल भले हो सभ्य। द्रोण—नीति ने हत किए, सदा दलित एकलव्य॥

— रामगोपाल रायकवार

सुरेन्द्र नाथ दुबे जी आजकल गुड़गांव में रहते हैं, राजनेता तथा अधिकारी इस शहर का नाम गुरुगांव या द्रोणाचार्य नगर इत्यादि रखनाएं संपादक चाहते हैं, जबकि दुबे जी ‘एकलव्य ग्राम’ कहना अधिक पसंद करते हैं।



## स्कूल शिक्षा पत्रिका क्यों?

स्कूल शिक्षा पत्रिका के अभी तक 55 मासिक अंक प्रकाशित हो चुके हैं। प्रतिष्ठित साहित्यकार और शिक्षाविद श्री रमेश दवे के लेखों को पत्रिका ने सदैव ही महत्वपूर्ण माना है। पत्रिका के संपादक प्रकाशक श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे उन्हें भी अपना मार्गदर्शक मानते हैं। दोनों को ही एस.सी.ई.आर.टी.में साथ-साथ कार्य करने का अवसर मिला है।

कल्याण कल्पतरु से भी हमने एक आलेख शिक्षा अंग्रेजी में ही लिया है। पाठक अंग्रेजी के 'स्कूल' एवं हिन्दी के 'शिक्षा' शब्दों की सार्थकता को विपरीत भाषाओं में लिखे लेख से समझने का प्रयास करेंगे।

## स्कूल क्या? स्कूल क्यों?

—रमेश दवे

'स्कूल' शब्द पश्चिम से आया। जर्मनी में पैदा हुआ था यह शब्द। ईसाईयत की शिक्षा के लिए बना था स्कूल। चर्च के आधीन थीं स्कूल, कॉलेज, कान्वेंट जैसी संस्थाएँ। जब सरकारों ने धार्मिक शिक्षा के ये स्कूल देखे तो संभवतया चर्च से अलग आम लोगों की शिक्षा के लिए स्कूल का विस्तार किया। यूरोप में स्कूल फैला, अमेरिका, आस्ट्रेलिया में फैला, लातीनी अमेरिका में फैला, एशिया में भी तत्कालीन विदेशी सरकारों के माध्यम से आया और भारत में तो अपनी सारी पारंपरिक शिक्षण व्यवस्था को घुस्त करता पश्चिमी शिक्षा के आधुनिक घोड़े पर चढ़कर इस तरह आया कि स्वदेशी पाठशालाओं का सुन्दर वृक्ष कुचल दिया गया। इतिहासकार स्व.धर्मपाल ने अपनी पुस्तक 'द ब्यूटीफुल ट्री' में हमारी पारंपरिक शिक्षा की पाठशालाओं को द ब्यूटीफुल ट्री कहकर आंकड़ों सहित पूरी स्कूल-कथा-व्यथा बताई है। धर्मपाल ने यह ब्यूटीफुल ट्री शब्द गाँधीजी से लिया था।

खैर, जैसा भी हो, स्कूल आया! स्कूल इतना तो बुरा नहीं रहा होगा, जब आया या लाया गया होगा। वास्तव में जब कोई भी विचार संस्था बन जाता है और संस्था, व्यवस्था का हिस्सा हो जाता है, तो संस्था और व्यवस्था की वित्तियाँ स्कूल में भी पनपने लगती हैं। भारत में संस्कृत पाठशालाएँ एवं मंदिर-मस्जिद के चबूतरों पर चलती पारंपरिक शालाएँ बंद होने लगीं। आधुनिक शिक्षा का मैकाले मॉडल अंग्रेजी शिक्षा लेकर आया। राजा राजमोहन राय जैसे समाजसुधारक ने भी पश्चिमी शिक्षा का समर्थन कर दिया। स्कूल फैलने लगे और फैलते-फैलते अब सारे देश में लगभग लाखों स्कूल हो गए। लाखों शिक्षक, करोड़ों बच्चे, लाखों स्कूल, हजारों व्यवस्थापक सरकारी भी गैर सरकारी भी। स्कूल शब्द अपने व्यापक रूप में भारतीय बन गया। अब शाला, पाठशाला कहना सीमित हो गया और गाँव से शहर तक स्कूल के प्रकार बन गए। पाठ्यक्रम एक जैसा, पाठक एक जैसे मगर स्कूल असमान। सरकारी तंत्र के स्कूल खण्डहर या बेरौनक, शिक्षक अच्छे भी बुरे भी, कर्मठ भी कामचोर भी। संसाधन अपर्याप्त या अभावग्रस्त। विभागीय अधिकारियों की तानाशाही। तरह तरह के भ्रष्टाचार। अर्थात् सरकारी तंत्र के स्कूल यानी कई प्रकार की बुराईयों के घर। यह केवल भारत में ही नहीं, सारी दुनिया के सरकारी तंत्र ने महसूस किया। इसलिए प्रश्न उठा—स्कूल क्या? स्कूल क्यों? क्या स्कूल के बिना शिक्षा संभव



नहीं?

अब यह प्रश्न बेमानी है कि स्कूल क्या और क्यों? सारी दुनिया में स्कूल संस्था के रूप में मान्य है—यहाँ तक की नर्सरी से उच्चतर स्तर तक। इसी प्रकार उच्च शिक्षा भी कालेज, विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय संस्थानों के रूप में मान्य है। इसलिए शिक्षा के नाम पर स्कूल के जो भी विकल्प खोजे गए वे शिक्षा के विकल्प न होकर साक्षरता के अभियान ही बन कर रह गए। साक्षरता को शिक्षा में नहीं बदला जा सका। यह सच है कि स्कूल एक संस्था है, स्कूल की अनेक कमियाँ और बुराईयाँ शिक्षाविदों, मनोवैज्ञानिकों, समाजकर्मियों आदि ने गिनाई भी हैं, स्कूल मगर इवान इलिच ने स्कूल को डी-स्कूल करने की बात कही तो वह पहले पहल तो स्कूल को विचार की जड़ता से मुक्त करने की बात थी, मगर अलिच ने जो विकल्प दिया वह कम्प्यूटर पेटवर्क और लर्निंग वेब्स का ही तो था। यह विकल्प प्राथमिक शिक्षा और वह भी भारत या अफ्रो-एशियन गरीब देशों के अर्थशास्त्र को देखते हुए कैसे संभव हो पाता? पाठलों फेरे ने स्कूल का विकल्प उत्पीड़ितों की खुली शिक्षा में खोजा तो अवश्य मगर स्कूलमुक्त शिक्षा का कोई स्वतंत्र मॉडल वे भी नहीं सुझा सके। इसलिए उनका अभियान जन के साथ साक्षरता और घोषणा की, पॉल गुडमैन ने 'कम्पलसरी मिस-एज्युकेशन' कहा, स्कूल के जरिए, विल्विया एशटन वार्नर ने आदिवासी बच्चों के साथ संगीत के प्रयोग स्कूल के माध्यम से ही किए और जहाँ फ्रोबेल, माण्टेसरी का प्रश्न है उन्होंने अपना प्रयोग के.जी., नर्सरी, माण्टेसरी प्रणाली तक ही सीमित रखा, मगर स्कूल से मुक्त प्रयोग नहीं किए गए, जिसका परिणाम यह हुआ कि आज तक भी "प्ले-स्कूल", 'नर्सरी-स्कूल', 'बाल-मंदिर' जैसे शब्द स्कूल के नाम पर प्रचलित हैं। ए.एस.नील ने स्कूल में ही स्कूल का लोकतंत्र आज़माया और गिजुभाई ने भी दक्षिणामूर्ति भावनगर में स्कूल में ही अपना पूरा नवाचार किया। क्या ये सब उदाहरण यह सिद्ध नहीं करते कि स्कूल-मुक्त शिक्षा का कोई ठोस विकल्प गत दो सौ वर्षों में न पश्चिम में पैदा हो सका, न सारी दुनिया के अन्य देशों में?

भारत में एकलव्य, दिगांतर, केरलशास्त्र परिषद् या अन्य ऐसी संस्थाओं ने जो भी प्रयोग या नवाचार किए, वे सब स्कूल के जरिए ही किए गए। इसलिए स्कूल का कितना भी विरोध किया जाए, उसका सही विकल्प तो नहीं खोजा जा सका। इतना अवश्य है कि विज्ञान, समाज विज्ञान, भाषा गणित सभी विषयों के नवाचार स्कूल के माध्यम से किए गए और स्कूल को भयमुक्त, ऊबमुक्त और असमंजस-मुक्त कर खुशी के साथ बच्चों को आज़ादी दी गई और गुणवत्ता बढ़ाने के लिए शिक्षक को सम्मान और प्रोत्साहन दिया जाने लगा। शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थाओं को जड़ पद्धतियों से मुक्त कर स्वतंत्र चिन्तन और नए-नए तरीके अपनाने को प्रोत्साहित किया गया, जिससे कुछ हद तक स्कूल के नाम पर 'क्या' और 'क्यों' जैसे जो प्रश्न उठे उन प्रश्नों का जवाब देकर क्या स्कूलमुक्त शिक्षा का औचित्य भी साबित किया जा सका?

अब प्रश्न यह है कि आखिर स्कूल को जॉन होल्ट ने भय, भ्रांति और ऊब की जगह क्यों माना? 'होम स्कूलिंग' की बात क्यों कहीं? स्कूल में बच्चों के लिए 'ग्राइंग एब्सर्ड' जैसे शब्द क्यों खोजे गए? क्या वास्तव में बच्चे स्कूल के द्वारा एब्सर्ड या बेवकूफ बना दिए जाते हैं? स्कूल में भय का एक कारण तो यह है कि जिस चर्च में बच्चों की शिक्षा शुरू की गई, कान्चेण्ट बनाए गए, वहाँ बच्चों को पाप की उत्पत्ति भी माना गया और वहाँ बच्चों को सजा देने का भी प्रावधान था। यह दण्ड प्रक्रिया चर्च में थी और जब चर्च से स्कूल पृथक हुआ, तो वहाँ भी आ गई और स्कूल का एक रूप दंडित करने की जगह या सुधार-गृह भी बना दिया गया। इसका नतीजा यह हुआ कि बच्चे शिक्षकीय हिंसा और दण्ड से इस कदर शिकार हुए कि कई बच्चों की दण्ड से मौत हो गई और कई ने

आत्महत्या तक कर ली। अब स्कूली-दण्ड एक प्रकार का अपराध अवश्य है, मगर शिक्षक के हाथों के थप्पड़ और बेंत अभी भी कई स्कूलों में कायम है। आज भी कहीं खड़ा करने, कहीं मुर्गा बनाने, घसिट कर चलने का (क्रॉलिंग) आदि की सजा दी जाती है। जिस पर न व्यवस्था का नियंत्रण है, न समाज का। संभवतया स्कूल के इस दण्ड ग्रस्त के कारण ही स्कूल का एक संस्था के रूप में विरोध भी हुआ और स्कूल भय का स्थान बच्चों की नज़रों में हो गया।

स्कूल क्यों, इस प्रश्न का सीधा उत्तर यह है कि स्कूल से बेहतर शिक्षा का विकल्प अभी मिला नहीं। स्कूल शिक्षा देने की जगह का प्रतीक बन गया है। स्कूल और शिक्षक मिलकर शिक्षा का जो रूप और रूपक रचते हैं, उससे समाज को लगता है कि शिक्षा का एकमात्र स्थान स्कूल ही है। रूप और रूपक रचते हैं, उससे समाज को लगता है कि शिक्षा का एकमात्र स्थान स्कूल ही है। अब स्कूल-रहित समाज की कल्पना ही नहीं की जा सकती। जिन देशों ने स्कूल को एक संस्था के रूप में अपनाया और बाद में स्कूल को अनावश्यक बताया, वे भी स्कूल भंग नहीं कर सके। यहाँ तक कि तमाम नवाचार और प्रयोग भी स्कूल को लेकर या स्कूल में ही किए गए। स्कूल एक व्यवस्था बनकर समाज में खड़ा हो गया। जहाँ भवन, शिक्षक, बच्चे, पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकें परीक्षा या मूल्यांकन, कक्षावार शिक्षा के स्तर का बंटवारा दिया गया वह जगह स्कूल कहलाने लगी। धीरे-धीरे स्कूल व्यवस्था एक प्रकार के अनुशासन में बदलने लगी और वहाँ भी गैर-सरकारी (कुछ हद तक सरकारी) स्तर पर घंटी, हाजिरी, ड्रेस (यूनीफार्म) प्राथमिक के बाद या कहीं कहीं प्राथमिक स्तर पर भी, पीरियड-वाइज कक्षाएँ, विषयवार अध्यापक (बड़ी कक्षाओं के लिए) उसी प्रकार तय हो गए जैसे कि फौज में सैनिक होते हैं। स्कूल एक प्रकार की सामाजिक शैक्षिक छावनी बन गया। दण्ड और पुरस्कार बन गए, प्रतियोगिताएँ पैदा कर दी गईं, खेल-कूद तय कर दिए गए और इन सबका परिणाम यह हुआ कि जहाँ कड़ा अनुशासन, कठोर नियम, कठिन-प्रतियोगिता, खूब होमवर्क आदि हो, वह सबसे अच्छा स्कूल मान लिया गया। तनावों और अभावों की जगह अगर सरकारी प्राथमिक स्कूल बने, तो प्रायवेट स्कूल एक प्रकार के संभ्रातों के फैशन गृह बन गए। शिक्षा और स्कूल को खुशी की आज़ादी के बजाए, नियमों की सांकल से बाँध दिया गया।

स्कूल को लेकर यदि 'जॉयफुल लर्निंग, फन-स्कूल, आनंददायी शिक्षण, खेल-खेल में शिक्षा, करके सीखो जैसे अनेक-नवाचार या अभियान चलाए गए, तो स्पष्ट है कि स्कूल की छवि एक ऐसी छवि थी, जहाँ आनंद के बजाए आतंक, आज़ादी के बजाए कैद, प्रेम के बजाए डर महसूस किया गया होगा। स्कूल यदि ऐसा माना गया तो क्या इसे ठीक नहीं किया जा सकता? आखिर स्कूल समाज में ही है और अभी तक हमारे देश में स्कूल-समाज बना ही नहीं। समाज स्कूल को लेकर उदासीन ही रहा। समाज की उदासीनता ने शिक्षक, व्यवस्था, विभाग, सबको उदासीन बनाया, जिसका परिणाम यह हुआ कि स्कूल बच्चों की हँसी-खुशी, खेल की जगह कम और डर की जगह अधिक बन गई। फिर भी इतना तो मानना होगा कि 'स्कूल क्या' अर्थात् पढ़ने-लिखने की एकमात्र जगह और 'स्कूल क्यों', अर्थात् आज की समाज की जरूरत मान लिया गया। अब स्कूल समाज की स्वीति है, जरूरत है और समाज अगर शिक्षा-संवेदी बन जाए तो स्कूल अपनी उदास और उदासीन छवि से मुक्त होकर प्यार और खुशी के साथ शिक्षा की सुंदर छवि ग्रहण कर सकेगा।

खण्ड 2

19/8, सहायद्रि परिसर

भोपाल

## SHIKSHA

There is no English word equivalent to the Hindi word 'Shiksha'. The word education has a limited meaning. The word Shiksha connotes much more wider meaning. The object of the ideal system of shiksha should not be merely the advancement of theoretical knowledge but also the advancement of life, development of the highest powers and capacities and the unfoldment of the noblest potentialities of the student. He must be enabled at the same time to apply intelligently to his own life all the ideas that he has learnt and gathered and thus promote his growth physically, intellectually, culturally, morally and spiritually.

These days we consider a man as educated or if only can pass some examinations and is holding some, university degrees. Is it Shiksha? Getting by heart the thoughts of others in a foreign language and stuffing one's brain with them and taking some university degrees one considers oneself educated. Fie upon such education or Shiksha. What good will it do to one or the country at large? The education which does not help the common mass of people to equip themselves for the struggle for life, which does not bring out the strength of character, a spirit of humility, a spirit of philanthropy and courage of a lion, is it worth the name? Real Shiksha is that which enables one to stand on one's legs. The education that we are receiving now in schools and colleges is only making us a race of clerks. We are working like machines merely.

Our effort is to provide a glimpse of the real import of education, the educational methodology used in ancient India for developing a young Brahmachāri to tackle the dimensions of life which is yet to unfold before him and a critical analysis of the current educational environment in India. Our schools and colleges are sadly churning out young men and women in large numbers, year after year, who have lot of important but undigested information and are totally unaware of the real purpose of life. This obviously leads them to frustration and all the unhappy situations prevailing all around us. Our students should know what is real education or Shiksha. Mere cramming of books or acquiring theoretical knowledge should not be our aim. We must have all round development.

In modern education, our character has disappeared. Our English education has destroyed everything and left nothing in its place. Our boys have lost their politeness and humility. To talk nicely has become degrading. To be reverential to one's elders is degrading. Irreverence has become the sign of liberty. Violence has become so rampant that class fellows go to the extent of murdering another class fellow. Students can have the courage of beating their teachers. The character of our young ones on whom our future depends has degraded so much by the present system of education.

Shiksha should be all round development of the students. There are certain conditions necessary in the taught and also in the teacher. The conditions necessary for the taught are purity, a real thirst after knowledge and perseverance. The true teacher is one who can throw his whole force into the tendency of the taught. Without real sympathy we can never teach well.

During the period of studentship the foundation of life is to be laid properly. If it fails, later life is also bound to be a failure. That is the reason why great stress is laid on the life of Brahmacyarya. It was so in ancient times and it should be so in the present time also.

Knowledge is inherent in man, no knowledge comes from outside; it is all inside. What we say a man knows should in strict psychological language be what he discovers or unveils. What a man learns is really what he discovers by taking the cover off his own soul which is a mine of infinite knowledge. All knowledge secular or spiritual is in the human mind. The teacher suggests and helps the taught in lifting the veil. Thus the external teacher offers only the suggestion which uncover the veil of knowledge within the taught. Therefore no young one should feel the despair that he is not capable of making all round development in his life. Everybody is potentially divine. One can raise oneself as high as one ardently desires. Only one's strong will, determination and perseverance is necessary.

We are all aware of the inadequacy of the present-day system of education. Educationalists are engaged for decades in devising better methods of imparting knowledge and improving the morale of the student community. Despite their best efforts, we are unfortunately left in the same deplorable condition as we were before and much worse, as is generally felt, there is a growing degeneration.

It is universally recognized that we had, in ancient India, a unique system of education, which attracted students from all over the then known world. But unable to appreciate the value of Indian culture, the foreign rulers tried to replace it by their own. The architects of this glorious culture of this great land were saints and seers. It is to them that we have to turn for light and guidance for reorientating the present system of education in India. The best system will be a harmonious blending of the culture of this land with the scientific methods of the west.

In an ideal system of education the physical body is to be sustained by proper material food, the mind to be developed through the assimilation of the right type of ideas and the soul to be nourished by earnest prayer and meditation.

Courtesy:  
Kalyan Kalptaru



## प्रखर पत्रकार अमर शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी

मुंगावली (म.प्र.) से विशेष संबंध

— राजेन्द्र नाथ दुबे 'राजा'

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के विराट में स्व. गणेश शंकर विद्यार्थी ऐसे ही अभूतपूर्व व्यक्तित्व के धनी थे, जिन्हें वर्तमान पीढ़ी के लोग कम जानते हैं। उनके बलिदान पर महात्मा गाँधी ने लिखा था 'मुझे उनसे ईष्ठा होने लगती है, मैं चाहता हूँ कि मुझे भी मातृभूमि पर बलिदान होने का अवसर, गणेश शंकर की तरह ही मिले।' बलिदान के समय स्व. विद्यार्थीजी उत्तरप्रदेश कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष थे और यह प्रभार उन्हें पंडित जवाहरलाल नेहरू से मिला था, इस समय नेहरूजी अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष हो चुके थे।

विद्यार्थीजी के पिता बाबू जयनारायणजी का अधिकांश सेवाकाल मुंगावली, मध्यप्रदेश के एंग्लो वर्नाक्यूलर स्कूल में हिन्दी अध्यापक के रूप में व्यतीत हुआ जो ग्वालियर रियासत की एक शासकीय शाला थी। कुछ समय के लिये उनके पिता भेलसा में भी रहे जो अब विदिशा कहलाता है। यह मुंगावली का सौभाग्य है कि विद्यार्थीजी की शिक्षा मुंगावली में ही प्रारंभ हुई और मुंगावली में ही गणेश शंकर को पल्लवित, पुष्पित एवं संस्कारित होने का अवसर मिला। उनके पिता बाबू जय नारायणजी, पुरी के स्वामी मंगलानंद जी के शिष्य थे। जिनकी प्रेरणा से जय नारायणजी ने दस उपनिषदों का हिन्दी और उर्दू में अनुवाद किया था। यही ग्रंथ कालान्तर में गणेश शंकरजी ने 'उपनिषद् सुधा' के नाम से प्रकाशित किया।

विद्यार्थीजी (एक महान आत्मा) का जन्म 26 अक्टूबर, 1890 को उनके नाना के घर इलाहाबाद, उ.प्र. के अतरसुइया मोहल्ला में हुआ था। इनकी माता श्रीमती गौमती देवी इलाहाबाद के प्रतिष्ठित कायस्थ परिवार से थी।

गणेश शंकर विद्यार्थी की प्रारंभिक शिक्षा—दीक्षा चूंकि मुंगावली में ही हुई थी, इसलिए यहाँ उन्हें अपने जीवन को संवारने का अवसर प्राप्त हुआ। मुंगावली और भेलसा में उन्होंने कलकत्ता से प्रसारित समाचार पत्र बंगवासी और भरत मित्र पढ़े। इसी का परिणाम था कि आगे चलकर उनकी रुचि पत्रकारिता में जाग्रत हुई। सन् 1904 में उन्होंने मिडिल की परीक्षा उत्तीर्ण की। मुंगावली में रहकर ही उन्होंने प्राइवेट से इन्ट्रेस परीक्षा उत्तीर्ण की तथा यहाँ वे उर्दू, फारसी एवं अंग्रेजी का अध्ययन विशेष रूप से करते रहे। यहाँ के अध्यापकों से उन्होंने बहुत कुछ सीखा और समझा। उनके पिता लंबे अरसे तक मुंगावली में रहे इसलिए विद्यार्थीजी का, जीवन के अंतिम दिन तक मुंगावली से घनिष्ठ संपर्क बना रहा। रियासती राज्य व्यवस्था के बारे में भी बहुत कुछ समझने का अवसर विद्यार्थी जी को मुंगावली में ही मिला।

कक्षा 10वीं की शिक्षा पूर्ण करने के बाद गणेश शंकर विद्यार्थी ने कायस्थ पाठशाला इलाहाबाद में 11वीं में प्रवेश लिया। इलाहाबाद, उन दिनों राजनैतिक गतिविधियों का केन्द्र था। लाला लाजपत राय, बालगंगाधर तिलक और विपिनचन्द्र पाल की महान स्वतंत्रता के यज्ञ में आहुति देने की प्रेरणा मिली। इलाहाबाद में ही उन दिनों साहित्य और पत्रकारिता का भी तेजी से विकास हो रहा था, अतः गणेश शंकर को यहाँ से प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं से जुड़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इनमें प्रमुख थी— हिन्दी प्रदीप, स्वराज्य, कर्मयोगी और अभ्युदय। स्वराज कार्यालय के संपर्क में होने के कारण वहीं से उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में कदम रखा। 1909 में वे श्री सुन्दरलालजी के संपर्क में आये और उसके बाद से ही उन्होंने सुन्दरलालजी द्वारा संपादित लेख लिखने शुरू कर दिये थे।

1909 में ही विद्यार्थीजी पंडित पृथ्वीनाथ हाई स्कूल में बीस रुपये मासिक वेतन पर शिक्षक के पद पर नियुक्त हुए। यहाँ उन्होंने हिन्दी मित्रसंघ की सदस्यता भी ग्रहण की। 19 वर्ष की आयु में उनका विवाह मुंशी विश्वेश्वर दयालजी की पोती प्रकाश देवी के साथ हुआ जो हरवंश ग्राम तहसील के निवासी थे।

सरस्वती के सुविख्यात संपादक तथा हिन्दी के पुरोधा आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के संपर्क में आना,

उनके लिए वरदान सिद्ध हुआ। आचार्यजी ने उन्हें 2 अक्टूबर, 1911 को 25 रुपये मासिक वेतन पर सरस्वती में, अपना सहायक नियुक्त किया। 23 दिसंबर, 1912 को वह अभ्युदय के सह संपादक नियुक्त हुये। संपादक के गुरुत्तर दायित्व को निभाने के साथ-साथ उन्होंने विकटर ह्यागों, शैक्सपियर, रूसों एवं मोपांसा की महान तियों का हिन्दी में अनुवाद करके हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि की। उनकी पहली प्रकाशित पुस्तक 'शेख चिल्लियों की कहानियाँ' थी।

1913 में उन्होंने कानपुर में प्रताप का प्रकाश प्रारंभ किया, कुछ ही दिनों में यह पत्र भारतीय पत्रकारिता जगत में छा गया। भारतीय अस्मिता को जीवित रखने वाले महापुरुषों पर उच्च कोटि को पठनीय सामग्री देकर इस पत्र के माध्यम से गणेश शंकर ने सामयिक व राजनैतिक जागरण का महान कार्य संपन्न किया। इसके कारण उन्हें कई बार अंग्रेजी सरकार का कोप भाजन बनना पड़ा। उनके उग्र एवं प्रहारात्मक लेखों के कारण अंग्रेज सरकार ने कई बार उन पर मुकदमे चलाये, कई बार न्याय पालिका की अवमानना के मुकदमे भी चलाये गये, पर विद्यार्थी कभी निराश नहीं हुए।

प्रबल राष्ट्र-भक्ति, उत्कृष्ट देशप्रेम तथा प्रखर पत्रकारिता के कारण 1926 से 1929 तक वे उत्तरप्रदेश की विधानसभा में सदस्य चुने गये। 1929 में उन्होंने असहयोग आंदोलन का नेतृत्व संभाला। इसी समय जब पंडित जवाहर लाल नेहरू अखिल भारतीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये, तब गणेश शंकर विद्यार्थी को सर्व सम्मति से उत्तर प्रांत कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया।

10 मार्च, 1931 को उन्हें सरदार भगत सिंह को फांसी दिये जाने के विरुद्ध होने वाले आंदोलन में भाग लेने के कारण गिरफ्तार कर लिया गया। इसके बाद तो प्रताप कार्यालय क्रांतिकारियों का एक प्रमुख गढ़ बन गया था। 27 फरवरी, 1931 को चन्द्रशेखर आजाद अंग्रेजी सरकार द्वारा इलाहाबाद में गोलियों से भून दिये गये थे। ऐसा भी विवरण मिलता है कि चन्द्रशेखर ने ही स्वयं अपनी कनपटी पर गोली मारी थी। 23 मार्च, 1931 को भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को फांसी दे दी गई। इन सबका सबसे गंभीर विरोध "प्रताप" के द्वारा ही हुआ। इन क्रांतिकारियों के बलिदान ने पूरे देश में तहलका मचा दिया। कानपुर में 24 मार्च, 1931 को पूरा बाजार बंद हो गया तथा शोक सभा आयोजित की गई। किन्तु अंग्रेजों ने "फूट डालो और शासन करो" की नीति का पूरा लाभ लेते हुए हिन्दू-मुसलमानों के दंगे भड़का दिये।

25 मार्च को कानपुर के मेसटन रोड में दंगों ने उग्र रूप धारण कर लिया। श्री गणेश विद्यार्थी को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की मीटिंग में न जाकर कानपुर में ही रुकना पड़ा था। वह जगह-जगह जाकर, हिन्दू और मुसलमानों को समझाते रहे, किन्तु उग्र भीड़ ने तो उनकी भी नहीं सुनी। हिन्दू-मुस्लिम एकता नारा देते हुए यह महापुरुष किसी आतताई के हाथों बलिदान हो गया। उनका शव दो दिनों के बाद ही मिल पाया। हिंसा की उन्मादित भीड़ ने उनके शरीर को भी पूरी तरह विकृत कर दिया था। 31 मार्च, 1931 को मात्र 41 वर्ष आयु में इस महामानव को चिता की लपटों ने स्वर्ण सिंहासन पर बिठाकर स्वाधीन आंदोलन के आकाश में चिरस्थायी नक्षत्र के रूप में सदैव के लिए स्थापित कर दिया। उनके बलिदान पर करांची के अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सम्मेलन में शोक प्रस्ताव पारित किया गया। देश के सभी नेताओं ने अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए उनको अपनी श्रद्धांजलि दी। पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा कि मैंने आज अपना एक घनिष्ठतम मित्र खो दिया है, भारत ने एक महान कांग्रेसी नेता खो दिया है। गणेश शंकर विद्यार्थी ने एक ऐसी मौत पाई है जो एक सच्चे और महान भारतीय को ही नसीब सकती है। धन्य है वह माँ जिसने बलिदानी सपूत को जन्म देकर भारत को गौरवान्वित किया।

उत्तर प्रांत असेम्बली ने भी एक स्वर से उनके प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रसिद्ध अंग्रेजी पत्र ट्रिब्यून ने लिखा श्री विद्यार्थी की जितनी तारीफ की जाये वह कम होगी। उनके निःस्वार्थ त्याग को मानव इतिहास में श्रेष्ठ बलिदान के रूप में याद किया जायेगा।

यह सत्य है कि कभी-कभी व्यक्ति का मूल्यांकन उसके समय में नहीं उसके बाद उसके कार्यों से होता

## जय जगत

है। विद्यार्थी के कार्य और लेखन चिरस्थायी है। भारत की नौजवान पीढ़ी के लिए उनका जीवन एक महान आदर्श का जीवन बना। विद्यार्थी जी ने एक पत्रकार, साहित्यकार, शिक्षक एवं प्रखर राष्ट्रसेवी के रूप में जो छवि बनाई है, वह आज की पीढ़ी के लिए अनुकरणीय बने तभी हम इस देश की आजादी को सुरक्षित रख पायेंगे और देश की एकता कायम रह पायेगी। गुना जिले का मुंगावली कस्बा भी धन्य हो गया। यह जीवन के अंतिम दिन की मुंगावली की यादे संजोये रहे, काश, मुंगावली के लोग भी उन्हें उसी तरह याद रख पायें और उनके बलिदान से प्रेरणा प्राप्त कर जन-जन में राष्ट्र प्रेम एवं रक्षा की भावना विकसित करें। यही श्री विद्यार्थी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

आजादी के बाद जिस तरह की पत्रकारिता की अपेक्षा गणेश शंकर जी विद्यार्थी ने की थी, उसमें नई तकनीकी आ जाने के कारण विकास तो बहुत हुआ है किन्तु समाचार पत्रों (विशेष रूप से दैनिक) पर पूंजीपतियों को अधिक महत्व मिल रहा है। संपत्ति और सत्ता अर्जित करने के लिए समाचार पत्र निकाले जा रहे हैं।

ई 8/80 भरत नगर, भोपाल-16

### एक अजीब संयोग.....

हम लोग मुंगावली, जिला-अशोकनगर के रहने वाले हैं कुछ दिन पहले हमारा जिला गुना था। यह संयोग ही है कि मेरे चाचा ओंकारनाथ दुबे, मेरे सबसे बड़े भाई महेन्द्रनाथ दुबे एवं दूसरे छोटे भाई सुरेन्द्रनाथ दुबे जो मुझसे तो बहुत बड़े हैं मुंगावली के एवीएम स्कूल से 8वीं पास करने के बाद बाहर ही पढ़े और इन तीनों को भेलसा का विद्यार्थी रहने का अवसर मिला। संयोग की बात इसलिए कह रहा हूँ कि श्री गणेशशंकर विद्यार्थी यद्यपि मुंगावली में पैदा तो नहीं हुए थे किंतु इनके पिताजी मुंगावली में ही अध्यापक थे इसलिए विद्यार्थी जी की प्रारंभिक शिक्षा (कक्षा एक से आठवीं तक) भी एवीएम स्कूल, मुंगावली एवं भेलसा में ही हुई। विद्यार्थी जी के पिताजी कुछ दिन के लिए भेलसा में भी पदस्थ रहे। विद्यार्थी जी ने तो हाई स्कूल की परीक्षा भी एवं कुछ अन्य परीक्षाएँ प्रायवेट छात्र के रूप में भेलसा में रहकर ही पूरी कीं। इसे हम एक 'अजीब संयोग' ही तो कहेंगे।

— राजेन्द्र नाथ दुबे 'राजा'



श्री गणेशशंकर विद्यार्थी की प्रारंभिक शिक्षा (कक्षा एक से आठवीं तक) की इसी एवीएम स्कूल, मुंगावली में हुई थी। श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे व उनके परिवार वालों की शिक्षा भी इसी स्कूल में हुई है।

## नकाबपोश मीडिया

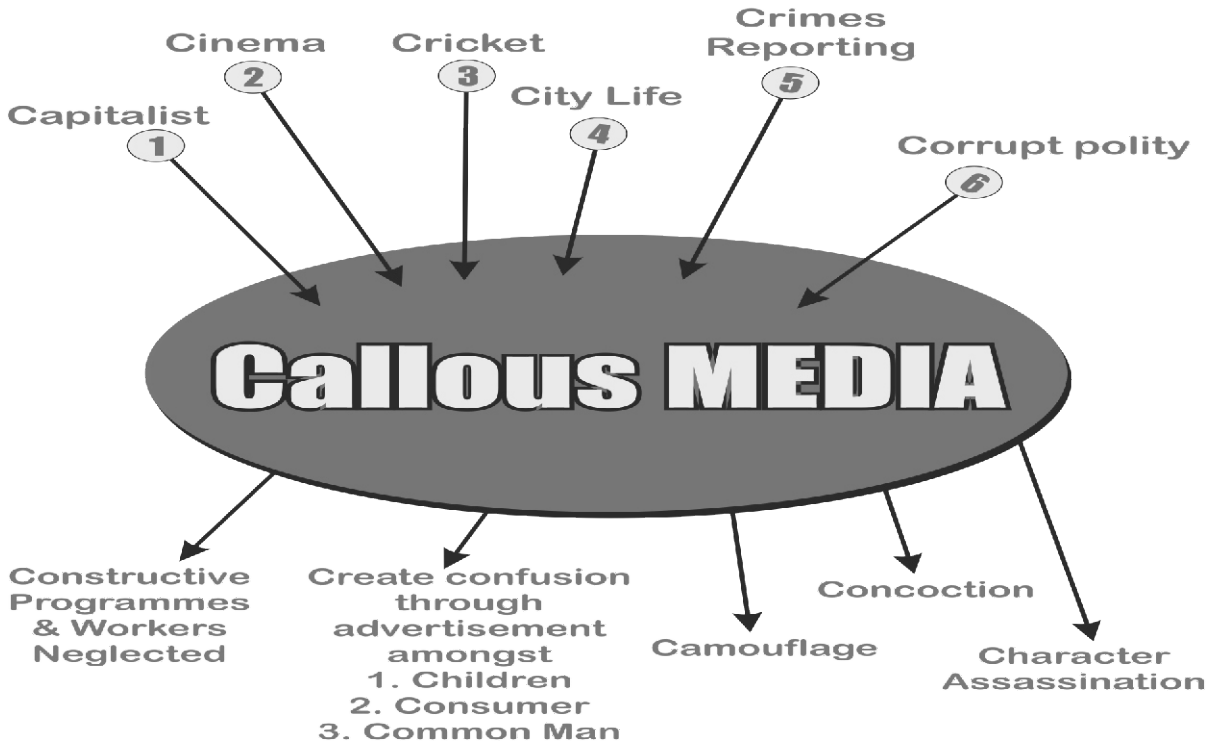
भूमण्डलीकरण तथा ग्लैमर के दौर में जहाँ सब कुछ बहुत तेजी से बदलता जा रहा है, वहीं हमारी जिंदगी तथा जीवनशैली में भी बदलाव आता जा रहा है। इन सभी को बदलाव की प्रक्रिया में लाने वाला हमारा मीडिया बहुत हद तक जिम्मेदार है। मीडिया, जो कि हमें संसार भर में होने वाली तमाम गतिविधियों से अवगत कराता है और जानकारी देता है, आज सिस्टम का वो हिस्सा बन चुका है जो सिर्फ अपनी पब्लिसिटी तथा विज्ञापनों की दलाली करता नजर आ रहा है। मीडिया उसको छोड़ चुका है, जो कि समस्या है चाहे वो नौकरी, बढ़ती बेरोजगारी, गरीबी, भुखमरी हो। वह तो पूंजीपति ताकतों को बढ़ावा दे रहा है।

अगर वास्तविकता देखी जाये तो मीडिया ट्रिपल 'सी' पर आधारित है, **Cricket, Cinema, Crime** इससे ज्यादा कुछ और नहीं, वर्तमान समय में युवाओं की समस्याओं को छोड़कर, उसके लिये यह ज्यादा जरूरी है, कि अमिताभ बच्चन की सुरक्षा में कमी क्यों की गयी। बढ़ती बेरोजगारी को छोड़, उसके लिये यह ज्यादा जरूरी है कि सौरभ गांगुली, सचिन अगले मैच में खेलेंगे या नहीं। गरीबी, भुखमरी जैसी समस्याओं को छोड़ वो ये दिखाना चाहता है कि आज सनसनी, वारदात, या फिर जुर्म में क्या हुआ, किसने किसका खून किया, कहाँ बम फोड़ा गया, निजीकरण तथा पूंजीवादी ताकतें जब अपने पैर पसार रही हैं तो वो विज्ञापन की दलाली में बढ़ोत्तरी कर रहा है, चाहे वो **Cold drink, Pizza** या फिर **MNCS** के किसी नये **Product** का हो, फिर भी अधिकांश लोग नहीं समझ पा रहे हैं कि उन्हें क्या परोसा जा रहा है। कुछ **News channel** तो ऐसे हैं कि जिनमें रात 10.00 बजे के बाद तो किसी भूत, जिन्न या फिर चुड़ैल की कहानी होती है। एक तरफ हम वैज्ञानीकरण की बात कर रहे हैं तो दूसरी तरफ अंधविश्वास को बढ़ावा। इनकी यह चेष्टा सभी को साफ होना चाहिये जबकि आज मेहनतकश जनता इस पूरी व्यवस्था तथा भ्रष्ट प्रशासन से ग्रस्त हैं और व्यवस्था परिवर्तन की बात करते हैं तो क्या इन लोगों को किसानों, दस्तकारों, श्रमिकों तथा युवाओं की समस्याएँ नहीं दिखती। भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता, निजीकरण जैसी समस्याएँ नहीं दिखती, अगर नहीं दिखती तो क्या अंधा मीडिया हमें कोई रास्ता दिखा सकता है? जवाब साफ है नहीं।—विलियम पाल,

आई.सी.के.एम., कानपुर

A GAME OF 'C' PREPARED BY A SCHOOL TEACHER

### Captured/ Controlled/ Commanded by



× स्त24 द्व्य6वद्य द्वद्व=सद्य द्यद्य





## ‘अपने विद्यालय को आनंद घर बनाएं’

शरद चन्द्र बेहार

आनंदघर कैसे बनेगा विद्यालय? श्री बेहार के इस प्रेरक संदेश से उत्प्रेरित होकर शिक्षक संदर्भ समूह, शिक्षक साथियों से आग्रह करता है कि आप अपने बच्चों की सुविधा की दृष्टि से अपने शैक्षणिक कार्यक्रम इस तरह आयोजित करें ताकि बच्चे मजेदार ढंग से सीखते हुए निरंतर आगे बढ़ें इस कार्य में आपको भी मजा आयेगा -

- बच्चों से मित्रता करने पर।
- बच्चों को भय रहित वातावरण देने पर।
- बच्चों के बीच बच्चा बनकर कार्य करने पर।
- बच्चों के लिए उपयोगी शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराने पर।
- बच्चों के बीच उत्साहपूर्वक कार्य करने पर।

### शिक्षा की नीतियों का महाभारत

“भारत में ब्रिटिश राजनीतिक सत्ता के अंत हो जाने के बाद भी हमारी शिक्षा पद्धति की बुनियादी रूपरेखा लगभग वही क्यों है? ब्रिटिश शासन के दौरान गठन किए गये शिक्षा के आयोगों और समितियों को नजरअंदाज भी कर दें, तो भी स्वतंत्र भारत में विश्वविद्यालय आयोग (डा. राधाकृष्णन आयोग), माध्यमिक शिक्षा आयोग (मुदलियार आयोग) और शिक्षा आयोग (कोमारी आयोग) ने तथा अन्य असंख्य समितियों ने इस शिक्षा पद्धति में आमूल-चूल परिवर्तन करने की जोरदार वकालत की है फिर भी यह क्यों नहीं हो पाता? एक सीधा-सरल उत्तर हो सकता है कि अभी भी हम औपनिवेशिक मानसिकता से ग्रसित हैं और परिवर्तन की महत्वाकांक्षा व्यक्त तो करते हैं पर उस मानसिकता के चलते उस सोच के बांधे के बाहर जाकर सोच समझ ही नहीं पाते।”

### भागवत कथा

महाभारत किसने लिखी? श्री गणेश ने या महर्षि व्यास ने? महाभारत लिखने के लिए महर्षि व्यास को आज की भाषा में स्टेनो की तलाश थी। तलाश अंततः श्री गणेश में आकर समाप्त हुई। श्री गणेश लिखने को तैयार तो हो गए परंतु उन्होंने शर्त रखी की महर्षि को निरंतर धारा प्रवाह लिखाना है, यदि वो सोचने को रुक गए तो गणेश जी लिखना बन्द कर देंगे, आगे लिखने का काम बिल्कुल नहीं करेंगे। महर्षि ने शर्त तो मान ली परंतु अपनी ओर से शर्त रखी कि गणेश बिना समझे कुछ नहीं लिखेंगे। इसलिए महर्षि को सोचने के लिए जब भी रुकने की जरूरत पड़ती, वे एक अत्यंत दुरूह श्लोक लिखा देते थे जिसे समझने में श्री गणेश को समय लगता। उस दौरान महर्षि आगे सोचकर लिखाने को तैयार हो जाते। विश्व का सबसे लम्बा पौराणिक ग्रंथ इस तरह पूरा हुआ।

(स्कूल शिक्षा पत्रिका से श्री एस.सी.बेहार के लेख के अंश)

बिना समझे केवल ग्रन्थों पारायण करने वाले क्या इसे समझना चाहेंगे। -संपादक

## बापू

पूज्य महात्माजी संत थे, महापुरुष थे, मानव मात्र का हित चाहने वाले थे और विश्व की एक महान विभूति थे। वे धर्म और जाति के भेद से ऊपर उठे हुए थे और सत्य एवं अहिंसा के सच्चे पुजारी थे। वे मानवता के खरे प्रतीक थे। ईश्वर की प्रार्थना के लिये जाते समय उनकी निर्मम हत्या करके हत्यारे ने अपना तो लौकिक एवं परलौकिक महान अहित किया ही, हिंदू-जाति पर भी-जो धर्मतः एवं स्वभावतः अहिंसाप्रिय है - कलंक का अमिट टीका लगा दिया। हिंदू-जाति को इस पाप का फल अवश्य भोगना पड़ेगा। महात्मा जी के चले जाने से विश्व ने एक बड़ी निधि को खो दिया है, इसी से वह शोकाकुल हैं। पर वे जो संदेश छोड़ गये हैं, वह अमर है और उसका व्यवहार करके ही जगत उनके प्रति कृतज्ञ हो सकता है और जगत में जो भी अपने को उनका भक्त मानता हो, उसको यही करना चाहिये।

भगवान सबको सुबुद्धि दे और हम वही काम करें, जिससे उनकी आत्मा को यथार्थ शांति मिले।

— हनुमान प्रसाद पोद्दार

वर्तमान संपादक - कल्याण, गीताप्रेस, गोरखपुर  
(पोद्दारजी ने हिन्दू धर्म के लिए अतुलनीय एवं रचनात्मक कार्य किया है।)

## महाभागवत पूज्य बापूजी!

पूज्य बापू जी कहा करते थे कि मेरा हृदय चीरकर देखो तो तुम्हें उसमें राम-राम लिखा मिलेगा। बहुतेरों को यह बात समझने में बड़ी दिक्कत होती हो, पर जब हम उनको ता. 30.01.48 को 5.30 बजे गोली का शिकार होते हुए देखते हैं तो उनके मुंह से 'हे राम, हे राम' यह दो शब्द ही निकलते हैं।

मुझे बताया कि गोली लगने पर मुख की आकृति बिगड़ जानी चाहिये, परेशानी चेहरे पर आनी चाहिये, पर वैसा नहीं हुआ। उनका शरीर पहली गोली लगने के बाद भी स्थिर रहा। 'हे राम, हे राम' मुँह से निकला, दूसरी गोली के समय बेहोश हो गये थे। उनके चेहरे पर शांति थी। कहा जाता है कि उनके चेहरे से दया और क्षमा की भावना झलक रही थी और अंत समय में उन्होंने अपने घातक को भी प्रणाम किया था। कितना सुन्दर स्वरूप है इस महाभागवत का। ग्रन्थों में संतों के वर्णन पढ़ें। पर प्रत्यक्ष रूप से देखने का अवसर इसी महापुरुष के जीवन में हमें मिला। बोलिये महाभागवत की जय।

— बाबा राघवदास

(राघवदासजी की स्मृति में - बाबा राघवदास विश्वविद्यालय, गोरखपुर आज एक प्रतिष्ठित शिक्षा केंद्र है।)

साभार: गीता प्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित 'कल्याण' - 1948 के अंक से

## Why I decided to remain a Vegetarian

Surendra Nath Dubey

This incident happened in the year August 1955. I was studying in 2<sup>nd</sup> year (intermediate) at Hamadia College, Bhopal (present Minto Hall). I come from Hindu Brahmin family but I had mixed group of friends belonging to different caste and religion. Normally we use to refresh ourselves at our favourite place Canteen of the college like all others.

The favourite food item was Cake Pastry for most of the students. Pastry those days were made of eggs only. I was ignorant about its ingredients at that time. My friend Satyanarayan and Kanhiya were insisting that I should eat it. When I was

about to eat it and then Aziz Qureshi came from behind and snatched it from me and shouted do not eat this, it contains eggs and he shouted at both and told them, "Uska Dharam mat Brashta Karo". It was a rule to follow the group and I was feeling the peer pressure and was about to yield to it. I was wondering why Qureshi being a Muslim came and



stopped me. This moment had a lasting impression on me and I decided to be vegetarian

throughout my life. I kept my promise made to myself and I am proud to share with you all that I chose to be Vegetarian. Now a days many people say eating egg is Vegetarian. But I decided not to eat as I promised to my dear friend Aziz bhai to be vegetarian. I wanted to convey my sincere thanks to him through you all. I consider Aziz bhai as a true friend, as he respects the values of others. "Thank you my dear Aziz Qureshi for making me tough to decide to be a Vegetarian."

courtesy : Shiksha Jagat ke Samachar,  
Sep 1994



## विश्व विख्यात दार्शनिक आचार्य रजनीश

‘ओशो’ कहते हैं-

“आज शिक्षक विद्रोही नहीं है और मेरी दृष्टि में जो शिक्षक विद्रोही नहीं है, वह शिक्षक ही नहीं है। उसने शिक्षक होने का अधिकार खो दिया है।


भारत के शिक्षक अगर यह निश्चित कर लें कि पुरानी परिपाटी से हट कर नये रास्तों से, समाज को मुक्त करेंगे तभी भारत में नई आत्मा का जन्म हो सकेगा अन्यथा नहीं। शिक्षक जिस दिन समाज में क्रांतिकारी दृष्टिकोण अपना लेगा, उसी दिन समाज रूपांतरित होगा, नया समाज पैदा हो सकेगा, शिक्षक का क्रांतिकारी होना पूरे समाज को बदले जाने का प्रमुख कारण हो सकेगा। शिक्षक जब तक सड़ी गली समाज व्यवस्था का एजेंट बना रहेगा, तब तक समाज को एक अच्छी दिशा नहीं दे पायेगा।”

“शिक्षक ने अभी तक अपनी सामूहिक शक्ति को पहचाना नहीं है। हमारे पास अच्छे शिक्षक हैं लेकिन वे सोये हुए हैं। हमारे पास निष्ठावान व योग्य शिक्षकों की भी कमी नहीं है किंतु आज शिक्षक, समाज का एक उपकरण बनकर रह गये हैं। क्योंकि समाज के लोग जानते हैं शिक्षक अगर पूरी जिंदगी के बारे में सोचने लगेगा, तो शिक्षक के हाथ में इतनी बड़ी ताकत आ जायेगी कि वह सारे समाज को रूपांतरित कर देगा। शिक्षकों का पूरा समूह जो सबसे ज्यादा सबल व सबसे अधिक शक्तिशाली है, के पास नई पीढ़ी (भारत की आबादी का 50 प्रतिशत) का मस्तिष्क और आत्मा है। उसकी सबसे बड़ी ताकत ही यह है आने वाली पीढ़ी उसके हाथ में है, वही उसे दिशा दे सकता है। शिक्षक यदि जिंदगी को बदलने का सूत्र अपने हाथ में ले लें तो उनसे पूरे देश की दशा बदली जा सकती है। दुख तो इस बात का है कि आज शिक्षक व्यक्तिगत रूप और सामूहिक रूप से भी सारी दुखद परिस्थितियों को चुपचाप देख रहा है, सह रहा है जबकि शिक्षक की सामूहिक शक्ति ही आज देश को वर्तमान दुखद परिस्थितियों से उबारने का कार्य कर सकती है।”



The poster is a vibrant celebration of International Non-Violence Day. It features a large, central portrait of Mahatma Gandhi, a key figure in the Indian independence movement, known for his philosophy of non-violence. To the right, a smaller illustration depicts Gandhi in a traditional white dhoti and shawl, engaged in the traditional Indian practice of spinning yarn on a charkha, with a young child standing beside him, also participating. The background is a soft, hazy landscape with a small temple on a hill in the distance.

The text is presented in both Hindi and English. At the top, the title 'राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी' (Rashtrapita Mahatma Gandhi) is written in large, bold Hindi letters. Below it, the English text reads 'Many People - One Hope' and '2nd October - Birthday of Mahatma Gandhi Adopted by U.N.O. as International Non-violence Day'. The bottom section includes a globe, a collage of diverse children's faces, and the United Nations logo, symbolizing global unity and peace. The overall design is clean and inspiring, with a color palette dominated by the colors of the Indian flag (saffron, white, and green) and the colors of the UN flag (blue and white).




**को ममर्षण**

मौरी जी की मौसी, स्वयं जी बड़े आज,  
एकरी है व्यक्तित्व, हर कदम पर खर।  
नील ली सल्लेख, हर अंगुली है बोल,  
जग आठोसिहा बर बर, होकर मौसी-जोहर।  
आमन मौसी है बड़ी, बर-बर बर पाव,  
आम आरसे केकर, सल्लेख सली आजाव।  
विश्व की बली है डिग्री, मौसी-नील-बार,  
रोसिख बर बरिषा डिग्री, जो है नुसरत आर।  
मदारी है डिग्री, अरिषि अरिषि पुण,  
मौ अरिषिख बर डिग्री आर स्वयं है कण।

**- गुणसागर 'सत्यापी'**


3 अगस्त 2007  
अरिषि अरिषि अरिषि

**पं. गुणसागर 'सत्यापी'**



आमन शुक्ल एकादशी 1994 (वि.स.) चिरगांव (झांसी) उ.प्र. में जन्म। राजन्यासिता मौसी-वर-मौसी की वंश परंपरा में जन्मभूमी के साथ सहज प्राना। पारिवारिक पृष्ठ भूमि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के प्रभाव से ओत-प्रोत रही। पितामह स्व. भुरगी अजमेरी जी रिकेका वास्तविक नाम की प्रेम बिहारी जी, वे बापू के वर्षा आग्रस में कुछ दिन रहे बापू उनके प्रसादक रहे। आगत में 1929 के शिलम्बर मास में वे बापू के सारा रवे व उनको अपनी कितारें सुनाई व बापू को अपने घर गिरावन लेकर गये थे। ऐसे वातावरण में सत्यापी जी बड़े-पुसे (इनके पिता की मुलाबराय भी कवि ए गंधीवादी थे) इतलिये यह स्वभाविक था कि वे गांधी जी के शिक्षादर्शन से प्रभावित हो। उन्हें अग्रसर मिला गांधी शिक्षा दर्शन को व्यावहारिक चरतल पर साकार करने की दिशा में प्रवासरत कुण्डेश्वर (टीकमगढ़) मध्यप्रदेश की प्रख्यात शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में, जो आज "डाइट" नाम से जानी जाती है। यहाँ लगातार चार दशक कार्यरत रहकर आपने गांधी जी के शिक्षा दर्शन को व्यावहारिक पक्ष पर तत्कालीन शिक्षा शास्त्रियों के साहित्य में गहरे पट कर कार्य किया। गांधी जी की सत्यवादी शिक्षण पद्धति पर आज वे एक प्रवक्ता हैं नही अपितु व्यावहारिक अनुभव के घनी हैं। उनके पितामह की प्रशंसा में बापू द्वारा उनकी हस्तलिपि में लिखे विचार यहाँ अवलोकनीय हैं :-

**प्रथम संस्करण का किरीकन**



श्री कनक कितोर सार्वा (यात्रीय राजन्ना, नुसरत) पुनक का विशेष करके हुये



मौरी अजमेरी जी ने मुझको अपनी शिक्षा प्रसारी का आरंभ में सहित अनुभव कराया है, उनकी सत्यवादी से ओत-प्रोत-सत्यत्व भाषा के ज्ञान से मुझको बड़ा अर्थ हुआ।

आगत 19.9.29

हस्ताक्षर - मोहनदास गांधी

मौरी : श्री सत्यापी जी कुण्डेश्वर, डिग्री-टीकमगढ़ (म.प्र.) : साहित्य सागर में ख। :- मुद्रणस्थान पुणे



श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे मासिक पत्रिका स्कूल शिक्षा (द्विभाषी)  
के प्रकाशक-संपादक हैं जिसके अभी तक  
57 मासिक अंक प्रकाशित हो चुके हैं

RNI : MPBIL 2010/34735

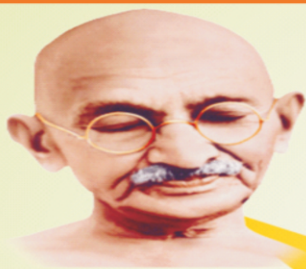
डाक पंजीयन/म.प्र./भोपाल/4-213/2011-13

# स्कूल शिक्षा

द्विभाषी मासिक पत्रिका

## SCHOOL SHIKSHA

BILINGUAL MONTHLY



Generations to come will  
scarce believe that such a  
one as this ever in flesh and  
blood walked upon this  
earth.

*Albert Einstein*

रात के डेढ़-दो बजे तक काम करने के बाद  
जब बिस्तर में लेटता हूँ, लेम्प गुल करता  
हूँ, तो अवसर बापू याद आ जाते हैं और  
महसूस होता है कि मैं कितना अकेला पड़  
गया हूँ। शब्द हमारा ऊँचा उठा, पर हममें से  
हर कोई नीचे गिरा। मैं राज बना सकता हूँ,  
पर दुःखान नहीं बना सकता। दुःखान बना  
सकते थे बापू और आज वे नहीं हैं।

- जवाहरलाल नेहरू

### SEVEN SOCIAL SINS

Quoted by Mahatma Gandhi  
in Young India  
in 1925

- ☞ Politics without Principles
- ☞ Wealth without Work
- ☞ Pleasure without Conscience
- ☞ Knowledge without Character
- ☞ Commerce without Morality
- ☞ Science Without Humanity
- ☞ Worship without Sacrifice.



MY

LIFE IS MY

MESSAGE

-M K GANDHI



**राष्ट्रीय युवा दिवस**  
12 जनवरी



**जय हिन्द**  
जन्म दिवस-23 जनवरी



**जन्म दिन**  
7 फरवरी



**जन्म दिन**  
31 जनवरी



**जन्म दिन**  
26 जनवरी

**विख्यात गांधीवादी**  
**श्री एस.एन. सुखदेव**  
राष्ट्रीय युवा योजना के प्रणेता और संवातक  
एक ऐसे लोक शिक्षक जिन्होंने लाखों बच्चों  
को अपने आदर्श जीवन और  
कर्मों से प्रभावित किया है

**भारतीय प्रशासनिक सेवा (सेवानिवृत्त)**  
पूर्व मुख्य सचिव म.प्र.  
**श्री शरद चंद्र बेहार**  
शिक्षा और शिक्षकों के सामाजिक  
के प्रभाव के  
एक ऐसे लोक शिक्षक जो रक्त औद्योगिक शिक्षक  
व सोही हुए हैं, उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में महानुभाव  
योगदान दिया

**(संस्कृत संस्कार के संवर्धित श्रद्धापूर्वक)**  
श्रमिक कल्याण, श्रमिक व्यापारियों एवं  
विमानानुसार नैज्जुअल बनाने में रचनात्मक  
योगदान  
**श्री महेन्द्र नाथ दुबे**  
'कूल शिक्षा के संरक्षक'

**सुभाष चंद्र बोस - जय हिन्द**



25 मार्च 1942 को रैडियो आजाद हिंद की स्थापना



हम शिक्षकों पर कोई अहसान नहीं कर रहे हैं  
अपित् अपने गुरु ऋण का भार ही कुछ हल्का कर रहे हैं।  
23 जुलाई 1983 को राजीव गांधी की उपस्थिति में दिया गया चक्रवर्त  
- अर्जुन सिंह



शरीर विरहसंग - आदर्श परचक्र  
स्व. राणेश प्रकाश विद्याधी  
पुण्यतिथि 25 मार्च  
इसकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा मुगावली म.प्र. में हुई



**Late Shri Virendra Kumar Mishra**  
(March 26, 1919 - March 5, 2012)  
The void created by his sudden demise shall never be filled  
'शिक्षा जगत को समाचार' - पाठक प्रकाशक, संपादक भी 1984-86

**फिल्म बनाने वालो,  
अखबार वालो,  
टेलीविजन वालो,  
शिक्षा के व्यापारियो,  
विज्ञापनदाताओ...**

**स्कूली बच्चे तथा  
विज्ञापन या व्यापार की वस्तु हैं ?  
तथा 6 दशकों में 40 करोड़  
(विशेषकर गरीब और ग्रामीण)  
बच्चों के लिए, अपने दायित्वों  
का सही  
निर्वाहन  
कर सके  
हैं ?**




Barack Obama told our parliament that were it not for Gandhi, he would not be standing there as America's President





**गिजू भाई 14 नवम्बर** **मौलाना अबुल कलाम आज़ाद**

**रहने को आवास नहीं हैं,  
सुरक्षित पर्यावास नहीं हैं,  
'दीदी' आखिर कहाँ रहेगी,  
'मीना' कैसे भला पड़ेगी?**



**स्कूल शिक्षा पत्रिका के 50वे अंक के लोकार्पण एवं**  
**विख्यात शिक्षाविद् स्व. डॉ. गुलाब चौरसिया जी के**  
92वें जन्मदिवस के शुभ अवसर पर आयोजित  
परिचर्चा एवं विमोचन समारोह 25.06.2014 को दुष्यंत कुमार पाण्डुलिपि  
संग्रहालय भोपाल में विशिष्ट अतिथिगण श्री रमेशचंद्र अग्रवाल,  
श्री शरदचंद्र बेहार, प्रो. रमेश दवे, श्रीमती सुशीला चौरसिया, रामाराव  
बामनकर, श्री महेन्द्र नाथ दुबे, श्री एस.एन.दुबे तथा गणमान्य नागरिकों  
की उपस्थिति में मनाया गया।





## एक निर्भीक राजनेता स्व. श्री मोरारजी देसाई

जन्मदिन - 29 फरवरी

श्री मोरारजी देसाई को एक बार रामचरित मानस पर प्रवचन करने के लिये कहा गया (तब वे प्रधानमंत्री थे तथा गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद के चांसलर भी थे) तब उन्होंने मानस में एक सच्चे प्रजातंत्रीय स्वरूप का उल्लेख करते हुये कहा था कि

तुलसी के राम कहते हैं -

“नहीं अनीति नहिं कुछ प्रभुताई सुनहुं, करूहु जो तुमहि सोहाई”  
जो अनीति कुछ भाषों भाई तो मोहि वरजहुं भय विसराई”

(रामचरित मानस- उत्तरकाण्ड 42-2-3)

“मैं जो तुमसे कहता हूँ उसमें अनीति या प्रभुता नहीं है, संकोच और भय छोड़कर तुम मेरी बात ध्यानपूर्वक सुनो, लेकिन तुम्हें जो उचित लगे वही करो।” हे भाई यदि मैं तुमसे कुछ अनीति की बात कहूँ तो भय भुलाकर मुझे रोक देना।”

राम के इस कथन पर मोरारजी भाई ने कहा कि “मानस के इस कथन को मैं इस प्रकार दोहराना चाहता हूँ कि प्रधानमंत्री को अपने प्रशासकों से भी सावधान रहना चाहिये। राम जैसे राजा भी यदि अपने से अनीति होती हो तो प्रजाजनों से उसे रोकने को कहते हैं, तब हमारी क्या गणना? इसीलिये हमें अधिक जागृत रहना चाहिये।”

एक अन्यत्र स्थान पर मोरारजी भाई कहते हैं, “स्वराज्य द्वारा राम राज्य स्थापित करने वाले महात्मा गांधी को कैसे भुलाया जा सकता है। राम राज्य में तो मुख्य वस्तु सत्य की है, धर्म की है ...मानवता का धर्म...जो धर्म कहे जाते हैं वे तो सभी मानवता की ही सीख देते हैं...इससे निर्भयता आती है।”

मोरारजी भाई कहते हैं “प्रत्येक व्यक्ति को दूसरे धर्मों का सम्मान करते हुये, अपने स्वधर्म के प्रति जागृत बनाने का काम शिक्षा को करना चाहिये...मैं अपना विचार शिक्षाशास्त्रियों को भी समझाने के लिये प्रयत्न कर रहा हूँ।”



टी एन दुबे,

चीफ सुप्रिटेण्डेंट एंड हैड,  
कार्पोरेट आर एंड डी सेंटर  
न्यूक्लियर पावर कॉरपोरेशन  
ऑफ इंडिया लिमिटेड  
(एनपीसीआईएल)

## परमाणु ऊर्जा स्रोत पूरी तरह सुरक्षित है

मौलाना आजाद नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी भोपाल में आयोजित पूर्व छात्रों के सम्मेलन में श्री टी.एन.दुबे ने अपने वक्तव्य में कहा कि परमाणु ऊर्जा का नाम आते ही अधिकांश लोगों के मन में हिरोशिमा और नागशाकी की घटना याद आने लगती है। इस अत्याधुनिक युग में भी लोगों के दिमाग में परमाणु उर्जा का एक विनाशकारी स्वरूप बना हुआ है, लेकिन ऐसा नहीं है। परमाणु उर्जा एक सुरक्षित उर्जा स्रोत है। हमारे देश में स्थापित सभी परमाणु रिएक्टर्स सुरक्षित हैं और इनसे किसी भी प्रकार से किसी को कोई नुकसान नहीं हो सकता। इनमें एक पैरामीटर लगा होता है, जिससे असुरक्षा होने पर प्लांट ऑटोमेटिकली ट्रिप हो जाता है। खास बात यह है कि इनसे पर्यावरण को कोई नुकसान नहीं पहुंचता। हमारा देश परमाणु उर्जा के उपयोग में दक्ष हो गया है और निरंतर इस क्षेत्र में प्रगति कर रहा है।





## उत्तराखण्ड का कहर पर्यावरण से छेड़छाड़ का भी नतीजा



### पर्यावरण की रक्षा कीजिए -

- कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए खनिज तेल और कोयला पर निर्भरता कम करके सौर उर्जा पर निर्भरता बढ़ाइये।
- भारत खनिज उत्पादक तेल देशों का सबसे बड़ा गुलाम बन गया है, जबकि ये वही भारत है जो सूर्य की उपासना करता है।
- भारत में अधिकांश कार्य सूर्योदय से प्रारंभ होकर सूर्यास्त के बीच संपन्न हो जाते थे।
- बिजली की चकाचौंध में शादी-विवाह, सामूहिक भोज एवं बाजारों की रौनक बढ़ाकर गरीबों और गांवों को बिजली से वंचित कर उनका अपमान करना बंद करें।
- पं. नेहरू चाहते थे शाम 7 बजे तक अधिकांश दुकानें एवं बाजार बंद होना चाहिए जिससे रात में घरों को बिजली मिल सके। उनकी भावनाओं का सम्मान कर अनावश्यक बिजली खर्च रोकें।
- अपनी आवश्यकताओं के लिए नदियों के मार्गों को परिवर्तित कर या अनावश्यक बांधों के निर्माण पर रोक लगाकर पर्यावरण क्षरण रोकें।
- वनों की अनावश्यक कटाई रोककर प्रत्येक शुभ कार्य जैसे जन्मोत्सव या विवाह इत्यादि में वृक्षारोपण करें।
- मृतक को सच्ची श्रद्धांजली देने के लिए पंच लकड़ी (जब दाह संस्कार किया जाता है) हाथ में लेकर पर्यावरण बचाने का प्रण करें और मृतक की याद में वृक्ष लगाकर उसे पाल पोसकर बड़ा करें।
- वनों के रक्षक वनवासियों को उनके अधिकार दिलायें।
- शहरों में बढ़ते प्रदूषण को रोकें।
- कोलगेट घोटाला अब विश्व के सबसे बड़े घोटालों में से एक है। ऐसे अपमान से बचें।
- तीर्थ स्थानों में देवताओं को प्रसन्न करने के तीर्थ यात्री वृक्ष लगायें यही सच्चा चढ़ावा होगा।

- डॉ. अंजू वाजपेयी

5th World Teachers' Day

# World Teachers Day

## 5th October



"A Declaration Status of Teachers" was adopted on October 5th, 1966 by UNESCO

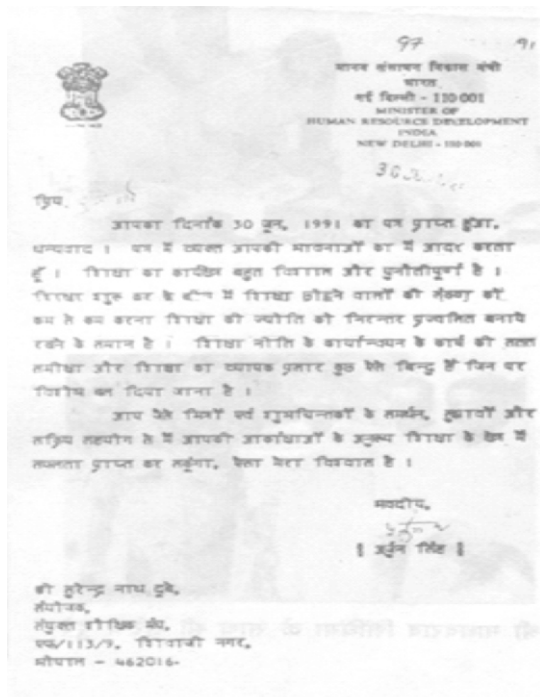
Dr. Gulab Chaurasia was a humanist, a visionary and an educationist of International repute. Teachers of the world are indebted to him. He guided and helped his co-workers and they drafted "A declaration entitled "status of teachers" which was approved in an intergovernmental conference organised by UNESCO at Paris on October 5, 1966. On the demand (He also forwarded an APPEAL of Surendranath Dubey- Present editor School Shiksha in this regard ), in 1994, UNESCO decided to celebrate the World Teacher's Day every year on October 5.



यहाँ यह उल्लेखनीय है कि 5 अक्टूबर 1966 को शिक्षकों की गरिमा जंजने वज्जिम्बीमतेद्र को यूनेस्को द्वारा स्वीकृत किया गया था।

यह इतिहास का एक मनोरंजक तथ्य है कि भारत से प्रेरणा लेकर प्रथम विश्व शिक्षक दिवस 5 अक्टूबर 1994 को यूनेस्को मुख्यालय में मनाया गया तब संसार भर के सभी शिक्षा मंत्रियों ने उसमें भाग लिया था। भारत के तत्कालीन मानव संसाधन मंत्री श्री अर्जुन सिंह ने भारत का प्रतिनिधित्व किया था। उस समय सुरेन्द्र नाथ दुबे, शास्त्री भवन में शिक्षक कल्याण कार्य के लिए पदस्थ थे। भारत सरकार के प्रतिवेदन बनाने में इन्हें भी सहभागी बनाया गया था।





प्रिय श्री दुबे जी

आपका दिनांक 30 जून, 1991 को पत्र प्राप्त हुआ, धन्यवाद। पत्र में व्यक्त आपकी भावनाओं का मैं आदर करता हूँ। शिक्षा का कार्यक्षेत्र बहुत विशाल और चुनौतीपूर्ण है। शिक्षा शुरू करके बीच में शिक्षा छोड़ने वालों की संख्या कम से कम करना शिक्षा की ज्योति को निरंतर प्रज्वलित बनाये रखने के समान है। शिक्षा नीति के कार्यान्वयन के कार्य की समीक्षा और शिक्षा का व्यापक प्रसार कुछ ऐसे बिंदु हैं। जिन पर विशेष ध्यान दिया जाना है।

आप जैसे मित्रों एवं शुभचिंतकों के समर्थन, सुझावों और सक्रिय सहयोग से मैं आपकी आकांक्षाओं के अनुरूप शिक्षा के क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकूंगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

श्री सुरेंद्रनाथ दुबे  
संयोजक  
संयुक्त शैक्षिक मंच  
एफ 113/9, शिवाजी नगर  
भोपाल - 462016

भवदीय  
अर्जुन सिंह

विश्व शिक्षक दिवस  
5, अक्टूबर, 2005

माननीय श्री अर्जुन सिंह जी,

आज विश्व शिक्षक दिवस के अवसर पर आप यूनेस्को द्वारा आयोजित सम्मेलन में भाग ले रहे हैं, तब कृपया स्मरण करना चाहें, दस वर्ष पूर्व भी आप भारत का प्रतिनिधित्व करने इसी प्रकार के सम्मेलन में उपस्थित हुये, सब, आपके लिये विश्व शिक्षक दिवस क्यों? एवं 'जंजन वेजिम्बीमते के बारे में मेरे द्वारा तैयार एक टीप प्रस्तुत की गई थी। 5 अक्टूबर, 1966 में स्वीकृत उक्त दस्तावेज का जो हिन्दी अनुवाद हमने प्रकाशित कराया है वह पुनः अवलोकनार्थ प्रेषित है।

इस वर्ष E.I ने 'Quality Teachers वित Quality Education : Training वित a stronger Teaching Force' जैसा विषय हमारे चिंतन के लिये प्रस्तुत किया है। आप कृपया स्मरण करें दिनांक 5 नवम्बर, 2002 (आपके जन्म दिवस के अवसर पर) आपने मेरी पुस्तक "In Service Education For Teachers – in India" का विमोचन भी किया था, जो उसी अवसर पर मेरे प्रकाशक ने आकर उपलब्ध करायी थी। (हैं उस अवसर पर स्वर्गीय भाई ललित श्रीवास्तव एवं स्वर्गीय भाई जी, पी. गुप्ता भी हमारे साथ थे, हम उनका पुण्य स्मरण भी करें यह स्वाभाविक है।)

Quality Education के लिए In Service Education For Teachers विशेष रूप से Article 21-A के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये Elementary Education में कार्य करने वाले शिक्षकों के विशेष प्रशिक्षण पर कार्यवाही अपेक्षित है।

NCERT को नाम परिवर्तित कर National Commission For School Education एवं Central Board of Secondary Education का नाम परिवर्तित कर Central Board of School Education देर NCTE की तरह संसद से अधिनियम कराया जाना अपेक्षित है (कोठारी आयोग ने भी कुछ इसी प्रकार की अनुशंसा की थी)।

अब जब संविधान की धारा 21 के अनुसार प्रारंभिक मौलिक अधिकार है – उपरोक्त दो परिवर्तन और अधिनियम आवश्यक हो गए हैं।

हमारे प्रथम शिक्षा मंत्री स्व. मौलाना अबुल कलाम आजाद ने शीर्ष प्रशासनिक व्यवस्था जिस प्रकार की थी, अब शास्त्री भवन में भी उसी प्रकार की व्यवस्था अपेक्षित है, अन्यथा विगत पांच दशकों में धारा 45 के लक्ष्यों को प्राप्त करने में जो असफलता रही है, उसका आंशिक दोष शास्त्री भवन की प्रशासनिक व्यवस्था का भी रहा है। आशा है कि आपके सहायक इस पत्र को आप तक पहुंचने से वंचित नहीं करेंगे।

सादर, शुभकामनाओं के साथ।

(सुरेंद्रनाथ दुबे)





**Justice Ranganath Misra**  
Chairperson

33/3/CH/NHRC-94.

**राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग**  
**National Human Rights Commission**

सरदार पटेल भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली-110 001 भारत  
फोन : (का) 011 310891 फैक्स 011 310016 (आ) 011 3018085  
Sardar Patel Bhavan, Sansad Marg, New Delhi-110 001 INDIA  
Phone : (O) 011 310891 Fax 011 310016 (Res) 011 3018085

September 22, 1994.

Dear Mr. Dubey,

I have read your open letter dated September 8, 1994, addressed to the teacher community - four and a half million strong.

Your call for determined activity for implementation of Art. 45 and provisions of certain basic facilities to the rural under-privileged are indeed welcome.

You have my moral support for the same.

With warm regards,

Yours sincerely,

(Ranganath Misra)

Sri Surendra Nath Dubey  
301, M.P. Bhavan  
Chenakyapuri,  
New Delhi-110021.

---

The Progress of elementary education is and index of the general, social and economic progress of the country as a whole'

- J.P. Naik

---

Elementary Education--- has to deal with the entire population of the country : it touches life at very point, and it has to do more with the formation of national ideology and character than any other single activity social or educational. Those of us the who are concerned with the great work of elementary education, should, therefore visualise its problems and objectives, not in the context of dark dingy building, but against the background of its ultimate ends and purposes.

- K.G. Saiyidain



## Right to Education

### Fundamental Right in The Constitution of India

21 A. Right to education-The State Shall Provide Free and Compulsory education to all children of the age of six to Fourteen years in such manner as the State may, by law, determine.

Ins. by the Constitution (Eighty Sixth Amendment) Act, 2002,

The Lok Sabha Passed bill on 28<sup>th</sup> November, 2001. It was Considered By Rajya Sabha on 14<sup>th</sup> May 2002. After the Passing of 86 constitutional amendment Act, 2002, It received the assent of President (shi A.P.J. Abdul Kalam) on 12<sup>th</sup> Dec. 2002

इस मौलिक अधिकार को लागू करने वाला कानून सात वर्ष गुजर जाने के बाद संसद द्वारा पारित हुआ और एक अप्रैल 2010 से लागू किया जाना माना गया है। राज्य सरकारों के द्वारा नियम, उपनियम इत्यादि प्रसारित किये जाना है।

Article 30 - Right of minorities to establish and administer educational institutions - (1) All minorities, whether based on religion or language, shall have the right to establish and administer educational institutions of their choice.

(2) The State shall not, in granting aid to educational institutions, discriminate against any educational institution on the ground that it is under the management of a minority, whether based on religion or language.

अधिकांश गरीब अल्प संख्यक तो इस अधिकार से बंचित ही रहे हैं। शिक्षा के व्यवसायियों ने ही अभी तक इस अधिकार का दुरुपयोग किया है।

### Directive Principles of State Policy

Article 45. Provision For early childhood care and education to children below the age of six years.- The state shall endeavor to provide early childhood care and education for all children until they complete the age of six years.

Sub.sby the Constitution (Eighty sixth Amendment) Act., 2002, After 12<sup>th</sup> Dec. 2002.

---

Article 45. Before 12<sup>th</sup> Dec. was as under-

"Provision for a period of ten years from the commencement of this Constitution, for free and compulsory education for all children until they complete the age of fourteen years."

छह दशकों के बाद भी पूर्व धारा 45 में की गई अपेक्षा पूरी नहीं हो सकी थी। अब इसे 21-ए के अनुसार मौलिक अधिकार बना दिया गया है।

# राज्य शिक्षक प्रशिक्षण मण्डल म.प्र. STATE BOARD OF TEACHER EDUCATION

M.P. State Council of Educational Research & Training,  
Post Bag No. 10, Shiksha Mandal Post Office, Bhopal - 462011

**Ravindra Malav**  
Additional Director

**SECRET**

**RESIDENCE**

11379, Shiksha Mandal,  
Bhopal - 462016

Phone (R) 555016

Date 20-8-99

**D-2 DPEP/SCERT/99**  
**381**

I write this for consideration of a most deserving case of Shri Surendera Nath Dubey for award in the field of Education and Social work. Shri Dubey was nominated by Government of M.P. Department of School Education vide order No. End. No. 113-19/97.1.20-1/1746.97. to work as Secretary State Board of Teacher Education M.P. Bhopal.

Director SCERT has directed him to work directly under me as an officer incharge for media activities, Managing Editor Sheishik Palash and as Secretary S.B.T.E.

Shri S.N. Dubey has distinguished record of service in the field of Education. His outstanding contributions and achievements could be seen from the record enclosed which is self explanatory.

It would be only just and fair that distinguished services rendered by Shri Dubey in the field of Education and Social work which are pre eminently worthy of AWARD -2000 are not left out of consideration. I feel that his services deserve to be recognised and deserve to be decorated with Award.

(RAVINDRA MALAV)  
ADDITIONAL DIRECTOR SCERT,  
VICE-CHAIRMAN SBTE AND  
EDITOR, SHAKISHK PALASH.

*An educated child is our greatest treasure.*

**BANSHILAL DHRTILAHRE**  
MINISTER  
SCHOOL EDUCATION SPORTS  
AND YOUTH WELFARE



Office : 51421  
Phone : 53041  
56082

BHOPAL

Date 3 दिसम्बर, 1998

ये प्रारम्भिक शिक्षा के विशेषज्ञ हैं। "नई शिक्षा नीति के पुनर्निर्माण-नामक दस्तावेज के प्रकाशित होने के बाद शैक्षिक क्रियाओं पर श्री दुबे ने महत्वपूर्ण कार्य किया है।

"नई शिक्षा नीति" के निर्माण में इनके योगदान को सर्वेय याद रखा जाएगा

1. श्रीमंतल धुलहरे  
मंत्री, स्कूल शिक्षा  
भोपाल

शिक्षक दिवस के अवसर पर

## अभिनन्दन

आप भी उन गिने चुनों में, जो औरों को मुस्कान दे सके।  
छोटे बड़े का भेद भुलाकर औरों को सम्मान दे सके।।

जो संघर्षों में हार चुके थे, उनको भी उत्साह दिलाया।  
सबके सुख दुख में शामिल हो, परहित को आदर्श बनाया।।

ऐसे कितने हैं जिनने, अधियारों में दीप जलाया।  
कितने ही भूले भटकों को, उनके हित का पथ दिखाया।।

सौम्य मृदुल व्यक्तित्व लिये तुम, कर्तव्यों की राह चले हो।  
पर हित के आदर्शों से तुम, संकट में भी नहीं टले हो।।

—प्रदीप शुक्ला, राष्ट्रीय पुरस्कृत शिक्षक, इंदौर

### छोटी सी आशा

एक दिन पत्नी ने अपने स्कूल शिक्षक पति से कहा,  
तुम्हें तो एक निजी मकान बना पाने का अवसर न रहा।  
पिछले तैंतीस वर्षों, से एक ही व्याख्याता पद पर बने रहे,  
सरकारी आवास आवंटित होने से, इस छोटे मकान में टिके रहे।  
अब रिटायर होने के बाद कहीं रहोगे?  
तुम भी बच्चों नहीं, सरकारी जमीन पर कब्जा जमा लेते?  
अपनी एक छोटी सी झुग्गी ही कहीं बना लेते?  
सुनकर अपनी पत्नी की यह दुःख कथा,  
राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षकों से स्नेह और सम्मान पाने वाले,  
इस शिक्षक पति के स्वर में उमर आई अर्न्तव्यथा।  
अरे तुम्हारा ऐसा सोचना क्या ठीक है?  
शिक्षक तो समाज में आदर्श का प्रतीक है।  
भरपूर मुझे ऐसी ही सरकारी टोला तो खुप को शिका, कर्म से न छोड़ता,  
तैंतीस वर्षों पूर्व नायब तहसीलदार का पद न छोड़ता।  
मैं इस तरह के कामों में खुद को असमर्थ पाता हूँ,  
क्योंकि मैं आज भी इस दुनिया की नजर में राष्ट्रनिर्माता हूँ।  
मैं उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ, जब समाज मुझे सम्मान देगा,  
गेर कानूनी ढंग से जमीन का कब्जा नहीं,  
राजधानी में कम से कम एक बना बनाया मकान देगा।

— रामगोपाल रैकवार  
प्रज्ञा सदन, टीकमगढ़

### शिक्षक की व्यथा

राष्ट्रनिर्माता बनने की तालसा लिये/प्रशासकीय पद को अस्वीकार कर/  
आया था वह समाज की सेवा करने/  
एक छोटे से गांव के छोटे से विद्यालय में /छोटे-छोटे बच्चों के बीच/  
एक आदर्श समाज की रचना करने / बन गया था/वह एक अध्यापक।  
'नीति को नीति' और 'अनीति को अनीति' सिद्ध करने के प्रयास में /  
व्यतीत कर दिये थे उसने अपने जीवन के, अमूल्य चालीस वर्ष।  
किन्तु/जो हमेशा नीति को अनीति और अनीति को नीति सिद्ध करते रहे/  
वे अब उच्च पदों पर आसीन थे /  
कुराल शिक्षा प्रशासक के सम्मान से अलंकृत थे /  
अपने छद्म में जी रहे थे वे / शिक्षा व्यवस्था को छद्म के संसार में  
धकेलते हुये/ और सारी व्यवस्था अब केवल भेड़ियों के लिये थी।

—डॉ.रयाम सुन्दर त्रिपाठी

### पदोन्नति की माया

'अ' और 'ब' का राजस्व विभाग में नायब तहसीलदार पद पर चयन हुआ।  
'अ' वरिष्ठ था, 'ब' कनिष्ठ था / कुछ समय बाद ही,  
'अ' का स्कूल शिक्षा विभाग में व्याख्याता पद पर सुशोभित हो गया,  
तहसीलदार के समकक्ष व्याख्याता पद पाने पर /  
वह स्वयं पर मोहित हो गया।  
पर 'अ' की स्कूल शिक्षा विभाग में तैंतीस वर्षों तक पदोन्नति की आशा  
कली न खिली,  
उधर 'ब' को राजस्व विभाग में प्रवर श्रेणी के डिप्टी कलेक्टर तक  
पदोन्नति मिली।  
एक दिन 'ब' स्कूल शिक्षा विभाग में प्रतिनियुक्त होकर आया,  
व्यवस्थागत पदोन्नति की माया ने और भी कमाल दिखाया,  
जब 'ब' ने 'अ' को प्राचार्य पद पर भी पदोन्नति के लिए अयोग्य बताया।

—रामगोपाल रैकवार  
प्रज्ञा सदन, टीकमगढ़

### नहीं है मुझे अफसोस

लोग जब भी मुझसे मिलते हैं/ जब भी मुझे देखते हैं  
बरसाने लगते हैं / मुझ पर अपनी करुणा और दया के मेघ।  
अरे क्या हो जाना था तुम्हें और क्या होकर रह गए तुम?  
न तुम्हारे पास बैंक बैलेंस, न सर छुपाने की एक छोटा सा मकान।  
न बच्चों की शिक्षा अंग्रेजी स्कूलों में, न गहने पत्नी के पास।  
एक कार क्या, एक स्कूटर भी नहीं खरीद सके तुम आज तक।  
अफसोस नहीं होता तुम्हें?/ प्रशासकीय पद को त्यागकर, जहाँ अनंत  
संभावनाएं थी,  
स्वीकारा तुमने अध्ययन और अध्यापन का संसार।  
अफसोस नहीं होता तुम्हें।  
नहीं, मुझे नहीं है अफसोस,  
मैं एक दीपक बनना चाहता था, तिल तिल जलकर,  
प्रकाश फैलाना था, मेरा काम और वह मैंने किया।  
क्या हुआ, जो कुछ भी नहीं है मेरे पास, कम से कम अंधेरा तो नहीं है,  
और मेरे द्वारा जलाए गये सैकड़ों दिये, भले ही टिमटिमा कर ही सहे  
आज भी अंधेरे में जल रहे हैं, और फैला रहें हैं प्रकाश,  
इसलिए नहीं है मुझे है अफसोस रच मात्र भी।

—एस.एन. विद्याधी



# जय जगत

S. N. Subba Rao

Bangalore address, till June 7, 1993:

## NATIONAL YOUTH PROJECT

राष्ट्रीय युवा योजना

JOURA DIST. MORENA (M.P.) 476 221 INDIA

श्री. शक्ति-सूत्र (क. सं.) 476221

Phone: 2027 (JOURA) 20137 (Gwalior)

sonal

Tel contact: June 1 to 4: Mysore 22027  
June 5 to 7: Bangalore 505750

On train to Indore, May 29, 1993

70123/9193

My dear Shri Khaliq,

My good friend Shri S.N. Dubey brought me the good news that my proposition for a SADBHAVANA train is on your table. It gives me hopes that things will move fast. I will be in Delhi only June 9 to 13. My flight for Europe & America takes off from Gwalior at 3.10 a.m. On June 14 and I will be away from India for 3 months. So, I am keen to meet you and dear Shri Jaffer Sharief before that.

2. The Train Project needs not only an officer who has technical efficiency, but who is emotionally dedicated. You have both the qualities and that is the reason for my hope.

3. Let me, some officials told the Minister that the Project was expensive. I have cut out many items of expenditure.

4. The Project, however, was drawn in haste. I see the total number of days will be more than calculated. We will adjust once it is approved.

5. If the approval comes before I leave, I can send out circulars etc. The train may be launched on October 2 or October 22, National Solidarity Day. We can go on upto mid-June when monsoon breaks.

6. I am told that Shri Mukul Wadhwa, Minister of State for Youth & Sports will look after the Project from the M.Y.S. Ministry. I am writing to him also from this journey.

I hope this greets you and all the well Shri Bhawan in the best. Please give my regards to dear Shri Jaffer Sharief and see when I can see him.

With lots of love to you all.

Your brother,

Shri Abdul Khaliq  
Executive Director  
Ministry for Railways  
Government of India  
New Delhi

Encls. 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100.

योजना

श्री. शक्ति-सूत्र - NO 002  
331 7473, नमः - मन्त्रालय

## NATIONAL YOUTH PROJECT

221 DIEN DALUPADHYAY MARG NEW DELHI 110 002  
Phone: (011) 331 7473, 331 7493 G.W.A.S. S.A.V.A.S.A.

June 13, 1993



My dear Shri Arjun Singhji,

I sit to write this as I prepare to leave for the airport in an hour to fly to Frankfurt and on to Zurich before going to America.

I was happy that you had appreciated my proposition for a Sadbhavana Train. As for its cost, if it is only compared to the expenditure that each riot and its aftereffects take, it will be negligible. The benefits will be enormous.

The Railway Ministry have taken the project in right earnest. They had sent their representative to me yesterday and we had useful discussions. If things move fast, we should be able to launch the train on October 2, 1993 and go upto May 31, 1994.

The Youth Department of your Ministry have been sanctioning about 10 camps for us each year. The same amount of money may be diverted towards the Train: it will be only a little more. I had given a budget of Rs 22 lakhs; but as the number of days now is 24, it may go to Rs 30 lakhs.

I will be away. Shri S.N. Dubey in the National Federation for Teachers' Welfare cell in your Ministry will do the follow up. Please expedite so that we may take necessary steps like recruiting etc.

My American address: C/O Shri Shrikumar Poddar  
2601 Cochise Lane  
OKEMOS MI 48864 USA  
Tel: (517) 337-7888  
FAX: (517) 393-3255

With kind regards,

Your brother,

(S. N. Subba Rao)

Shri Arjun Singhji  
Chairman Vivekananda Committee  
Minister for M.A.S.  
New Delhi

श्री. शक्ति-सूत्र (क. सं.) 476221, (क. सं.) 476221 (JOURA) 20137 (Gwalior)  
Encls. 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100.

S. N. Subba Rao

S. N. Subba Rao  
221 D.D. Upadhyay Marg  
New Delhi - 110002  
India

Camp: Indore

May 29, 1993

Personal

My dear Shri Arjun Singhji,

As it is, there are hundreds of issues to write you about. This letter is relating to a specific issue.

As I came to Indore for a day today, I met Shri Bhawanji of the Prabhu Vidya Mandir established by Acharya Vinoba Bhave. I need not introduce to you the institution that Vinoba ji built brick by brick. The Community of women are an inspiration in dedicated life.

They are publishing Vinoba ji's works in 30 volumes, priced at Rs 3,000/- per set. They try to be self-dependent and do not ask for donations. But they need seed money at present for printing.

Could you please support the venture? Maybe, you could order for some 2000 sets. If you that the Government is spreading literature in Hindi, it will be relevant to buy this Vinoba literature for offices, libraries etc.

The enthusiastic Ashramite Bhawanji will come to you sometime soon. I hope you could extend your cooperation and help make the project successful.

I go to a national integration camp at Mysore and come to Delhi June 5 and leave for Frankfurt enroute to America on June 13.

With kind regards,

Your brother,

Shri Arjun Singh  
Minister for Human Resources Development  
Government of India  
New Delhi

Copy to Shri S.N. Dubey  
Asst Secretary  
National Federation of Teacher's Welfare  
402/C Shastri Bhawan, New Delhi-2

Copy to Shri Bhawanji Bhatnagar, Bhawanji Vidya Mandir, Gwalior (M.P.)

Address till Sept 5:

## NATIONAL YOUTH PROJECT

राष्ट्रीय युवा योजना

JOURA DIST. MORENA (M.P.) 476221 INDIA

श्री. शक्ति-सूत्र (क. सं.) 476221

Phone: 27 (JOURA) 20137 (Gwalior)

C/O Mr Shrikumar Poddar

2601 Cochise Lane

OKEMOS MI 48864 U.S.A.

Tel: (517) 337-7888

FAX: (517) 337-3883

June 24, 1993

My dear Dubeyji,

It was sweet of you all to have come to the airport to see me off. I had a nice week in Germany and Switzerland and via New York, arrived in Okemos on June 21. The meeting at Frankfurt was well attended.

My programmes set till now:

July 1 to 9	Camp at Ganges
July 10, 11	Camp at Lansing near here
July 17, 18	Camp at Flint Temple
August 7 to 14	Camp Pittsburg
August 15	India freedom March S. Frisco
August 14 to 22	Camp at San Francisco
Aug 27 to Sept 5	World Parliament, Chicago
Sept 8, 9, 10	U.N.O. meeting
Sept 11	Chicago programme

So, I hope to be in Delhi by Sept 15. I am unhappy that the Vivekananda Committee in India has done precious little. Even now, if they approve of the Train for Harmony, I can tell people here of something. The V.H.P. is doing a massive programme in U.S.A. If the other Indians and the Government do nothing, then VHP alone will be in light. On my behalf, you may tell dear Arjun Singhji and Ashokji this situation. The Prime Minister did not even send a message as requested by me.

My host has booked hotel rooms in Chicago. But if your brother is there at that time, my choice is certainly to be in a home. The Organising Committee also, my have fixed some accommodation. Please write me at your earliest and send me the Chicago address.

To save on postage, I send another letter with this. You may read it to Gopalji on telephone and then post it.

I hope you are doing well. It is raining here and I found Delhi and Riyadh are the only places in the world showing more than 100°F. But you are in A/C. Give my love to all friends and all at home in Bhopal.

Your brother,

Shri Surendra Nath Dubey  
Madhya Pradesh Bhawan  
New Delhi





S.Y. QURAISHI,  
PHONE: 384152

Ch. Phil. Sig. 232158 (R)  
224633 (C)

संयुक्त सचिव  
मानव संसाधन विकास विभाग  
मंत्रालय  
नई दिल्ली-110001  
JOINT SECRETARY  
GOVERNMENT OF INDIA  
MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT  
DEPARTMENT OF YOUTH AFFAIRS & SPORTS  
NEW DELHI-110001

D.O. NO. 8-73/93-YS-1V

Dated July 12, 1993

Dear Shri Khaliq,

Kindly refer to letter dated 26th May, 1993 from Shri S.N. Subba Rao, National Youth Project, Morena, Madhya Pradesh.

2. Shri Subba Rao has sent the proposal of Sadbhavana Train to promote National Integration and Communal Harmony. It has been agreed in this Department to support this project. An assistance of Rs. 15 lakhs also has been sanctioned in principle.

3. We are at present working out the details of project in consultation with Shri S.N. Dube, Asstt. Secretary, National Teachers Welfare Foundation, who is the representative of Shri Subba Rao. We have got the impression that the Railways have already agreed to provide all necessary facilities including the train consisting of 8 first class coaches. A copy of the letter received from Shri Subba Rao is enclosed for information.

4. I shall be grateful if this Department is given some idea immediately about progress of the project as far as Railways is concerned.

With regards,

Yours sincerely,

(S.Y. QURAISHI)

Encl: As above.

Shri Abdul Khaliq,  
Executive Director,  
Ministry of Railways,  
Government of India,  
NEW DELHI

S. N. Subba Rao

NATIONAL YOUTH PROJECT TRUST

Plot 102, 103, 104, Patel Bhawan  
Raj. Marg. N. Delhi-110 001  
CONTACT PHONE: 2317497

February 4, 1996

My dear Surendra,

Just as I was feeling miserable that in spite of all the good work we have been doing India's moral status is deteriorating, most unexpectedly I received this morning a telephone message from Dr. R. V. Tripathi, Vice-Chancellor of the Kashi Vidyapeeth University, to say that on the occasion of the 75th anniversary of the University on February 10, 1996, they want to confer the honour of Doctorate on me. You may remember that Mahatma Gandhi had laid the foundation of Kashi Vidyapeeth 75 years ago.

I do not know how much a social worker like me deserves this honour. I am however going to accept it to receive the honour February 10, 1996.

Undoubtedly, the honour belongs to elders like you and friends spread all over, and particularly the vast number of devoted youths working with me hence, I write humbly to share it with them all.

With kind regards,

You: brother,

(S. N. Subba Rao)

Now I will also  
join your ranks -  
but has with all the  
effort!  
Love from at home  
S.

S. N. Subba Rao.

Address till September 12, 1993:

NATIONAL YOUTH PROJECT

राष्ट्रीय युवा योजना  
JOURA DHK, MORENA (M.P.) 476221 INDIA  
फोन: 2710001 (दिन) 276221  
फोन: 2710001/28157 (दिवस)

C/O Mr. Shrikumar Poddar  
2601 Cochise Lane  
OKEMOS MI 48864 U. S. A.  
Tel: (517) 337-7888  
FAX: (517) 337-3883

Personal

July 20, 1993

My dear Dr. Quraishi,

Sub: SADHAVANA YATRA OR HARMONY TRAIN

It was thoughtful of you to have kindly sent me copy of your letter dated July 12 addressed to Shri Abdul Khaliq in the Ministry of Railways. I was eagerly looking forward to hearing from you.

I wish I had a FAX number to send materials to you. Do please send me the number.

Dear Abdul Khaliq, certainly, is the right man in the Ministry of Railways. Now that you would be in touch, my expectations have gone up. Dear S.N. Dube is an earnest officer known to me for decades. I am expecting to hear from him also. I will send copies of this to both of them.

I should admit that I had prepared the proposals in haste, while on travel. After your letter now, I will sit for working more details. I am handicapped with no detailed India map etc with me here. The itinerary itself needs changes to synchronise with the number of days at our disposal. It will be 243 days as.

September 25 to October 2: Orientation  
October 2 to May 1994.

On our part, I will have to prepare the over 1,500 men and women volunteers to go on the train. On our Gandhi Centenary Train in 1989, we had some 120 permanent volunteers, but we paid them good pocket money. This time, we are looking for youths who will work free.

In addition to my contacts, I am sure NYK, NSS and other centres will help us organise local programmes. It should become an event that moves people into positive action.

With affectionate regards,

Your brother,

Dr. S.Y. Quraishi I.A.S.  
Joint Secretary Youth & Sports  
Ministry for Human Resources  
Government of India  
Shastri Bhavan  
NEW DELHI 110-001

DR. S. N. SUBBA RAO

DIRECTOR

Tel.: 3237491 Fax: 3236734

NATIONAL YOUTH PROJECT

राष्ट्रीय युवा योजना

221, D.D. Upadhyay Marg.

New Delhi-110 002

Phone: 3222329

@National Youth Camp, Gujarat

December 18, 2000

Dr. Surendra Nath Dubey  
Secretary, Teachers' Conference  
New Delhi

My dear Surendra Nathji,

You had affectionately invited me to join you all at the Conference being held at the Gandhi Peace Foundation on December 20, 21, 22. I felt thankful to you for the same. I had also told you that I would certainly attend the Conference, if only I have no youth camp commitments.

It has coincided that our camp here in the Dangs area of Gujarat is being inaugurated just today and it will go on till the 25th instt. You know how this area has been subjected to terrors and how important it is that youths bring in their soothing balm to such areas and help consolidate the unity and integration of our Motherland.

So, though I attach much importance to the Teachers' Conference, I had to deprive myself of the pleasure of being with you all on these precious days. Please tell the teacher friends of my situation and convey my best wishes to them all.

I hope my teacher friends will bear with me that many teachers disappoint men like me: more than loving their job, they make a business of their sacred job. They must earn their livelihood. But they should be proud of their profession and be honest to the core and set an example of ideal citizenship.

With love to you all.

Your brother,

(S. N. Subba Rao)



# जय जगत

S. N. Subba Rao  
221, D.D. Upadhyaya Marg,  
New Delhi 110 002, India.  
Tel. : 3317491

3355188  
FAY 3234734  
ND Rly, DM 24/96

My dear Surendra Nathji,  
Good you came by Delhi. I  
hope dear Arun will soon settle  
I take it this you will have  
handed over the letter to Belur  
Lalith - as may be also to  
a talk about the Subjects. No  
work relating to papers or  
Chambal Valley is urgent.  
Also there at Bagchiwadi.  
Small the 3 parts, it will  
help if I know what is  
happening.  
I have Delhi on April  
11 for Tajgan and to the  
Taj Talwar on April 15-18

S. N. Subba Rao  
221, D.D. Upadhyaya Marg,  
New Delhi 110 002, India.  
Tel. : 3317491

On train  
10 Nov 1976

My dear Dubeyji,  
Discrete greetings to all at  
home and at Gurin, but this.  
I am returning after doing  
2 years Camp in Nepal. It was  
Very helpful in strengthening  
relations between the 2 countries  
I go to a Camp in Guna New  
19-21 and on 22nd, take the train  
- back to Nepal. I have  
passage Bhopal at 6:55 PM this  
day - Friday November 22.  
If you are free to find it  
convenient, let us meet at  
Bhopal Station. Please also  
bring 4 bottles for two of us.  
I am in Nepal, I got a  
message that there was a meeting

DR S.N. Subba Rao

Train: 2723D leaving Bhopal 4.4.2002  
Class: II AC  
Waitlist No 1  
PNR No. 224-7067979

For me, you are the Railway official  
to confirm reservations. I have to come to Delhi  
on April 5 and the very next day proceed to  
Gwalior for our camp etc.

I am coming to the marriage. When it  
is your home, I take it for granted that it  
will NOT be vulgar show of wealth, no dowry,  
no liquor, no ugly dancing- I have seen even  
in 'respectable' (?) families and hence this.  
Also, ask the sound system to bring some bhajan  
records and classic music- shahnai, sitar etc.  
You know.

Love to dear Renu, her children, Rupa,  
Anju, Arvind and namaskars to Smt Saroj.  
Your brother,  
S.N. Subba Rao

Dr Surendra Nath Dubey  
Secretary Teachers Congress  
Bhopal

S.N. Subba Rao. Tel: 3317491  
221 D.D. Upadhyaya Marg. New Delhi 110-002  
April 23, 1993

My dear Dubeyji,  
In a corner of a waste paper I saw your  
telephone message sometime back ! Thank you. But  
I was held up with the Sammelan that was held at  
Jaura last week. Some 1,500 people came from 21  
states. Good programme.  
I leave Delhi on Sunday evening for Patna and  
will return by Mahananda at 6.25 P.M. on April 27.  
Again, I am to go to Morena by Taj Express from  
Nizamuddin at 7 A.M. on April 28.  
When to meet ? Can you join me on Taj ? Or,  
leave me a note and let me know how you are.  
With love,  
Your brother,  
S.N. Subba Rao

On train to Balharshah  
May 18, 1993

My dear Dubeyji,  
I have proposed to the NFTW that you should  
join the delegates attending the All India Acharya  
kul Conference meeting at Indore on May 31, June 1.  
You can discuss your schemes there and I am sure  
there will be much common between you two.  
Further, I can be your 'agent' for getting more  
schemes to come into action.  
I plan to be in Delhi just for a few hours  
on May 27. I reach there 27th morning and take  
Malwa exp at 7.15 P.M. the same evening. Then, I  
reach Delhi June 9 and fly to Frankfurt June 13.  
With love,  
Your brother,  
S.N. Subba Rao

S.N. Subba Rao 221 D.D. Upadhyaya Marg  
New Delhi 110-002  
December 11, 1995

My dear Dubeyji,  
I was expecting to hear from you.  
I reach Bhopal by 2626 Kerala Express at  
9.40 P.M. on Friday December 22, 1995 and take  
the 8.00 P.M. Mangala express on December 23.  
I have written to Bhargavji.  
I hope we can have the programme on 23rd.  
I also hope Bhargavji would have contacted  
Behar Sahib and that programme also will come up.  
I do not think there will be any big prog at  
Damoh on December 20. So, I have dropped it.  
Love to all at home.  
Your brother,  
S.N. Subba Rao

S. N. Subba Rao Gandhi Ashram. JOURA. Dist Morena  
May 7 to 9 M.P. 476-221  
May 10-12: Delhi Tel: 3317491  
On train. May 2, 1992

My dear Dubeyji,  
I think I made a mistake; I did not tell you  
on phone that day that Taj Exp these days leaves  
from Nizamuddin. You might have gone to New Delhi.  
I am sorry. I hope I remember your room no. O.K. ?  
I return to Jaura on May 7 and go to Delhi on  
10th or 11th. I go to Mathura on May 13 and come  
back to Delhi to take Kerala Express on 14th at  
11.30 A.M. If you can make yourself free, you can  
go with me to Mathura (camp at Brindavan on 13th).  
Let us try to meet.  
With love,  
Your brother,  
S.N. Subba Rao

Kasturba gram Indore 22 Sept 1976  
S. N. Subba Rao  
221, D.D. Upadhyay Marg,  
New Delhi 110 002, India.  
Tel. 3337491

my dear SN,  
I always land in problems - my own making. I had told you that I was going from there again on Sept 25. Now a friend has fixed a meeting at a College at 3 PM. And he tells me 'It is on the basis of your letter that he fixed the meeting'.  
So I am bound. I will take Normala's express to reach Bhopal at 10.20 PM / 11.10 PM. I will have only one day in Bhopal. I hope I can get

S. N. Subba Rao  
221, D.D. Upadhyay Marg,  
New Delhi 110 002, India.  
Tel. 3337491

on train  
to Indore  
20 Sept 76

my dear SN,  
The Kasturba Conference concludes on Sept 22. I go to Dera on 23rd. I will reach Bhopal on the 24th morning by Indore - city express. Please inform other friends.  
I am in Bhopal till 26th night - I hope I am on in AP express 26th night. I am home till 14.2. Love back at home.  
Your brother  
SN Subba Rao

S. N. Subba Rao  
221, D.D. Upadhyay Marg,  
New Delhi 110 002, India.  
Tel. 3337491

on train  
10 Nov 1976

my dear Subba Rao,  
Disale greetings to all at home and at far, but this. I am returning after doing 2 years' work in Nepal. It was very helpful in strengthening relations between the 2 countries. I go to a camp in Guna Nov 19-21 and on 22nd, take the train to Bhopal. I will pass Bhopal at 6.55 PM. I will be in Bhopal on Friday November 22.  
If you are free to find a convenient time to meet at Bhopal station. Please also bring 4 bottles for two of us. I am in Nepal, I got a message that there was a meeting

Dr. S.N. Subba Rao  
221, D.D. Upadhyay Marg,  
New Delhi 110002, India.  
Tel. 3337491

March 18, 2002

हवाई पत्र  
Aerogramme

my dear Surendranathji,  
I am glad I could visit your new home and enjoy your and Sarojji's hospitality. It was good you took me to your father. I hope his health is back to normal.  
As you know friends keep on disturbing my programme. Now, Kasturba has its meet there on April 2. So, I have to rush from Jammu all the way to Indore, not even a moment to rest.

Dr. S.N. Subba Rao  
221, D.D. Upadhyay Marg,  
New Delhi 110002, India.  
Tel. 3337491

April 20, 2002

my dear Surendranathji,  
I have to come again to Bhopal for a meeting at the Academy on May 23. I plan to arrive in Bhopal by 11 PM. I am waitlisted No 4 and hope it will be cleared.  
From Bhopal, I have again to go to Gujarat. I can leave Bhopal by Rajkot Exp on May 4, or I take a train from Ujjain to Ahmedabad. Before that, our camp at Gujarat Vidyanesth in A'bad is April 27 to 29.  
I have to go to Ahmedabad. I have to go to Ahmedabad. I have to go to Ahmedabad.

Dr. S.N. Subba Rao  
221, D.D. Upadhyay Marg,  
New Delhi 110002, India.  
Tel. 3337491

April 20, 2002

my dear Surendranathji,  
I have to come again to Bhopal for a meeting at the Academy on May 23. I plan to arrive in Bhopal by 11 PM. I am waitlisted No 4 and hope it will be cleared.  
From Bhopal, I have again to go to Gujarat. I can leave Bhopal by Rajkot Exp on May 4, or I take a train from Ujjain to Ahmedabad. Before that, our camp at Gujarat Vidyanesth in A'bad is April 27 to 29.  
I have to go to Ahmedabad. I have to go to Ahmedabad. I have to go to Ahmedabad.

my dear  
381213  
386645

निर्वाह पत्र  
मृत्यु आगमन  
(कमल मण्डल)

श्री S. N. Dubey  
Asstt Secretary  
National Federation for  
Teachers' Welfare  
402/C Shastri Bhavan  
NEW DELHI  
110001  
पिन PIN

15

Dr Surendranath Dubey  
113/9 Shivaji Nagar  
BHOPAL C.Rly  
Madhya Pradesh  
पिन PIN 462016

Passing 15th Delhi on 19th  
I take the 1-30 PM Kashi  
V. H. number on 19th for  
Vijaynagar  
Love back at home  
your brother  
SN Subba Rao

15

श्री S. N. Dubey  
Asstt Secretary  
National Federation for  
Teachers' Welfare  
113/9 Shivaji Nagar  
BHOPAL C.Rly  
M.P.  
पिन PIN 462016

my dear  
381213  
386645

15

Dr Surendranath Dubey  
H.I.G./238  
Baag Mugalia Extension  
BHOPAL C.Rly  
Madhya Pradesh  
पिन PIN 462016

Please convey my  
respects to father.  
lots of love,  
your brother,  
SN Subba Rao



महिला और बाल मुक्ति मंत्रालय,  
नई दिल्ली-110002।  
संलग्नक की प्रतियाँ भेज दी जाती हैं।



Office : 2331-1495  
Secy's Resd : 2331-8318

E-mail: gandhismaraknighi73@gmail.com  
gandhinidhi@yahoo.com

## गांधी स्मारक निधि GANDHI SMARAK NIDHI



Chairman :

राजघाट, नई दिल्ली-110002

Vice Chairman :

Rajghat, New Delhi-110002

Secretary : रामपन्थ राही

Fax: (011) 23315809

पत्रांक/No. : गाँव स्मार्क निधि/2009-10/174

दिनांक/Date : 29-06-2009

श्री सुरेन्द्र दुबे जी,

आपके पत्र के साथ श्री सुब्बाराय की के बारे में लिखी  
आपकी पुस्तकें मिलीं। धन्यवाद।

पिरयुवा श्री सुब्बाराय हम सबके आत्मीय और युवाओं  
के प्रेरणादायी हैं। उनके बारे में अपने भाषाद्वारा लिपिबद्ध कर  
आपने युवा पीढ़ी के लिए बहुत उपयोगी सामग्री प्रस्तुत की है।  
हमारी हार्दिक बधाई।

सप्रेम जय जगत,

आपका,

*(Signature)*

तेवा में,

रामपन्थ राही

Shri Surendra Nath Dubey,  
A/247/Ground Flr.  
Today Blossom,  
Sector-47,  
Gurgaon-122018

# जय जगत

ALL INDIA FEDERATION OF EDUCATIONAL ASSOCIATIONS  
AFFILIATED TO THE WORLD CONFEDERATION OF  
ORGANISATIONS OF THE TEACHING PROFESSION  
Member: Indian National Commission for CO-operation with UNESCO  
(Founded in 1925)

Surendra Nath Dubey  
Secretary General

113/9, Shivaji Nagar,  
Bhopal (INDIA) 462016  
PHONE (RES) 552934

PERSONAL

Esteemed Doctor Sahab,

The All India Federation of Educational Associations, as you already know, was founded in 1925. A Founder Member of ICFTE, this organisation has been a unique body in itself as it has brought under its umbrella the teachers of elementary, secondary and collegiate institutions and even universities. The prime objective of the Federation has, in effect, been to bring about four million teachers of India on all the rungs of the system to one common platform.

The sixty-first All India Education Conference was held at Nagpur from the 27th to the 30th of December, 1992. At this conference, I was elected its National General Secretary. For the past sixteen years, this office was held by our former D.P.S., Shri S. V. Prabhakar.

I had the good luck of meeting you at the Rashtrapati Bhavan on 28th July, 92. Perhaps you are also aware of my assuming the charge of Assistant Secretary, National Foundation for Teachers' Welfare in New Delhi in February this year.

May I solicit your favour of giving me some precious time of yours so that I may also be able to extend to you personally a cordial invitation to grace our 62nd Conference.

With warm regards and eternal gratitude.

Yours sincerely,

(SURENDRA NATH DUBEY)

Yours truly,  
Dr. S. O. Sharma,  
President of India,  
Rashtrapati Bhavan,  
New Delhi.

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान  
NATIONAL INSTITUTE OF EDUCATIONAL  
PLANNING AND ADMINISTRATION



17 की सी जलियाँ मार्ग, नई दिल्ली-110016  
17 B, Sri Aurobindo Marg, New Delhi-110016  
Tel: (011) 8615472; Fax: 8611280  
Fax: 81 11 885 3081; Cable: NIEPA (IND)  
E-mail: nipa@vsnl.com

Prof. B. P. Khandelwal  
Director

No. F. 04/COD/NIEPA/2k  
10 July, 2001

Dear Shri Dubey,

This is in continuation of my telephonic conversation with you regarding preparation of a proposal for Indian Education Service. A meeting in this connection has been convened jointly with Association of Senior Citizens at 11 A.M. on 11th July 2001 at NIEPA.

We shall be grateful if you could attend the meeting and give the benefit of your views about it.

With kind regards,

Yours sincerely,

*(Signature)*  
(B. P. Khandelwal)

Shri S. N. Dubey  
H No. 113/9  
Shivaji Nagar  
Bhopal-462016



Justice Ranganath Misra  
Chairperson

33/3/CH/NHRC-94.

राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग  
National Human Rights Commission

सरदार पटेल भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली-110 001 भारत  
फोन : (का) 011 310891; फैक्स 011 310016 (अ) 011 3101805

Sardar Patel Bhawan, Sansad Marg, New Delhi-110 001 INDIA  
Phone: (C) 011 310891 Fax 011 310016 (Res) 011 3101805

September 23, 1994.

Dear Mr. Dubey,

I have read your open letter dated September 8, 1994, addressed to the teacher community - four and a half million strong.

Your call for determined activity for implementation of Art. 45 and provisions of certain basic facilities to the rural under-privileged are indeed welcome.

You have my moral support for the same.

With warm regards,

Yours sincerely,

*(Signature)*  
(Ranganath Misra)

Sri Surendra Nath Dubey  
301, N.P. Bhawan  
Chanakyapuri,  
New Delhi-110021.

# जय जगत

**गिताई मिशन**  
**GEETAI MISSION**

अनंत लोचो  
प्रयोगा देशाई  
भासिनी परेख

वरुण अश्रम, पो. वरुण (बरी)  
 मो. : 87152-268049  
 (बसन्ती 8 ते 9 - दुसरो 3 ते 4)  
**PARANDHAM ASHRAM,**  
**PO. PAUNAR (WARDHA) 442111.**  
 दि. 23.6.09

आदरणीय श्री सुरेन्द्रनाथ भाईजी,

आदरणीय वंदन ।

आपका पत्र तथा संलग्न निम्नलिखित आज मिला ।

आप के पत्र को मैंने गंभीरता से पढ़ा, मेरी वनस्पति के लिये । दो वन रोपण में लगे हैं साथ ही पालक योग्य ।

गंभीरता से । हमें भी । अभी चार वन रोपण कर के यह पत्र लिखने लगे हैं । आपका पत्र, वनस्पति को जो जो जिनका धन्यवाद है इतना कम है । मैं इस गंभीरता से पढ़ रहा हूँ ।

सुनेवा विरंगना का काम करो । मैं यह करवाऊँगी ।

पुरनम में सभी अनेकों को प्रतिक्रियाएं रही हैं ।

आ. श्री. सुन्दरनाथजी का पत्र मैंने पढ़ा ।

आप को पद मिला । आपने जो किताबें भेजकर भेज दी हैं ।

आपका पत्र को काम में आप सब को भेज दूँगा ।

मिनेशो हवा आता है ।

मेरी कुछ पुरनके साथी दुक-पाने से मिल रहे हैं ।

रही है ।

बहुत धन्यवाद के साथ,

जिनो,

मोतीबा का भण्ड ।

**लक्ष्मीनिवास सुंभुनवाला**

आदरणीय भाई श्री सुरेन्द्रनाथ जी,  
**M. R. N. N. N. N. N.**

भीमकाड़ा टावरी, ए. 42, सेक्टर-4,  
 नोएडा-206 309 (उत्तर) भारत

18 अक्टूबर, 2005

आदरणीय सुब्बा राव जी पर पुस्तक लिखकर आपने समाज की बहुत सेवा की है । ऐसे व्यक्तियों के बारे में जितना प्रचार हो, उतना ही अच्छा है ।

आरंभ में मैंने बहुत समय आदरणीय विनोबा जी के आश्रम में बिताया । पर गत 25 वर्षों से समकृष्ण मिशन के अलावा और कहीं समय नहीं दे पा रहा हूँ ।

उनके ही कामों में इतना व्यस्त रहता हूँ कि अन्य कार्यों के लिए समय ही नहीं मिलता । आप प्यारे, इसके लिए अनेकानेक धन्यवाद ।

सन्नेह

लक्ष्मीनिवास सुंभुनवाला

श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे  
 एफ/24, सेक्टर-8  
 जसोला विहार  
 नई दिल्ली - 110 025

दूरभाष : कार्यालय : २२७५४५४५० (ईपीसीएस)

निवास : २२७५४५४५०, २२७५४५४५०, २२७५४५४५०

फैक्स : २२७५४५४५०, २२७५४५४५०, २२७५४५४५०

E-mail : dnb@npb.com

**रमेश चन्द्र लाहोटी**  
 मुख्य न्यायाधीश



भारत का उच्चतम न्यायालय  
 नई दिल्ली-११०००२

व्यक्तिगत

दिनांक: 28 अगस्त, 2004

प्रिय श्री सुरेन्द्रनाथ,

आपके द्वारा प्रेषित 'एस.एन. सुब्बासाव - एक यायावर महर्षि' प्राप्त कर प्रसन्नता हुई ।

श्री सुब्बासाव एक उत्तमेश्वर के लिए समर्पित व्यक्ति कथ संस्था है । आपके द्वारा सम्पादित पुस्तक अनेक युवकों को श्री सुब्बासाव के व्यक्तित्व से प्रेरणा प्राप्त करने का अवसर देगी । दो-तीन बार मुझे श्री सुब्बासाव से व्यक्तिगत रूप से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है । उनसे मिलना ही प्रेरक है । स्वाभाविक है कि मैं उनसे बहुत प्रभावित हुआ था ।

पुनः आपका आभार । श्री सुब्बासावजी से जब भी भेंट हो उन्हें मेरा सादर नमस्कार कहिए ।


आपका,  
  
 (रमेश चन्द्र लाहोटी)

श्री सुरेन्द्र नाथ दुबे,  
 14 एफ, जसोला विहार,  
 सेक्टर - 8,  
 नई दिल्ली - 25.

निवास : 4, कुम्भा मेनन मार्ग, नई दिल्ली-११००२२

दूरभाष : (०११) २२७५४५४५०, २२७५४५४५० फैक्स : (०११) २२७५४५४५०

**AZIZ QURESHI**  
 Member of Parliament  
 (Lok Sabha)



1, Kartika Road  
 Shopal (M.P.)  
 Phone : 76780

31, Canning Lane  
 New Delhi-110001  
 Phone : 384875

Date: 14th June, 1986

I am writing this about Shri Surendra Nath Dubey a very sincere dedicated and old comrade of mine who had been with me in the student and youth movement and is very highly academic qualified. He is a true Gandhian and always has been a great supporter of our ideology.

In view of the vast experience in the field of education for over twenty years he would certainly be in a position to render steering services in the changing pattern of education system in India in view of the new Education Policy recently approved by the Parliament.

With warm regards,

SULABH INTERNATIONAL SOCIAL SERVICE ORGANISATION  
सुलभ इन्टरनेशनल सोशल सर्विस ऑर्गनाइजेशन  
(NGO in Special Consultative Status with the  
Economic and Social Council of the United Nations)  
पत्रांक : S.I.C.S.S./2009  
१७ दिसम्बर, २००९



माननीय श्री सुरेंद्र नाथ दुबे

आप द्वारा प्रेषित एस.एस. सुब्बासः एक मायावर महर्षि शोधक पुरस्कार का संशोधित और परिष्कृत संस्करण प्राप्त हुआ और यह जानकारी तत्कालीन हुई कि एस. सुब्बास को चारों ओर का मायावर महर्षि संस्करण (मूल) में उपलब्ध नहीं थी या कुछ महीने इस सब का इलाजाल अपने बहुत बुरे रंग से इस संस्करण में कर दिया है।

आदरणीय सुब्बास जी अपने जीवन काल में ही सेवा, साधना, संकल्प और त्याग को प्रयोग बन चुके हैं। उन्होंने सत्य और सौम्यता अर्थात् नैतिकता को प्रवर्धित और दर्शन को अपने विवेक जीवन में उतार कर दूसरों को निर्देश देना को एक दीर्घकालीन लक्ष्य बना लिया है। अंधेरे में निर्देश देने के लिए उन्होंने

पुरस्कार भेजने को लिए धन्यवाद। आपका यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है। इसके लिए मेरी बधाई स्वीकार करूँ।

भवदीय

(विन्देश्वर पाठक)

सेवा में,  
श्री सुरेंद्र नाथ दुबे  
14 एफ., सेक्टर - II  
जयसिंह पिकार  
नई दिल्ली - 110025

Website: <http://www.sulabhinternational.org>, [www.sulabhinternational.org](http://www.sulabhinternational.org)  
Delhi Office: Sulabh Group, Mahavir Enclave, New Delhi - 110 045, India. Tel.: (91) 11 25030531, 25030534, 25030535, 25030536, 25030537, 25030538, 25030539, 25030540, 25030541, 25030542, 25030543, 25030544, 25030545, 25030546, 25030547, 25030548, 25030549, 25030550, 25030551, 25030552, 25030553, 25030554, 25030555, 25030556, 25030557, 25030558, 25030559, 25030560, 25030561, 25030562, 25030563, 25030564, 25030565, 25030566, 25030567, 25030568, 25030569, 25030570, 25030571, 25030572, 25030573, 25030574, 25030575, 25030576, 25030577, 25030578, 25030579, 25030580, 25030581, 25030582, 25030583, 25030584, 25030585, 25030586, 25030587, 25030588, 25030589, 25030590, 25030591, 25030592, 25030593, 25030594, 25030595, 25030596, 25030597, 25030598, 25030599, 25030600, 25030601, 25030602, 25030603, 25030604, 25030605, 25030606, 25030607, 25030608, 25030609, 25030610, 25030611, 25030612, 25030613, 25030614, 25030615, 25030616, 25030617, 25030618, 25030619, 25030620, 25030621, 25030622, 25030623, 25030624, 25030625, 25030626, 25030627, 25030628, 25030629, 25030630, 25030631, 25030632, 25030633, 25030634, 25030635, 25030636, 25030637, 25030638, 25030639, 25030640, 25030641, 25030642, 25030643, 25030644, 25030645, 25030646, 25030647, 25030648, 25030649, 25030650, 25030651, 25030652, 25030653, 25030654, 25030655, 25030656, 25030657, 25030658, 25030659, 25030660, 25030661, 25030662, 25030663, 25030664, 25030665, 25030666, 25030667, 25030668, 25030669, 25030670, 25030671, 25030672, 25030673, 25030674, 25030675, 25030676, 25030677, 25030678, 25030679, 25030680, 25030681, 25030682, 25030683, 25030684, 25030685, 25030686, 25030687, 25030688, 25030689, 25030690, 25030691, 25030692, 25030693, 25030694, 25030695, 25030696, 25030697, 25030698, 25030699, 25030700, 25030701, 25030702, 25030703, 25030704, 25030705, 25030706, 25030707, 25030708, 25030709, 25030710, 25030711, 25030712, 25030713, 25030714, 25030715, 25030716, 25030717, 25030718, 25030719, 25030720, 25030721, 25030722, 25030723, 25030724, 25030725, 25030726, 25030727, 25030728, 25030729, 25030730, 25030731, 25030732, 25030733, 25030734, 25030735, 25030736, 25030737, 25030738, 25030739, 25030740, 25030741, 25030742, 25030743, 25030744, 25030745, 25030746, 25030747, 25030748, 25030749, 25030750, 25030751, 25030752, 25030753, 25030754, 25030755, 25030756, 25030757, 25030758, 25030759, 25030760, 25030761, 25030762, 25030763, 25030764, 25030765, 25030766, 25030767, 25030768, 25030769, 25030770, 25030771, 25030772, 25030773, 25030774, 25030775, 25030776, 25030777, 25030778, 25030779, 25030780, 25030781, 25030782, 25030783, 25030784, 25030785, 25030786, 25030787, 25030788, 25030789, 25030790, 25030791, 25030792, 25030793, 25030794, 25030795, 25030796, 25030797, 25030798, 25030799, 25030800, 25030801, 25030802, 25030803, 25030804, 25030805, 25030806, 25030807, 25030808, 25030809, 25030810, 25030811, 25030812, 25030813, 25030814, 25030815, 25030816, 25030817, 25030818, 25030819, 25030820, 25030821, 25030822, 25030823, 25030824, 25030825, 25030826, 25030827, 25030828, 25030829, 25030830, 25030831, 25030832, 25030833, 25030834, 25030835, 25030836, 25030837, 25030838, 25030839, 25030840, 25030841, 25030842, 25030843, 25030844, 25030845, 25030846, 25030847, 25030848, 25030849, 25030850, 25030851, 25030852, 25030853, 25030854, 25030855, 25030856, 25030857, 25030858, 25030859, 25030860, 25030861, 25030862, 25030863, 25030864, 25030865, 25030866, 25030867, 25030868, 25030869, 25030870, 25030871, 25030872, 25030873, 25030874, 25030875, 25030876, 25030877, 25030878, 25030879, 25030880, 25030881, 25030882, 25030883, 25030884, 25030885, 25030886, 25030887, 25030888, 25030889, 25030890, 25030891, 25030892, 25030893, 25030894, 25030895, 25030896, 25030897, 25030898, 25030899, 25030900, 25030901, 25030902, 25030903, 25030904, 25030905, 25030906, 25030907, 25030908, 25030909, 25030910, 25030911, 25030912, 25030913, 25030914, 25030915, 25030916, 25030917, 25030918, 25030919, 25030920, 25030921, 25030922, 25030923, 25030924, 25030925, 25030926, 25030927, 25030928, 25030929, 25030930, 25030931, 25030932, 25030933, 25030934, 25030935, 25030936, 25030937, 25030938, 25030939, 25030940, 25030941, 25030942, 25030943, 25030944, 25030945, 25030946, 25030947, 25030948, 25030949, 25030950, 25030951, 25030952, 25030953, 25030954, 25030955, 25030956, 25030957, 25030958, 25030959, 25030960, 25030961, 25030962, 25030963, 25030964, 25030965, 25030966, 25030967, 25030968, 25030969, 25030970, 25030971, 25030972, 25030973, 25030974, 25030975, 25030976, 25030977, 25030978, 25030979, 25030980, 25030981, 25030982, 25030983, 25030984, 25030985, 25030986, 25030987, 25030988, 25030989, 25030990, 25030991, 25030992, 25030993, 25030994, 25030995, 25030996, 25030997, 25030998, 25030999, 25031000, 25031001, 25031002, 25031003, 25031004, 25031005, 25031006, 25031007, 25031008, 25031009, 25031010, 25031011, 25031012, 25031013, 25031014, 25031015, 25031016, 25031017, 25031018, 25031019, 25031020, 25031021, 25031022, 25031023, 25031024, 25031025, 25031026, 25031027, 25031028, 25031029, 25031030, 25031031, 25031032, 25031033, 25031034, 25031035, 25031036, 25031037, 25031038, 25031039, 25031040, 25031041, 25031042, 25031043, 25031044, 25031045, 25031046, 25031047, 25031048, 25031049, 25031050, 25031051, 25031052, 25031053, 25031054, 25031055, 25031056, 25031057, 25031058, 25031059, 25031060, 25031061, 25031062, 25031063, 25031064, 25031065, 25031066, 25031067, 25031068, 25031069, 25031070, 25031071, 25031072, 25031073, 25031074, 25031075, 25031076, 25031077, 25031078, 25031079, 25031080, 25031081, 25031082, 25031083, 25031084, 25031085, 25031086, 25031087, 25031088, 25031089, 25031090, 25031091, 25031092, 25031093, 25031094, 25031095, 25031096, 25031097, 25031098, 25031099, 25031100, 25031101, 25031102, 25031103, 25031104, 25031105, 25031106, 25031107, 25031108, 25031109, 25031110, 25031111, 25031112, 25031113, 25031114, 25031115, 25031116, 25031117, 25031118, 25031119, 25031120, 25031121, 25031122, 25031123, 25031124, 25031125, 25031126, 25031127, 25031128, 25031129, 25031130, 25031131, 25031132, 25031133, 25031134, 25031135, 25031136, 25031137, 25031138, 25031139, 25031140, 25031141, 25031142, 25031143, 25031144, 25031145, 25031146, 25031147, 25031148, 25031149, 25031150, 25031151, 25031152, 25031153, 25031154, 25031155, 25031156, 25031157, 25031158, 25031159, 25031160, 25031161, 25031162, 25031163, 25031164, 25031165, 25031166, 25031167, 25031168, 25031169, 25031170, 25031171, 25031172, 25031173, 25031174, 25031175, 25031176, 25031177, 25031178, 25031179, 25031180, 25031181, 25031182, 25031183, 25031184, 25031185, 25031186, 25031187, 25031188, 25031189, 25031190, 25031191, 25031192, 25031193, 25031194, 25031195, 25031196, 25031197, 25031198, 25031199, 25031200, 25031201, 25031202, 25031203, 25031204, 25031205, 25031206, 25031207, 25031208, 25031209, 25031210, 25031211, 25031212, 25031213, 25031214, 25031215, 25031216, 25031217, 25031218, 25031219, 25031220, 25031221, 25031222, 25031223, 25031224, 25031225, 25031226, 25031227, 25031228, 25031229, 25031230, 25031231, 25031232, 25031233, 25031234, 25031235, 25031236, 25031237, 25031238, 25031239, 25031240, 25031241, 25031242, 25031243, 25031244, 25031245, 25031246, 25031247, 25031248, 25031249, 25031250, 25031251, 25031252, 25031253, 25031254, 25031255, 25031256, 25031257, 25031258, 25031259, 25031260, 25031261, 25031262, 25031263, 25031264, 25031265, 25031266, 25031267, 25031268, 25031269, 25031270, 25031271, 25031272, 25031273, 25031274, 25031275, 25031276, 25031277, 25031278, 25031279, 25031280, 25031281, 25031282, 25031283, 25031284, 25031285, 25031286, 25031287, 25031288, 25031289, 25031290, 25031291, 25031292, 25031293, 25031294, 25031295, 25031296, 25031297, 25031298, 25031299, 25031300, 25031301, 25031302, 25031303, 25031304, 25031305, 25031306, 25031307, 25031308, 25031309, 25031310, 25031311, 25031312, 25031313, 25031314, 25031315, 25031316, 25031317, 25031318, 25031319, 25031320, 25031321, 25031322, 25031323, 25031324, 25031325, 25031326, 25031327, 25031328, 25031329, 25031330, 25031331, 25031332, 25031333, 25031334, 25031335, 25031336, 25031337, 25031338, 25031339, 25031340, 25031341, 25031342, 25031343, 25031344, 25031345, 25031346, 25031347, 25031348, 25031349, 25031350, 25031351, 25031352, 25031353, 25031354, 25031355, 25031356, 25031357, 25031358, 25031359, 25031360, 25031361, 25031362, 25031363, 25031364, 25031365, 25031366, 25031367, 25031368, 25031369, 25031370, 25031371, 25031372, 25031373, 25031374, 25031375, 25031376, 25031377, 25031378, 25031379, 25031380, 25031381, 25031382, 25031383, 25031384, 25031385, 25031386, 25031387, 25031388, 25031389, 25031390, 25031391, 25031392, 25031393, 25031394, 25031395, 25031396, 25031397, 25031398, 25031399, 25031400, 25031401, 25031402, 25031403, 25031404, 25031405, 25031406, 25031407, 25031408, 25031409, 25031410, 25031411, 25031412, 25031413, 25031414, 25031415, 25031416, 25031417, 25031418, 25031419, 25031420, 25031421, 25031422, 25031423, 25031424, 25031425, 25031426, 25031427, 25031428, 25031429, 25031430, 25031431, 25031432, 25031433, 25031434, 25031435, 25031436, 25031437, 25031438, 25031439, 25031440, 25031441, 25031442, 25031443, 25031444, 25031445, 25031446, 25031447, 25031448, 25031449, 25031450, 25031451, 25031452, 25031453, 25031454, 25031455, 25031456, 25031457, 25031458, 25031459, 25031460, 25031461, 25031462, 25031463, 25031464, 25031465, 25031466, 25031467, 25031468, 25031469, 25031470, 25031471, 25031472, 25031473, 25031474, 25031475, 25031476, 25031477, 25031478, 25031479, 25031480, 25031481, 25031482, 25031483, 25031484, 25031485, 25031486, 25031487, 25031488, 25031489, 25031490, 25031491, 25031492, 25031493, 25031494, 25031495, 25031496, 25031497, 25031498, 25031499, 25031500, 25031501, 25031502, 25031503, 25031504, 25031505, 25031506, 25031507, 25031508, 25031509, 25031510, 25031511, 25031512, 25031513, 25031514, 25031515, 25031516, 25031517, 25031518, 25031519, 25031520, 25031521, 25031522, 25031523, 25031524, 25031525, 25031526, 25031527, 25031528, 25031529, 25031530, 25031531, 25031532, 25031533, 25031534, 25031535, 25031536, 25031537, 25031538, 25031539, 25031540, 25031541, 25031542, 25031543, 25031544, 25031545, 25031546, 25031547, 25031548, 25031549, 25031550, 25031551, 25031552, 25031553, 25031554, 25031555, 25031556, 25031557, 25031558, 25031559, 25031560, 25031561, 25031562, 25031563, 25031564, 25031565, 25031566, 25031567, 25031568, 25031569, 25031570, 25031571, 25031572, 25031573, 25031574, 25031575, 25031576, 25031577, 25031578, 25031579, 25031580, 25031581, 25031582, 25031583, 25031584, 25031585, 25031586, 25031587, 25031588, 25031589, 25031590, 25031591, 25031592, 25031593, 25031594, 25031595, 25031596, 25031597, 25031598, 25031599, 25031600, 25031601, 25031602, 25031603, 25031604, 25031605, 25031606, 25031607, 25031608, 25031609, 25031610, 25031611, 25031612, 25031613, 25031614, 25031615, 25031616, 25031617, 25031618, 25031619, 25031620, 25031621, 25031622, 25031623, 25031624, 25031625, 25031626, 25031627, 25031628, 25031629, 25031630, 25031631, 25031632, 25031633, 25031634, 25031635, 25031636, 25031637, 25031638, 25031639, 25031640, 25031641, 25031642, 25031643, 25031644, 25031645, 25031646, 25031647, 25031648, 25031649, 25031650, 25031651, 25031652, 25031653, 25031654, 25031655, 25031656, 25031657, 25031658, 25031659, 25031660, 25031661, 25031662, 25031663, 25031664, 25031665, 25031666, 25031667, 25031668, 25031669, 25031670, 25031671, 25031672, 25031673, 25031674, 25031675, 25031676, 25031677, 25031

## भारतीय आत्माएं बोली हैं

1. "An educational institute, must not be a dead cage in which living minds are fed with food artificially prepared. It should be an open house in which students and teachers are at one. They must live their complete life together dominated by a common inspiration and aspiration for truth"

—Tagore.

2. "मनुष्य घर में बीता है, मरने में बिचार सीता है, इसलिये जीवन और बिचार का मेल नहीं बैठता। उपाय इसका यह है, एक घर के घर में मरने का प्रवेश होना चाहिये और दूसरी ओर से मरने में घर खुलना चाहिये।"

—विनोबा

3. "यदि शिक्षा का कार्य जानकारों ही होता, तब तो पुस्तकालय संसार में सबेरे खोल दिये जाते और बिरुकोप ग्राह्यन रूप बन जाते।"

दिव्यकानन्द।

4. "यदि प्रोढ़ धर्पात बालकों के पालक मरने न पायें तो बुनियादी शिक्षा ही मरने को उनके पास ले जाने का साधन है।"

—महात्मा गांधी।

5. "हो बिचारों सीता सावयक है, एक हमारे सावयक की पीसों को परखने की शक्ति धर्पात विज्ञान, और दूसरी सावयक पूर्वक संयम करने की शक्ति धर्पात सावयक।"

—विनोबा।

6. "सब बात तो यह है कि, जहाँ बिचारियों को यह मान हुआ कि कि वह शिक्षा ले रहा है, वहाँ शिक्षा का नारा धानर ही तुल हो जाता है।"

—विनोबा।

## Western Thinkers on "Education"

THE mind is not a vase to be filled, but a hearth which is to be made to glow.

—Plutarch

A HANDFUL of god life is worth a bushel of learning.

—Herbart

THE crowning excellence of all education is nothing of character.

—Johnnot

EDUCATION is not teaching children to know what they do not know, but to behave as 'they do not behave.

—Ruskin

KNOWLEDGE is not wisdom.

—Bacon

KNOWLEDGE is not a shop for profit or sale, but a rich store-house for the glory of the creator, and the relief of man's estate.

—Bacon

EDUCATION is a child-gardening.

—Rousseau

EDUCATION is not the storing of knowledge but the development of power.

—Orcutt

## भारतीय मानव अधिकार संस्थान Indian Institute of Human Rights

A-14, 15, 16, Parliament Complex, Subot, Mandirgalli Marg, New Delhi-110002  
The Director, Education, Ministry of Education, New Delhi-110001  
Tel: 1 (011) 4617-0411 / 1174  
Fax: 1 (011) 4617-0411

Dr. Surendra Nath Dubey  
117-9, Shriya Nagar,  
Bhopal-466 004

Dear Mr. Surendra Nath Dubey,

Thank you for your letter in response to our advertisement regarding the first workshop programme on Human Rights in Bhopal.

Based on your experience and dedication in the field of Human Rights, we are pleased to appoint you as Member of the Programme Committee for the first workshop programme on Human Rights in Bhopal. We are looking forward to your participation in this programme. We are also looking forward to your participation in the first workshop programme on Human Rights in Bhopal.

You are also invited to participate in the first workshop programme on Human Rights in Bhopal.

The Programme Committee is looking forward to your participation.

Thanking you and wishing you all the best in your work.

With warm personal regards,

Yours sincerely,

Dr. Surendra Nath Dubey

Dr. Surendra Nath Dubey

Dr. Surendra Nath Dubey



**MOTI LAL SINGH**  
Member Parliament  
(1st Term)  
Shriya Nagar, Bhopal (M.P.)  
Tel: 2365, 2366

Sh. S.N. Dubey, Secretary General, All India Federation of Educational Associations, an Educationist, Gandhian, a teacher leader of National repute and a very close associate of Shri S.N. Subhasi hardly needs an introduction. A letter written by Shri S.N. Subhasi to Shri Rajeev Gandhi as back as on 11th March, 1984, wherein he has sincerely expressed his feelings about Shri S.N. Dubey's work and conduct may be relevant.

Shri Dubey has been working for the cause of teachers for almost three decades and has won the appreciation among all alive including Dr. Shankar Dayal Ji Sharma who congratulated him for his restraint, peaceful and graceful persistence in getting the teachers their due way back in 1982 (Annexure-II). Shri Dubey presently represents All India Federation of Educational Associations (founded in 1975) and avuncle body of 45 Janta teachers of India.

(MOTI LAL SINGH)  
17/1/85

Shri S.C. Behar, welcomes justice M.P.  
Kenia 25-6-94(G.P.F., New Delhi)





## QUESTION TO PONDER UPON????????

Date: 24 January, 2015

Subject: Question for Respected PM Mr. Modi and Mr. President Barak Obama

Ref: Mann ki Baat – Views invited by Hon'ble Prime Minister of India

Sir,

My grandfather Mr. Surendranath Dubey in his book “Jai Jagat- His Dreams of 22nd Century”, envisages that future generations would use the slogan “**Victory of Mankind- Jai Jagat**” prior to “**Victory of Nation**”.

He dreams of the world similar to vision which once Sri Aurobindo had and the one carried by saint Vinoba Bhave as the driving force of his “Bhoodan Movement”. In his book “**Jai Jagat- Victory of World**” he is of the firm view that idea of “**One World Government**” would become the reality in 22nd Century.

At the age of 76 he desires that his grand children should carry forward his views. He has devoted 55 years of his life working for the children of this country initially as a “teacher”, lately as a “mentor” promoting “**value based education**” for children in India. With his dreams having strong coherence with Mahatma Gandhiji he seems to be more relevant presently than anytime else.

With the growing radicalism and global threats where countries rather than fearing strong, are subdued by growing internal weaknesses, I would rather not be certain whether and how his dreams of “unified” world with “global citizenship” could ever become a reality?

*He envisages a world of harmony with humanity running as the golden thread in the social fabric of “world society”.*

It is in this context that world leaders could provide a ray of hope. It could become a reality one day if concerted efforts are made in this direction. Learned world philosophers might call this “ancient Indian political philosophy” as regressive, but now it has become imperative for countries like India and USA to take steps outside the myopic purview of “national interests”, taking the whole world in perspective.

I would sincerely request the Mr. Prime Minister Modi and Mr. President Obama to kindly give their views on how should “countries and global society” make efforts for realising the dream of “Vasudev Kutumbakam- “the world is one family”.

Aaditya Mishra  
Student B.Tech  
Mechanical Engineering  
MANIT, Bhopal

## विश्व अहिंसा दिवस

अर्द्धशती से अधिक समय है बीत गया, गए उनको,  
जबकि विश्व का कौना-कौना मान रहा अब भी उनको।

दो हजार सात में बच्चो सब देशों ने मिल सोचा,  
युग-पुरुष गाँधी महान थे नाम जगत में है ऊँचा।

उनका जन्म दिवस दुनियाँ के सब देशों का हो त्यौहार,  
विश्व अहिंसा दिवस मनाएँ दो अक्टूबर है आधार।

सर्वमतों से मान्य हो गया विश्व अहिंसा दिवस महौं,  
यू. एन. ओ. ने छाप लगा दी, दो अक्टूबर है दिवस महौं।

नहीं किसी के जन्म दिवस यों विश्वस्तर पर मनते हैं,  
महामानवों की श्रेणी में बापू को ही गिनते हैं।

आओ बच्चो गर्व करें हम जन्म यहाँ हमने पाया,  
धन्य धरा भारत की, जिसका गुण गौरव जग ने गाया।

यह गुण गौरव है बापू से, श्रद्धांजलि उनको शतवार,  
दो अक्टूबर 'विश्व अहिंसा दिवस' रहा जग को उजयार।

इस प्रकार बच्चों तुम जानो, त्याग और तप होता श्रेष्ठ,  
आज विश्व भर ने स्वीकारा, गाँधी का बलिदान यथेष्ट।



• काव्याभिव्यक्ति •

गुण सागर 'सत्यार्थी'

• संपादन एवं प्रस्तुति •

सुरेन्द्र नाथ दुबे

द्वितीय संस्करण

बैजनाथ प्रकाशन भोपाल/दिल्ली

(Copyright - Baijnath Prakashan)

BHOPAL : H-238, Bag Mugalia, Extn. Bhopal-462 043

Mobile : 09406540290, 09818612417

Printed at : Drishti Offset, Press Complex, Zone-I, M.P. Nagar, Bhopal-11

## प्रथम संस्करण पर प्रतिक्रियाएँ

“..... पुस्तक का विमोचन करने का सुखद संयोग प्राप्त हुआ.....। जीवनमल नाहटा ट्रस्ट की अध्यक्ष श्रीमती लक्ष्मी देवी नाहटा, पुस्तकों को काव्याभिव्यक्ति देने वाले गुणसागर सत्यार्थी एवं पुस्तक के संपादक/प्रकाशक श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे को मेरी ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।”

दिनांक : 22-02-2008

– नवल किशोर शर्मा  
राज्यपाल गुजरात

★ ★ ★

बड़े भाई का पत्र

**भैया गुणी!**

मैं सोचा करता था कि 90 वर्ष की लम्बी आयु तक मुझे विधाता ने पता नहीं किन पापों को भोगने के लिये जिन्दा रखा है? आज उत्तर मिला – कि नहीं, ये तो जन्म जन्मांतर के ‘पुण्यफलों’ का प्रारब्ध है....., मैं धन्य हो गया! मैंने जीवन में पहली बार इस पुस्तक को पाकर जो प्रसन्नता पाई उसे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता।

तुम्हारी लिखी अनेक रचनाएँ ‘बाल महाभारत’, ‘बाल रामायण’, ‘चौखूँटी दुनियाँ’, ‘तीन खूंट का गरम समोसा’ आदि पढ़ीं, सुनीं भी! ‘**किन्तु गाँधी गाथा**’ तो अद्वितीय है, बड़ा ही सुख मिला। इस पुस्तक ने तुम्हें इतना ऊँचा उठा दिया कि कहते हुये डर लगता है कि – तुमने तो वास्तव में परम पूज्य दादाजी (मुंशी अजमेरी) की ऊँचाई ही छू ली! यह कृति तुम्हें चमकायेगी, गहरे से अध्ययन किया तो लगा कि एक-एक पंक्ति बोलती है शायद दादाजी की आत्मा ने ही तुमसे लिखवाई है।

कई पंक्तियाँ तो हृदय को हिला देती हैं! क्या भाषा का प्रवाह, क्या शैली, क्या सरसता? आर्थिक लाभ और सम्मान को तो नगण्य ही समझो। काम बहुत महत्वपूर्ण और आज की महती आवश्यकता का है। इतनी प्रसन्नता तो तुम्हारी ‘मेघदूत’ (बुंदेली अनुवाद) एवं ‘बनवास’ (रवीन्द्र का अनुवाद) इत्यादि के प्रकाशन ने भी नहीं दी थी। श्री सुरेन्द्रनाथ जी दुबे को भी कम श्रेय नहीं है, उन्हें भी हार्दिक स्नेह साधुवाद। मैं गौरवावित हूँ।

– तुम्हारा दादा  
(विद्यासागर शर्मा)  
प्रेम नगर, बालाघाट (म.प्र.)

गुणसागर

★ ★ ★

“..... बच्चे गाएँ गाँधी गाथा की प्रति प्राप्त कर पुलकित हूँ।.....पढ़ते-पढ़ते मैं भी अपने बचपन में पहुँचकर इसे गा उठा।.....”

डॉ. (राय) आनन्द कृष्ण, वाराणसी

★ ★ ★

“..... इस काव्य की रचना करके आप लोगों ने राष्ट्र निर्माण में बहुमूल्य योगदान दिया है।”

– डॉ. आनंद प्रकाश दीक्षित, पुणे

★ ★ ★

“..... यह प्रकाशन ऐतिहासिक है।”

– डॉ. संजय तिवारी, भोपाल

★ ★ ★

“..... बापू के जीवन की छोटी-बड़ी घटनाओं के माध्यम से ऐसा मोहक एवं प्रेरक चित्रांकन किया है कि वह बच्चों के हृदय पर सहज ही अंकित हो जायेगा, मुझे लगता है कि अभिव्यक्ति के लिये मैथिली शरण गुप्त की शैली और द्विवेदी युगीन अभिव्यंजना का चयन बहुत सोच समझकर हुआ है, महात्मा गाँधी को इसी शैली और भाषा द्वारा ही किशोरों तक पहुँचाया जा सकता था। पुस्तक का मुद्रण भी निर्दोष और आकर्षक है।”

– प्रो. कान्ति कुमार जैन, सागर (म.प्र.)

★ ★ ★

“..... पुस्तक तीन घंटे में ही पढ़ गया। रचना बहुत सटीक, सुंदर और सारगर्भित है जो गाँधी जी के व्यक्तित्व को आयने की तरह सामने रख देती है।”

– डॉ. रामायणी प्रसाद, भोपाल (म.प्र.)

★ ★ ★

..... गाँधी जैसे विराट व्यक्तित्व को इस छोटे कलेवर में बड़ी कुशलता और सरलता से समेटा है।

– डॉ. गंगाप्रसाद बरसेया, छतरपुर

★ ★ ★

..... शालेय छात्र-छात्राओं के लिये इस पुस्तक की उपयोगिता स्वयं स्पष्ट है। मैं इस काव्याभिव्यक्ति के व्यापक प्रचार और प्रसार की आकांक्षा रखता हूँ ताकि यह राष्ट्र के नव निर्माताओं के लिये प्रेरणास्त्रोत बने। बालकों को सरल-सहज भाषा में महात्मा गाँधी के निकट लाने का यह अद्भुत प्रयास है।

– देवेन्द्र कुमार जैन, (से.नि. न्यायाधीश) भोपाल (म.प्र.)

★ ★ ★

..... पुस्तक नई पौध को संस्कारित करने का क्रियात्मक उदाहरण है।

– डॉ. लोकेन्द्र सिंह गुर्जर, दतिया (म.प्र.)

★ ★ ★

“..... पुस्तक पढ़ना प्रारंभ किया और एक बैठक में ही इसे पढ़ गया। नई पीढ़ी को गाँधी से परिचित कराने हेतु यह पुस्तक नींव के पत्थर का काम करेगी। इसमें शैक्षिक अनुभव बोलता है। बाल मनोविज्ञान का पूरा ख्याल रखा गया है।”

– डॉ. बहादुर सिंह परमार, छतरपुर (म.प्र.)

★ ★ ★

“..... इस पुस्तक के माध्यम से रचनाधर्मिता और शिक्षकीय जीवन का आलोक देश की सीमाओं को लाँघ कर जो महक बिखेर सका, उससे शिक्षा जगत के साथ साहित्य संसार अभिभूत है।”

– डॉ. कैलाश बिहारी द्विवेदी, (‘निर्दलीय’ हिन्दी साप्ताहिक से)

★ ★ ★

“..... बाल साहित्य का सरस होना, कथ्य रोचक होना, भाषा सरल-सुबोध होना, कथा का आकार संक्षिप्त होना, आवरण पृष्ठ का नयनाविराम होना कि बच्चे उसे देखते ही उसे पढ़ने हेतु लालायित हो जायें..... आदि उसकी अनिवार्य विशेषताएँ हैं। इस कृति में यह सभी विशेषताएँ तो हैं हीं।..... बापू की जीवनगाथा तो सचमुच सुनने लायक है। फिर बच्चों के मुँह से सुनने पर तो इसमें और अधिक मिठास बढ़ जायेगी।”

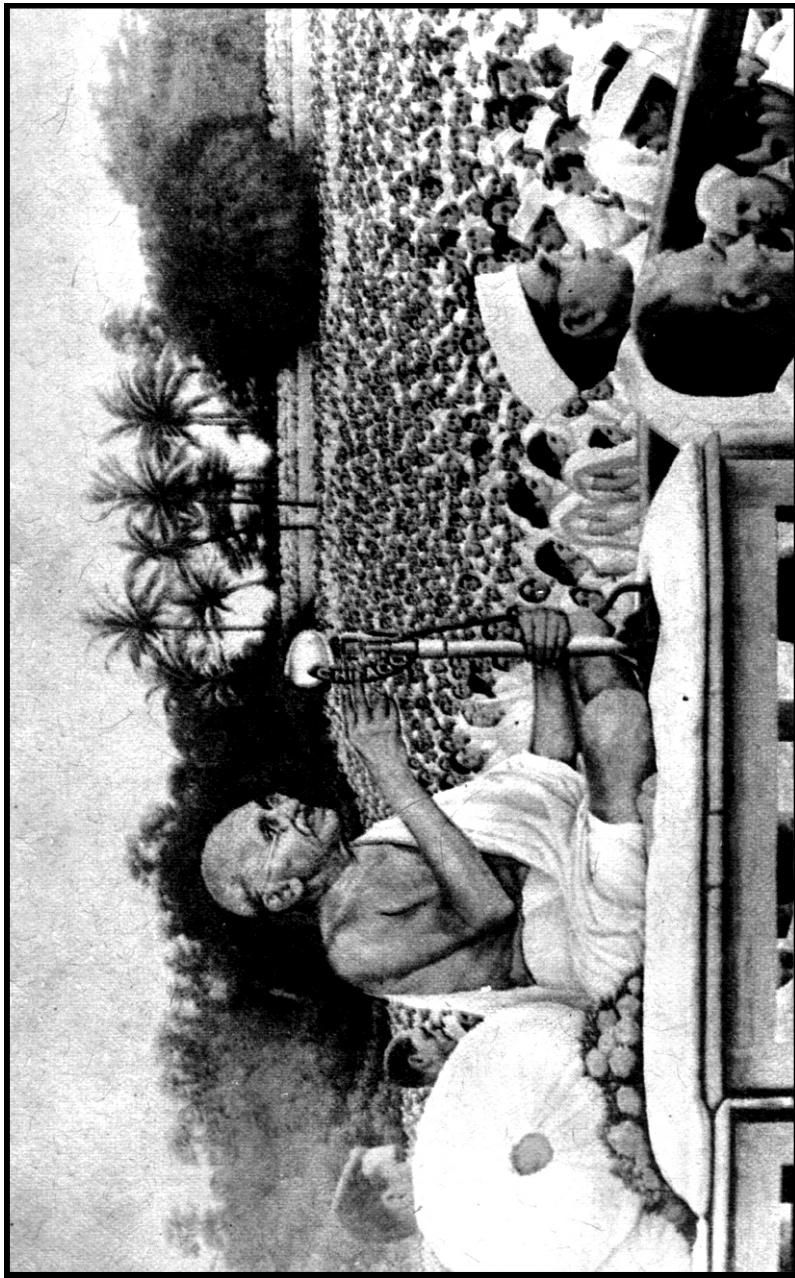
– पं. हरि विष्णु अवस्थी, (दैनिक ओरछा टाइम्स से)

★ ★ ★

“..... यह पुस्तक बच्चों में गाँधी जी के प्रति उत्सुकता एवं जागरूकता बढ़ाती है तथा उन्हें बुनियादी शिक्षा के नवाचार से जोड़ती है। वर्तमान में भारत में सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों द्वारा बालक-बालिकाओं को जिस तरह की शिक्षा दी जा रही है, उसमें मूल्यपरकता, नैतिकता और स्वदेशीपन का पूर्ण अभाव है। इस कारण बच्चे भारतीय संस्कृति व सभ्यता से अलग-थलग पड़ते जा रहे हैं। गाँधीजी का सम्पूर्ण जीवन भारतीय मूल्यों पर आधारित था, इसलिये उसके माध्यम से बच्चों को शिक्षा दी जाना सर्वथा उचित है। यह पुस्तक बालकों और पालकों दोनों के लिये प्रेरक बन सकती है। पुस्तक घर-घर और पुस्तकालयों में पहुँचने योग्य है।.....”

– कैलाश श्रीवास्तव ‘आदमी’, प्रधान संपादक-‘निर्दलीय’ (साप्ताहिक/मासिक)





## यह किताब..... ?

आज देश ही नहीं, सारी दुनियाँ के बच्चे गाँधी जी को अच्छी तरह जानना/समझना चाहते हैं। इस सिकुड़ती दुनियाँ में अब गाँधी का जीवन और उनके विचार अधिक प्रासंगिक हैं।

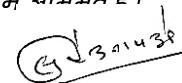
भाई गुणसागरजी तीन दशक से मेरे मित्र हैं। शिक्षक प्रशिक्षण, बाल साहित्य, बाल शिक्षा एवं नई तालीम के प्रयोगों में मेरे सम्पर्क में रहे हैं। वे अपने नाम के अनुरूप गुणों के सागर हैं। उन्होने मुझे बाल महाभारत और बाल रामायण जैसी बाल सुलभ काव्य पुस्तकें भेंट की थीं। रंग-रेखाओं और शब्दों से ही नहीं बाल मन के लिए सरस-सुबोध काव्याभिव्यक्ति का महारथ उन्हें प्राप्त है। उन्होंने विशालकाय महाभारत को अत्यन्त संक्षेप में बाल सुलभ कविता में लिखा है।

मेरे विशेष आग्रह पर गुणसागरजी ने सरल कविता के रूप में गाँधीगाथा लिखी, इसकी जरूरत बहुत दिनों से महसूस हो रही थी कि 'गाँधी के सपनों की दुनियाँ' असंख्य बच्चों के मन पर छा जाए। बच्चे गाँधी जी के जीवन के बारे में जानें, क्यों उन्हें महात्मा कहा और किसने कहा? क्यों उन्हें राष्ट्रपिता कहा? और यह सम्बोधन किसने दिया? दुनियाँ के सभी देशों की सहमति से संयुक्त राष्ट्र संघ ने उनके जन्म दिवस को विश्व अहिंसा दिवस के रूप में स्वीकृत क्यों किया? जैसे अनेक जिज्ञासु प्रश्नों का उत्तर बच्चों को यह किताब दे रही है। मैंने भी यह सभी प्रश्न गद्य रूप में सामने रखे थे। पुस्तक के छन्दों का सहज प्रवाह बच्चों को भाएगा, बच्चे उस प्रवाह में बहेंगे वे गाँधी को सही रूप में जान पायेंगे।

यह किताब कवि ने श्री एस.एन. सुब्बारावजी को समर्पित की है। मैं तो स्वयं अपने को भी धन्य मानता हूँ कि मुझे आधी शताब्दी से आदरणीय सुब्बारावजी से जुड़ने और उनके सानिध्य सुख में रहकर उनपर एक द्विभाषी पुस्तक 'एस.एन. सुब्बाराव एक यायावर महर्षि' - 'S.N Subbaroa - A living Spirit of Mahatma Gandhi', सम्पादित/प्रकाशित करने एवं उन पर एक डाक्यूमेंट्री फिल्म बनाने का गौरव प्राप्त हुआ। इस पुस्तक के अभी तक तीन भिन्न संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। "हम सबने गाँधी जी को तो नहीं देखा है किन्तु लगता है कि श्री सुब्बारावजी के व्यक्तित्व में गाँधी स्वयं साकार हो उठे हैं", अतः उन्हें यह समर्पण सर्वथा उचित है।

सत्यार्थी जी, जीवनमल नाहटा ट्रस्ट, दरियागंज दिल्ली एवं सभी सहयोगी जनों के प्रति भी आत्मीय आभार। यह किताब बच्चों के हाथ देकर मैं अभिभूत हूँ।

24 अक्टूबर 2007  
संयुक्त राष्ट्र स्थापना दिवस



- सुरेन्द्र नाथ दुबे

दूसरा संशोधित संस्करण  
प्रस्तुत करते हुये प्रसन्नता हो रही है।

1 जनवरी 2009



- सुरेन्द्र नाथ दुबे



## बच्चे गाएँ - गाँधी गाथा



दौड़ा-दौड़ा बालक आया,  
माँ को दस का नोट दिखाया।  
सब नोटों पर चित्र यही है,  
जहाँ-तहाँ तो व्यक्ति यही है॥

चित्र कहो माँ है यह जिनका?  
क्यों छपा नोटों पर इनका?  
सब कोई कहते गाँधीजी यह,  
और अधिक नहीं बतलाते वह।

जिज्ञासा है इनको जानें,  
इनको समझें अरु पहचानें।  
माँ ने कहा कि पुत्र हमारे,  
ये तो राष्ट्र पिता हैं प्यारे॥

जग इनको है बापू कहता,  
पितृ भाव ही जिनमें बहता।  
मोहनदास करमचंद गाँधी ॥  
नए विचारों की थे आँधी ॥

बोलो माँ वह कैसी आँधी ?  
जो लेकर आए थे गाँधी ॥  
बहुत उचित है प्रश्न तुम्हारा,  
हृदय प्रसन्न सुन हुआ हमारा॥



माँ बालक को समझाती थी,  
ढँग से किन्तु न कह पाती थी।  
युग के युग यों बीत गए हैं,  
महापुरुष अवतरित हुए हैं।

जब जब हुई धरम की हानी,  
राह दिखाने आये ज्ञानी।  
त्रेता में श्रीराम पधारे,  
पूजनीय हो गए हमारे॥

वही राम रमे तन-मन में,  
गाँधी जी के उर चिन्तन में।  
द्वापर में श्री कृष्ण कन्हैया,  
जग-नौका के रहे खिवैया।

कर्मयोग का पाठ पढ़ाया,  
गीता में बहुविधि समझाया।  
गाँधी के उर में वह गीता,  
करती जीवन परम पुनीता॥

फिर उनमें बुद्धत्व समाया,  
सत्य अहिंसा धर्म सुहाया।  
महावीर स्वामी की शिक्षा,  
व्यवहारिक जीवन की दीक्षा।



करुणा-प्रेम-भाव अपनाकर,  
प्रभु यीशू की शिक्षा पाकर।  
सेवा का व्रत ले जीवन में,  
सन्त-हृदय थे अन्तर्मन में॥

सीख मुहम्मद साहब वाली,  
जीवन में व्यवहारिक ढाली।  
गुरुनानक को हृदय समाया,  
गुरु-वाणी को नित अपनाया॥

सब धर्मों का आदर मन में,  
द्वेष-भावना दिखी न उनमें।  
विश्व बन्ध थे बापू प्यारे,  
राष्ट्रपिता थे वही हमारे॥

जिनकी बातें अति साधारण,  
जटिल समस्या करें निवारण।  
हम जैसे साधारण जन थे,  
किन्तु असाधारण उनमें गुन थे॥

एक बात बिल्कुल साधारण  
बापू की प्रभुता का कारण।  
बन्दर तीन रखे टेबिल पर,  
जिन पर ध्यान रहा जीवन भर॥



पहला बन्दर नयन मूँदकर,  
बैठा था चुपचाप मेज पर।  
बस उसका संदेश यही था,  
बुरा न देखो लक्ष्य सही था॥

दूजा बन्दर कान बन्द कर,  
मुस्काता था वहीं मेज पर।  
उसका भी संदेश यही था,  
सुनो बुरा मत लक्ष्य वही था॥

मुख पर हाथ रखे था तीजा,  
देख और सुन नहिं वह खीजा।  
उसका भी संदेश एक था,  
बुरा न बोलो लक्ष्य नेक था॥

तीनों के गुण को पहचाना,  
गुरु: तुल्य था उनको माना।  
तभी महात्मा वे कहलाए,  
जनगणमन पर प्रतिपल छाए॥

जीवन उनका अति पावन था,  
बेदागी जिनका दामन था।  
गाँधी गाथा बच्चों गाओ,  
गाकर झलक मात्र पा जाओ॥



## जन्म और बाल्यकाल



भारत के गुजरात प्रान्त में वह स्थान सुहावन है,  
पोरबन्दर है नाम धाम का, तीर्थ सदृश मनभावन है।

रहते वहाँ कर्मचन्द गाँधी जो कि प्रतिष्ठित अरु सज्जन,  
पुतलीबाई पत्नी जिनकी, धर्मपरायण-निर्मल-मन॥

अट्ठारह सौ उनहत्तर में दो अक्टूबर दिन आया,  
और उसी दिन इस दम्पति ने पुत्र एक प्यारा पाया।

मात-पिता का लाड़-प्यार था, मोहनदास सु-प्यारा था,  
बच्चों के सँग खेला करता, दिखता उनमें न्यारा था।

शैशव लाड़-प्यार में बीता, पढ़ने की आई बारी,  
उसी गाँव की शाला में फिर जाने की थी तैयारी।

आरम्भिक शिक्षा तो माँ से उस बालक ने पाई थी,  
शाला का आधार हुई वह अन्तस् बीच समाई थी।

शर्मीला बालक शाला में सहमा-सहमा रहता था,  
बच्चों से कम मतलब रखता, नहीं अधिक कुछ कहता था।





ऐसे ही ऐसे पढ़ बालक, ऊँची कक्षा में पहुँचा,  
जहाँ निरीक्षण करने इक दिन इंस्पेक्टर भी जा पहुँचा।

छात्रों की ली गई परीक्षा छात्र सभी घबड़ाये थे,  
माँ की दी नैतिक शिक्षा से गाँधी ही हर्षाए थे।

पाँच शब्द अँग्रेजी में थे लिखने को जो दिए गए,  
उनमें से दो तीन शब्द थे उस बालक को नए-नए।

फिर भी चार शब्द गाँधी ने जैसे-तैसे लिखे सही,  
एक शब्द की स्पेलिंग बालक गाँधी से बनी नहीं।

शिक्षक ने ही मूक इशारा नकल हेतु था किया बहुत,  
नकल अनैतिक मान स्वयं ही माथापच्ची करी बहुत।

और अन्त में गलत शब्द ही लिख नैतिक पथ अपनाया,  
जिसे देखकर शिक्षक मन में और अधिक था झल्लाया।

पुस्तक श्रवणकुमार नाटक की पढ़ने को मिलगई कहीं,  
मात-पिता की सेवा में वह बालक चूका कभी नहीं।

सत्य हरिश्चंद उस बालक ने नाटक देखा बचपन में,  
सत्य-पुजारी बना तभी से जो सीखा था बचपन में।

कस्तूरबा पत्नी थी उनकी जिनका था अतिशील स्वभाव,  
सद्गृहस्थ के साथ हृदय में देश भक्ति का अनुपम भाव।



## उच्च शिक्षा हेतु विदेश यात्रा



अब आगे-उच्च शिक्षा हित उनको बाहर जाना था,  
पढ़-लिख कर सम्मान जनक पद निश्चय उनको पाना था।

गुजर चुके थे पूज्य पिता जी लेकिन जाना ठान लिया,  
अट्टारह सौ अट्ठासी में विदेश हेतु प्रस्थान किया।

माँ के मन में उथल पुथल थी और रही शंका भारी,  
चकाचौंध में फिसल न जाए बेटा मेरा संस्कारी।

खान-पान पाश्चात्य संस्कृति यदि जाकर अपनाएगा,  
मदिरा मांस आदि लेने से क्या मोहन बच पाएगा ?

पकड़ हाथ मोहन का माँ ने अपने सिर पर रखवाया,  
और कसम देकर बेटे को दृढ़ संकल्प सु करवाया।

यही कि किसी परिस्थिति में भी मदिरा कभी नहीं लेना,  
सात्विक और शुद्ध भोजन कर केवल शिक्षा तुम लेना।

समुद्र मार्ग से ही यात्राएँ तब विदेश की होती थीं,  
जो कि यात्रियों के अन्तर्मन अनुभव नए पिरोती थीं।

1. 1885 में पिता कर्मचंद गाँधी का निधन हो चुका था



मोहन जा जहाज में बैठा सोच रहा था मन ही मन,  
कैसे यात्रा होगी पूरी? क्या खा पीकर चलते जन?

सहमा-सहमा ही बैठा वह दूर सभी से था रहता,  
थी प्रतिकूल परिस्थिति पूरी, कहता भी तो क्या कहता?

माँ ने कुछ पकवान मिठाई दे दी थी ले जाने को,  
लम्बी यात्रा में मानो वह हुई सहारा खाने को।

भोजन की केबिन में मोहन नहीं कभी भी जाता था,  
खा कर कुछ पकवान मिठाई अपनी गुजर चलाता था।

देख देख अँग्रेज दूर से आपस में बतियाते थे,  
मूर्ख समझकर वे मोहन को व्यंग पूर्ण मुस्काते थे।

जैसे तैसे यात्रा पूरी हुई प्रथम वह मोहन की,  
रखा पैर इंग्लेण्ड भूमि पर शुरू परीक्षा मोहन की।

नई जगह थी, जलवायु भी नहीं किंचित अनुकूल रही,  
थी पूरी प्रतिकूल परिस्थिति किन्तु प्रतिज्ञा झूल रही।

आँख मीचने पर मोहन को माँ का चेहरा दिखता था,  
सिर पर हाथ और कसम का चित्र सजीवर दिखता था।

मन कहता था उल्टे पावों लौट तुरत भारत जाएँ,  
पश्चिम की विपरीत सभ्यता से छुटकारा तो पाएँ।



किन्तु नहीं, यह कैसे सम्भव? उद्देश्य पूर्ण तो करना था,  
उसके बिन वापस घर जाना, जीते जी ही मरना था।

पग पग पर विपरीत परिस्थिति विचलित मन को करती थी,  
लेकिन माँ की सीख उन्हें फिर उत्साहित ही करती थी।

जल में कमल सदृश रहकर ही मोहन पढ़े विलायत में,  
पढ़े लिखे अरु प्राप्त तजुर्बे रह कर किए विलायत में।

भारत के भी कुछ साथी थे जो मोहन के साथ रहे,  
रंग चढ़ा न उनका इन पर फिर भी मिलकर साथ रहे।

ऊपर से अँग्रेज साहबी ओढ़ रखी थी यों पूरी,  
मानो वे ही लाटसाब, व्यवहारिक शिक्षा थी पूरी।

पाठ्य पुस्तकों से हटकर माहौल वहाँ का पढ़ते थे,  
कैसे रहते लोग यहाँ हैं? यह सब देख समझते थे।

इस प्रकार वह तीन वर्ष तक रह कर पढ़े विलायत में,  
पास परीक्षाएँ सब करके टिके न किन्तु विलायत में।

‘इनरटैम्पल’ के छात्र रहे कानूनी शिक्षा जहाँ मिली,  
पास परीक्षा कर लन्दन से बैरिस्टर की राह खुली।

1 ‘इनर टैम्पल’ – लन्दन की एक कानून की शिक्षा देने वाली संस्था



अट्टारह सौ इकानबै में लौट आप भारत आए,  
भारत भू पर पग रखते ही दुखद सँदेशा थे पाए।

यही कि माता पुतलीबाई हुई दिवंगत दिन बीते,  
इन्हें नहीं दी गई सूचना, लौट न आएँ वे रीते।

छोड़ परीक्षा झट आ जाते, सबको था विश्वास यही,  
ममतामयी सु-माँ का अन्तिम दर्शन भी कर सके नहीं।

ले आशीष गए थे जिनसे फलीभूत करके आए,  
माँ को पाया नहीं लौटकर यह आघात बड़ा खाए।

जिस माँ से संस्कार मिले थे वही नहीं थी दुनियाँ में,  
उपलब्धि जो लेकर आए-किसे दिखाएँ दुनियाँ में ?

अविरल आँसू ही बहते थे जिनका मोल नहीं कोई,  
हाय अभागा हूँ मैं ऐसा, माता सी माता खोई।

### बापू के सपनों का भारत

मैं ऐसे भारत के निर्माण के लिए कार्य करूँगा जिसमें निर्धनतम तबके को भी यह महसूस हो कि यह उसका अपना देश है, जिसके निर्माण में उनकी राय भी मायने रखती हो, एक ऐसा भारत जिसमें न कोई उच्च वर्ग हो और न कोई निम्न वर्ग, ऐसा भारत जिसमें सभी समुदाय सौहार्द के साथ बसते हों। इस भारत में छुआछूत जैसे अभिशाप व मद्यपान और मादक द्रव्य जैसे जहर के लिए कोई जगह नहीं होगी। स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार मिलेंगे। दूसरे देशों के साथ हमारे अच्छे संबंध होंगे। ऐसा होगा मेरे सपनों का भारत।

- मोहनदास करमचंद गाँधी



### बैरिस्टर गाँधी



पितृ शोक के बाद अचानक माँ का शोक हुआ भारी,  
बरदहस्थ अग्रज का पाया जो भविष्य हित सुखकारी।

अग्रज के मन में आशाएँ थी निज भ्राता मोहन से,  
पर मायूस हृदय मोहन का टूट रहा था जीवन से।

तो भी वकालत भारत में शुरू हुई धीरे-धीरे,  
किन्तु दुखी मन, रहा विकल ही, सम्हला वह धीरे-धीरे।

अभी दूर थी मंजिल उसकी किन्तु लगन से लगा रहा,  
इतने में मिल गया निमंत्रण, अफ्रीका ही बुला रहा।

सूट बूट में मोहन गाँधी 'डरबन' पहुँचे जैसे ही,  
प्रथम मुकदमे हेतु 'प्रिटोरिया' चले वहाँ से तैसे ही।

रेल टिकिट प्रथम श्रेणी का लेकर यात्रा शुरू हुई?  
<sup>3</sup>ट्रान्सवाल <sup>4</sup>मेरित्सवर्ग में <sup>5</sup>गोरे से मुठभेड़ हुई।

गोरा एक उसी डिब्बे में वहाँ तभी था घुस आया,  
भारतीय काला जन देखा, देख तुरत वह झल्लाया।

कहा कि - मेरे साथ बराबर बैठ नहीं सकते हो तुम,  
तुम गुलाम भारतवासी हो, बड़े साहब होते हैं हम।

1 व 2. डरबन, प्रिटोरिया - दक्षिण अफ्रीका के नगर हैं।  
3 व 4. ट्रान्सवाल-मेरित्सवर्ग, दक्षिण अफ्रीका के नगर हैं।  
5. गोरे - उन दिनों अंग्रेजों को भारत में गोरा कहते थे।



फेक दिया सामान रेल से और एक धक्का मारा,  
बैरिस्टर गाँधी का उस दिन, उतर गया पानी सारा।

कहने को अपमान भले ही मात्र व्यक्ति का हुआ सही,  
किन्तु देश भारत का सचमुच सिद्ध हुआ अपमान वही।

याद आई तुलसी की वाणी, मूर्तरूप में पहचाना,  
“जद्यपि दारुण दुःख जग नाना, सवर्ते कठिन जाति अवमाना”।

बेचारा गोरा नहीं समझा नींव यही आजादी की,  
गाँधी के उर जाग गई थी चिंगारी आजादी की।

तलवारों—तोपों पर उसके मन में था अभिमान बड़ा,  
वह गाँधी को समझ न पाया जो बनकर तूफान खड़ा।

गाँधी नहीं अजब आँधी थे नैतिक गुण जिनमें भरपूर,  
सत्य अहिंसा का जादू था टिकता कैसे कोई शूर?

दक्षिण अफ्रीका से ही तो था बजा बिगुल आजादी का,  
और शुरु हो गया वहीं से मार्ग नया आजादी का।

तीन वर्ष अफ्रीका रह कर अनुपम अलख जगाया था,  
बैरिस्टर के साथ सु नेता भारत ने तब पाया था।

छैः महिने की छुट्टी लेकर जब गाँधी भारत आए,  
दक्षिण अफ्रीका की हलचल मानो लेकर के आए।

वहाँ भारतीयों की जो हालत, उस पर पुस्तक लिख डाली।  
कई हजार प्रतियाँ छपवाकर यत्र—तत्र भिजवा डाली।



मुंबई में भी एक सभा में सम्बोधन प्रभावकारी,  
उथल—पुथल हो चली देश में, हुई क्रांति की तैयारी।

पूना जाकर तिलक गोखले से मिल सब कुछ बतलाया,  
उन महान नेताओं से भी आशीष आपने था पाया।

भारत में अँग्रेजी शासन हो समाप्त संकल्प लिया,  
आजादी का अलख जगाने, तभी देश में भ्रमण किया।

तभी बुलावा अफ्रीका से एक बार फिर से आया,  
सपरिवार इस बार गए थे, काम जरूरी था आया।

छैः महिने में जो भारत में उनने अलख जगाई थी,  
उसकी खबर वहाँ गोरों ने बढ़—चढ़कर ही पाई थी।

उतर न पाए वे जहाज से, रोका गया उतरने से,  
गाँधी कब रुकने वाले थे डरे नहीं जो मरने से।

हुआ बहुत संघर्ष बाद में उतर सके ज्यों—त्यों गाँधी,  
भारत के गिरमिटियों के हित मानो पहुँचे बन आँधी।

अफ्रीकी अँग्रेज क्रुद्ध थे,—दो इल्जाम लगाए थे,—  
पहला—भारत में प्रचार उनके विरुद्ध कर आए थे।

दूजा यह कि भारतीयों को <sup>7</sup>नेटाल निवासी बना रहे,  
क्योंकि वहाँ भारतवासी मिल क्रान्ति योजना बना रहे।

जिसके सूत्रधार हैं गाँधी, उन गोरों ने जाना था,  
अफ्रीका में रहें न गाँधी, ऐसा उनने ठाना था।

6. गिरमिटिया— भारत जैसे देशों से अनुबन्ध पर लाये गये मजदूर

7. नेटाल— दक्षिण अफ्रीका का एक नगर।





आँख किरकिरी थे गोरों की, तो भी गाँधी जमे रहे,  
मिला समर्थन उनको भारी गिरमिटियों हित लगे रहे।

अमानवीय व्यवहार सहे पर गाँधी कृतसंकल्प रहे,  
सपरिवार बहु कष्ट उठाए, फिर भी मीठे बचन कहे।

सत्य अहिंसा की ताकत को नहीं गोरे पहचान सके,  
पग-पग पर बाधाएँ डाली, जीत दिलों को नहीं सके।

ऐसे ही ऐसे—अट्टारह सौ निन्यानबै सन आया,  
‘बोअर युद्ध हुआ शुरू माहौल और भी गरमाया।

तीन वर्ष घनघोर युद्ध अफ्रीका में हुआ महा,  
बोअर है निर्दोष स्वयं में, गाँधी ने स्पष्ट कहा।

फर्स्टेड का कार्य युद्ध में अँग्रेजों हित अर्पित था,  
जबकि हृदय बोओरों के सँग करुणा सहित समर्पित था।

अतः घायलों की सेवा हित टुकड़ी पहुँची ‘लाम पर,  
ईशा और मुहम्मद के सम सेवा अर्पित लाम पर।

जन—जन ने गाँधी गुण गाए, सहन शीलता थी अनुपम,  
अकथनीय साहस की चर्चा सब के मुख पर थी हरदम।

समाचार पत्रों में छपती नित्य प्रशंसा गाँधी की,  
जहाँ तहाँ बहु हुई प्रशंसा गाँधी की उस आंधी की।

ईसा और मुहम्मद मानो गाँधी उर में पैठे थे,  
भूल सभी निज की पीड़ाएँ, पर दुख हरने बैठे थे।

8. बोअर युद्ध— दक्षिण अफ्रीका में हालेण्ड से आकर बसने वालों तथा अँग्रेजों के बीच होने वाला युद्ध, दक्षिण अफ्रीका में हालेण्ड से आये लोग ‘बोअर कहे जाते थे।  
9. लाम— युद्ध का मोर्चा ।



‘परहित सरिस धर्म नहीं’, आदर्श वहाँ साकार हुआ,  
यीशु—मुहम्मद—बुद्ध आदि का दर्शन एकाकार हुआ।

जिन गोरों ने कठिन यातना सपरिवार दी गाँधी को,  
उन गोरों हित क्षमा—भाव में, जग ने देखा गाँधी को।

उन्निस सौ, एक में फिर से भारत आने को सोचा।  
तभी वहाँ के लोगों ने भी विदाई—समारोह सोचा।

सोने चाँदी की चीजें, बहुरत्न जटिल उपहार मिली,  
किन्तु उन्हें साथ लाने—अंतस् की अनुमति नहीं मिली।

अतः सभी उपहार कीमती ट्रस्ट हेतु दे दिए गए,  
जो कृतज्ञ भाव से उनको भेंट वहाँ पर दिए गए।

सत्य अहिंसा त्याग भावना गाँधी की परिचायक थी,  
कथनी—करनी एक रही जो सदा देखने लायक थी।

भारत वापस आकर गाँधी मुम्बई में ही रहते थे,  
और वहाँ दीन—दुखियों की वकालात वे करते थे।

वकालात का पेशा उनका धीरे—धीरे जम पाया,  
उन्निस सौ दो में आमंत्रण अफ्रीका से फिर आया।

गाँधीजी ने समझ लिया था जाने की मजबूरी है,  
उद्देश्यों की पूर्ति हेतु भी रहना वहाँ जरूरी है।

फिर से पहुँच गए अफ्रीका इस प्रकार परिवार सहित,  
रहे कहीं भी लेकिन गाँधी, रह न सके उद्देश्य रहित।



था उद्देश्य उनका अति पावन—सब को सम अधिकार मिले,  
भेद भाव की घृणित भावना, कहीं देखने नहीं मिले।

हेनरी एस. एल. पोलक नामक युवक एक मिल गया वहीं,  
आत्मीय सम्बन्ध बनाते देर तनिक भी लगी नहीं।

<sup>10</sup>जोहान्सवर्ग से कार्य हेतु डरबन जाना था गाँधी को,  
स्टेशन तक गया छोड़ने, वही युवक तब गाँधी को।

पुस्तक एक दे, कहा युवक ने इसे साथ ले जाएँ आप।  
लम्बी यात्रा समय कटेगा बोर नहीं फिर होंगे आप।

जोहान्सवर्ग से डरबन तक रेल चली फिर पूरी रात,  
पुस्तक पढ़ते रात कटी थी, पढ़ते- पढ़ते हुआ प्रभात।

लेखक जॉन रस्किन की वह पुस्तक थी बहुत सजीव,  
'अन्टू दि लास्ट', पुस्तक ने परिवर्तन कर दिया अजीब।

गाँधी की जीवन शैली को बदल दिया उस पुस्तक ने,  
सूट-बूट वाले गाँधी को सहज बनाया पुस्तक ने।

उतर गई पोशाक वहाँ की धारण कर साधारण बेश,  
महानगर तजकर रहने को खोजा गया नया परिवेश।

डरबन से कुछ दूर खरीदा फार्म उन्होंने रहने को,  
गाँवों का परिवेश सुखद था <sup>11</sup>फार्महाऊस था कहने को।

आश्रम वहीं बना जहाँ पर गतिविधियाँ गतिशील रहीं,  
बैठ वहाँ पर वही किया जो सदा बोल कर बात कही।

10. जोहान्सवर्ग – दक्षिण अफ्रीका का एक नगर

11. फार्महाऊस – फिनिष् में जहाँ आश्रम की स्थापना की गई



उन्निस सौ छै: आते-आते परिवर्तन हो गया बहुत,  
लिखने कहने की तुलना में कर दिखलाया कार्य बहुत।

उसी समय व्रत ब्रम्हचर्य का आजीवन ले लिया गया,  
जिसे निभाया था दृढ़ता से, अनुभव होता गया नया।

ट्रांसवाल गवर्मेण्ट गजट में अध्यादेश प्रारूप आया,  
जिसे देख गाँधी के मन में यही विचार उमड़ आया।

कि अहित बड़ा होने वाला है भारतीय जन सजग रहें,  
अध्यादेश न होवे स्वीकृत, शासन से यह बात कहें।

कह काला कानून अवज्ञा करना मन में ठान लिया,  
किया संगठित भारतीयों को, बुला सभा सन्देश दिया।

गाँधी बोले—सुनो भाइयो, सरकार गलत करने वाली,  
भलमनसाहत रखी ताक पर बुद्धि विवेक से है खाली।

हम को साहस और धैर्य का मिलकर परिचय देना है,  
सत्य न्याय के लिए लड़ेंगे यही प्रतिज्ञा लेना है।

जोशीला भाषण सुनकर फिर जन-जन पर यह असर हुआ,  
करें अवज्ञा झुकें नहीं हम, शुरू अहिंसक समर हुआ।

दौड़ पड़ी गोरों की टुकड़ी बंदी बना लिया सबको,  
गाँधी सँग में जेल गए यों कारावास मिला सबको।

गाँधी की यह प्रथम सजा थी उन्निस सौ आठ सन् में,  
रहे जूझते जिससे दृढ़ता आई थी उनके मन में।



समझ लिया फिर अँग्रेजों ने केवल गाँधी यहाँ विशेष,  
किया संगठित सबको उसने मानें सब उसका आदेश।

<sup>12</sup>एल्बर्ट कॉर्टराइट फिर, मिले जेल में गाँधी से,  
स्थिति से समझौते वाली बात करी जा गाँधी से।

कहा कि – पहले भारतवासी तोड़ अवज्ञा लौटें सब,  
विद्रोही वर्ताव छोड़ दें, – हम कानून बदल दें तब।

जैसा जो है आप चाहते वैसा करने हम तैयार,  
पहले बात हमारी मानें, तभी करें हम पुनर्विचार।

सबको सम अधिकार मिलेगा, यह वादा करते हैं हम,  
आन्दोलन की राह छोड़ दो और बनो सहयोगी तुम।

गाँधी ने ली मान शर्त यह और सभी को समझाया,  
हुए वहाँ कुछ लोग विरोधी जिनका पारा चढ़ आया।

तब पठान मीरआलम को, कैद किया था गोरों ने,  
बापू से विरोध करने का, मजा चखाया गोरों ने।

रिहा कराओ मिल आलम को, वह भी भारत माँ का लाल,  
अगर भूल उसने कर दी तो, क्षमा करेंगे हम हर हाल।

हम आपस में लड़लें-भिड़लें, किन्तु दिलों में प्यार रहे,  
फूट न हममें पड़ने पाए, गाँधी ने मृदु बचन कहे।

उधर शर्त समझौते वाली नहीं मानी अँग्रेजों ने,  
झूठ बोल कर दगा दिया था, गाँधी को अँग्रेजों ने।

12. एल्बर्ट कॉर्टराइट – अफ्रीका में तत्कालीन जनरल स्मट्स का प्रतिनिधि एक अँग्रेज अफसर



ज्यों का त्यों कानून चलाया किंचित नहीं उसे बदला,  
यह मिथ्या व्यवहार देख कर गाँधी ने भी रुख बदला।

तेज हुआ आन्दोलन जिसको सत्याग्रह था नाम दिया,  
बहुत समय तक अफ्रीका रह गाँधी ने था काम किया।

सत्याग्रह-व्रत धारण करके, परहित में ही सदा जिए,  
कई बार वे जेल गए थे, जुल्म भयंकर सहन किए।

प्रतिपल यीशु और मुहम्मद, बुद्ध उन्हें थे याद रहे,  
अगर पड़ोसी भूखा है तो, खुद को भोजन व्यर्थ कहे।

रोम-रोम में राम रमे थे, गीता रही कर्म –आधार,  
जगने उनको कहा संतसम, करुणामय जिनका संसार।

सर्वोदय का भाव अगर 'अन्दू दि लास्ट' से था पाया,  
<sup>13</sup>टॉल्सटाय, <sup>14</sup>रोम्याँरोला-संपर्क उन्हें अति ही भाया।

व्यक्ति बुरे से बुरा भले हो, उस से नहीं हताश कभी,  
नहीं बुराई स्थाई है, जाग जाय सदभाव कभी।

इसीलिए तो दुश्मन तक ने उन्हें संतसम था माना,  
उनके जैसा एक पुरुष भी नहीं जगत में पहचाना।

'अचरज पुरुष' उन्हीं गाँधी को <sup>15</sup>आइंस्टीन कह सकता है,  
होगा नहीं विश्वास किसी को नर ऐसा हो सकता है ?

13. टॉल्सटाय, – विश्व प्रसिद्ध साहित्यकार

14. रोम्याँरोला – विश्व प्रसिद्ध साहित्यकार

15. आइंस्टीन – विश्व प्रसिद्ध महान वैज्ञानिक





## भारत ही मेरा कुटुम्ब



लगभग यों सताइस वर्ष तक रहे विदेशों में गाँधी,  
और वहाँ का बहु अनुभव ले भारत आए थे गाँधी।

कितने क्या संघर्ष झेलकर नैतिकता पर डटे रहे,  
नहीं झुके तो नहीं झुके वे, अँग्रेजों के जुल्म सहे।

काँच सरीखा उनका जीवन हरदम रहा पारदर्शी,  
गंगाजल सा पावन जिनका हृदय सु-कोमल समदर्शी।

कोई वाद नहीं अपनाया, पर निन्दा से दूर रहे,  
नित्य नवीन प्रयोग किए बहु, लेकिन अनुचित नहीं सहे।

उन्निस सौ पन्द्रह में गाँधी लोट पुनः भारत आए,  
ज्यों का त्यों सत्याग्रह भी वे आजादी हित ले आए।

कुशल क्षेम परिवार सहित जब पूछ रहे थे जन उनसे,  
'भारत ही मेरा कुटुम्ब है', यह उत्तर पाया उनसे।



## विश्व कवि और विश्व मेधा



सम्बोधन में कहा महात्मा जन गण मन के 'गायक' ने,  
जिनको अपना मित्र बनाया जन गण मन के 'नायक' ने।

जग प्रसिद्ध हो गए महात्मा पूजे गए तुल्य वे देव,  
और विश्वकवि को दुनियाँ ने, सदा पुकारा कह गुरुदेव।

श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर से गाँधी का यों मिलन हुआ,  
विश्व कवि-विश्व मेधा का मिलन सु-तीर्थ प्रयाग हुआ।

गाँधी मानो खेत गेहूँ के, रवि थे बाग गुलाब के,  
गाँधी क्रियाशील दो कर थे, रवि थे छन्द किताब के।

गाँधी सेनापति सेना के, रवि पायलेट अग्रगामी,  
गाँधी मुड़े हुए सिर वाले, रवि-केसावलि थी नामी।

गाँधी रहे त्याग की मूरत, रवि थे पूर्ण प्रकृति प्रेमी,  
दोनों ही प्राणी महान थे, था भारत जिनका प्रेमी।

विगत सदी के पूर्वार्द्ध के ये दोनों ही नायक थे,  
एक कर्मयोग व्यवहारिक, दूजे उसके गायक थे।

एक दूसरे के प्रति उनके मन में आदर भाव रहा,  
देश-समाज की उन्नति में दोनों का समभाव रहा।

1. जनगणमन के 'गायक'—गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने गाँधी जी को 'महात्मा' कहा जो प्रचलित हो गया।
2. जनगणमन के नायक— महात्मा गाँधी
3. रवि— रवीन्द्रनाथ टैगोर का संक्षिप्त नाम







## सत्याग्रह आश्रम



इसी बीच विचार बहुत से उमड़ रहे थे बापू के,  
जिनको मूर्त रूप देने हित भाव जगे कुछ बापू के।

बहुआयामी गतिविधियों का फिनिष्क आश्रम याद आया,  
सत्य अहिंसा करुणा वाला जादू सब पर था छाया।

कला, कला के लिए मात्र नहीं, जीने की भी कला जरूर,  
ऐसी हो तालीम देश की, रखे नौकरी से जो दूर।

पराधीनता किसी क्षेत्र में नहीं कभी भी हितकारी,  
पर आश्रित होकर क्या जीना? निज के कार्य न हों भारी।

स्वावलम्बन हो जीवन में तभी सफलता मिलती है,  
कार्य हमारे, करें दूसरे? यह बातें बहु खलती है।

अतः आश्रम अब स्थापित करें फिनिष्क के ही जैसा,  
गतिविधियाँ हों सब प्रकार की, उत्पादन भी हो वैसा।

विधिवत सीखें और सिखाएँ दस्तकारियाँ भी सारी,  
कर्मयोग का पाठ पढ़ें जन, जो स्वराज्य के अधिकारी।

करके यही विचार अनूठे आश्रम का देखा सपना,  
मिले कहाँ उपयुक्त जगह? साकार होय सपना अपना।



साबरमती नदी के तट पर सत्याग्रह आश्रम की नींव,  
रख गाँधी जी अति प्रसन्न थे—अब मजबूत पड़ी है नींव।

हुए प्रयोग जो आगे चलकर बेसिक शिक्षा कहलाई,  
और नई तालीम मार्ग से जीवन्त कल्पना नव आई।

था जिसमें 'समवाय अनूठा क्रियाशील हो ज्ञान मिले,  
कर्म—ज्ञान का तानाबाना बन फूले और फले।

कुछ दिन में ही आना—जाना लोगों का हो गया वहाँ,  
ब्रिटिश हुकूमत थी घबराई—गतिविधियों को देख वहाँ।

सत्य अहिंसा करुणा वाला जादू सब पर छाया था,  
हुए कार्य सब गहरे धँस कर, समझ न कोई पाया था।

तभी एक परिवार आश्रम में रहने को आया था,  
वह 'अन्त्यज कुटुम्ब बापू ने, प्रेम सहित अपनाया था।

था अछूत भय सता रहा था समाज के ठेकेदारों का,  
आश्रमवासी होकर उसको बोध हुआ अधिकारों का।

लेकिन बापू तो बापू थे, नहीं व्यापता उनमें भय,  
स्वयं अभय रह अन्त्यज को भी किया अभय।

आज सदृश तब नहीं जमाना, रूढ़िवादिता छाई थी,  
छूत—अछूत की गहरी रेखा मिटने में कठिनाई थी।

ऊँच — नीच जैसे वर्गों में भारत बँटा हुआ था तब,  
प्रथम लड़ाई देश एकता की उनको लड़नी थी तब।



1. समवाय — इसका शाब्दिक अर्थ ताना बाना है गाँधी जी ने शिक्षा में जर्बदस्त प्रयोग किया था जिसमें उत्पादक क्रियाकलापों को ताने के रूप में विस्तारित करके अपेक्षित ज्ञान को बाने के रूप में भरा जाए।
2. अन्त्यज — हिन्दू वर्ण व्यवस्था में चौथा और अंतिम वर्ण शूद्र माना गया जिसे आज दलित कहते हैं, उसी जाति में उत्पन्न अर्थात् दलित।

नहीं कोई कानून साथ था, दलितों को अपनाने का,  
करते रहे सामना गाँधी तो भी उसी जमाने का।

आश्रम में परिवार सदृश ही अन्त्यज जब रहने आया,  
सोच नहीं सकते गाँधी ने कैसे उसको अपनाया?

पग-पग पर बाधाएँ आई, लेकिन वे थे डिगे नहीं,  
जबकि सभी प्रतिकूल परिस्थिति यत्र-तत्र सर्वत्र रही।

अँग्रेजों से बाद, प्रथम तो लड़े कुरीतो से ही वे,  
रहे जूझते उस आश्रम में ऐसी बाधाओं से वे।

घर की सारी छोड़ समस्या लड़ नहीं सकते औरों से,  
पहले जूझे घरवालों से, लड़े तभी वे गोरों से।

करके तब मजबूत संगठन, भेद-भावना को तोड़ा,  
दलित जनों को अपनाया और समाज को भी मोड़ा।

आश्रम को सहयोग आर्थिक मिलना भी कुछ कठिन हुआ,  
लेकिन गाँधी हुए न विचलित नव 'आशा-संचार हुआ।

दलित वर्ग की बस्ती तक में गाँधी पहुँचे हिले-मिले,  
रहे उपेक्षित दलित युगों से जाकर उनसे गले मिले।

इन्हीं उपेक्षित दलित जनों का शोषण होता था भरपूर,  
श्रम को महिमा मंडित करके चाहा करना शोषण दूर।

संकल्पित हो दलित वर्ग का था गाँधी ने हित साधा,  
हुए न विचलित आई भले ही उनके सम्मुख नित बाधा।



## विद्यार्थी भी साथ हुए



उन्निस सौ सोलह सन् आया – बढ़ी देश में थी हलचल  
आश्रम से बाहर निकले वे जगह-जगह पहुँचे थे चल।

हिन्दू विश्वविद्यालय काशी में, हुआ तभी संस्थापित था,  
पण्डित मालवीय के द्वारा जो कि वहाँ स्थापित था।

माह फरवरी में उद्घाटन उसका होने वाला था,  
उद्घाटन का उत्सव पूरी गरिमा पाने वाला था।

आमंत्रित –राजा –महाराजा पहुँचे थे सोत्साह वहाँ।  
वाइसराय की समुपस्थिति में उद्घाटन की रस्म जहाँ।

चमक दमक से था आलोकित वातावरण वहाँ पूरा,  
रत्न जटित वस्त्र आभूषण, वैभव दिखता था पूरा।

आदर्शों की कोरी बातें सबके मुँह से झरती थी,  
मानो वे सबके हित चिन्तक, मृदुवाणी मन हरती थी।

उसी सभा में गाँधी जी को अपना भाषण देना था,  
साधारण वस्त्रों में पहुँचे – वैभव से क्या लेना था ?

चार फरवरी को गाँधी का भाषण ज्यों ही हुआ शुरू,  
वैभवशाली लोगों का उठ जाना भी हो गया शुरू।



खरी चुकाई गाँधी जी ने नहीं किसी को छोड़ा था ।  
चमकीले उस वैभव पर ज्यों ब्रम्ह – अस्त्र ही छोड़ा था।

वैभव पूर्ण जिन्दगी से जो तुलना हुई गरीबी की,  
भारत की तस्वीर दिखा दी – जो थी पूर्ण गरीबी की।

छात्र वहाँ थे अति उत्साहित वाह – वाह ही कहते थे,  
वैभवशाली चले गए थे – सच्चाई से डरते थे।

यह सब देख रुके न गाँधी, मानो आई वहाँ आँधी,  
वैभव को जो उड़ा ले गई, डटे रहे केवल गाँधी ।

केवल मुट्ठी भर लोगों के जाने का नहीं पड़ा असर,  
गाँधी का जादुई असर था, दौड़ गई थी नई लहर।

सबने मिल स्वीकार किया यह—अब परिवर्तन लाना है,  
सत्याग्रह की राह चलें हम, देश स्वतंत्र कराना है।

था विद्यार्थी वर्ग प्रभावित नई रोशनी मिली जिसे,  
गाँधी के पीछे चलने को सब कोई थे कमर कसे।

होड़ लगी सबकी आपस में गाँधी के सँग जाने की,  
सत्याग्रह के मूल मंत्र को तन—मन से अपनाने की।

गाँधी के आवाहन से यों भड़क उठी चिन्गारी थी,  
युवा शक्ति ने ली अँगड़ाई जो सब पर ही भारी थी।

सत्याग्रह में कूद पड़े जब विद्यार्थी इस देश के,  
नींव हिली साम्राज्यवाद की, जागे भाग्य स्वदेश के।



## सत्याग्रह चम्पारण में



उन्निस सौ सत्रह की घटना कौन भूलने वाला था ?  
जब लखनऊ काँग्रेस अधिवेशन पहले होने वाला था।

सत्याग्रह आश्रम से बापू पहुँचे थे अधिवेशन में,  
एक गरीब किसान मिला था उनसे उस अधिवेशन में।

चम्पारण विहार से आया पीड़ाओं को सुना दिया,  
जमींदार गोरों का शोषण रो—रो कर था प्रकट किया।

वहाँ प्रथा 'तीनकठिया की, पिसते जिसमें सभी किसान,  
गोरे साहब शोषण करते, रो भी सकते नहीं किसान।

चलता जो कानून वहाँ पर वह गोरों के हित में है,  
बहे पसीना हम दीनों का – लाभ उन्हीं के हित में है।

श्रम शोषण का नहीं मिलेगा एक उदाहरण अन्य कहीं,  
जिसमें बस गोरों की चाँदी, पेट श्रमिक का पले नहीं।

अतः निमंत्रण देने आया – चम्पारण में आएँ आप,  
स्वयं देखिए निज आँखों से, समझ जाएँगे अपने आप।

बापू ने आश्वासन देकर, कहा –अवश्य ही आऊँगा,  
रहना भी यदि पड़े मुझे तो, कुछ दिन को रह जाऊँगा।

1. तीनकठिया – जिसमें चम्पारण के किसानों को अपनी जमीन के 3/20 हिस्से में अंग्रेज जमींदारों के लिए नील की खेती करने की बाध्यता का कानून था।



सुनकर हुआ प्रसन्न बहुत, वह फूला नहीं समाया था,  
आशा का संचार हुआ यों आश्वासन जो पाया था।

अगली यात्रा कोलकता की गाँधी जी को करनी थी,  
उस यात्रा में निज बचनों की रक्षा उनको करनी थी।

कोलकता से लौटे बापू— अपना बचन निभाया था,  
चम्पारण बिहार पहुँचे थे, — देख समझ सब पाया था।

जाते ही कुछ मिली धमकियाँ, उन्हें बिहार से जाने की  
और किसानों के पचड़े में, बीच न उनको आने की।

ऐसी धमकी से क्या डरते? डरे नहीं जो कहीं कभी  
नोटिस मिला अदालत से भी, चले जाइये शीघ्र अभी।

लिखित रूप में करी अवज्ञा, जाऊँगा मैं अभी नहीं,  
जब तक काम न पूरा होगा, तब तक तो मैं रहूँ यहीं।

ताँता लगा किसानों का सब आकर व्यथा सुनाते थे,  
व्यथा कथा उन दीन जनों की सुन बापू लिखवाते थे।

पटना से दिल्ली तक इससे उड़ी नींद अँग्रेजों की।  
चाल चली बहुतेरी लेकिन नहीं दाल गली अँग्रेजों की।

नोटिस की जो हुई अवज्ञा, अपराध बड़ा उसको माना,  
और मुकदमा गाँधी जी पर थोप दिया था मनमाना।

पेशी हुई अदालत में तो बापू अति उत्साहित थे,  
क्यों कि दीन किसानों का वे पहुँचे ही करने हित थे।



नहीं अपराध बोध था मन में, आत्म शक्ति से भरे हुए,  
थे गोरे कमजोर स्वयं में, गाँधी जी से डरे हुए।

पेशी की तारीख बढ़ा देने पर उनने जोर दिया,  
बापू ने तब खुद को था अपराधी स्वीकार किया।

कहा— अदालत दण्ड मुझे दे कर लूँगा स्वीकार अभी,  
व्यर्थ मुकदमे की तारीखें बढ़ने दूँगा नहीं कभी।

बिना रुके बयान दे डाला बापू ने तत्काल वहाँ,  
सुनकर थे सब हक्के—बक्के, रहे ताकते उन्हें वहाँ।

मेहनतकश मजदूर किसान क्यों हीन जिंदगी जीते हैं?  
कभी आपने सोचा भी है? क्या खाकर वे जीते हैं ?

उनको वस्त्र नहीं जुटते हैं, खाने के भी लाले हैं,  
बहा पसीना मेहनत करते — मुँह पर डाले ताले हैं

मानवता को लजा रहे क्यों? सब इन्सान बराबर हैं,  
मानव ही मानव का शोषण करते यहाँ सरासर हैं।

इस अनीत के लिए लड़ूँगा , रोके नहीं रुकूँगा मैं,  
और अवज्ञा नित्य करूँगा, किंचित नहीं डरूँगा मैं।

डर केवल ऊपरवाले का जिसने सबको जन्म दिया,  
डरूँ भला क्यों उन लोगों से जिनने स्वयं अनर्थ किया।

नहीं मुझे परवाह किसी की दीनजनों हित रहूँ यहाँ,  
दीनों मे ही ईश्वर रमता, ईश — प्रार्थना करूँ यहाँ।

सरकारी आज्ञा से पहले बुद्धि — विवेक को मानूँगा,  
मानवता की खातिर मुझको दण्ड मिले स्वीकारूँगा।





मैंने जब अपराध स्वयं ही किया आज स्वीकार यहाँ,  
तारीख बढ़ा देने की कहिए आवश्यकता ही रही कहाँ?

हुए निरुत्तर सुन बापू को, नहीं कोई तारीख बढ़ी,  
रखा सुरक्षित किन्तु फ़ैसला, आशा की उम्मीद बढ़ी।

बाइसराय को तब बापू ने, अथ से इति तक लिख भेजा,  
उठा लिया ही जाय मुकदमा – लाटसाब ने लिख भेजा।

हुआ मुकदमा खत्म और फिर रंग नया चम्पारण में,  
अँग्रेजी शासन ने भी मिल साथ दिया चम्पारण में।

कार्य स्वयं में था साधारण, लेकिन हुआ असाधारण,  
शोषण की वह नीति मिटी थी, गोरे थे जिसका कारण।

बापू ने उद्घोष किया था—यह जोर जुल्म अँग्रेजों का,  
देश हमारा, नहीं चलेगा हुकम यहाँ अँग्रेजों का।

थे अँग्रेज यीशु अनुयाई, किन्तु चले विपरीत सदा,  
पर पीड़ा को कभी न समझे, करते शोषण रहे सदा।

बापू ने चलकर दिखलाया यीशु – मार्ग पर सचमुच में,  
कथनी – करनी एक नहीं थी, उन गोरों की सचमुच में।

सत्य अहिंसा के बल पर ही मार लिया मैदान वहाँ,  
गई जमींदारी गोरों की सुख से जिया किसान वहाँ।

क्रान्ति और सत्याग्रह का अन्तर यों सबने जाना था,  
सत्य—अहिंसा की ताकत को दुनियाँ ने पहचाना था।

कथनी – करनी एक हो जिसकी वही सफलता पाता है,  
इस घटना से मिली प्रेरणा— विजय सत्य ही पाता है।



## शांतिपूर्ण सत्याग्रह



तीनकठिया, कानून हटाने जहाँ सफलता पाई थी।  
रोलटएक्ट से भी भारत में नई समस्या आई थी।

चम्पारण की भाँति देश में जगह – जगह बेहाली थी,  
थे मजदूर किसान संकट में नहीं कहीं खुशहाली थी।

लेकिन बापू स्वस्थ नहीं थे अति कमजोरी आई थी,  
दूध न पीने की भी उनसे शपथ कभी जो खाई थी।

लेकिन हालत जर जर होती मुश्किल बनी प्रतिज्ञा थी,  
डॉक्टर हार गए समझाते टूटी नहीं प्रतिज्ञा थी।

'रोलटएक्ट के विरोध में सत्याग्रह होता कैसे?  
समझा बुझा दूध बकरी का दिया गया जैसे तैसे।

सत्याग्रह के हित बापू ने सबको था सन्तुष्ट किया,  
देश—समाज की सेवा करने स्वास्थ्य हेतु वह दूध पिया।

मान लिया, रोलट नियमों की नहीं जरूरत देश में,  
सविनय भंग' नियम करने की ज्योति जगी फिर देश में।

उत्तर—दक्षिण, एक किया था, पश्चिम से पूरब तक एक,  
भारत पूरा एक हो गया, सविनय भंग लक्ष्य था एक।

1. रोलटएक्ट – रोलट नाम के अँग्रेज अफसर द्वारा चलाया कानून।



सत्याग्रह का मूल मंत्र तब गाँव-गाँव में गूँजा था,  
सविनय भंग के लिए तराना प्रेरक स्वर में गूँजा था।

चेन्नई में कस्तूरीरंगा, अमृतसर सत्यपाल साधा,  
स्वामी श्रद्धानन्द, हकीम अजमल ने दिल्ली को बाँधा।

नायडू सरोजनी मुम्बई में, थे हिन्दू मुस्लिम एक हुए,  
भाषा-संस्कृति थी अलग अलग लेकिन मिलकर सब एक हुए।

था चमत्कार उस चर्खे का, सूत्र में देश समाया था,  
भेदभाव मिट गया दिलों से, प्रेम परस्पर छाया था।

मुम्बई, चेन्नई, पंजाब, सिन्ध, गुजरात प्रान्त मिल एक हुए,  
वन्देमातरम् के सँग में अल्ला हो अकबर घोष हुए।

किचलू ने तभी तार भेजा बापू को उनने बुलवाया,  
बापू अमृतसर को निकले, पलवल में उन्हें उतरवाया।

गाँधी जी बन्दी हुए नहीं, कि जन तूफान उमड़ आया,  
हत्प्रभ अँग्रेज हुकूमत थी दिल्ली का दिल भी थर्राया।

भूचाल सदृश तब भारत में हलचल ही दिखती जहाँ तहाँ,  
अँग्रेज देख भयभीत हुए संगठन देखकर गजब यहाँ।

बापू का था चमत्कार कि देश हुआ मिल एकाकार,  
सत्य अहिंसा के बल से काँप उठी पूरी सरकार।

समाचार अखबारों में नित जहाँ तहाँ से आते थे,  
घटना दर घटनाएँ होती गोरे मन में घबड़ाते थे,

2. पलवल – मथुरा और दिल्ली के बीच एक रेलवे स्टेशन।



ऐसी स्थिति में पलवल में जो अभद्र व्यवहार किया,  
अपने ही पैरों पर मानों गोरों ने खुद वार किया।

पगलाए तब सभी फिरंगी नहीं सूझता मार्ग उन्हें,  
यात्रा बाधित कर बापू की वापस मुम्बई भेज उन्हें।

लेकिन पूरा देश एक था –क्या मुम्बई क्या अमृतसर ?  
भेजा जाय कहीं बापू को, उनको समान थे सभी नगर।

मुम्बई भी पंजाब सरीखा सत्याग्रह के रँग में था।  
बापू आए पुनः लौट जब जुलूस उन्हीं के सँग में था।

पायधुनी में घुड़सवार दस्ते ने आकर जब रोका,  
भगदड़ मची मरे बहुतेरे, ग्रिफिथ कमिश्नर ने टोका।

मिस्टर गाँधी, यह सब केवल हुआ तुम्हारे ही कारण,  
सत्याग्रह, आदर्श, वगैरह क्या जानें जन साधारण ?

वे केवल हुड़दंग करेंगे-शांति भंग हो जाएगी,  
अतः शान्ति के लिए हमारी फोर्स वहाँ पर जाएगी।

अगर चाहते फोर्स न पहुँचे-बन्द करो भाषण देना,  
सुनकर सब उत्तेजित होंगे उन्हें शान्ति से क्या लेना ?

बापू बोले – हम दोनों के बीच बड़ा मतभेद यही,  
शान्तिपूर्ण सत्याग्रह होता जिसमें हुल्लड़ कभी नहीं।

हुल्लड़ अरु आपस के दंगे मात्र आपके कारण हैं,  
सत्य अहिंसा का व्रत हमने किया हृदय में धारण है।

1. पायधुनी- मुम्बई का एक स्थान विशेष जहाँ सत्याग्रह जोरों पर था।
2. ग्रिफिथ- मुम्बई में तत्कालीन अँग्रेज कमिश्नर



जहाँ-जहाँ प्रतिबन्ध लगेगा शान्ति वहीं पर होगी भंग,  
केवल मुम्बई नहीं, आज सम्पूर्ण देश ने बदला रंग।

अपनी फोर्स हटाकर देखें शान्ति भंग नहीं होगी,  
हमें काम अपना करने दो भलमनसाहत तब होगी,

किन्तु क्रूर अफसर गोरों पर पड़ा वहाँ विपरीत प्रभाव,  
सत्ता के मद में वे भूले, मानवता का रहा अभाव।



## सविनय अवज्ञा स्थगित



काँग्रेस की महासमिति ने दिल्ली में प्रस्ताव किया था,  
सविनय अवज्ञा-सत्याग्रह जो बिन हिंसा स्वीकार किया था।

लेकिन पहले एक क्षेत्र में यह प्रयोग करने की नीति,  
बापू ने समझाई सबको सत्याग्रह करने की रीति।

कहा कि मेरी सहमति के बिन अन्यत्र नहीं कुछ करना है,  
यह प्रयोग बारडोली में सबसे पहले करना है।

इतने में फरवरी पाँच का समाचार जब यह आया,  
चौरीचौराँ में लोगों ने अंग्रेज पुलिस को मरवाया।

छोड़ अहिंसा के पथ को यों हिंसक पथ पर मुड़ जाना,  
इस घटना को बापू ने , सिद्धान्त की हत्या ही माना।

कहा- नहीं अंग्रेज मरे हैं, मरा मात्र सिद्धान्त वहाँ,  
बापू के विपरीत हुआ यों जनमत भी दिगभ्रान्त वहाँ।

बैठ गए उपवास पर बापू आत्म शुद्धि फिर करने को,  
हुआ स्थगित सत्याग्रह था शेष बचा क्या करने को?

सब थे बापू के अनुयाई था देश संगठित एक हुआ,  
सुन बापू का ऐसा निर्णय जनमत कुछ विपरीत हुआ।





## सत्याग्रह फिर शुरू हुआ



बापू फिर पंजाब गए जहाँ बहुत कुछ काम हुआ,  
गाँव-गाँव में घूमे, उनको स्थिति का अनुमान हुआ।

उन्सिस सौ पच्चिस में फिर भ्रमण कार्यक्रम था उनका,  
फिर तो पूरा देश बना था कार्यक्षेत्र ही तो उनका।

इसी भ्रमण में देख निकट से जन जीवन स्थिति जानी,  
रचनात्मकता को सत्याग्रह की प्रथम जरूरत थी मानी।

खादी पहनें, हिन्दी सीखें, छुआछूत मन से छोड़ें,  
बहनें भी अब प्रगति-मार्ग चल अपने घूँघट को छोड़ें।

जाति-पाँति की मिटें लकीरें भारत एक हमारा हो।  
देश-जाति पर मर मिटने का दृढ़ संकल्प हमारा हो।

एक स्वदेशी व्रत हो अपना, वस्तु विदेशी कभी न लें,  
एक अमिट उद्देश्य हो अपना, लक्ष्य हेतु मिल सतत चलें।

सायमन कमीशन तभी देश में ब्रिटिश राज्य से था आया,  
जिसका आना अट्ठाइस में नहीं किसी को भी भाया।

कर बुलन्द आवाज किया फिर बहिष्कार कमीशन का,  
बापू के विरोध के कारण चला न दाव कमीशन का।



## दाँडी मार्च



उन्सिस सौ तीस आने पर बापू ने उद्घोष किया,  
तोड़ें अब कानून नमक का दृढ़ता से संकल्प लिया।

बारह मार्च को छोड़ आश्रम निकल पड़े दाँडी की ओर,  
अठहत्तर साथी थे सँग में पदयात्रा की थी उस ओर।

मिले राह में गाँव-नगर जो वहाँ सभा करते जाते,  
यह सब दृश्य देख नागरिक अचरज में थे पड़ जाते।

पाँच अप्रैल तीस साँझ में दाँडी पहुँच गए बापू,  
छः को प्रातः निज हाथों से नमक बनाए थे बापू।

पदयात्री थे अति उत्साहित नमक बना भर भर थाली,  
उद्बोधन भी हुआ वहाँ पर बापू का प्रभावशाली।

दाँडी की यह खबर फैलते देर लगी नहीं भारत में,  
और नमक कानून तोड़ने लगी होड़ फिर भारत में।

जहाँ – तहाँ थे लोग बनाते नमक स्वयं ही हाथों से।  
हुई अपूर्व यह पहली घटना नमक बना जब हाथों से।

मानों नमक कानून तोड़ने आई देश में हो आँधी  
आँख किरकिरी अँग्रेजो के बने वहाँ पर थे गाँधी।





जोश-खरोश के साथ चल पड़ा नमक बनाने का अभियान,  
गिरफ्तार कर बापू को फिर लिया उन्हें अपराधी मान,

चमत्कार बापू-वाणी का सम्पूर्ण देश में था छाया,  
चौका-चूल्हा छोड़ नारियों ने सत्याग्रह अपनाया।

घर-घर से कुलीन माँ-बहनें, बहू-बेटियाँ निकल पड़ीं,  
धारण कर केशरिया बाना सत्याग्रह में कूद पड़ीं।

जहाँ शराब की थी दूकानें धरना धर वे बैठ गईं,  
बिकने और न पीने देंगी, दृढ़ निश्चय में पैठ गईं।

और विदेशी कपड़ों की दूकानों पर भी जा पहुँचीं,  
बिक न सके फिर वस्त्र विदेशी शक्ति देश की जा पहुँची।

कितना किया अपमान अभद्रतम सहन धैर्य से करती थीं,  
सत्याग्रह के हेतु देवियाँ दम-दम पर दम भरती थीं।

यह सब देख देश भर में यों-नींद उड़ी थी गोरों की,  
हत्प्रभु थे, कुछ नहीं सूझता अक्ल मरी ज्यों गोरों की।

वाइसराय लॉर्ड इरविन के पैर काँपने लगे तभी,  
लगता उसको गई हाथ से ब्रिटिश हुकूमत हाय अभी।

हुआ वहाँ जादुई करिश्मा, सत्याग्रह की आँधी का,  
दीवानी थी दुनियाँ सारी देख त्याग तप गाँधी का।



## गोल मेज परिषद लंदन में बापू



यों मंजिल दर मंजिल चलते देश हुआ दीवाना था,  
स्वतंत्रता की कीमत को अब जन-जन ने पहचाना था।

उन्निस सौ इकतीस आते ही ब्रिटिश हुकूमत नर्म हुई,  
सत्य – अहिंसा के सम्मुख थी मानो उनको शर्म हुई।

सत्याग्रहियों को छोड़ा फिर बिना शर्त ही जेलों से,  
रद्द किया कानून नमक का, डरे उमड़ते मेलों से।

महिलाओं के धरनों पर से रोक हटाई गई तभी,  
जब्त हुई थी जो जायदादें वापिस कर दी गई सभी।

जगा आत्म विश्वास जनों का, उर उल्लास समाया था,  
भूल गए जो मिली यातना, विजय पर्व ज्यों आया था।

वाइसराय से शिमला में भेट का न्यौता जब पाया,  
गोलमेज परिषद में तब ही था बापू को बुलवाया।

लगभग तीन महीने तक था लन्दन में डेरा डाला,  
जहाँ पड़ा था गाँधी जी से उन अँग्रेजों का पाला।

सरल जगाना है सोए को, किन्तु नहीं जग सकता वह,  
जो सोने का किए बहाना आँखें मींच पड़ा यदि रह।



हजम नहीं सच्चाई की थी केवल औपचारिक व्यवहार  
और जार्ज पंचम तक अक्षम समझ स्वयं को थे लाचार।

बड़ी-बड़ी आशा थी सबको निर्णय कुछ अच्छा आए,  
खाली हाथ गए थे बापू खाली हाथ लौट आए।

आकर जो देखा बापू ने परिवर्तन हो गया बड़ा,  
ब्रिटिश हुकूमत ने रँग बदला, देख बखेड़ा हुआ खड़ा।

भेजे गए पुनः जेलों में गाँधी जी के अनुयाई,  
बरबरता की क्रूर नीति ही जहाँ तहाँ नजर आई।

जो माहौल छोड़कर बापू भारत से थे वहाँ गए,  
बदल गया माहौल सभी वह गिरफ्तार कर लिए गए।

बतिस से तेतिस तक बापू रहे यरवदा जेल में,  
दिनचर्या ज्यों की त्यों चलती बापू की उस जेल में।

सूत कातने को चरखा तब पेटी में तैयार किया,  
और यरवदाचक्र उसी चरखे को उन ने नाम दिया।

सेवाग्राम आश्रम वर्धा के निकट बना बाद में एक,  
बेसिक शिक्षा के प्रयोग, किये गये थे वहीं अनेक।

सत्याग्रह की वह गतिविधियाँ, चली यहीं से रच इतिहास,  
सेवाग्राम आश्रम बापू का जग को देता रहा प्रकाश।



## अंग्रेजों ! भारत छोड़ो



मानवता को क्रूरता से रोंदता कुचलता हुआ,  
मिथ्या ही दम्भ में उछलता-मचलता हुआ।  
द्वितीय विश्व युद्ध था अनचाहे आ गया,  
उन्निस सौ उन्तालीस फिर खून से नहा गया।

भारत तटस्थ रहा, लेना न देना था,  
किन्तु युद्ध - भट्टी में झोंक उसे देना था।  
यही नीति गोरों की आई व्यवहार में,  
भारत को आँच लगी व्यर्थ के ही भार में।

एक ओर जर्मनी, इटली जापान थे,  
इंग्लैण्ड रूस अमरीका दूसरी कमान थे।  
दोनों मदमस्त हुए युद्ध शुरु जोरों से,  
हितकर यह युद्ध नहीं, कौन कहे गोरों से ?

उन्तालीस से ब्यालिस तक विभीषिका लख युद्ध की  
सिसक उठी धरती महावीर और बुद्ध की।  
युद्ध सर्वनाश का ही कारण बताया था,  
अंग्रेजों को बापू ने कह कर समझाया था।

दिशा विश्व शान्ति की किसी ने ना चुनी,  
बर्बाद विश्व करने को घात प्रतिघात बुनी।  
बापू ने समझ लिया व्यर्थ इन्हें समझाना,  
सर्वनाश पर तुले, -करते हैं मनमाना।

शुरु किया चालीस में सत्याग्रह व्यक्तिगत,  
सत्याग्रही प्रथम हुए विनोबाजी व्यक्तिगत।



एक-एक कान में थे मूल मंत्र फूँकते,  
हत्प्रभ से भारत में प्राण नया फूँकते ।

युद्ध हेतु शासन को कौड़ी न देना हैं,  
फौज में न भर्ती हों, गाँठ बाँध लेना है।  
गाँव-गाँव, नगर-नगर सीख यही पहुँच गई,  
दमन चक्र हुआ शुरु बढ़ती त्यों आग गई।

नेहरू – विनोबा से शुरू हुई धर-पकड़  
लाखों जन आगए भूली सब ऐंठ अकड़।  
बन्दी बनाते कितनों को कहाँ तलक?  
ताँता न टूटता प्रातः से साँझ तलक।

जेलों में इंचभर जगह कहीं शेष नहीं,  
सत्याग्रही आते गए थमने का नाम नहीं  
अस्थायी जेलों का प्रबन्ध हुआ जहाँ-तहाँ  
आगाखों महल बना जेल तत्काल वहाँ ।

आगाखों महल वही देता गवाही है,  
देखी थी जिसने वहाँ होती तबाही है।  
बन्दी बन रहे वहाँ बापू-कस्तूरबा बाई,  
साथ रहे उनके प्रिय महादेव देसाई।

पूना का महल वह खास कारागार था,  
खास कैदी थे वहाँ जिन पर ही भार था।  
महादेव देसाई ने प्राण तभी तजे हाय,  
माता कस्तूरबा भी तो हा गई सिधाय।

दोनों आघात सहे थे बापू ने यहीं,  
लेकिन सत्याग्रह से विचलित हुए नहीं।  
गूँज उठा भारत में – ‘अँग्रेजों भारत छोड़ो।’  
कण-कण था बोल उठा, ‘अँग्रेजो भारत छोड़ो।’



## राष्ट्रपिता



नित्य प्रार्थना में बापू को भजन प्रेरणा देते थे,  
भजनों की पंक्ति विशेष को व्यवहारिक अपनाते थे।

‘वैष्णवजन’ ही नहीं, सूर का भजन उन्हें बहुत भाया,  
‘सबसे उँची प्रेम सगाई’, को जीवन में अपनाया।

उन्निस सौ व्यालिस तक वह महायुद्ध कुछ शान्त हुआ,  
वर्षों का वह युद्ध भयानक बर्बादी ही सिद्ध हुआ।

टूट चुके सब महायुद्ध में शक्ति नहीं कुछ शेष रही,  
धिसट रहा गोरों का शासन क्षमता मानो नहीं रही।

लेकिन बापू का सत्याग्रह दिन प्रतिदिन उन पर भारी,  
बढ़ता ही प्रभाव जाता था, हुए स्वराज के अधिकारी।

जिस स्वराज्य के हित प्राणों की कितनों ने दी आहूती,  
जिसके कारण अंग्रेजों की बज न सकी आगे तूती।

उसी समय मतभेद परस्पर उभर देश में थे आए,  
बापू से कुछ क्षमा माँगकर, नई-दिशा को थे धाए।

नेता सुभाष ही अगुआ थे, मारग नया बनाने में,  
छोड़ देश वे गए, जुटे फिर अपनी फौज बनाने में।

भारत छोड़ चले चुपके से, पहुँच गए थे वे रंगून,  
‘मै स्वराज्य अब तुमको दूँगा, बदले में तुम दो अब खून’।



नारा हुआ बुलन्द देश में नया खून था खौल उठा,  
आजाद हिन्द सेना में जयहिन्द जोर से गूँज उठा।

कदम-कदम बढ़े सेना के, गूँजे आजादी के गीत,  
सेनापति सुभाष थे मन से गाँधी जी के भी तो मीत।

सम्बोधित जब किया राष्ट्र को दुनियाँ में गूँजी आवाज,  
प्राइवेट रेडियो से बोले-ले लेंगे हम पूर्ण स्वराज।

उद्बोधन में बापू को था राष्ट्रपिता का सम्बोधन,  
दिया सुभाष ने ही श्रद्धा से सर्वप्रथम यह सम्बोधन।

राष्ट्रपिता शब्द बापू का उस दिन से पर्याय बना,  
नेताजी सुभाष ने ही था, अपना श्रद्धा भाव चुना।

किया फैसला सन् छयालिस में अंग्रेजों ने हो मजबूर,  
भारत को आजाद करें अब, पर सद्भावों से थे वे दूर।

हिन्दू और मुसलमानों को, उत्तेजित कर लड़वाया,  
दोनों के पवित्र हृदयों में, बीज फूट का बो पाया।

कहा-स्वराज्य का किया फैसला, लेकिन शर्त हमारी है,  
भारत-पाक अलग-अलग हैं, उनकी यही चिनारी है।

बापू बोले सुनो भाईयो, हिन्दू-मुस्लिम हैं भाई,  
एक देश में मिलकर रहना, है दोनों को सुखदाई।

पहले भी तो बैठे थे उपवास पे बापू, तीस दिनों का ले अनशन,  
बचा लिया हिन्दू समाज को हो न सका उसका विघटन।

पृथक-पृथक निर्वाचन वाली नीति न बनने दी अपने जीवन,  
अब क्रूरजनों की कुटिल नीति ने आहत कर दिया उनका मन।



हिन्दू-मुस्लिम दोनों में से कुछ में ही विद्वेष बढ़ा,  
एक दूसरे से नफरत का हुआ वितण्डावाद खड़ा।

दोनों आपस में लड़ते थे, रहे परस्पर दुश्मन मान,  
मुसलमान हिन्दू को मारें और न सकते हिन्दू मान।

नोआखाली' धधक रहा था वैमनस्य ज्वालाओं में,  
भाई भाई के दुश्मन थे, खून सभी की आँखों में।

बीन-बीन कर थे जन मारे घर परिवार उजाड़े थे,  
महाप्रलय का दृश्य बना, बजते वीभत्स नगाड़े थे।

मारकाट की भीषण लपटें जला रही नोआखाली,  
बापू ने संकल्प लिया-मैं जाऊँगा नोआखाली।

नेता सब समझाकर हारे, नहीं बापू ने एक सुनी,  
नोआखाली गए कि जैसे क्रूर जनों में शांति मुनी।

मुश्किल था फिर बचकर आना सोच सभी थे घबराए,  
बापू की यह जिद्द देखकर कुछ नेता तो झल्लाए।

जा बापू ने आँसू पोंछे उन उजड़े परिवारों के,  
क्रूर हिंसको बीच गए वे, वार जहाँ तलवारों के।

मानों अंगुलिमाल के सम्मुख बुद्ध स्वयं ही प्रकट हुए,  
जिन्हें देखकर हिंसा भूली, नत हो कर के चरण हुए।

कान पकड़ कर माँफी माँगी-क्षमा करें बापू हमको,  
भूल गए थे राह आपकी, नहीं सताएँ अब उनको।

1. नोआखाली - तत्कालीन बंगाल का एक मुस्लिम बहुल क्षेत्र





सगे भाईयों से बढ़कर वे हिन्दू भाई हमारे हैं,  
प्रेम सहित उनको अपनाएँ यह संकल्प हमारे हैं।

बुझी आग 'नोआखाली की बापू की अगुवाई से ,  
शान्ति बहाल हुई वहाँ पर, उँची प्रेम सगाई से।

बापू के जीवन की बच्चो, यह घटना थी अनुपम नेक,  
हजम नहीं अँग्रेज कर सके—नहीं सुहाया होना एक।

वही आग विहार प्रान्त में सिलगाई थी गोरों ने,  
हिन्दू मुस्लिम को लड़वाने फूट डाल दी गोरों ने।

नोआखाली जैसी लपटें उठी विहार में भी भीषण,  
बापू फिर चल पड़े शान्त करने को आग वही भीषण।

ग्रीष्म काल की दोपहरी में आराम नहीं वे करते थे,  
गाँव—गाँव में पैदल जाते पीड़ाओं से लड़ते थे।

हिंसा पर बापू का जादू हुआ यहाँ असरकारी,  
सत्य—अहिंसा, करुणा के सँग प्रेम सभी पर था भारी।

तलवारों के बीच सन्त यह चला निहत्था जाता था,  
करुणा थी उसकी आँखों में, तनिक नहीं भय खाता था।

नोआखली के जैसे ही, शान्ति बिहार में भी आई,  
समझ लिया था फिर जन जन ने, सबसे उँची प्रेम सगाई।

1. नोआखली – बंगाल प्रान्त का एक मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र।



झंडा लहरा लाल किले पर लेकिन बापू....?



पन्द्रह अगस्त सन् सैंतालिस को था भारत आजाद हुआ,  
दुनियाँ देख रही थी उस दिन देश नया आबाद हुआ।

लाल किले पर लहराया था भारत का झंडा प्यारा,  
पारावार न था खुशियों का हर्ष विभोर देश सारा।

घी के दीप जलाकर सब ने दीपावली मनाई थी,  
गाँव—गाँव अरु नगर नगर में खाई गई मिठाई थी।

जय स्वतंत्र भारत के सँग में जयकारा गाँधी जी का,  
लेकिन वह उस वक्त कहाँ थे? है पता तुम्हें नहीं गाँधी जी का?

लेकिन बच्चों, उस दिन बापू कोलकता के निकट कहीं,  
बाजी लगा रहे प्राणों की, चैन मिला था उन्हें नहीं।

हिन्दू—मुस्लिम और सिख भी हुए खून के प्यासे थे,  
गली—गली में शोक समाया, बजे भयानक 'ताशे थे।

बद से भी बदतर थी हालत, मार—काट था मचा वहाँ,  
महाप्रलय का दृश्य बना था, सुनता किसकी कौन वहाँ?

करुणा और प्रेम बरसाकर आग बुझाई बापू ने,  
भूखे रहकर उस दिन भी तो चैन न पाया बापू ने।

1. ताशा – युद्ध में बजने वाला एक वाद्य विशेष।



कितनी भी सेना जाती पर शान्ति नहीं कर सकती थी,  
क्रूर जनों में वैमनस्य की भीषण आग धधकती थी।

थे हालात वहाँ कुछ ऐसे ज्यों असाध्य बीमारी थी,  
कोई किसी की एक न सुनता जन जन की मति मारी थी।

पूरी तरह हुआ बेकाबू कोलकता क्षेत्र भी जब,  
सत्य अहिंसा की ताकत ले पहुँच गए थे बापू तब।

नोआखाली अरु बिहार की भाँति उन्होंने शान्त किया,  
आपस के सब बैर मिटाकर भाव प्रेम का जगा दिया।

माउण्टबेटन<sup>1</sup> ने कहा चकित हो सम्भव हुआ असम्भव कार्य!  
सत्य अहिंसा की ताकत को दिखा दिया यह करके कार्य।

किसी असम्भव को सम्भव में बदल सकें केवल गाँधी,  
इस धरती पर लेकर आए सत्य अहिंसा की आँधी।

सोत्साह फिर कोलकता में पावन पर्व मनाया था,  
दुख की घड़ियाँ भूल प्रेमयुत पन्द्रह अगस्त सुहाया था।

सत्य अहिंसा की ताकत को दुनियाँ ने पहचाना था,  
बापू ने करके दिखलाया, जो जीवन में ठाना था।

त्याग और तप की स्थिति में गाँधी मात्र अनूठे थे,  
पर दुख हरण हेतु ही उनके, अपने सब सुख छूटे थे।

सत्य हमारे जीवन की प्रयोगशाला में ही मिलता है। जिसे परखने के लिए हर विचारशील  
व्यक्ति अपने जीवन में सत्य के कुछ सम्भव प्रयोग कर सकता है। — महात्मा गाँधी

1. माउण्टबेटन – अंतिम अंग्रेज वाइसराय, स्वतंत्र भारत के पहले गवर्नर जनरल भी बने



हे राम! कहा, अरु चले गए



कभी कहा था बापू ने यों—“पड़ूँ न मैं बीमार कभी,  
चलते फिरते ही जाऊँ अरु डरूँ मौत से नहीं कभी।

हिंसक मुझे मारने आए उसको भी शत शत आशीष,  
उसके प्रति मन मे मिठास हो, क्षमा करे उसको जगदीश।

जिन्हा पर बस राम नाम हो, चेहरे पर मुस्कान रहे,  
सत्य अहिंसा ही सर्वोपरि मुझे देखकर जगत कहे।

तीस जनवरी अड़तालिस को दिल्ली में जब सूर्य ढला,  
हुई प्रार्थना की बेला तो तनिक विलम्ब भी उन्हें खला।

धीरे धीरे कदम बढ़ाते बापू बढ़ते जाते थे,  
हुआ विलम्ब आज कुछ मुझको, आपस में बतायाते थे।

सम्मुख भीड़ चीर कर आया हिंसक एक अचानक था,  
नमन किया बापू को उसने दिखता नहीं भयानक था।

तड़ तड़ तड़ तीन गोलियाँ दागी उसने बापू पर,  
क्षण भर में यह हुआ अचानक असर न जिसका बापू पर।

क्षमा हृदय से कर हिंसक को, लेकर गए राम का नाम,  
बापू ने प्रणाम किया अरु मुख से निकला था हे राम।

बापू की वह वाणी उस दिन अक्षरशः साकार हुई,  
सत्य अहिंसा ही जीती थी, हिंसा की ही हार हुई।



जीने मरने की भी शिक्षा मिली हमें यों बापू से,  
मर कर भी जीवित रहने की युक्ति मिली यों बापू से।

जन्म मरण तो शास्वत सच है सब ही जीते मरते हैं,  
मरकर भी जो अजर अमर हों बिरले ही अवतरते हैं।

गाँधी जैसी पुण्य आत्मा वर्ष हजारों में आती,  
जगती को अलोकित करने जीवन ज्योति जला जाती।

इस धरती से तिमिर मिटाने जीवन ज्योति हुए बापू,  
सत्य अहिंसा करुणा जग को जी कर सिखा गए बापू।

घृणा पाप से, नहीं पापी से, बापू का सिद्धान्त रहा,  
क्षमा मिले प्रभु हत्यारे को मरते दम तक यही कहा।

इस प्रकार मरने का मंगल जग को दिखा गए बापू,  
मानवता-नैतिकता जग को जीकर सिखा गए बापू।

बच्चों के मन निर्मल निश्छल रहे मानते जीवन में,  
इसीलिए बच्चों को हरदम प्यार किया था जीवन में।

देह भले ही पंचतत्व में विलीन हुई थी बापू की,  
किन्तु जगत में पूजित होकर अमर आत्मा बापू की।

जिए राममय, गए राम कह, महावीर, बुद्ध मन में,  
यीशु-मुहम्मद गुरु नानक भी रमे उन्हीं के तन मन में।

सत्य पिता अरु मातु-आहिंसा के सपूत वे सिद्ध हुए।  
अखिल विश्व में शोक समाया कंठ सभी अवरुद्ध हुए।



मानस पुत्र एक थे उनके पोतदार हनुमान प्रसाद,  
सह न सके विछोह बापू का मनपर छाया बहु अवसाद।

कहा- 'कलंक यह अमिट लगा है हिन्दू के माथे पर आज'  
युगों-युगों तक धूल न सकेगा हुआ कलंकित मनुज समाज।

ऐसे महापुरुष की धरती मानवता का है मंदिर,  
जिसकी ही यश कीर्ति जगत में पुजवाएगी यह मंदिर।

सत्य अहिंसा की धरती यह आज जगत में पूज्य बनी,  
गर्व हमें है गाँधी जी पर जिनसे यह पहचान बनी।

शेष काम जो रहे अधूरे, आगे उन्हें बढ़ाएँ हम,  
भारत माँ के बन सपूत, विश्व शांति पथ जायें हम।

अतः आज है अधिक जरूरत उनकी बातों को जानें,  
जो कुछ वे संदेश दे गये उन सब को भी हम मानें।

आज़ादी के बाद कहा था - "दिल्ली देश नहीं जानो"  
भारत नहीं महानगरों में, गाँवों में ही पहचानो।



## गाँधी जी का जंतर



तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ, जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है? तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।





## बापू और बच्चे, कुछ प्रेरक प्रसंग



### पथ दर्शक का भी दिग्दर्शक

पंचगनी में डेरा डाले जब गाँधी जी रहते थे,  
उनसे वहीं भेंट करने जन, आया-जाया करते थे।

मोती वाले लागूभाई बेटे को लेकर आए,  
जिसे देख बापू प्रसन्न अति, फूले नहीं समाए।

कुछ बच्चे तो पहले से ही हिले-मिले थे बापू से,  
उनमें एक और आते ही प्रेम पा गया बापू से।

प्रातः शाम घूमने जाते बालक गण भी जाते साथ,  
मारग चलते बातें करते हिला-हिला कर अपने हाथ।

बापू लाठी टेक साथ में मारग चलते जाते थे,  
मनोविनोद करते बच्चों सँग हँसते और हँसाते थे।

सहसा तभी एक बालक ने लाठी बापू की पकड़ी,  
बापू अरु बालक के कर में झूल गई थी वह लकड़ी।

दौड़ लगाई उस बालक ने बापू भी पीछे दौड़े,  
तभी केमरा ले फोटो हित, पत्रकार भी थे दौड़े।

अखबारों में हुआ प्रकाशित बच्चे के सँग वाला चित्र,  
पथदर्शक का भी दिग्दर्शक, वह बालक बापू का मित्र।



### अनूठा समभाव

बच्चो, तुम सुन चुके कहानी हाथों नमक बनाने की,  
तोड़ नमक कानून देश में अनुपम अलख जगाने की।

लेकिन उसकी पूर्व सूचना बाइसराय को देनी थी,  
यह सब कुछ लिखकर विधि पूर्वक चिट्ठी में समझानी थी।

बापू ने तब पत्र लिखा था दत्तचित्त होकर पूरा,  
लगातार था लिखा दूसरा, पत्र हुआ पहला पूरा।

पत्र दूसरा नहीं किसी नेता-अफसर के नाम लिखा,  
और न ही श्रीमान-प्रतिष्ठित किसी व्यक्ति के हेतु लिखा।

वह था पत्र दलित बच्ची को जो थी मील पाँच सौ दूर,  
दीन-हीन बेचारी दुखिया सभी तरह से थी मजबूर।

लिखा कि-बेटी, पत्र तुम्हारा पढ़कर के दुख मुझे हुआ,  
चोट लगी तेरी उँगली में, दर्द यहाँ पर मुझे हुआ।

टिंचर आयोडीन लगाना मत करना लापरवाही,  
जल्दी तेरा कष्ट दूर हो, खुशियाँ पाओ मन चाही।

राष्ट्रीय हो या दलितों की रही समस्या सम उनको,  
वाईसराय या दलित बालिका दोनों ही थे सम उनको।





### जब बापू भी हार गए

प्रातः शाम नित्य ही बापू सहज घूमने जाते थे,  
आश्रम और पड़ौसी बच्चे साथ सहज हो जाते थे।

चलते-चलते पहुँचे इकदिन बड़ी जेल के बहुत निकट,  
बच्चों को जाने क्या सूझी, खड़े हो गए वहीं ठिठक।

तेज दौड़कर सबसे पहले कौन छुए जेल-दीवार,  
बापू बोले बेशक बच्चो, मान गया यह उचित विचार।

एक दो तीन बोलता हूँ मैं, तुम सब दौड़ लगा देना,  
बच्चे बोले-यह न चलेगा, तुम भी दौड़ साथ देना।

बापू बोले मैं बूढ़ा हूँ मुझे दौड़ से छुट्टी दो,  
बच्चे बोले नहीं दौड़े तो हम लोगों से कुट्टी लो।

उस दिन बालहट के ही आगे बापू थे लाचार हुए,  
बच्चों के सँग दौड़ लगाने हँस कर वे तैयार हुए।

जानबूझकर धीरे दौड़े बच्चे आगे निकल गए,  
बापू बोले देखा बच्चो, हम तो तुमसे हार गए।

उछल-कूद कर बच्चे खुश थे, कहते बापू हार गए।  
बजा तालियाँ चिढ़ा रहे थे, हम से बापू हार गए॥



### कुऊऊ-कुऊऊ सँग लेख लिखवा

बच्चों में बच्चे थे बापू जब कि प्रकृति से अति गम्भीर,  
सभी समस्याएँ निपटाते थे, लेकिन होते नहीं अधीर।

बच्चों से तो प्रेम था इतना, कार्य छोड़ होते उन संग,  
बच्चे बापू से खुश होते, खूब मचाते थे हुड़दंग।

नन्हा बालक पाँच वर्ष का कमरे में सहसा आया,  
दत्त चित्त बापू को बैठा लिखते लेख देख पाया।

कुऊऊ-कुऊऊ, आवाज जोर से करके वहाँ विघ्न डाला,  
लिखना छोड़ तुरत बापू ने कुऊऊ-कुऊऊ ही कहडाला।

भाग गया बच्चा कमरे से, बापू फिर लिखने तैयार,  
पुनः वही कमरे में आकर कुऊऊ-कुऊऊ करता हरबार।

बार बार वह आता-जाता कुऊऊ-कुऊऊ ही करता था,  
नन्हें स्वर की कुऊऊ- कुऊऊ सुन, बापू का मन भरता था।

बालक के सँग कुऊऊ खेलते बापू विचलित हुए नहीं,  
कुऊऊ कुऊऊ के साथ लेख भी लिखना छोड़ा किन्तु नहीं।

थक कर रुका वही बालक जब, तब ही बापू रुके वहाँ,  
खेल खेलते लेख लिखा था, बापू बच्चे बने वहाँ।



## परिशिष्ट-1

पूर्व प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई को तो एक बार रामचरित मानस पर ही प्रवचन करने के लिये कहा गया था। तब उन्होंने मानस में एक सच्चे प्रजातंत्रीय स्वरूप का उल्लेख करते हुये कहा था कि

तुलसी के राम कहते हैं—

“नहीं अनीति नहि कछुत प्रभुताई  
सुनहुं, करुहु जो तुम्हहि सोहाई”  
जौ अनीति कछु भाषों भाई  
तो मोहि वरजहुं भय विसराई”

(राम चरित मानस—उत्तर कांड 42-2-3)

“ मैं जो तुमसे कहता हूँ उसमें अनीति या प्रभुता नहीं है, संकोच और भय छोड़कर तुम मेरी बात ध्यानपूर्वक सुनो, लेकिन तुम्हें जो उचित लगे वही करो।” “हे भाई यदि मैं तुमसे कुछ अनीति की बात कहूँ तो भय भुलाकर मुझे रोक देना।”

इस पर मोरारजी भाई ने कहा कि मानस के इस कथन को मैं इस प्रकार दोहराना चाहता हूँ “प्रधानमंत्री को अपने प्रशंसकों से भी सावधान रहना चाहिये। राम जैसे राजा भी यदि अपने से अनीति होती हो तो प्रजाजनों से उसे रोकने को कहते हैं, तब हमारी क्या गणना? इसीलिये हमें अधिक जागृत रहना चाहिये।”

एक अन्यत्र स्थान पर मोरारजी भाई कहते हैं “स्वराज्य द्वारा राम राज्य स्थापित करने वाले महात्मा गाँधी को कैसे भुलाया जा सकता है। राम राज्य में तो मुख्य वस्तु सत्य की है, धर्म की है..... मानवता का धर्म..... जो धर्म कहे जाते हैं वे तो सभी मानवता की ही सीख देते हैं..... इससे निर्भयता आती है।”

मोरारजी भाई कहते हैं “प्रत्येक व्यक्ति को दूसरे धर्मों का सम्मान करते हुये, अपने स्वधर्म के प्रति जागृत बनाने का काम शिक्षा को करना चाहिये..... मैं अपना विचार शिक्षा शास्त्रियों को भी समझाने के लिये प्रयत्न कर रहा हूँ।”

## परिशिष्ट-2

# बापू

पूज्य महात्माजी संत थे, महापुरुष थे, मानव मात्र का हित चाहने वाले थे और विश्व की एक महान् विभूति थे। वे धर्म और जाति के भेद से ऊपर उठे हुए थे और सत्य एवं अहिंसा के सच्चे पुजारी थे। वे मानवता के खरे प्रतीक थे। ईश्वर की प्रार्थना के लिये जाते समय उनकी निर्मम हत्या करके हत्यारे ने अपना तो लौकिक एवं परलौकिक महान् अहित किया ही, हिंदू-जाति पर भी — जो धर्मतः एवं स्वभावतः अहिंसाप्रिय है — कलंक का अमिट टीका लगा दिया। हिंदू-जाति को इस पाप का फल अवश्य भोगना पड़ेगा। महात्मा जी के चले जाने से विश्व ने एक बड़ी निधि को खो दिया है, इसी से वह शोकाकुल है। पर वे जो संदेश छोड़ गये हैं, वह अमर है और उसका व्यवहार करके ही जगत् उनके प्रति कृतज्ञ हो सकता है और जगत में जो भी अपने को उनका भक्त मानता हो, उसको यही करना चाहिये।

भगवान् सबको सुबुद्धि दे और हम वही काम करें, जिससे उनकी आत्मा को यथार्थ शान्ति मिले।

— हनुमान प्रसाद पोद्दार

संपादक—कल्याण

गीता प्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित ‘कल्याण’ के 1948 के अंक से (साभार)

# महाभागवत पूज्य बापूजी!

पूज्य बापूजी कहा करते थे कि मेरा हृदय चीरकर देखो तो तुम्हें उसमें राम—राम लिखा मिलेगा। बहुतों को यह बात समझने में बड़ी दिक्कत होती हो, पर जब हम उनको ता. 30.1.48 को 5.30 बजे गोली का शिकार होते हुए देखते थे। तो उनके मुँह से ‘हे राम, हे राम’ यह दो शब्द ही निकलते हैं।

मुझे बताया कि गोली लगने पर मुख की आकृति बिगड़ जानी चाहिये, परेशानी चेहरे पर आनी चाहिये, पर वैसा नहीं हुआ। उनका शरीर पहली गोली लगने के बाद भी स्थिर रहा। ‘हे राम, हे राम’ मुँह से निकला, दूसरी गोली के समय बेहोश हो गये थे। उनके चेहरे पर शान्ति थी। कहा जाता है कि उनके चेहरे से दया और क्षमा की भावना झलक रही थी और अन्त समय में उन्होंने अपने घातक को भी प्रणाम किया था। कितना सुन्दर स्वरूप है इस महाभागवत का। ग्रन्थों में संतों के वर्णन पढ़ें। पर प्रत्यक्ष रूप से देखने का अवसर इसी महापुरुष के जीवन में हमें मिला। बोलिये महाभागवत की जय!

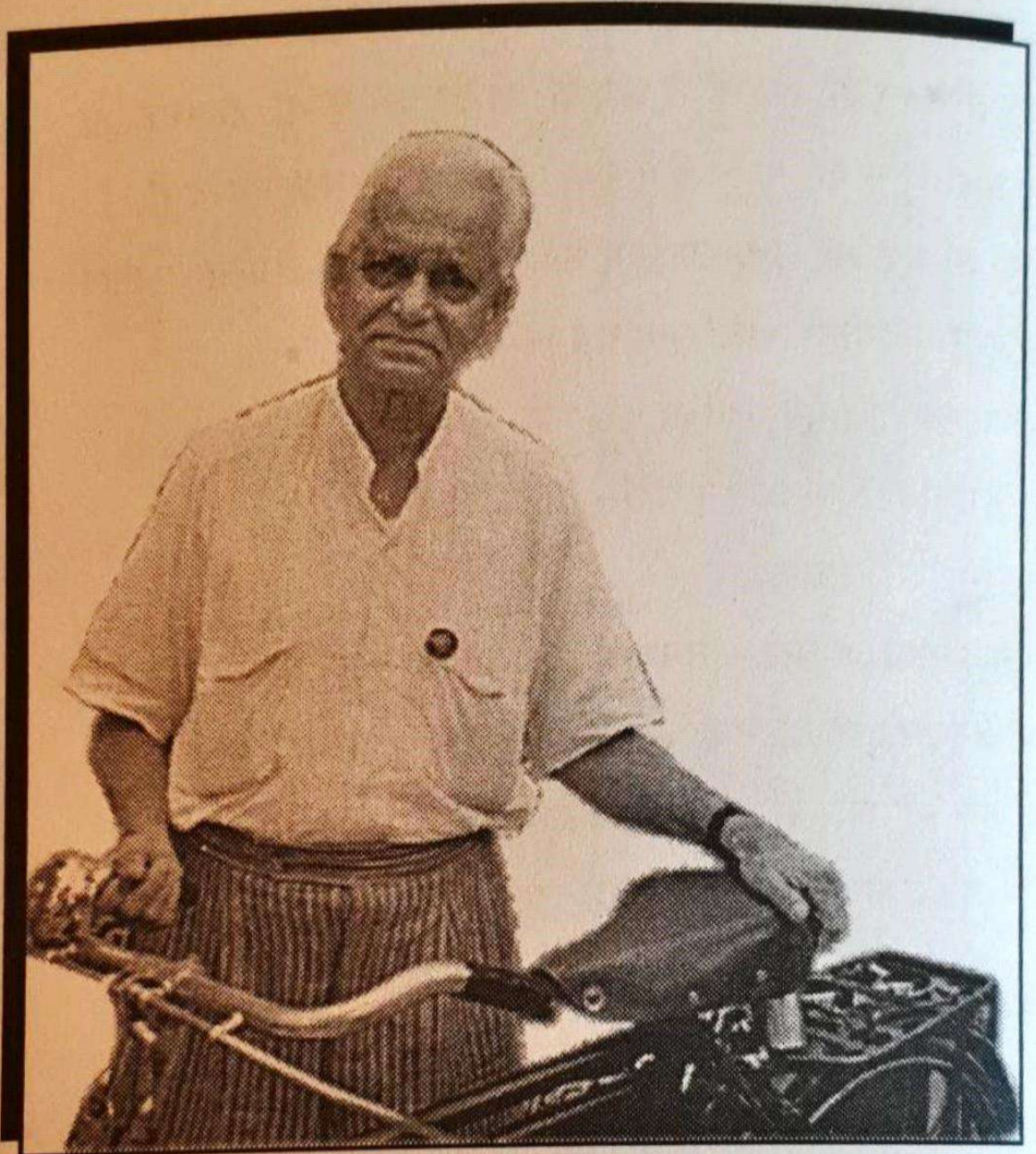
— बाबा राघवदास

गीता प्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित ‘कल्याण’ के 1948 के अंक से (साभार)



# **Dr. S. N. SUBBA RAO**

Living Spirit of Mahatma Gandhi



## **A w a r d s   a n d   H o n o u r s**

- National Communal Harmony Award - (2003)-9-9-2004 to NYP
- Rajiv Gandhi National Sadbhavana Award (2003)-20-10-2003
- World Human Rights Promotion Award (2002)
- National Integration Award (1998) by ICC, Mumbai
- D. Lit. Degree (Hon.) by Kashi Vidyapeeth, Varanasi (1997)
- National Youth Award to NYP by Government of India (1995)

**and many more  
National and  
International awards**



# In The Third Edition of book

रमेश चन्द्र लाहोटी  
मुख्य न्यायाधीश



भारत का उच्चतम न्यायालय  
नई दिल्ली-११०००१

## व्यक्तिगत

दिनांक: 28 अगस्त, 2004

प्रिय श्री दुबे,

आपके द्वारा प्रेषित 'एस.एन. सुब्बाराव - एक यायावर महर्षि' प्राप्त कर प्रसन्नता हुई।

श्री सुब्बाराव एक उद्देश्य के लिए समर्पित व्यक्ति रूप संस्था हैं। आपके द्वारा सम्पादित पुस्तक अनेक युवकों को श्री सुब्बाराव के व्यक्तित्व से प्रेरणा प्राप्त करने का अवसर देगी। दो-तीन बार मुझे श्री सुब्बाराव से व्यक्तिगत रूप से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उनसे मिलना ही प्रेरक है। स्वाभाविक है कि मैं उनसे बहुत प्रभावित हुआ था।

पुनः आपका आभार। श्री सुब्बारावजी से जब भी भेंट हो उन्हें मेरा सादर नमस्कार कहिए।

आपका,

(रमेश चन्द्र लाहोटी)

श्री सुरेन्द्र नाथ दुबे,  
14.एफ, जसोला विहार,  
सेक्टर - 8,  
नई दिल्ली - 25.

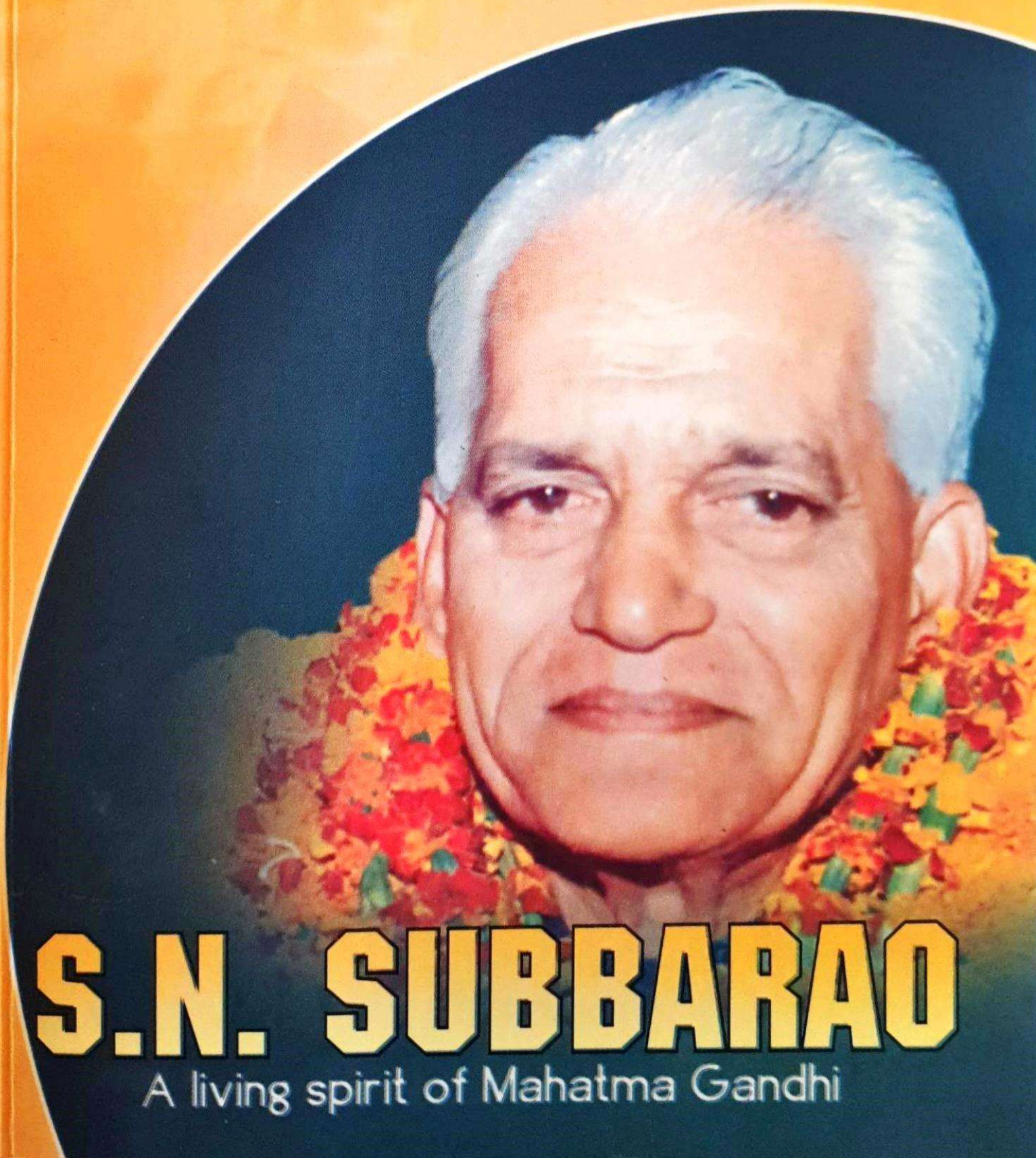
---

निवास : ५, कृष्णा मेनन मार्ग, नई दिल्ली-११००११  
दूरभाष : (०११) २३७९४५४८, २३०१५२९० फैक्स : (०११) २३७९३७४०



एस.एन. सुब्बाराव

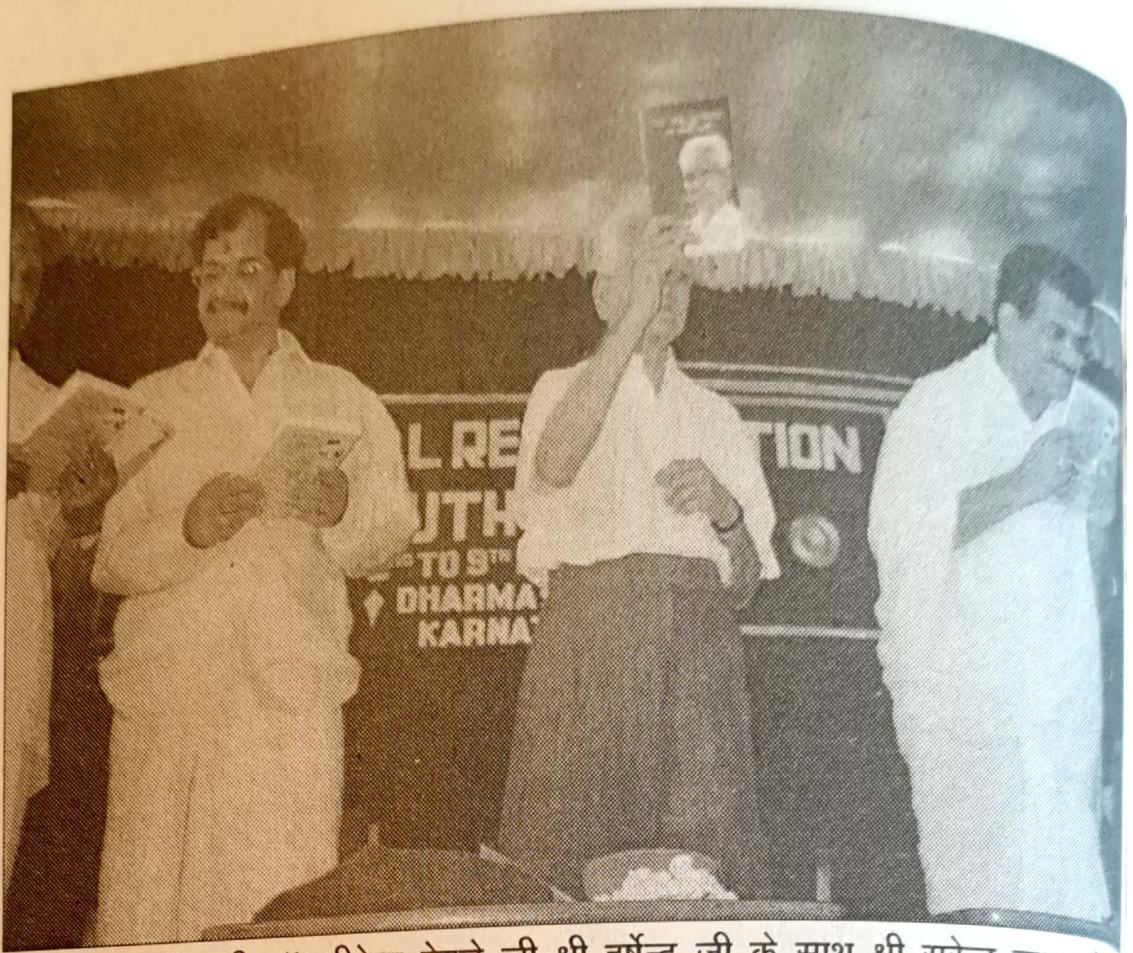
एक यायावर महर्षि



**S.N. SUBBARAO**

A living spirit of Mahatma Gandhi





पूजनीय धर्माधिकारी डॉ. वीरेन्द्र हेगड़े जी श्री हर्षेन्द्र जी के साथ श्री सुरेन्द्र नाथ दुबे द्वारा संपादित पुस्तक 'एस.एन. सुब्बाराव एक यायावर महर्षि' का विमोचन करते हुये बीच में भाईजी



श्री एम.एम. जैकब, राज्यपाल मेघालय के साथ भाईजी धर्मस्थल शिविर के दौरान  
XII



# दो सदियों का प्रणम्य पुरुष

एस. एन. सुब्बाराव

—बालकवि बैरागी

सन् 1951 से 2004 तक आधी शताब्दी से भी ज्यादा का समय कम नहीं होता। भाई साहब श्री सुब्बाराव जी से मैं विगत एक लम्बे अंतराल से जुड़े हुये काम करता हुआ चला आ रहा हूँ। उनके साथ रहना, उनसे बात करना, उनके साथ सभा, समारोह, शिविरों में भाग लेना, उनकी दिनचर्या को उत्सुकता के साथ देखना उनकी जीवन शैली में अपने आप को ढूँढ़ना किसी कविता से कम नहीं है। मैं सौभाग्यशाली हूँ कि मेरे राजनीतिक जीवन को आकार देने में और मेरे साहित्यिक जीवन का सदुपयोग करने में जिन गिने-चुने लोगों का योगदान है उनमें भाई सुब्बाराव जी शामिल है।

बड़ा कठिन है एक ऐसे व्यक्ति के बारे में लिखना जो मनुष्य से ऊपर उठकर 'आदमी' भी है फिर जब और भी कठिन हो जाता है उस आदमी के लिए लिखना जो आदमी से ऊपर उठकर 'भारतीय आदमी' भी हो जाय। इतने लम्बे अंतराल तक का अध्ययन करने पर यदि मैं उसकी विवेचना करने बैठूँ तो सैकड़ों पृष्ठ भी कम पड़ जायेंगे। बेशक उनकी आयु बढ़ती चली जा रही है, लेकिन पिछले 50 वर्षों से मैंने उनकी वेशभूषा, उनका भोजन, उनकी भाषा अध्ययन, देशाटन, विश्व भ्रमण जैसे कामों में कोई बदलाव नहीं देखा। आज तक भाई साहब को कभी भी पूरा पतलून पहने हुये नहीं देखा। वही हाफपेन्ट और वही परम्परागत उनकी शर्ट। अद्भुत संयोग है कि उम्र के साथ उनकी ऊर्जा में भी बढ़ाव देखा जाता है। उनके कार्यक्रम सुनिश्चित होते हैं। अपने सुनिश्चित कार्यक्रमों को पूरा करने में वे कोई समझौता नहीं करते। स्नेहपात्रों को वे स्नेह देते हैं, श्रद्धापात्रों को श्रद्धा देते हैं और सम्मानपात्रों को सम्मान देने में कभी नहीं चूकते। भाषा की शालीनता, वाणी का व्यवहार, परिवार की आत्मीयता और अपनेपन से लबरेज एक ही व्यक्ति को यदि आप ढूँढ़ना चाहते हैं तो भाई साहब श्री एस.एन. सुब्बाराव को ढूँढ़कर अपने आप को धनी बना सकते हैं।

## संपादकीय

## बच्चों को इतिहास की विकृत जानकारी देने से डरिए

हमारी आज की पीढ़ी के बच्चे और किशोर कल जब नौजवान होंगे तब वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं नये-नये तकनीकी उपकरणों और साधनों से सम्पन्न होंगे। उनके पास इंटरनेट इत्यादि के माध्यम से 90 प्रतिशत से अधिक जानकारी तो तथ्यों पर आधारित होगी। वे स्वयं भी ऐतिहासिक तथ्यों को जानने समझने एवं उनका सही सही विश्लेषण कर पाने में भी समर्थ होंगे, तब वे केवल हमारे द्वारा, हमारी मान्यताओं पर आधारित तथ्यों और विश्लेषणों से सम्मत न हो पावें तो हमें अपने झूठे आदरभाव एवं सम्मान के बजाय स्वयं भी समय की परिवर्तित दुनिया के वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने के लिये तैयार रहना चाहिये।

आज का मीडिया, आज के तथाकथित बुद्धिजीवी एवं केवल वोट पाने के लिये राजनीति करने वाले राजनेता भी यह कभी न भूलें कि भावी पीढ़ी अब आँखें बंद करके उन्हें स्वीकार नहीं करेगी और इसके लिये तो वे स्वयं ही उत्तरदायी होंगे। इतिहास या तो उन्हें भुला देगा अन्यथा भावी इतिहास उन्हें कलंकित करेगा। उन्हें ही गलत तथ्य परोसने का उत्तरदायी माना जावेगा।

‘एक अच्छे और प्रख्यात व्यक्ति डॉ. भीमराव अंबेडकर को केवल वोट के लिये इस्तेमाल किया जा रहा है। उनके स्वयं के विचार संविधान निर्माण के बारे में भुला दिये गए हैं। वे स्वयं जवाहरलाल नेहरू के मंत्रीमंडल में कानून मंत्री की हैसियत से ड्राफ्ट कमेटी के प्रभारी थे। डॉ. अंबेडकर के अनुसार सर्व श्री वल्लभ भाई पटेल, मौलाना आजाद, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (जो स्वयं ही संविधान सभा के अध्यक्ष थे), राजागोपालाचारी, कृपलानीजी, पुरुषोत्तमदास टंडन, सेठ गोविन्ददास, मावलंकर, अनंतशयनम आयंगर इत्यादि सैकड़ों लोगों के विचार जानने के बाद संविधान का ड्राफ्ट तैयार किया गया था। सभी ने महात्मा गाँधी के मूलभूत विचारों एवं 1929-30 में ही संसदीय प्रजातंत्र बनाये जाने सम्बंधी विचारों के अनुसार भी कार्य करने का आग्रह किया था जो हुआ। इसके बाद आज तक लगभग एक सौ संशोधन होने के बाद संविधान निर्माण के लिए यश-अपयश एक व्यक्ति का ही क्यों माना जा रहा है।’ आज केवल वोट की राजनीति के लिये वर्तमान के इतिहास को भी स्वहित में उल्लेखित किया जा रहा है। भावी पीढ़ी इसे कभी भी स्वीकार नहीं करेगी।

विगत पाँच दशक से केवल सत्ता प्राप्त करने के लिये राजनैतिक दल एवं राजनेता महात्मा गाँधी, अंबेडकर एवं महान नेताओं के नाम केवल वोट पाने के लिये करते रहे हैं। जबकि उनके कृतित्व और विचारों के सही रूप को समझा ही नहीं गया है। जीवन के अंतिम क्षणों में 2500 वर्षों से पूर्वी एशिया में भी फैले बौद्ध धर्म ग्रहण करने के बाद अंबेडकरजी ने महात्मा गाँधी के अहिंसात्मक आंदोलन को स्वीकार किया। अब गाँधी एवं विनोबा का अहिंसा मार्ग ही भावी पीढ़ी का वैश्विक धर्म बनेगा।

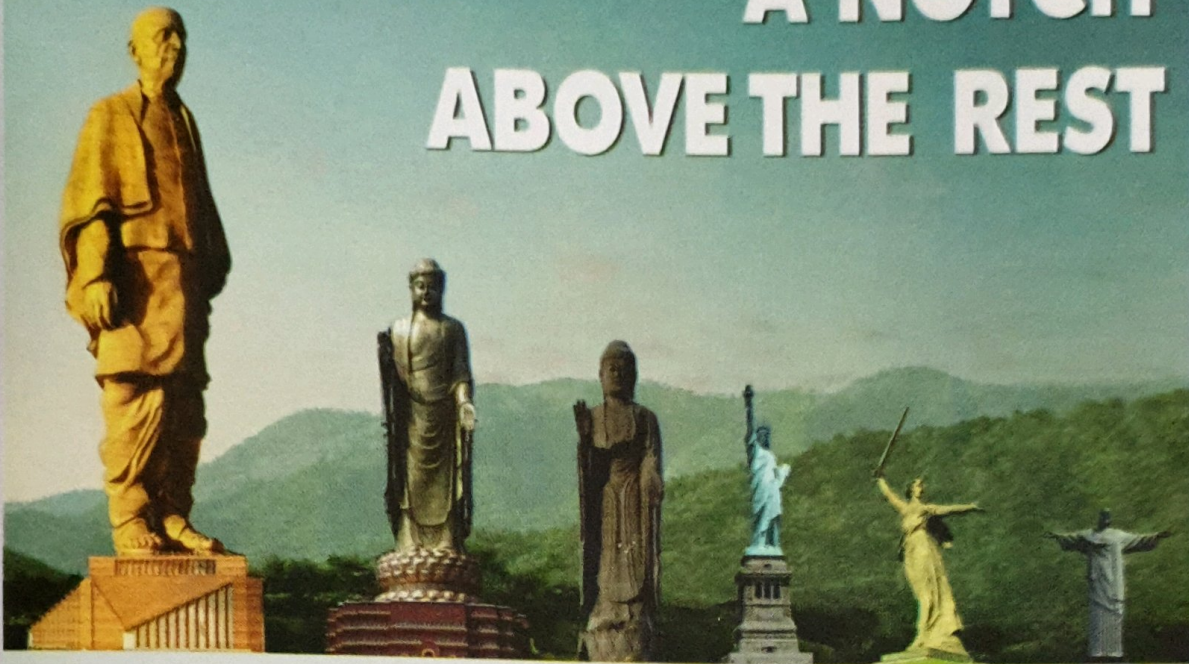
सुरेन्द्र नाथ दुबे, 30 जनवरी 2019

यह दीगर बात है कि घटिया राजनीतिक स्वार्थों के लिए कुछ लोग उन्हें वैचारिक दल में घसीटने की कोशिश कर रहे हैं। इसी द्वेष-भाव के चलते उन्हें गाँधी विरोध का प्रतीक साबित करने की कोशिश होती है। जबर्न उपजाए गए इस द्वेष के बावजूद अंबेडकर एक अंतहीन अहिंसक आंदोलन में तब्दील हो गए। उनकी प्रेरणा से चलने वाला परिवर्तन रथ आज भी भारतीय लोकतंत्र की ताकत है।

श्री शशि शेखर  
प्रधान संपादक हिन्दुस्तान



# A NOTCH ABOVE THE REST



**STATUE OF UNITY**  
GUJARAT, INDIA  
182 MTS

SPRING TEMPLE  
BUDDHA  
CHINA  
153 MTS

USHIKU  
DAIBUTSU  
JAPAN  
120 MTS

STATUE OF  
LIBERTY  
USA  
93 MTS

THE MOTHERLAND  
CALLS  
RUSSIA  
85 MTS

CHRIST  
THE REDEEMER  
BRAZIL  
39.6 MTS

चीन और जापान ने भगवान बुद्ध की सबसे ऊँची प्रतिमा बनाई।

विनोबाजी निर्वाण दिवस  
15 नवम्बर 1982



एक दिन  
सारा  
दुनिया  
उनको  
मानेगी

“बाबा राष्ट्र राष्ट्र कहता ही नहीं जय जगत कहता है।”  
अब सिकुड़ती दुनिया 22 वी सदी में यही नारा लगाएगी।

उपराष्ट्रपतिजी को तो सुनिए समझिए-

## गांधीजी की शिक्षा प्रभावी: वैकेया

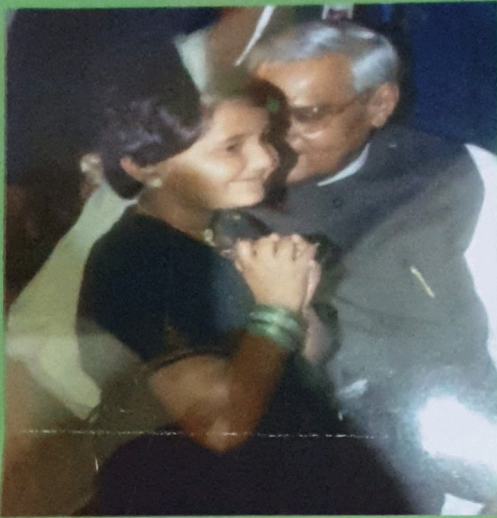
नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति वैकेया नायडू ने कहा कि महात्मा गांधी की शिक्षा आज भी प्रासंगिक है। सिर्फ गांधी टोपी पहनना, सड़क का नाम गांधी के नाम पर रखना, संस्थान का नाम उनके नाम पर रखना काफी नहीं है। लोगों को उनकी शिक्षा का पालन करना चाहिए।

उपराष्ट्रपति सोमवार को औद्योगिक संगठन फिक्की द्वारा गांधी की 150वीं जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में बोल रहे थे। कहा कि बदलते माहौल में व्यक्ति को शहरों की तरफ जाना तो चाहिए, पर अपने गांव को नहीं भूलना चाहिए। गांधी ने भी कहा था कि भारत गांवों में ही बसता है और आज भी एक बड़ी आबादी गांवों में ही है। (वि.सं.)

शायद अब शास्त्री भवन की व्यवस्था इसे समझना चाहे।



## अटल बिहारी वाजपेयी जी बच्चों को प्यार करते हुए



जिस बालिका पल्लवी को गोद में लिये दुलार कर रहे हैं आज वह बालिका लॉ यूनिवर्सिटी, दिल्ली की छात्रा है और जून 2018 में इस बालिका ने लंदन में आयोजित मूट कोर्ट में भारत का प्रतिनिधित्व कर गौरव बढ़ाया। जो बालिका पलक हाथ जोड़े हुए है उसने मुम्बई विश्वविद्यालय से उपाधि प्राप्त कर उच्च शिक्षा इटली के मिलान में भी प्राप्त की। जो बालक आदित्य शेरवानी पहने हुए है वह आज IPS है।



### MICROBIOLOGISTS SOCIETY, INDIA.

(Reg.No. MAH/4814/SAT)

President,  
Dr. A. M. Deshmukh  
Microbiologist Society India  
Contact No. +91 982207928

Office,  
C-2/12, Parijatak Apartment, Naikwadi Nagar  
Osmanabad 413 501, (M.S.) INDIA.  
Office - 02472228035  
Email Id- amdeshmukh1@rediffmail.com  
mbiosociety@gmail.com

Ref. MS/18-19/213

Date : 15 Aug. 2018

To,  
Dr. Ms. Renu Mishra,  
Dept. of Microbiology  
Sri Satya Sai College for Women,  
Bhopal



Dear Madam,

We are happy to inform you that Microbiologist Society, India has declared best teacher national award to you for academic year 2017-18. We respect your work in microbiology and hope that you will continue your work even in the future. Please note that award is in the form of memento and certificate. Award will be given in annual microbiology teachers meet and will be communicated you very soon.

Yours Sincerely

Dr. A. M. Deshmukh  
President,  
Microbiologists Society, India



## Renaming Gurgaon

**द्रोणाचार्य नगर - गुड़गांव-गुरुग्राम**

शिक्षा के जंजाल में द्रोणाचार्य प्रतिदर्श। दूनी प्रगति कर रहा, गुड़गांव प्रतिवर्ष ॥

जहाँ सुदामा पढ़ सके श्रीकृष्ण के साथ। सादीपनि आश्रम कहीं झुके जहाँ पर माथ ॥

कौरवों का वर्चस्व है स्थापित है द्रोण। बिना युद्ध एकलव्य को शिक्षा देगा कौन ॥

पक्ष सदा राजवंश का, यही द्रोण आदर्श पतन एकलव्य का किया, राजपुत्र - उत्कर्ष।

प्रतिभा आज भी दमित है भले कहावे सभ्य। द्रोण-नीति ने हत किए, सदा दलित एकलव्य ॥

- रामगोपाल रायकवार

श्रीकृष्ण को बिना समझे  
पढ़े गुड़गांव का नाम  
परिवर्तन करना अपवित्र  
कार्य है- पौराणिक संदर्भों  
को गलत ढंग से प्रस्तुत  
करने तथा एकलव्य को  
भूलने वालों को इतिहास  
कभी भी क्षमा नहीं करेगा।

## Eklavya Syndrome (Editorial - TOI)



It's strange how Haryana has celebrated Ambedkar Jayanti by renaming Gurgaon in honour of Dronacharya. He is Hardly the most Dalit friendly figure, demanding a terrible sacrifice of Eklavya to secure the interests of 'higher born' students. The narrative of sacrifice is primeval, dating back to when appeasement of deities alone provided protection from various monsters; Babasahab Ambedkar was man of the Enlightenment who embraced rational modernity. Unfortunately India still clings to an anti-monsters and villains, asking its inspirational citizenry to continually sacrifice for dubious ends.

## City that Grew At Night (Veena Talwar-TOI)



Any talk about Gurgaon in the media and in scholarly analyses follows a predictable track – the city that grew without a plan; the city that has no building restrictions, the frontier with no regulations; a city run by private corporations' a city run by private corporation; a city without governance. Gurgaon lacks proper sewerage or drainage, has no waste management or collection, has no waste electric supply are clearly inadequate, so the city runs on water from private tube wells and power from privately owned diesel generators; it has unfinished roads and no signage.

The list goes on. The problem for Gurgaon is that all of this, and more, is true. Now, the powers-that-be in Chandigarh are desperately seeking a distraction from what they have failed to do, with this meaningless change of name to 'Gurugram'

The two names are identical in context and import; the Sanskrit Guru Gram morphed into the more colloquial and user-friendly Gurgaon. Perhaps the Khattar government supposes that if it cannot be a game changer, it can at least be a name changer.....

## Here is Prof Shamsul Islam's reaction to the naming of Gurgaon :

The change of name of Gurgaon to Gurugram is shocking one as the government announcement defended the change in the name of Guru Dronacharya.

There could not be worst humiliation of Dr. Bhim Rao Ambedkar, a Dalit icon on his 125th birth anniversary. Guru Dronacharya was the Guru who deceitfully deprived thumb of a lower Caste fine archer, Ekalavya, by asking his thumb as 'guru dakshina' so that he could not compete with Guru's high Caste Kaurav & Pandav students. It shows brazen insensitivity of rulers to the Dalit sentiments on Dr Ambedkar's very birthday. This change also means that history attached with Gurgaon will be erased. It is to be noted that Gurgaon and its adjacent areas played immensely heroic role during 1857 Rebellion. This area was the place from where maximum martyrs of 1857 hailed under the leadership of Rao Tula Ram. These all narratives will be lost to the future generations.



# 'पूजास्थलों' पर सरकारी रवैए से सुप्रीम कोर्ट खफा

हरियाणा, न्यूज

नई दिल्ली, 19 अक्टूबर: सुप्रीम कोर्ट ने सरकार से सड़कों और फुटपाथों पर अवैध रूप से बनाए गए पूजास्थलों को हटाने पर सरकार को चेतावनी दी है। कोर्ट ने कहा कि यह भगवान को अपमान है। कोर्ट ने कहा कि यह भगवान को अपमान है। कोर्ट ने कहा कि यह भगवान को अपमान है।

**अदालत ने कहा:** हमें नहीं पता कि आप कुछ नहीं कर रहे। कोई भी राज्य कुछ नहीं कर रहा। अदालत इसकी अनुमति देने का कोई अधिकार नहीं है। भगवान को हमने नहीं अपमान नहीं करते। लेकिन आप हमसे कह रहे हैं। यह भगवान का अपमान है।



**एक राज्य के अधिकारों से कहा:** आपने राज्य का क्या अधिकार है? आप किसके अधिकारों को तोड़ रहे हैं? आपने राज्य का क्या अधिकार तोड़ दिया है? आपने राज्य का क्या अधिकार तोड़ दिया है?

कोर्ट ने कहा कि यह भगवान को अपमान है। कोर्ट ने कहा कि यह भगवान को अपमान है। कोर्ट ने कहा कि यह भगवान को अपमान है।

कोर्ट ने कहा कि यह भगवान को अपमान है। कोर्ट ने कहा कि यह भगवान को अपमान है। कोर्ट ने कहा कि यह भगवान को अपमान है।

कोर्ट ने कहा कि यह भगवान को अपमान है। कोर्ट ने कहा कि यह भगवान को अपमान है। कोर्ट ने कहा कि यह भगवान को अपमान है।

कोर्ट ने कहा कि यह भगवान को अपमान है। कोर्ट ने कहा कि यह भगवान को अपमान है। कोर्ट ने कहा कि यह भगवान को अपमान है।

कोर्ट ने कहा कि यह भगवान को अपमान है। कोर्ट ने कहा कि यह भगवान को अपमान है। कोर्ट ने कहा कि यह भगवान को अपमान है।

कोर्ट ने कहा कि यह भगवान को अपमान है। कोर्ट ने कहा कि यह भगवान को अपमान है। कोर्ट ने कहा कि यह भगवान को अपमान है।

## 'God never intended to encroach on footpaths'

**Raze All Illegal Religious Structures; SC**  
(19-10-2016)  
Dhananjay Mahapatra  
atimesgroup.com

September 2011.

A Bench of Justices Gopala Gowda and Arun Mishra was peeved as not a single state had filed response to its March order directing them to comply with various interim orders passed by the apex court from time to time on this issue.

The states are doing anything to comply with the SC's directions. God never intended to obstruct footpaths and pavements or encroach upon public land. Persons building religious structures on public land and footpaths are insulting God.

The court had on September 13, 2011 said it had undertaken the exercise primarily

### Times View

Individuals or groups occupying public spaces by setting up places of worship is a rampant problem everywhere in India and it is most welcome that the Supreme Court is taking such a tough stance on this issue. What is disheartening is the apparently complete lack of enthusiasm among governments to act against those grabbing land in this manner. Every case of such grabbing allowed to succeed has the effect of emboldening many more to follow suit. Governments should, as the court has said, act promptly and sternly to signal loud and clear that such encroachment on public spaces will no longer be tolerated.

to ensure that "henceforth no public land, public park or public street is encroached for constructing religious structures".

"All collectors and district magistrates in the country are directed to meticulously ensure that no further land is encroached in their respective

districts. The district magistrates and collectors must also ensure that no commercial activity is carried out from unauthorised structures on public land," it had said.

The district magistrates were directed to send their reports every month to the chief secretary of the state

regarding fresh encroachment and status of existing unauthorised structures.

The chief secretaries, in turn, will file affidavits before this court once in three months on regular basis," the court had directed.

The bench of Justices Gowda and Mishra found that none of the states had complied with its interim orders, not were taking the matter lightly by seeking time to file even the court-mandated quarterly status reports. "This is the attitude of the chief secretaries despite the Supreme Court's directions. Are our orders passed for keeping in cold storage? The chief secretaries have no respect for the highest court. We will show

them what the court can do. They do not deserve any leniency," the bench said.

The bench's observations followed by an order commanding all chief secretaries to be present in court made the demand for the states plead additional affidavits to the court. Additional solicitor general P.S. Patil said the request of the court was not complied with by the states. The filing was still in the process of being filed.

The SC reviewed and ordered that only those chief secretaries who failed to file the required affidavits in two weeks would remain present in court on the next date of hearing.

सुरेन्द्रनाथ दुबे वर्तमान संपादक- स्कूल शिक्षा ने तो सितम्बर 1983 में मध्यप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री अर्जुन सिंह से एक विशाल सभा में यह जानना चाहा था कि "आप चाहते हैं गरीबों को अच्छे आवास मिले तो उनको आवास के लिए जमीन के पट्टे दिए जा रहे हैं, यह तो बहुत अच्छा है, परंतु धर्म स्थलों के नाम पर सड़कों, गलियों एवं आवागमन के स्थानों पर, सरकारी कार्यालयों चाहे जहां मूर्तियां रखकर धर्मस्थल इत्यादि बना देना और इस तरह सरकारी भूमि पर कब्जा कर लेना क्या उचित कहा जा सकता है?" तब उस भरी सभा में अर्जुन सिंह ने कहा था "मैं तो इस तरह से धर्म स्थलों के निर्माण करने को गैर कानूनी और धर्मविरुद्ध मानता हूँ। मेरा सभी कर्मचारियों से अनुरोध है कि वे धर्म निरपेक्ष रहकर इस प्रकार के अतिक्रमण के विरुद्ध सख्त कार्यवाही करें।" किंतु न तो उस समय और ना आज भी श्री दुबे द्वारा चलाये गए अतिक्रमण विरोधी राष्ट्रव्यापी विरोध में उन्हें कोई सच्चा सहयोग प्राप्त हुआ।

जहां तक न्यायपालिका के हजारों निर्णयों और टिप्पणियों का प्रश्न है- न्यायपालिका यह जाने कि कार्यपालिका और अधीनस्थ कर्मचारी उन पर अमल करने/कराने में अतिक्रमण हटाने में तो अधिकांश कर्मचारी इसलिये असफल हुये हैं/ होते हैं, क्योंकि इस प्रकार के अतिक्रमण करने में वे ही तो अग्रणी रहे हैं।

गैरकानूनी अतिक्रमण - अवैध निर्माण इत्यादि को कानून बनाकर एवं आदेशों से नियमित करना पूरी तरह अनैतिक भी तो है।

विजय गुप्ता





चन्द्र शेखर

CHANDRA SHEKHAR

December 1, 2003

I am happy to learn that Shri S.N.Subba Rao has been awarded "Rajive Gandhi National Sadbhavna Award" and his 75th Birthday is being celebrated on 8th January, 04.

Shri S.N.Subba Rao has been a close associate of mine since long. As a self-less Seva Dal Workder wedded to Gandhian ideology, he worked for Social reconstruction and for the cause of communal peace and harmony. While at All India Congress Committee Headquarters New Delhi, he organised many Youth camps to channelize Youth energy and was close to eminent personalities like Pandit Jawahar Lal Nehru, Shri K Kamraj and others. Being wedded to non-violence and Gandhian principles his contribution for the rehabilitation of ex-dacoits and their families is very significant. He succeeded in winning over the dreaded dacoits like Mohar Singh and a bend of about 511 dacoits surrendered. It is an example of his courage and daring instinct to solve the problem of dacoits by the weapon of non-violence.

Subbarao's contribution to activate Youth power in India has no parallel. All over the Country, he organised camps of Young men and women for taking up constructive work and spreading the message of communal harmony, National unity and brotherhood.

It is hoped that Indian Youth would take an inspiration from the book " Commemorating Dr.Subba Rao's work and service to Indian Youth in particular and masses in general with higher ideals and values. It would create awareness among the people for national unity.

*Chandra Shekhar*  
(CHANDRA SHEKHAR)

Shri S. N. Dubey  
Bhopal (M.P.)

3. साउथ एवेन्यू लेन, नई दिल्ली-110 011 टेलीफोन 301-2587, 301-2163  
3, South Avenue Lane, New Delhi-110 011 Tele : 301-2587, 301-2163



# S.N. Subba Rao - An Eminent Gandhian

Dr. Bindeshwar Pathak

In these murky times when long-cherished ideals are toppling and values are vanishing in confusion and chaos, Gandhian philosophy alone is an enduring truth which can save the nation. To promote Gandhian values and preserve the unity of the nation, it was a great act of faith and courage for him to travel across the country, attempting to unite the people emotionally. He is an eminent Gandhian thinker who has dedicated his life for peace and goodwill.

For the first in the history of mankind, an experiment was made to inculcate Sadbhavna (goodwill) among the various sections of the society, using the youth power and carrying it on rail tracks covering more than 130 major cities and towns in a special Sadbhavana train. The Rail Sadbhavana Yatra was started on October 2, last and ended on May 31, 1994 to mark the 100th year of the Chicago speech of Swami Vivekanand and 125th birth anniversary of Mahatma Gandhi.

The mission was to spread the message of love, peace friendship and brotherhood of man, transcending all differences. This is one of his many campaigns for peace. He was also associated with Jayaprakash Narain while procuring the surrender of dacoits in Chambal.

The Sadbhavana Rail Yatra was the brain child of Shri Rao, who spent his whole life in mobilising and training youths in India and abroad for nation building activities. The tumultuous welcome and the hospitality was accorded to him and his family of youths at all places during their travel of eight months in the train is an evidence of his popularity among the people of India who call him Bhaiji with love and respect. Thousands of youths turned up at most of the major stations and towns, which was one of the major factors that contributed to the success of the harmony mission.

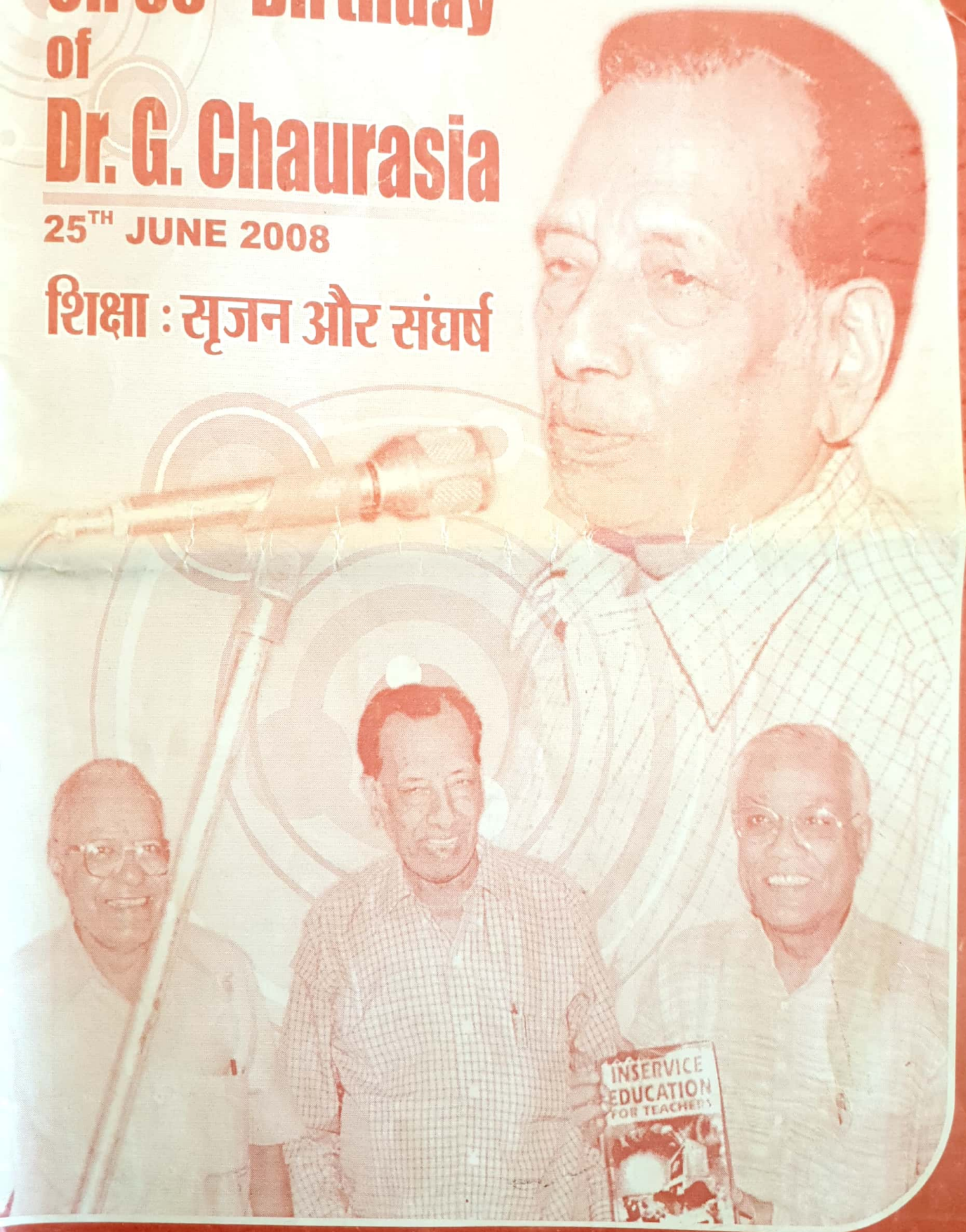
Shri S.N. Subba Rao has been given this year's Rajiv Gandhi National Sadbhavana Award for his good work over the last five decades to the cause of national unity and brotherhood and particularly in recognition of his role in mobilising the country's young people through the National Youth Project of which he is founder director.



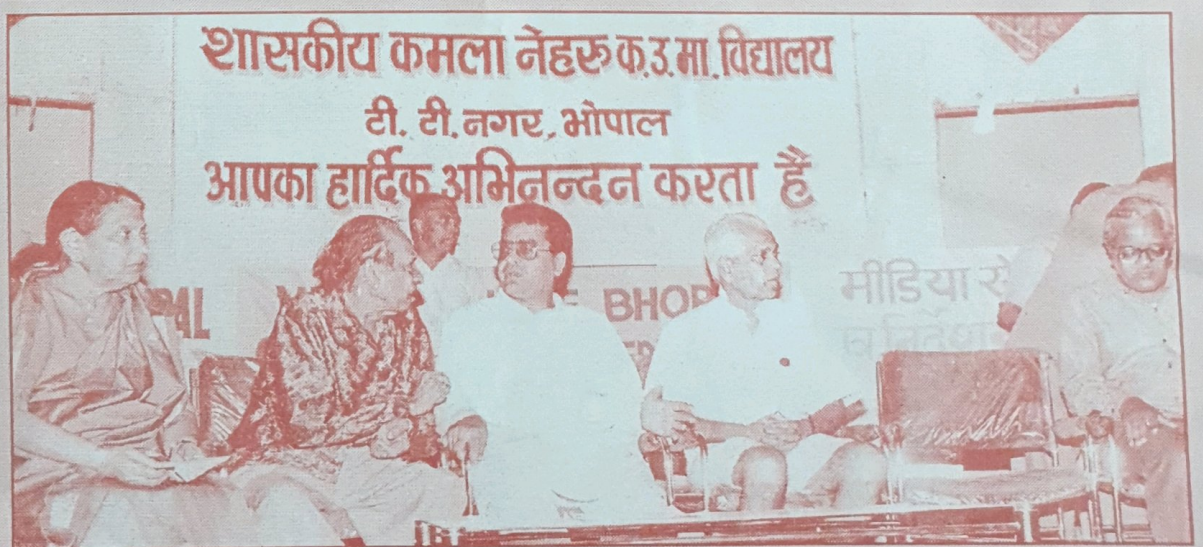
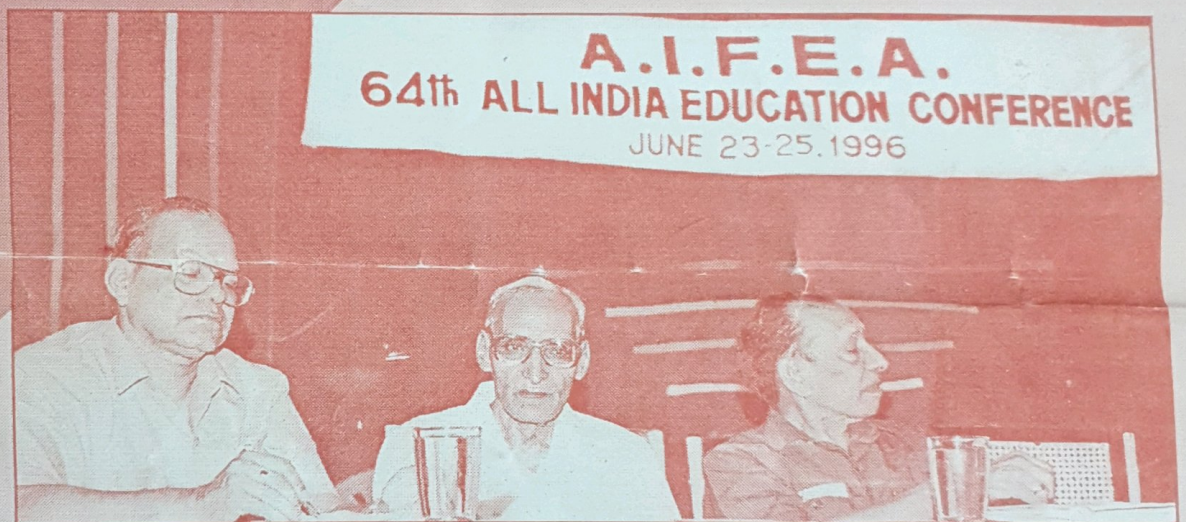
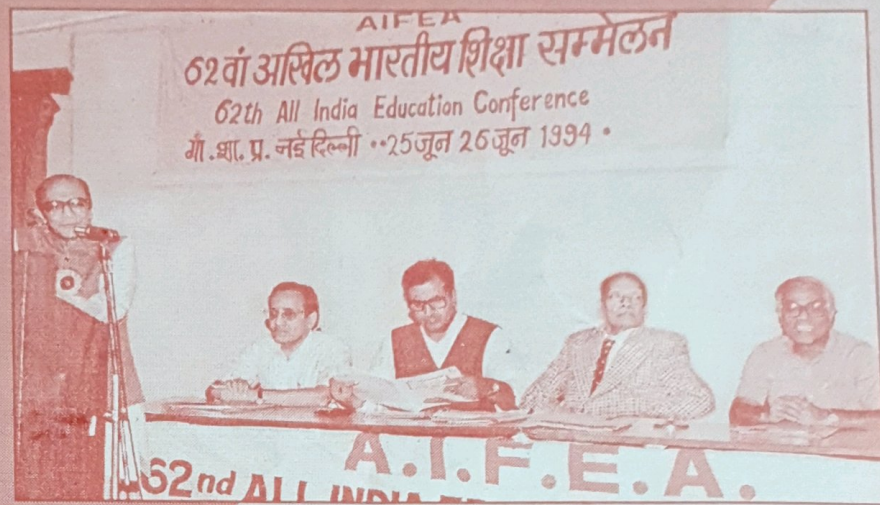
# On 86<sup>th</sup> Birthday of Dr. G. Chaurasia

25<sup>TH</sup> JUNE 2008

शिक्षा : सृजन और संघर्ष







बैजनाथ प्रकाशन  
एच-238, बागमुगलिया एक्सटेंशन, भोपाल-43 द्वारा प्रकाशित

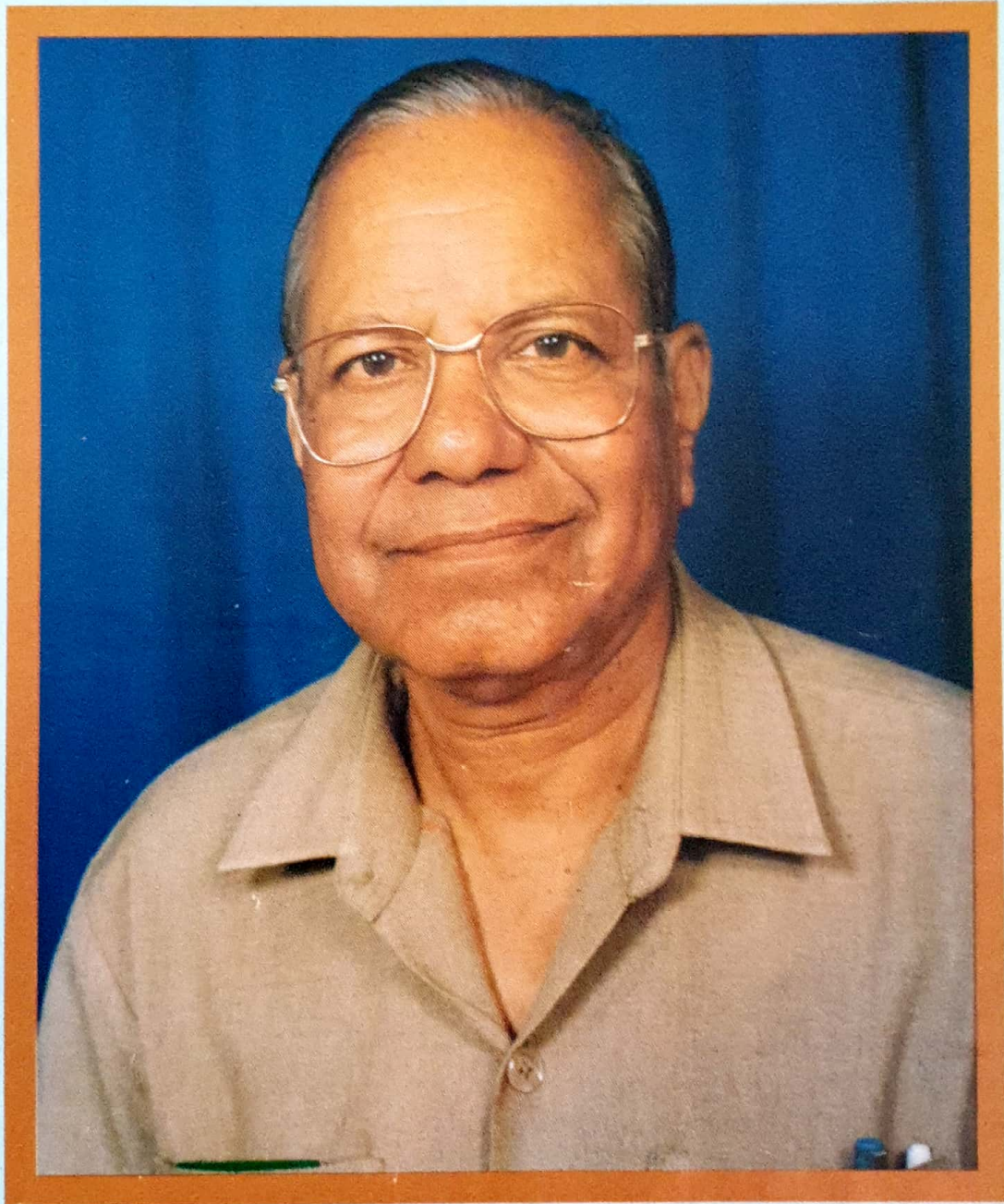
मुद्रक : जैन ऑफसेट, 78, बी.एम. आर्कड, जेन-2, एम.पी. नगर, भोपाल. मो. : 9303117753



**ALL INDIA FORUM OF AWARDEE TEACHERS**

**DEVOTED FOR THE CAUSE OF FIVE MILLION TEACHERS**

and  
FUNDAMENTAL HUMAN RIGHTS  
OF CHILDREN



∞ GREETINGS ∞

***Shri Surendra Nath Dubey***

SECRETARY GENERAL, ALL INDIA FEDERATION OF EDUCATIONAL ASSOCIATIONS,

**A CHAMPION OF TEACHERS WELFARE AND TEACHER EMPOWERMENT  
FOR UNIVERSAL ELEMENTARY EDUCATION**

AWARDED ON 5th Sept 1997